॥ श्री विश्वम्भराय नमः ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥
कल्याणाऽद्भुतगात्राय कामितार्थप्रदायिने । श्रीमद्वेङ्कटनाथाय श्रीनिवासाय ते नमः ॥
वन्दे वन्द्यं सदानन्दं वासुदेवं निरञ्जनम् । इन्दिरापतिमाद्यादिवरदेश वरप्रदम् ॥
शर्वादिसर्वगीर्वाणनिर्वाणगतिहेतवः । पूर्णप्रज्ञपदाम्भोजपांसवः पान्तु नः सदा ॥
दासवर्यं दयायुक्तं दूरिकृतदुराशिषम् । हरिकथाऽमृतवक्तारं जगन्नाथगुरुं भजे ॥

श्रीमज्जगन्नाथदासार्यविरचित श्रीमद्धरिकथाऽमृतसार

कन्नड भामिनीषट्पदि छन्दस्सु(संस्कृतबालबोधलिपियल्लि)

मिश्रछापुताळ १. मङ्गलाचरणसन्धि

हरिः ओं ॥ हरिक-थाऽमृत-सार-गुरुगळ-करुण-दिन्दा-पनितु-पेळुवे- परम-भगव-द्भक्त-रिदना-दरदि-केळुवु-दु ॥पल्लवि ॥

श्रीर-मणिकर-कमल-पूजित-चारु-चरणस-रोज-ब्रह्मस-
मीर-वाणिफ-णीन्द्र-वीन्द्रभ-वेन्द्र-मुखविनु-त ।
नीर-जभवा-ण्डोद-यस्थिति-कार-णनेकै-वल्य-दायक-
नार-सिंहने-नमिपे-करुणिपु-देमगे-मङ्गल-व ॥ १-(१)

श्रीरमणिकरकमलपूजित
चारुचरणसरोज ब्रह्म स-
मीर वाणि फणीन्द्र वीन्द्र भवेन्द्र मुख विनुत ।
नीरजभवाण्डोदय स्थिति
कारणने कैवल्यदायक
नारसिंहने नमिपे करुणिपुदेमगे मङ्गलव ॥

जगदु-दरनति-विमल-गुणरू-पगळ-नालो-चनदि-भारत-
निगम-ततिगळ-तिक्र-मिसिक्री-यावि-शेषग-ळ ।
बगेब-गेयनू-तनव-काणुत-मिगेह-रुषदिं-पोगळि-हिग्गुव-
त्रिगुण-मानिम-हाल-कुमिस-न्तैसु-अनुदिन-वु ॥ २-(२)

जगदुदरनतिविमल गुण रू-
पगळनालोचनदि भारत
निगमततिगळतिक्रमिसि क्रीयाविशेषगळ ।
बगेबगेय नूतनव काणुत
मिगे हरुषदिं पोगळि हिग्गुव
त्रिगुणमानि महालकुमि सन्तैसु अनुदिनवु ॥

निरुप-मान-न्दात्म-भवनि-र्जरस-भासं-सेव्य-ऋजुगण-
दरसे-सत्व-प्रचुर-वाणी-मुखस-रोजे-न ।
गरुड-शेषश-शाङ्क-दलशे-खरर-जनकज-गद्गु-रुवेत्व-
च्चरण-गळिगभि-वन्दि-सुवेपा-लिपुदु-सन्मति-य ॥ ३-(३)

निरुपमानन्दात्मभव नि-
र्जरसभासंसेव्य ऋजुगण-
दरसे सत्वप्रचुर वाणीमुखसरोजेन ।
गरुड शेष शशाङ्कदलशे-
खरर जनक जगद्गुरुवे त्व-
च्चरणगळिगभिवन्दिसुवे पालिपुदु सन्मतिय ॥

आरु-मूरेर-डोन्दु-साविर-मूरे-रडुशत-श्वास-जपगळ-
मूरु-विधजी-वरोळ-गब्जज-कल्प-परिय-न्त ।
तार-चिसिसा-त्वरिगे-सुखसं-सार-मिश्ररि-गधम-जनरिग-
पार-दुःखग-ळीव-गुरुपव-मान-सलहे-म्म ॥ ४-(४)

आरु मूरेरडोन्दु साविर
मूरेरडु शत श्वासजपगळ
मूरुविध जीवरोळगब्जजकल्पपरियन्त ।
ता रचिसि सात्वरिगे सुख सं-
सार मिश्ररिगधम जनरिग-
पार दुःखगळीव गुरुपवमान सलहेम्म ॥

चतुर-वदनन-राणि-अतिरो-हितवि-मलवि-ज्ञानि-निगम-
प्रतति-गळिगभि-मानि-वीणा-पाणि-ब्रह्मा-णि ।
नतिसि-बेडुवे-जननि-लकुमी-पतिय-गुणगळ-तुतिपु-दकेस-
न्मतिय-पालिसि-नेलेसु-नीम-द्वदन-सदनद-लि ॥ ५-(५)

चतुरवदननराणि अतिरो-
हित विमलविज्ञानि निगम-
प्रततिगळिगभिमानि वीणापाणि ब्रह्माणि ।
नतिसि बेडुवे जननि लकुमी
पतिय गुणगळ तुतिपुदके स-
न्मतिय पालिसि नेलेसु नी मद्वदन सदनदलि ॥

कृतिर-मणप्र-द्युम्न-नन्दने-चतुर-विंशति-तत्त्व-पतिदे-
वतेग-ळिगेगुरु-वेनिसु-तिहमा-रुतन-निजप-त्नि ।
सतत-हरियलि-गुरुग-ळलिस-द्रतिय-पालिसि-भाग-वतभा-
रतपु-राणर-हस्य-तत्त्वग-ळरुपु-करुणद-लि ॥ ६-(६)

कृतिरमण प्रद्युम्ननन्दने
चतुरविंशति तत्त्वपति दे-
वतेगळिगे गुरुवेनिसुतिह मारुतन निजपत्नि ।
सतत हरियलि गुरुगळलि स-
द्रतिय पालिसि भागवत भा-
रत पुराण रहस्यतत्त्वगळरुपु करुणदलि ॥

वेद-पीठवि-रिञ्चि-भवश-क्रादि-सुरवि-ज्ञान-दायक-
मोद-चिन्मय-गात्र-लोकप-वित्र-सुचरि-त्र ।
छेद-भेदवि-षाद-कुटिला-न्तादि-मध्यवि-दूर-आदा-
नादि-कारण-बाद-रायण-पाहि-सत्रा-ण ॥ ७-(७)

वेदपीठ विरिञ्चि भव श-
क्रादिसुर विज्ञानदायक
मोद चिन्मयगात्र लोकपवित्र सुचरित्र ।
छेद भेद विषाद कुटिला-
न्तादि मध्य विदूर आदा-
नादि कारण बादरायण पाहि सत्राण ॥

क्षितियो-ळगेमणि-मन्त-मोदला-दतिदु-रात्मरु-ओन्द-धिकविं-
शतिकु-भाष्यव-रचिसे-नडुमने-येम्ब-ब्राह्मण-न
सतिय-जठरदो-ळवत-रिसिभा-रतिर-मणम-ध्वाभि-धानदि-
चतुर-दशलो-कदोळु-मेरेद-प्रतिम-गोन्दिसु-वे ॥ ८-(८)

क्षितियोळगे मणिमन्तमोदला-
दतिदुरात्मरु ओन्दधिक विं-
शति कुभाष्यव रचिसे नडुमनेयेम्ब ब्राह्मणन
सतिय जठरदोळवतरिसि भा-
रतिरमण मध्वाभिधानदि
चतुरदश लोकदोळु मेरेदप्रतिमगोन्दिसुवे ॥

पञ्च-भेदा-त्मकप्र-पञ्चके-पञ्च-रूपा-त्मकने-दैवक-
पञ्च-मुखश-क्रादि-गळुकि-ङ्कररु-श्रीहरि-गे ।
पञ्च-विंशति-तत्त्व-तरतम-पञ्चि-केगळनु-पेळ्द-भाविवि-
रिञ्चि-येनिपा-नन्द-तीर्थर-नेनेवे-ननुदिन-वु ॥ ९-(९)

पञ्चभेदात्मक प्रपञ्चके
पञ्चरूपात्मकने दैवक
पञ्चमुख शक्रादिगळु किङ्कररु श्रीहरिगे ।
पञ्चविंशति तत्त्वतरतम
पञ्चिकेगळनु पेळ्द भावि वि-
रिञ्चियेनिपानन्दतीर्थर नेनेवेननुदिनवु ॥

वाम-देवावि-रिञ्चि-तनयउ-माम-नोहर-उग्र-धूर्जटि-
साम-जाजिन-वसन-भूषण-सुमन-सोत्तं-स ।
काम-हरकै-लास-मन्दिर-सोम-सूर्या-नलवि-लोचन-
कामि-तप्रद-करुणि-सेमगेस-दासु-मङ्गल-व ॥ १०-(१०)

वामदेव विरिञ्चितनय उ-
मामनोहर उग्र धूर्जटि
सामजाजिनवसनभूषण सुमनसोत्तंस ।
कामहर कैलासमन्दिर सोम
सूर्यानल विलोचन
कामितप्रद करुणिसेमगे सदा सुमङ्गलव ॥

कृत्ति-वासने-हिन्दे-नीना-ल्वत्तु-कल्पस-मीर-नलिशि-
ष्यत्व-वैद्यखि-लाग-मार्थग-ळोदि-जलधियो-ळु ।
हत्तु-कल्पदि-तपव-गैदा-दित्य-रोळगु-त्तमने-निसिपुरु-
षोत्त-मनपरि-यङ्क-पदवै-दिदेयो-महदे-व ॥ ११-(११)

पाक-शासन-मुख्य-सकलदि-वौक-सरिगभि-नमिपे-ऋषिगळि-
गेक-चित्तदि-पितृ-गळुग-न्धर्व-क्षितिपरि-गे ।
आक-मलना-भादि-यतिगळ-नीक-कानमि-सुवेनु-बिदडेर-
माक-लत्रन-दास-वर्गके-नमिपे-ननवर-त ॥ १२-(१२)

परिम-ळवुसुम-नगळो-ळगनल-नरणि-योळगि-प्पन्ते-दामो-
दरनु-ब्रह्मा-दिगळ-मनदलि-तोरि-तोरद-ले ।
इरुति-हजग-न्नाथ-विठलन-करुण-पडेवमु-मुक्षु-जीवरु-
परम-भागव-तरनु-कोण्डा-डुवरु-प्रतिदिन-वु ॥ १३-(१३)

१. मङ्गळाचरणसन्धि मुगियितु (१-१३) श्रीमध्वेशार्पणमस्तु

**कृत्तिवासने हिन्दे नी ना-
ल्वत्तु कल्प समीरनलि शि-
ष्यत्ववैद्यखिलागमार्थगळोदि जलधियोळु ।
हत्तु कल्पदि तपवगैदा-
दित्यरोळगुत्तमनेनिसि पुरु-
षोत्तमन परियङ्क पदवैदिदेयो महदेव ॥**

**पाकशासनमुख्य सकल दि-
वौकसरिगभिनमिपे ऋषिगळि-
गेकचित्तदि पितृगळु गन्धर्व क्षितिपरिगे ।
आ कमलनाभादि यतिगळ-
नीककानमिसुवेनु बिदडे र-
माकलत्रन दासवर्गके नमिपेननवरत ॥**

**परिमळवु सुमनगळोळगनल-
नरणियोळगिप्पन्ते दामो-
दरनु ब्रह्मादिगळ मनदलि तोरि तोरदले ।
इरुतिह जगन्नाथविठलन
करुण पडेव मुमुक्षु जीवरु
परमभागवतरनु कोण्डाडुवरु प्रतिदिनवु ॥**

श्रीमद्धरिकथाऽमृतसार २. करुणासन्धि (सारङ्ग एकताळ)

श्रवण-मनना-नन्द-वीवुदु-भवज-नितदुः-खगळ-कळेवुदु-
विविध-भोगव-निहप-रङ्गळ-लित्तु-सलहुवु-दु ।
भुवन-पावन-नेनिप-लकुमी-धवन-मङ्गल-कथेय-परमो-
त्सवदि-किविगो-ट्टालि-पुदुभू-सुररु-दिनदिन-दि ॥ १-(१४)

मळेय-नीरो-णियलि-परियलु-बळस-रूरोळ-गिद्द-जनरा-

जलवु-हेद्दोरे-गूडे-मज्जन-पान-गैवप-रु ।
कलुष-वचनग-ळादो-डेयुबा-म्बोळेय-पेत्तन-पाद-महिमा-
जलधि-पोक्कुद-रिन्द-माण्दप-रेम-हीसुर-रु ॥ २-(१५)

श्रुतित-तिगळभि-मानि-लकुमी-स्तुतिग-ळिगेगो-चरिस-दप्रति-
हतम-हैश्वर्याद्य-खिलस-द्गुणग-णाम्भो-धि ।
प्रतिदि-वसत-न्नङ्घ्रि-सेवा-रतम-हात्मरु-माडु-तिहसं-
स्तुतिगे-वशना-गुवनि-वनका-रुण्य-केने-म्बे ॥ ३-(१६)

**श्रवण मननानन्दवीवुदु
भवजनित दुःखगळ कळेवुदु
विविध भोगवनिहपरङ्गळलित्तु सलहुवुदु ।
भुवनपावननेनिप लकुमी-
धवन मङ्गलकथेय परमो-
त्सवदि किविगोट्टालिपुदु भूसुररुदिनदिनदि ॥**

**मळेयनीरोणियलि परियलु
बळसरूरोळगिद्द जनरा-
जलवु हेद्दोरेगूडे मज्जन पान गैवपरु ।
कलुष वचनगळादोडेयु बा-
म्बोळेय पेत्तन पादमहिमा-
जलधि पोक्कुदरिन्द माण्दपरे महीसुररु ॥**

**श्रुतिततिगळभिमानि लकुमी
स्तुतिगळिगे गोचरिसदप्रति-
हत महैश्वर्याद्यखिल सद्गुणगणाम्भोधि ।
प्रतिदिवस तन्नङ्घ्रिसेवा-
रतमहात्मरु माडुतिह सं-
स्तुतिगे वशनागुवनिवन कारुण्यकेनेम्बे ॥**

मनव-चनकति-दूर-नेनेवर-ननुस-रिसितिरु-गुवनु-जाह्नवि-
जनक-जनरोळ-गिदु-जनिसुव-जगदु-दरता-नु ।
घनम-हिमगा-ङ्गेय-नुतगा-यनव-केळुत-गगन-चरवा-
हनदि-वौकस-रोडने-तिरुगुव-नुमने-मनेगळ-लि ॥ ४-(१७)

मनवचनकतिदूर नेनेवर-
ननुसरिसि तिरुगुवनु जाह्नवि
जनक जनरोळगिदु जनिसुव जगदुदर तानु ।
घनमहिम गाङ्गेयनुत गा-
यनव केळुत गगनचरवा-
हन दिवौकसरोडने तिरुगुवनु-मनेमनेगळलि ॥

मलगि-परमा-दरदि-पाडलु-कुळितु-केळुव-कुळितु-पाडलु-
निलुव-निन्तरे-नलिव-नलिदरे-ओलिवे-निमगे-म्ब ।
सुलभ-नोहरि-तन्न-वरनर-घळिगे-बिट्टग-लनुर-माधव-
नोलिस-लरियदे-पाम-ररुबळ-लुवरु-भवदोळ-गे ॥ ५-(१८)

मलगि परमादरदि पाडलु
कुळितु केळुव कुळितु पाडलु
निलुव निन्तरे नलिव नलिदरे ओलिवे निमगेम्ब ।
सुलभनो हरि तन्नवरनर-
घळिगे बिट्टगलनु रमाधव-
नोलिसलरियदे पामररु बळलुवरु भवदोळगे ॥

मनदो-ळगेता-निदु-मनवे-न्देनिसि-कोम्बनु-मनद-वृत्तिग-
ळनुस-रिसिभो-गगळ-नीवनु-त्रिविध-चेतन-के ।
मनव-नित्तरे-तन्न-नीवनु-तनुव-दण्डिसि-दिनदि-नदिसा-
धनव-माळपरि-गित्त-पनुस्व-र्गादि-भोगग-ळ ॥ ६-(१९)

मनदोळगे तानिदु मनवे-
न्देनिसिकोम्बनु मनद वृत्तिग-
ळनुसरिसि भोगगळनीवनु त्रिविध चेतनके ।
मनवनित्तरे तन्ननीवनु
तनुव दण्डिसि दिनदिनदि सा-
धनव माळपरिगित्तपनु स्वर्गादि भोगगळ ॥

परम-सत्पुरु-षार्थ-रूपनु-हरियु-लोकके-येन्दु-परमा-
दरदि-सदुपा-सनेय-गैवरि-गित्त-पनुत-न्न ।
मरेदु-धर्मा-र्थगळ-कामिसु-वरिगे-नगुतति-शीघ्र-दिन्दलि-
सुरप-तनयसु-योध-नरिगि-त्तन्ते-कोडुति-प्प ॥ ७-(२०)

परमसत्पुरुषार्थरूपनु
हरियु लोकके येन्दु परमा-
दरदि सदुपासनेय गैवरिगित्तपनु तन्न ।
मरेदु धर्मार्थगळ कामिसु-
वरिगे नगुतति शीघ्रदिन्दलि
सुरपतनय सुयोधनरिगित्तन्ते कोडुतिप्प ॥

जगव-नेल्लव-निर्मि-सुवना-ल्मोगनो-ळगेता-निदु-सलहुव-
गगन-केशनो-ळिदु-संहरि-सुवनु-लोकग-ळ ।
स्वगत-भेदवि-वर्जि-तनुस-र्वगस-दान-न्दैक-देहनु-
बगेब-गेयना-मदलि-करेसुव-भकुत-रनुपोरे-व ॥ ८-(२१)

जगवनेल्लव निर्मिसुव, ना-
ल्मोगनोळगे तानिदु सलहुव,
गगनकेशनोळिदु संहरिसुवनु लोकगळ ।
स्वगतभेदविवर्जितनु स-
र्वग सदानन्दैकदेहनु
बगेबगेय नामदलि करेसुव भकुतरनु पोरेव ॥

ओब्ब-नलिनि-न्ताडु-वनुम-त्तोब्ब-नलिनो-डुवनु-बेडुव-
नोब्ब-नलिनी-डुवनु-माता-डुवनु-बेरगा-गि ।
अब्ब-रदहे-दैव-निवम-त्तोब्ब-रनुले-क्किसनु-लोकदो-
ळोब्ब-नेता-बाद्य-बाधक-नाह-निर्भी-त ॥ ९-(२२)

ओब्बनलि निन्ताडुवनु म-
त्तोब्बनलि नोडुवनु बेडुव-
नोब्बनलि नीडुवनु माताडुवनु बेरगागि ।
अब्बरद हेदैवनिव म-
त्तोब्बरनु लेक्किसनु लोकदो-
ळोब्बने ता बाद्य बाधकनाह निर्भीत ॥

शरण-जनम-न्दार-शाश्वत-करुणि-कमला-कान्त-कामद-
परम-पावन-तरसु-मङ्गल-चरित-पार्थस-ख ।
निरुप-मान-न्दात्म-निर्गत-दुरित-देवव-रेण्य-नेन्दा-
दरदि-करेयलु-बन्दो-दगुवनु-तन्न-वरबळि-गे ॥ १०-(२३)

शरणजनमन्दार शाश्वत
करुणि कमलाकान्त कामद
परमपावनतर सुमङ्गलचरित पार्थसख ।
निरुपमानन्दात्म निर्गत-
दुरितदेववरेण्यनेन्दा-
दरदि करेयलु बन्दोदगुवनु तन्नवर बळिगे ॥

इट्टि-कल्लनु-भकुति-यिन्दलि-कोट्ट-भकुतगे-मेच्चि-तन्नने-
कोट्ट-बडब्रा-ह्मणन-वोप्पिडि-यवलि-गखिला-र्थ ।
केट्ट-मातुग-ळन्द-चैद्यन-पोट्टे-योळगि-म्बिट्ट-बाणद-
लिट्ट-भीष्मन-वगुण-गळनेणि-सिदने-करुणा-ळु ॥ ११-(२४)

इट्टिकल्लनु भकुतियिन्दलि
कोट्ट भकुतग मेच्चि तन्नने
कोट्ट बडब्राह्मणन वोप्पिडियवलिगखिलार्थ ।
केट्टमातुगळन्द चैद्यन
पोट्टेयोळगिम्बिट्ट बाणद-
लिट्ट भीष्मनवगुणगळनेणिसिदने करुणाळु ॥

धनव-संर-क्षिसुव-फणिता-नुणदे-मत्तो-ब्बरिगे-कोडदनु-
दिनदि-नोडुत-सुखिसु-वन्ददि-लकुमि-वल्लभ-नु ।
प्रणत-रनुका-य्दिहनु-निष्का-मनदि-नित्या-नन्द-मयदु-
र्जनर-सेवेय-नोल्ल-नप्रति-मल्ल-जगके-ल्ल ॥ १२-(२५)

धनव संरक्षिसुव फणि ता-
नुणदे मत्तोब्बरिगे कोडदनु-
दिनदि नोडुत सुखिसुवन्ददि लकुमिवल्लभनु ।
प्रणतरनु काय्दिहनु निष्का-
मनदि नित्यानन्दमय दु-
र्जनर सेवेयनोल्लनप्रतिमल्ल जगकेल्ल ॥

जननि-यनुका-णदिह-बालक-नेनेने-नेदुहल-बुतिरे-कत्तले-
मनेयो-ळडगि-द्दवन-नोडुत-नगुत-हरुषद-लि ।
तनय-नम्बिगि-दप्पि-रम्बिसि-कनलि-केयकळे-वन्ते-मधुसू-
दननु-तन्नव-रिद्दे-डेगेब-न्दोदगि-सलहुव-नु ॥ १३-(२६)

जननियनु काणदिह बालक
नेनेनेनेदु हलबुतिरे कत्तले
मनेयोळडगिद्दवन नोडुत नगुत हरुषदलि ।
तनयनम्बिगिदप्पि रम्बिसि
कनलिकेय कळेवन्ते मधुसू-
दननु तन्नवरिद्देडेगे बन्दोदगि सलहुवनु ॥

बाल-कनकल-भाषे-जननियु-केळि-सुखपडु-वन्ते-लकुमी-
लोल-भकुतरु-माडु-तिहसं-स्तुतिगे-हिग्गुव-नु ।
ताळ-तन्नव-रल्लि-माडुव-हेळ-नवहे-दैव-विदुरन-
आल-यदिपा-लुण्डु-कुरुपन-मान-वनेको-ण्ड ॥ १४-(२७)

बालकन कलभाषे जननियु
केळि सुखपडुवन्ते लकुमी
लोल भकुतरु माडुतिह संस्तुतिगे हिग्गुवनु ।
ताळ तन्नवरल्लि माडुव
हेळनव हेदैव विदुरन
आलयदि पालुण्डु कुरुपन मानवने कोण्ड ॥

स्मरिसु-ववरप-राध-गळता-स्मरिस-सकले-ष्टप्र-दायक-
मरळि-तनग-र्पिसलु-कोट्टुद-नन्त-मडिमा-डि ।
परिप-रियलि-न्दुणिसि-सुखसा-गरदि-लोला-डिसुव-मङ्गल-
चरित-चिन्मय-गात्र-लोकप-वित्र-सुचरि-त्र ॥ १५-(२८)

स्मरिसुववरपराधगळ ता
स्मरिस सकलेष्टप्रदायक
मरळि तनगर्पिसलु कोट्टुदनन्त मडि माडि ।
परिपरियलिन्दुणिसि सुखसा-
गरदि लोलाडिसुव मङ्गल
चरित चिन्मयगात्र लोकपवित्र सुचरित्र ॥

एनु-करुणा-निधियो-हरिम-त्तेनु-भक्ता-धीन-नोइ-
न्नेनु-ईतन-लीले-इच्छा-मात्र-दलिजग-व ।
ताने-सृजिसुव-पालि-सुवनि-र्वाण-मोदला-दखिल-लोक-
स्थान-दलिम-त्तवर-निट्टा-नन्द-बडिसुव-नु ॥ १६-(२९)

एनु करुणानिधियो हरि म-
त्तेनु भक्ताधीननो इ-
न्नेनु ईतन लीले इच्छामात्रदलि जगव ।
ताने सृजिसुव पालिसुव नि-
र्वाणमोदलादखिल लोक
स्थानदलि मत्तवरनिट्टानन्द बडिसुवनु ॥

जनप-मेच्चिद-रीव-धनवा-हनवि-भूषण-वसन-भूमिय-
तनुम-नगळि-त्ताद-रिपरु-ण्टेनु-लोकदो-ळु ।
अनव-रतनेने-ववर-नन्ता-सनवे-मोदला-दाल-यदोळि-
ट्टणुग-नन्ददि-अवर-वशना-गुवम-हामहि-म ॥ १७-(३०)

जनप मेच्चिदरीव धन वा-
हन विभूषण वसन भूमिय
तनु मनगळित्तादरिपरुण्टेनु लोकदोळु ।
अनवरत नेनेववरनन्ता-
सनवे मोदलादालयदोळि-
ट्टणुगनन्ददि अवर वशनागुव महामहिम ॥

भुवन-पावन-चरित-पुण्य-श्रवण-कीर्तन-पाप-नाशन-
कविभि-रीडित-कैर-वदल-श्याम-निस्सी-म ।
युवति-वेषदि-हिन्दे-गौरी-धवन-मोहिसि-केडिसि-उळिसिद-
इवन-मायव-गेलुव-नावनु-ईज-गत्त्रय-दि ॥ १८-(३१)

भुवनपावनचरित पुण्य
श्रवणकीर्तन पापनाशन
कविभिरीडित कैरवदलश्याम निस्सीम ।
युवतिवेषदि हिन्दे गौरी-
धवन मोहिसि केडिसि उळिसिद
इवन मायव गेलुवनावनु ई जगत्त्रयदि ॥

पाप-कर्मव-सहिसु-वोडेलकु-मीप-तिगेसम-राद-दिविजर-
नीप-योजभ-वाण्ड-दोळगा-वल्लि-नाका-णे ।
गोप-गुरुविन-मडदि-भृगुनग-चाप-मोदला-दवरु-माड्दम-
हाप-राधग-ळेणिसि-दनेकरु-णास-मुद्रह-रि ॥ १९-(३२)

पापकर्मव सहिसुवोडे लकु-
मीपतिगे समराद दिविजर-
नी पयोजभवाण्डदोळगावल्लि ना काणे ।
गोप गुरुविनमडदि भृगु नग-
चापमोदलादवरु माड्द म-
हापराधगळेणिसिदने करुणासमुद्र हरि ॥

अङ्गु-टाग्रदि-जनिसि-दमरत-रङ्गि-णियुलो-कत्र-यगळघ-
हिङ्गि-सुवळ-व्याकृ-ताका-शान्त-व्यापिसि-द ।
इङ्ग-डलमग-ळोडेय-नङ्गो-पाङ्ग-गळलि-प्पमल-नन्तसु-
मङ्ग-लप्रद-नाम-पावन-माळपु-देनरि-दु ॥ २०-(३३)

अङ्गुटाग्रदि जनिसिदमरत-
रङ्गिणियु लोकत्रयगळघ
हिङ्गिसुवळव्याकृताकाशान्त व्यापिसिद ।
इङ्गडल मगळोडेयनङ्गो-
पाङ्गगळलिप्पमलनन्त सु-
मङ्गलप्रदनाम पावन माळपुदेनरिदु ॥

काम-धेनुसु-कल्प-तरुचि-न्ताम-णिगळम-रेन्द्र-लोकदि-
कामि-तार्थग-ळीवु-वल्लवे-सेवे-माळपरि-गे ।
श्रीमु-कुन्दन-परम-मङ्गल-नाम-नरक-स्थरनु-सलहितु-
पाम-ररप-ण्डितरे-निसिपुरु-षार्थ-कोडुतिहु-दु ॥ २१-(३४)

कामधेनु सुकल्पतरु चि-
न्तामणिगळमरेन्द्र लोकदि
कामितार्थगळीवुवल्लवे सेवेमाळपरिगे ।
श्रीमुकुन्दन परममङ्गल
नाम नरकस्थरनु सलहितु
पामरर पण्डितरेनिसि पुरुषार्थ कोडुतिहुदु ॥

मनदो-ळगेसु-न्दरप-दार्थव-नेनेदु-कोडेकै-गोण्डु-बलुनू-
तनसु-शोभित-गन्ध-सुरसो-पेत-फलरा-शि ।
द्युनदि-निवहग-ळन्ते-कोट्टव-रनुस-दास-न्तैसु-वनुस-
द्रुणव-कद्दव-रघव-कदिवनु-अनघ-नेन्देनि-सि ॥ २२-(३५)

मनदोळगे सुन्दर पदार्थव
नेनेदुकोडे कैगोण्डु बलुनू-
तन सुशोभित गन्ध सुरसोपेत फलराशि ।
द्युनदिनिवहगळन्ते कोट्टव-
रनु सदा सन्तैसुवनु स-
द्रुणव कद्दवरघव कदिवनु अनघनेन्देनिसि ॥

चेत-नाचे-तनवि-लक्षण-नूत-नपदा-र्थगळो-ळगेबलु-
नूत-नतिसु-न्दरके-सुन्दर-रसके-रसरू-प ।
जात-रूपो-दरभ-वाद्यरो-ळात-तप्रति-मप्र-भावध-
रात-लदोळे-म्मोडने-आडुत-लिप्प-नम्म-प्प ॥ २३-(३६)

चेतनाचेतन विलक्षण
नूतन पदार्थगळोळगे बलु
नूतनतिसुन्दरके सुन्दर रसके रसरूप ।
जातरूपोदर भवाद्यरो-
ळाततप्रतिम प्रभाव ध-
रातलदोळेम्मोडने आडुतलिप्प नम्मप्प ॥

तन्दे-ताय्गळु-तम्म-शिशुविगे-बन्द-भयगळ-परिह-रिसिनिज-
मन्दि-रदिबे-डिदुद-नित्ता-दरिसु-वन्दद-लि ।
हिन्दे-मुन्देड-बलदि-ओळहोर-गिन्दि-रेशनु-तन्न-वरने-
न्देन्दु-सलहुव-नाग-सदवो-लेत्त-नोडिद-रु ॥ २४-(३७)

तन्देताय्गळु तम्म शिशुविगे
बन्द भयगळ परिहरिसि निज
मन्दिरदि बेडिदुदनित्तादरिसुवन्ददलि ।
हिन्देमुन्देडबलदि ओळहोर-
गिन्दिरेशनु तन्नवरने-
न्देन्दु सलहुवनागसद वोलेत्त नोडिदरु ॥

ओडल-नेळल-न्ददलि-हरिन-म्मोडने-तिरुगुव-नोन्द-रेक्षण-
बिडदे-बेम्बल-नागि-भक्ता-धीन-नेन्देनि-सि ।
तडेव-दुरितौ-घगळ-कामद-कोडुव-सकले-ष्टगळ-सन्तत-
नडेव-नम्म-न्ददलि-नवसुवि-शेष-सन्महि-म ॥ २५-(३८)

ओडल नेळलन्ददलि हरि न-
म्मोडने तिरुगुवनोन्दरेक्षण
बिडदे बेम्बलनागि भक्ताधीननेन्देनिसि ।
तडेव दुरितौघगळ कामद
कोडुव सकलेष्टगळ सन्तत
नडेव नम्मन्ददलि नवसुविशेष सन्महिम ॥

बिट्टव-रभव-पाश-दिन्दलि-कट्टु-वनुबहु-कठिण-निवशि-
ष्टेष्ट-नेन्दरि-तनव-रतस-द्भक्ति-पाशद-लि -
कट्टु-वरभव-कट्टु-बिडिसुव-सिट्टि-नवनिव-नल्ल-कामद-
कोट्टु-कावनु-सकल-सौख्यव-निहप-रङ्गळ-लि ॥ २६-(३९)

बिट्टवर भवपाशदिन्दलि
कट्टुवनु बहुकठिणनिव शि-
ष्टेष्टनेन्दरितनवरत सद्भक्तिपाशदलि
कट्टुवर भवकट्टु बिडिसुव
सिट्टिनवनिवनल्ल कामद
कोट्टु कावनु सकल सौख्यवनिहपरङ्गळलि ॥

कण्णि-गेवेय-न्ददलि-कैमै-तिण्णि-गोदगुव-तेरदि-पल्गळु-
पण्णु-फलगळ-नगिदु-जिह्वेगे-रसव-नीव-न्ते ।
पुण्य-फलवी-वन्द-दलिनुडि-वेण्णि-नाण्मा-ण्डदोळु-लक्ष्मण-
नण्ण-नोदगुव-भक्त-रवसर-कमर-गणसहि-त ॥ २७-(४०)

कण्णिगेवेयन्ददलि कै मै-
तिण्णिगोदगुवतेरदि पल्गळु
पण्णु फलगळनगिदु जिह्वेगे रसवनीवन्ते ।
पुण्यफलवीवन्ददलि नुडि-
वेण्णिनाण्माण्डदोळु लक्ष्मण-
नण्णनोदगुव भक्तरवसरकमरगणसहित ॥

कोट्टु-दनुकै-गोम्ब-रेक्षण-बिट्ट-गलत-न्नवर-दुरितग-
ळट्टु-वनुदू-रदलि-दुरिता-रण्य-पावक-नु ।
बेट्ट-बेन्निलि-पोरिसि-दवरोळु-सिट्टु-माडिद-नेनु-हरिक-
ङ्केट्ट-सुररिगे-सुधेय-नुणिसिद-मुरिद-नहितर-नु ॥ २८-(४१)

कोट्टुदनु कैगोम्बरेक्षण
बिट्टगल तन्नवर दुरितग-
ळट्टुवनु दूरदलि दुरितारण्यपावकनु ।
बेट्ट बेन्निलि पोरिसिदवरोळु
सिट्टु माडिदनेनु हरि क-
ङ्केट्ट सुररिगे सुधेयनुणिसिद मुरिदनहितरनु ॥

खेद-मोदज-याप-जयमोद-लाद-दोषग-ळिल्ल-चिन्मय-
सादर-दित-न्नङ्घ्रि-कमलव-नम्बि-तुतिसुव-र ।
कादु-कोण्डिह-परम-करुणम-होद-धियुत-न्नवरु-माड्दप-
राध-गळनो-डदले-सलहुव-सर्व-कामद-नु ॥ २९-(४२)

खेद मोद जयापजयमोद-
लाद दोषगळिल्ल चिन्मय
सादरदि तन्नङ्घ्रिकमलव नम्बि तुतिसुवर ।
कादुकोण्डिह परमकरुणम-
होदधियु तन्नवरु माड्दप-
राधगळ नोडदले सलहुव सर्वकामदनु ॥

मीन-कूर्मव-राह-नरप-श्वान-नातुल-शौर्य-वामन-
रेणु-कात्मज-राव-णारिनि-शाच-रध्वं-सि ।
धेनु-कासुर-मथन-त्रिपुरव-हानि-गैसिद-निपुण-कलिमुख-
दान-वरसं-हरिसि-धर्मदि-काय्द-सुजनर-नु ॥ ३०-(४३)

मीन कूर्म वराह नरप-
श्वाननातुलशौर्य वामन
रेणुकात्मज रावणारि निशाचरध्वंसि ।
धेनुकासुरमथन त्रिपुरव
हानिगैसिद निपुण कलिमुख
दानवर संहरिसि धर्मदि काय्द सुजनरनु ॥

श्रीम-नोहर-शमल-वर्जित-कामि-तप्रद-कैर-वदल-
श्याम-शबलश-रण्य-शाश्वत-शर्क-राक्षस-ख ।
साम-सन्नुत-सकल-गुणगण-धाम-त्रिजग-न्नाथ-विट्ठल-
नीम-हियोळव-तरिसि-सलहिद-सकल-सुजनर-न ॥३१-(४४)

श्रीमनोहर शमलवर्जित
कामितप्रद कैरवदल-
श्याम शबल शरण्य शाश्वत शर्कराक्षसख ।
सामसन्नुत सकलगुणगण
धाम त्रिजगन्नाथविट्ठल-
नी महियोळवतरिसि सलहिद सकल सुजनरन ॥

॥ २. करुणासन्धि मुगियितु ॥ (२-४४) ॥ श्रीमध्वेशार्पणमस्तु ॥

मूललक्ष्मीनारायण

मूलदल्लि लीनवागुव महत्तत्त्व सृष्टि, स्थिति,
लयादि अष्ट(८)कार्यगळिगेकारणवाद बाह्यरूपगळु

१. वासुदेव - माया
२. सङ्कर्षण - जया
३. प्रद्युम्न - कृति
४. अनिरुद्ध - शान्ति

अल्लदे लोकशिक्षणार्थ, असुरमोहनार्थ मत्तु सकलजीवर
प्रारब्धकर्मभोगार्थ, व्याप्त, अंश, आवेश, अवतार,
विभूति, कार्यादि अनन्तानन्तरूपगळु

मूलदल्लि लीनवागदे,
असृज्य-सृज्य-मोक्षदल्लि
सकलजीविगळोन्दिगे सदा इरुव
जीवान्तस्थ बिम्बरूप

हरि - रमा

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

पुरुष-रूप-त्रयपु-रातन-पुरुष-पुरुषो-त्तमक्ष-राक्षर-
पुरुष-पूजित-पाद-पूर्णा-नन्द-ज्ञानम-य ।
पुरुष-सूक्तसु-मेय-तत्त-त्पुरुष-हृत्पु-ष्करनि-लयमह-
पुरुष-जाण्ड-न्तरदि-बहिरदि-व्याप्त-निर्लि-प्त ॥ १-(४५)

पुरुषरूपत्रय पुरातन
पुरुष पुरुषोत्तम क्षराक्षर
पुरुषपूजितपाद पूर्णानन्द ज्ञानमय ।
पुरुषसूक्तसुमेय तत्त-
त्पुरुषहृत्पुष्करनिलय मह
पुरुषजाण्डन्तरदि बहिरदि व्याप्त निर्लिप्त ॥

स्त्रीन-पुंसक-पुरुष-भूसलि-लान-लानिल-गगन-मनशशि-
भानु-कालगु-णप्र-कृतियोळ-गोन्दु-तान-ल्ल ।
एनु-इवनम-हाम-हिमेकडे-गाण-रजभव-शक्र-मुखरुनि-
धानि-सलुमा-नवरि-गळवडु-वदेवि-चारिस-लु ॥ २-(४६)

स्त्री नपुंसक पुरुष भू सलि-
लानलानिल गगन मन शशि
भानु काल गुण प्रकृतियोळगोन्दु तानल्ल ।
एनु इवन महामहिमे कडे-
गाणरज भव शक्रमुखरु नि-
धानिसलु मानवरिगळवडुवदे विचारिसलु ॥

गन्ध-रसरू-पस्प-रुशश-ब्दोन्दु-तान-ल्लदर-दरपेस-
रिन्द-करेसुत-जीव-रिगेत-र्पकनु-ताना-गि ।
पोन्दि-कोण्डिह-परम-करुणा-सिन्धु-शाश्वत-मनवे-मोदला-
दिन्द्रि-यगळोळ-गिद्दु-भोगिसु-तिहनु-विषयग-ळ ॥ ३-(४७)

गन्ध रस रूप स्परुश श-
ब्दोन्दु तानल्लदरदर पेस-
रिन्द करेसुत जीवरिगे तर्पकनु तानागि ।
पोन्दिकोण्डिह परमकरुणा
सिन्धु शाश्वत मनवे मोदला-
दिन्द्रियगळोळगिद्दु भोगिसुतिहनु विषयगळ ॥

श्रवण-नयन-घ्राण-त्वग्रस-निवुग-ळलिवा-क्पाणि-पादा-
द्यवय-वगळलि-तद्गु-णगळलि-तत्प-तिगळोळ-गे ।
प्रवित-तनुता-नागि-कृतिपति-विविध-कर्मव-माडि-माडिसि-
भवके-कारण-नागि-तिरुगिसु-तिहनु-तिळिसद-ले ॥ ४-(४८)

श्रवण नयन घ्राण त्वग्रस-
निवुगळलि वाक्पाणि पादा-
द्यवयवगळलि तद्गुणगळलि तत्पतिगळोळगे ।
प्रविततनु तानागि कृतिपति
विविधकर्मव माडि माडिसि
भवके कारणनागि तिरुगिसुतिहनु तिळिसदले ॥

गुणिगु-णगळोळ-गिद्दुगु-णिगुण-नेनिसु-वनुगुण-बद्ध-नागदे-
गुणज-पुण्या-पुण्य-फलब्र-ह्मादि-चेतन-के ।
उणिसु-तवरोळ-गिद्दु-वृजिना-र्दनचि-दान-न्दैक-देहनु-
कोनेगे-सचरा-चरज-गद्धुकु-येनिप-नव्यय-नु ॥ ५-(४९)

गुणि गुणगळोळगिद्दु गुणि गुण-
नेनिसुवनु गुणबद्धनागदे
गुणज पुण्यापुण्यफल ब्रह्मादि चेतनके ।
उणिसुतवरोळगिद्दु वृजिना-
र्दन चिदानन्दैकदेहनु
कोनेगे सचराचर जगद्धुकुयेनिपनव्ययनु ॥

विद्ये-ताने-न्देनिसि-कोम्बनि-रुद्ध-देवनु-सर्व-जीवर-
बुद्धि-योळुनेले-सिद्दु-कृतिपति-बुद्धि-येनिसुव-नु ।
सिद्धि-येनिसुव-सङ्क-रुषणप्र-सिद्ध-नामक-वासु-देवन-
वद्य-रूपच-तुष्ट-यगळरि-तवने-पण्डित-नु ॥ ६-(५०)

विद्ये तानेन्देनिसिकोम्बनि-
रुद्धदेवनु सर्वजीवर
बुद्धियोळु नेलेसिद्दु कृतिपति बुद्धियेनिसुवनु ।
सिद्धियेनिसुव सङ्करुषण प्र-
सिद्धनामक वासुदेवन-
वद्य रूपचतुष्टयगळरितवने पण्डितनु ॥

तनुच-तुष्टय-गळोळु-नारा-यणनु-हृत्कम-लाख्य-सिंहा-
सनदो-ळनिरु-द्धादि-रूपग-ळिन्द-शोभिसु-त ।
तनगे-ताने-सेव्य-सेवक-नेनिसि-सेवा-सक्त-सुररोळ-
गनव-रतनेले-सिद्दु-सेवेय-कोम्ब-नवर-न्ते ॥ ७-(५१)

तनुचतुष्टयगळोळु नारा-
यणनु हृत्कमलाख्यसिंहा-
सनदोळनिरुद्धादि रूपगळिन्द शोभिसुत ।
तनगे ताने सेव्य सेवक-
नेनिसि सेवासक्त सुररोळ-
गनवरत नेलेसिद्दु सेवेय कोम्बनवरन्ते ॥

जाग-रस्व-प्रङ्ग-ळोळुवर-भोगि-शयनब-हुप्र-कारवि-
भाग-गैसिनि-रंश-जीवर-चिच्छ-रीरव-नु ।
भोग-वित्तुसु-षुप्ति-कालदि-साग-रवनदि-कूडु-वन्तेवि-
योग-रहितनु-अंश-गळने-कत्र-वैदिसु-व ॥ ८-(५२)

जागर स्वप्नङ्गळोळु वर
भोगिशयन बहुप्रकार वि-
भागगैसि निरंशजीवर चिच्छरीरवनु ।
भोगवित्तु सुषुप्तिकालदि
सागरव नदिकूडुवन्ते वि-
योगरहितनु अंशगळनेकत्रवैदिसुव ॥

भार्य-रिन्दोड-गूडि-कारण-कार्य-वस्तुग-ळल्लि-प्रेरक-
प्रेर्य-रूपग-ळिन्द-पटत-न्तुगळ-वोलि-द्दु ।
सूर्य-किरणग-ळन्ते-तन्नय-वीर्य-दिन्दले-कोडुत-कोळुतिह-
नार्य-रिगेई-तनवि-हारवु-गोच-रिपुदे-नु ॥ ९-(५३)

भार्यरिन्दोडगूडि कारण
कार्यवस्तुगळल्लि प्रेरक
प्रेर्य रूपगळिन्द पटतन्तुगळ वोलिद्दु ।
सूर्यकिरणगळन्ते तन्नय
वीर्यदिन्दले कोडुत कोळुतिह-
नार्यरिगे ईतन विहारवु गोचरिपुदेनु ॥

जनक-तन्ना-त्मजगे-वरभू-षणदु-कूलव-तोडिसि-ताव-
न्दनेय-कैगोळु-तवन-हरसुत-हरुष-बडुव-न्ते ।
वनरु-हेक्षण-पूज्य-पूजक-नेनेसि-पूजा-साध-नपदा-
र्थनुत-नगेता-नागि-फलगळ-नीव-भजकरि-गे ॥ १०-(५४)

जनक तन्नात्मजगे वरभू-
षण दुकूलव तोडिसि ता व-
न्दनेय कैगोळुतवन हरसुत हरुषबडुवन्ते ।
वनरुहेक्षण पूज्य पूजक-
नेनेसि पूजासाधनपदा-
र्थन् तनगे तानागि फलगळनीव भजकरिगे ॥

तन्दे-बहुस-म्भ्रमदि-तन्नय-बन्धु-बळगव-नेरेहि-मदुवेय-
नन्द-नगेता-माडि-मनेयोळ-गिडुव-तेरन-न्ते ।
इन्दि-राधव-तन्न-यिच्छेग-ळिन्द-गुणगळ-चेत-नकेस-
म्बन्ध-गैसिसु-खासु-खात्मक-संसृ-तियोळिडु-व ॥ ११-(५५)

तन्दे बहुसम्भ्रमदि तन्नय
बन्धुबळगव नेरेहि मदुवेय
नन्दनगे ता माडि मनेयोळगिडुव तेरनन्ते ।
इन्दिराधव तन्न यिच्छेग-
ळिन्द गुणगळ चेतनके स-
म्बन्धगैसि सुखासुखात्मक संसृतियोळिडुव ॥

तृणकृ-तालय-दोळगे-पोगेस-न्दणिसि-प्रतिछि-द्रदलि-पोरम-
ट्टनल-निरवनु-तोरि-तोरद-लिप्प-तेरन-न्ते ।
वनज-जाण्डदो-ळखिल-जीवर-तनुवि-नोळहोर-गिद्दु-काणिस-
दनिमे-षेशनु-सकल-कर्मव-माळप-नवर-न्ते ॥ १२-(५६)

तृणकृतालयदोळगे पोगे स-
न्दणिसि प्रतिछिद्रदलि पोरम-
ट्टनलनिरवनु तोरि तोरदलिप्प तेरनन्ते ।
वनजजाण्डदोळखिल जीवर
तनुविनोळहोरगिद्दु काणिस-
दनिमेषेशनु सकलकर्मव माळपनवरन्ते ॥

पाद-पगळडि-गेरेये-सलिलवु-तोदु-कोम्बेग-ळुब्बि-पुष्प-
स्वादु-फलवी-वन्द-दलिस-र्वेश्व-रनुजन-रा-
राध-नेयकै-गोण्डु-ब्रह्मभ-वादि-गळना-मदलि-फलवि-
त्ताद-रिसुवनु-तन्न-महिमेय-तोर-गोडजग-के ॥ १३-(५७)

पादपगळडिगेरेये सलिलवु
तोदु कोम्बेगळुब्बि पुष्प
स्वादुफलवीवन्ददलि सर्वेश्वरनु जनरा-
राधनेय कैगोण्डु ब्रह्म भ-
वादिगळ नामदलि फलवि-
त्तादरिसुवनु तन्न महिमेय तोरगोड जगके ॥

श्रुतित-तिगळिगे-गोच-रिसद-प्रतिम-जान-न्दात्म-नच्युत-
वितत-विश्वा-धार-विद्या-धीश-विधिजन-क ।
प्रतिदि-वसचे-तनरो-ळगेप्रा-कृतपु-रुषन-न्ददलि-सञ्चरि-
सुतनि-यम्यनि-याम-कनुता-नागि-सन्तै-प ॥ १४-(५८)

श्रुतिततिगळिगे गोचरिसद-
प्रतिमजानन्दात्मनच्युत
वितत विश्वाधार विद्याधीश विधिजनक ।
प्रतिदिवस चेतनरोळगे प्रा-
कृत पुरुषनन्ददलि सञ्चरि-
सुत नियम्य नियामकनु तानागि सन्तैप ॥

मनवि-षयदोळ-गिरिसि-विषयव-मनदो-ळगेनेले-गोळिसि- बलुनू-
तनवु-सुसमी-चीन-विदुपा-देय-वेन्दरु-पि ।
कनसि-लादरु-तन्न-पादद-नेनव-नीयदे-सर्व-रोळगि-
द्दनुभ-विसुवनु-स्थूल-विषयव-विश्व-नेन्देनि-सि ॥ १५-(५९)

मन विषयदोळगिरिसि विषयव-
मनदोळगे नेलेगोळिसि बलुनू-
तनवु सुसमीचीनविदुपादेयवेन्दरुपि ।
कनसिलादरु तन्न पादद
नेनवनीयदे सर्वरोळगि-
द्दनुभविसुवनु स्थूलविषयव विश्वनेन्देनिसि ॥

तोद-कनुता-नागि-मनमोद-लाद-करणदो-ळिद्दु-विषयव-
नैदु-वनुनिज-पूर्ण-सुखमय-ग्राह्य-ग्राहक-नु ।
वेद-वेद्यनु-तिळिय-दवनो-पादि-भुञ्जिसु-तेल्ल-रोळगा-
ह्लाद-पडुवनु-भक्त-वत्सल-भाग्य-सम्प-न्न ॥ १६-(६०)

तोदकनु तानागि मनमोद-
लाद करणदोळिद्दु विषयव-
नैदुवनु निजपूर्ण सुखमय ग्राह्य ग्राहकनु ।
वेदवेद्यनु तिळियदवनो-
पादि भुञ्जिसुतेल्लरोळगा-
ह्लाद पडुवनु भक्तवत्सल भाग्यसम्पन्न ॥

नित्य-निगमा-तीत-निर्गुण-भृत्य-वत्सल-भयवि-नाशन-
सत्य-कामश-रण्य-शामल-कोम-लाङ्गसु-खि ।
मत्त-नन्ददि-मर्त्य-रोळहोर-गेत्त-नोडलु-सुत्तु-तिप्पनु-
अत्य-धिकस-न्तृप्त-त्रिजग-द्वन्द्याप्त-परमा-प्त ॥ १७-(६१)

नित्य निगमातीत निर्गुण
भृत्यवत्सल भयविनाशन
सत्यकाम शरण्य शामल कोमलाङ्ग सुखि ।
मत्तनन्ददि मर्त्यरोळहोर-
गेत्तनोडलु सुत्तुतिप्पनु
अत्यधिकसन्तृप्त त्रिजगद्वन्द्याप्त परमाप्त ॥

पविह-रिन्मणि-विद्रु-मदस-च्छविग-ळन्ददि-राजि-सुतमा-
धवनि-रन्तर-देव-दानव-मान-वरोळि-द्दु ।
त्रिविध-गुणक-र्मस्व-भावव-पवन-मुखदे-वान्त-रात्मक-
दिवस-दिवसदि-व्यक्त-माडुत-अवरो-ळिद्दुणि-प ॥ १८-(६२)

पवि हरिन्मणि विद्रुमद स-
च्छविगळन्ददि राजिसुत मा-
धव निरन्तर देव दानव मानवरोळिद्दु ।
त्रिविधगुण कर्म स्वभावव
पवनमुख देवान्तरात्मक
दिवसदिवसदि व्यक्तमाडुत अवरोळिद्दुणिप ॥

अणुम-हत्तिनो-ळिप्प-घनपर-मणुवि-नोळगड-गिसुव-सूक्ष्मव-
मुणुगि-सुवते-लिसुव-स्थूलग-ळिवन-मायवि-दु ।
दनुज-रक्कस-रेल्ल-रिवनोळु-मुनिदु-माडुवु-देनु-लूखल-
वनिके-गळुधा-न्यगळ-हणिव-न्ददलि-संहरि-प ॥ १९-(६३)

अणु महत्तिनोळिप्प घन पर-
मणुविनोळगडगिसुव सूक्ष्मव
मुणुगिसुव तेलिसुव स्थूलगळिवन मायविदु ।
दनुजरक्कसरेल्लरिवनोळु
मुनिदु माडुवुदेनुलूखल
वनिकेगळु धान्यगळ हणिवन्ददलि संहरिप ॥

देव-मानव-दान-वरुये-न्दीवि-धदिआ-वाग-इप्परु-
मूव-रोळगिव-गिल्ल-स्नेहो-दासि-नद्वे-ष ।
जीव-रधिका-रानु-सारदि-ईव-सुखसं-सार-दुःखव-
ताउ-णदेअव-रवरि-गुणिसुव-निर्ग-ताशन-नु ॥ २०-(६४)

देव मानव दानवरु ये-
न्दीविधदि आवागइप्परु
मूवरोळगिवगिल्ल स्नेहोदासिन द्वेष ।
जीवरधिकारानुसारद-
लीव सुख संसार दुःखव
ताउणदे अवरवरिगुणिसुव निर्गताशननु ॥

एल्लि-केळिद-रल्लि-नोडिद-रल्लि-बेडिद-रल्लि-नीडिद-
रल्लि-ओडिद-रल्लि-आडिद-रल्ले-इरुतिह-नु ।
बल्लि-दरिगति-बल्लि-दनुसरि-यिल्ल-इवगा-वल्लि-नोडलु-
खुल्ल-मानव-रोल्ल-नप्रति-मल्ल-जगके-ल्ल ॥ २१-(६५)

एल्लि केळिदरल्लि नोडिद-
रल्लि बेडिदरल्लि नीडिद-
रल्लि ओडिदरल्लि आडिदरल्ले इरुतिहनु ।
बल्लिदरिगतिबल्लिदनु सरि-
यिल्ल इवगावल्लि नोडलु
खुल्ल मानवरोल्लनप्रतिमल्ल जगकेल्ल ॥

तप्त-लोहवु-नोळप-जनरिगे-सप्त-जिह्वन-तेरदि-तोर्पुदु-
लुप्त-पावक-लोह-काम्बुदु-पूर्व-दोपा-दि ।
सप्त-वाहन-निखिल-जनरो-ळव्याप्त-नादुद-रिन्द-सर्वरु-
आप्त-रागिह-रेल्ल-कालदि-हितव-कैगो-ण्डु ॥ २२-(६६)

तप्तलोहवु नोळप जनरिगे
सप्तजिह्वन तेरदि तोर्पुदु
लुप्तपावक लोह काम्बुदु पूर्वदोपादि ।
सप्तवाहन निखिल जनरो-
ळव्याप्तनादुदरिन्द सर्वरु
आप्तरागिहरेल्लकालदि हितव कैगोण्डु ॥

वारि-दनुमळे-गरेये-बेळेदिह-भूरु-हङ्गळ-चित्र-फलरस-
बेरे-बेरि-प्पन्ते-बहुविध-जीव-रोळगि-दु ।
मार-मणनव-रवर-योग्यते-मीर-दलेगुण-कर्म-गळअनु-
सार-नडेसुव-देव-निगे-वैषम्य-वेल्लिहु-दो ॥ २३-(६७)

वारिदनु मळेगरेये बेळेदिह
भूरुहङ्गळ चित्रफलरस
बेरे बेरिप्पन्ते बहुविध जीवरोळगिद्दु ।
मारमणनवरवर योग्यते
मीरदले गुण कर्मगळ अनु-
सार नडेसुव देवनिगे वैषम्यवेल्लिहुदो ॥

वारि-जाप्तन-किरण-मणिगळ-सेरि-तत्त-द्वर्ण-गळनुवि-
कार-गैसदे-नोळप-रिगेक-ङ्गोळिसु-वन्दद-लि ।
मार-मणलो-कत्र-यदोळिह-मूरु-विधजी-वरोळ-गिद्दुवि-
हार-माडुव-नवर-योग्यते-कर्म-वनुसरि-सि २४-(६८)

वारिजाप्तन किरण मणिगळ
सेरि तत्तद्वर्णगळनु वि-
कारगैसदे नोळपरिगे कङ्गोळिसुवन्ददलि ।
मारमण लोकत्रयदोळिह
मूरुविध जीवरोळगिद्दु वि-
हार माडुवनवर योग्यते कर्मवनुसरिसि ॥

जलव-नपहरि-सुवघ-ळिगेब-ट्टलनु-ळिदुजै-घण्टे-कैपिडि-
देळेदु-होडेव-न्ददलि-सन्तत-कर्तृ-ताना-गि ।
हलध-रानुज-पुण्य-पापद-फलग-ळनुदे-वासु-ररगण-
दोळुवि-भागव-माडि-उणिसुत-साक्षि-यागि-प्प ॥ २५-(६९)

जलवनपहरिसुव घळिगे ब-
ट्टलनुळिदु जैघण्टे कैपिडि-
देळेदु होडेवन्ददलि सन्तत कर्तृ तानागि ।
हलधरानुज पुण्य पापद
फलगळनु देवासुरर गण-
दोळु विभागव माडि उणिसुत साक्षियागिप्प ॥

पोन्दि-कोण्डिह-सर्व-रोळुस-म्बन्ध-वागदे-सकल-कर्मव-
रन्द-दलिता-माडि-माडिसि-तत्फ-लगळुण-दे ।
कुन्द-देअणुम-हत्ते-निपघट-मन्दि-रदिस-र्वत्र-तुम्बिह-
बान्द-ळदतेर-नन्ते-इरुति-प्पनुर-मारम-ण ॥ २६-(७०)

पोन्दिकोण्डिह सर्वरोळु स-
म्बन्धवागदे सकलकर्मव-
रन्ददलि ता माडि माडिसि तत्फलगळुणदे ।
कुन्ददे अणु महत्तेनिप घट
मन्दिरदि सर्वत्र तुम्बिह
बान्दळद तेरनन्ते इरुतिप्पनु रमारमण ॥

काद-कब्बिण-हिडिदु-बडियलु-वेद-नेयुलो-हगळि-गल्लदे-
आदु-देनै-अनल-गाव्यथे-एन-माडिद-रु ।
आदि-देवनु-सर्व-जीवर-कादु-कोण्डिह-नोळहो-रगेदुः-
खादि-गळुस-म्बन्ध-वागुव-वेनु-चिन्मय-गे ॥ २७-(७१)

कादकब्बिण हिडिदु बडियलु
वेदनेयु लोहगळिगल्लदे
आदुदेनै अनलगाव्यथे एनमाडिदरु ।
आदिदेवनु सर्वजीवर
कादुकोण्डिहनोळहोरगे दुःः-
खादिगळु सम्बन्धवागुववेनु चिन्मयगे ॥

मळल-मनेगळ-माडि-मक्कळु-केलवु-कालदो-ळाडि-मोददि-
तुळिदु-केडिसुव-तेरदि-लकुमी-रमण-लोकग-ळ-
हलवु-बगेयलि-निर्मि-सुवनि-श्वलनु-ताना-गिदु-सलहुव-
एलरु-णियवो-ल्लुङ्गु-ववगे-ल्लिहुदो-सुखदुः-ख ॥ २८-(७२)

मळल मनेगळमाडि मक्कळु
केलवु कालदोळाडि मोददि
तुळिदु केडिसुव तेरदि लकुमीरमण लोकगळ
हलवु बगेयलि निर्मिसुव, नि-
श्वलनु तानागिदु सलहुव
एलरुणिय वोल्लुङ्गुववगेल्लिहुदो सुख दुःख ॥

वेष-भाषेग-ळिन्द-जनरसु-तोष-गैसुव-नटपु-रुषनो-
ल्दोष-दूरनु-लोक-दोळुबहु-रूप-मातिन-लि ।
तोषि-सुवनव-रवर-मनदभि-लाषे-गळपू-रैसु-तनुदिन-
पोषि-सुवपू-तात्म-पूर्णा-नन्द-ज्ञानम-य ॥ २९-(७३)

वेष भाषेगळिन्द जनर सु-
तोषगैसुव नटपुरुषनो-
ल्दोषदूरनु लोकदोळु बहुरूप मातिनलि ।
तोषिसुवनवरवर मनदभि-
लाषेगळ पूरैसुतनुदिन
पोषिसुव पूतात्म पूर्णानन्द ज्ञानमय ॥

अधम-मानव-नोर्व-मन्त्रौ-षधग-ळनुता-नरितु-पावक-
उदक-गळस-म्बन्ध-विल्लदे-इप्प-नदरोळ-गे ।
पदुम-जाण्डो-दरनु-सर्वर-हृदय-दोळगिरे-काल-गुणक-
र्मदक-लुषस-म्बन्ध-वागुव-देनि-रञ्जन-गे ॥ ३०-(७४)

अधम मानवनोर्व मन्त्रौ-
षधगळनु तानरितु पावक
उदकगळ सम्बन्धविल्लदे इप्पनदरोळगे ।
पदुमजाण्डोदरनु सर्वर
हृदयदोळगिरे काल गुण क-
र्मद कलुष सम्बन्धवागुवदे निरञ्जनगे ॥

ओन्दु-गुणदोळ-नन्त-गुणगळु-ओन्दु-रूपदो-ळिहवु-लोकग-
ळोन्दु-रूपदि-धरिसि-तत्त-द्दर्थ-दोळहोर-गे ।
बान्द-ळदवो-लिद्दु-बहुपेस-रिन्द-करेसुत-पूर्ण–ज्ञाना-
नन्द-मयपरि-परिवि-हारव-माडि-माडिसु-व ॥ ३१-(७५)

ओन्दु गुणदोळनन्तगुणगळु
ओन्दु रूपदोळिहवु लोकग-
ळोन्दु रूपदि धरिसि तत्तद्दर्थदोळहोरगे ।
बान्दळद वोलिद्दु बहु पेस-
रिन्द करेसुत पूर्णज्ञाना-
नन्दमय परिपरि विहारव माडि माडिसुव ॥

एल्ल-रोळुता-निप्प-तन्नोळ-गेल्ल-रनुधरि-सिहनु-अप्रति-
मल्ल-मन्मथ-जनक-जगदा-द्यन्त-मध्यग-ळ -
बल्ल-बहुगुण-भरित-दानव-दल्ल-णजग-न्नाथ-विट्ठल-
सोल्ल-नालिसि-स्तम्भ-दिन्दलि-बन्द-भकुतनि-गे ॥३२-(७६)

एल्लरोळु तानिप्प तन्नोळ-
गेल्लरनु धरिसिहनु अप्रति-
मल्ल मन्मथजनक जगदाद्यन्त मध्यगळ
बल्ल, बहुगुणभरित दानव
दल्लण जगन्नाथविट्ठल-
सोल्लनालिसि स्तम्भदिन्दलि बन्द भकुतनिगे ॥

॥ व्याप्तिसन्धि मुगियितु ॥ (३-७६)
॥ श्री मध्वेशार्पणमस्तु ॥

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

वनज-जाण्डदो-ळुळ्ळ-खिलचे-तनरु-भुञ्जिप-चतुर-विधभो-
जनप-दार्थदि-चतुर-विधरस-रूप-ताना-गि ।
मनके-बन्दुद-नुण्डु-णिसिसं-हनन-कुपचय-करण-कान-
न्दनिमे-षरिगा-त्मप्र-दर्शन-सुखव-नीवह-रि ॥ १-(७७)

वनजजाण्डदोळुळ्ळखिल चे-
तनरु भुञ्जिप चतुरविध भो-
जनपदार्थदि चतुरविध रसरूप तानागि ।
मनके बन्दुदनुण्डुणिसि सं-
हननकुपचय करणकान-
न्दनिमेषरिगात्मप्रदर्शन सुखवनीव हरि ॥

नीड-दन्दद-लिप्प-लिङ्गके-षोड-शात्मक-रसवि-भागव-
माडि-षोडश-कलेग-ळिगेउप-चयग–ळनेकोडु-त ।
क्रोड-नेप्प-त्तेरडु-साविर-नाडि-गतदे-वतेग-ळोळगि-
द्दाडु-तान-न्दात्म-चरिसुव-लोक-दोळुता-नु ॥ २-(७८)

नीडदन्ददलिप्प लिङ्गके
षोडशात्मक रसविभागव
माडि षोडशकलेगळिगे उपचयगळने कोडुत ।
क्रोडनेप्पत्तेरडुसाविर
नाडिगत देवतेगळोळगि-
द्दाडुतानन्दात्म चरिसुव लोकदोळु तानु ॥

वारि-वाच्यनु-वारि-योळगि-द्दारु-रसवे-न्देनिसि-मूव-
त्तारु-साविर-स्त्रीपु-रुषना-डियोळु-तद्रूप -
धार-कनुता-नागि-सर्वश-रीरि-गळलिअ-हश्च-रात्रिवि-
हार-माळपनु-बृहति-येम्बसु-नाम-दिंकरे-सि ॥ ३-(७९)

वारिवाच्यनु वारियोळगि-
द्दारुरसवेन्देनिसि मूव-
त्तारुसाविर स्त्री पुरुषनाडियोळु तद्रूप
धारकनु तानागि सर्वश-
रीरिगळलि अहश्चरात्रि वि-
हारमाळपनु बृहतियेम्ब सुनामदिं करेसि ॥

आरु-रसस-त्वादि-भेददि-आरु-मूरा-गिहवु-सारा-
सार-नीता-नीत-खण्डा-खण्ड-चित्प्रचु-र ।
ईर-धिकए-प्पत्तु-साविर- मार-मणनर-साख्य-रूपश-
रीर-दलिभो-ज्यसुप-दार्थदि-तिळिदु-भुञ्जिपु-दु ॥ ४-(८०)

आरु रस सत्वादि भेददि
आरु मूरागिहवु सारा-
सार नीतानीत खण्डाखण्ड चित्प्रचुर ।
ईरधिकएप्पत्तुसाविर
मारमणन रसाख्यरूप श-
रीरदलि भोज्य सुपदार्थदि तिळिदु भुञ्जिपुदु ॥

क्षीरगत रसरूपगळु मु-
न्नूरुमेलैवत्तुनालकु
चारु घृतगत रूपगळु इप्पत्तरोम्भत्तु ।
सार गुडदोळगैदुसाविर
नूरओन्दु सुरूप द्विसह-
स्रारेरडु शत पञ्चविंशति रूप फलगळलि ॥

क्षीर-गतरस-रूप-गळुमु-न्नूरु-मेलै-वत्तु-नालकु-
चारु-घृतगत-रूप-गळुइ-प्पत्त-रोम्भ-त्तु ।
सार-गुडदोळ-गैदु-साविर-नूर-ओन्दुसु-रूप-द्विसह-
स्रारे-रडुशत-पञ्च-विंशति-रूप-फलगळ-लि ॥ ५-(८१)

विशद स्थिर तीक्षणवु निरहर
रसगळोळु मूरैदुसाविर
त्रिशतनव रूपगळ चिन्तिसि भुञ्जिपुदु विषय ।
श्वसन तत्त्वेशरोळगिद्दी
पेसरिनिन्दलि करेसुवनु धे-
निसिदरीपरि मनके पोळेवनु बल्ल विबुधरिगे ॥

विशद-स्थिरती-क्षणवु-निरहर-रसग-ळोळुमू-रैदु-साविर-
त्रिशत-नवरू-पगळ-चिन्तिसि-भुञ्जि-पुदुविष-य ।
श्वसन-तत्त्वे-शरोळ-गिद्दी-पेसरि-निन्दलि-करेसु-वनुधे-
निसिद-रीपरि-मनके-पोळेवनु-बल्ल-विबुधरि-गे ॥ ६-(८२)

कपिल नरहरि भार्गव त्रय
वपुष नेत्रदि नासिकास्यदि
शफरनामक जिह्वेयलि दन्तदलि हंसाख्य ।
त्रिपदिपाद्य हयास्य वाच्यदो-
ळपरिमितसुखपूर्ण सन्तत
कृपणरोळगिद्दवरवर रसस्वीकरिसि कोडुव ॥

कपिल-नरहरि-भार्ग-वत्रय-वपुष-नेत्रदि-नासि-कास्यदि-
शफर-नामक-जिह्वे-यलिद-न्तदलि-हंसा-ख्य ।
त्रिपदि-पाद्यह-यास्य-वाच्यदो-ळपरि-मितसुख-पूर्ण-सन्तत-
कृपण-रोळगि-द्दवर-वररस-स्वीक-रिसिकोडु-व ॥ ७-(८३)

निरुपमानन्दात्महरि स-
ङ्करुषण प्रद्युम्न रूपद-
लिरुतिहनु भोक्तृगळोळगे तच्छक्तिदनु एनिसि ।
करेसुवनु नारायणनिरु-
द्धेरडु नामदि भोज्यवस्तुग
निरुत तर्पकनागि तृप्तियनीव चेतनके ॥

निरुप-मान-न्दात्म-हरिस-ङ्करुष-णप्र-द्युम्न-रूपद-
लिरुति-हनुभो-क्तृगळो-ळगेत-च्छक्ति-दनुएनि-सि ।
करेसु-वनुना-राय-णनिरु-द्धेरडु-नामदि-भोज्य-वस्तुग-
निरुत-तर्पक-नागि-तृप्तिय-नीव-चेतन-के ॥ ८-(८४)

वासुदेवनु ओळहोरगे अव-
काशकोडुव नभस्थनागि र-
मासमेत विहारमाळपनु पञ्चरूपदलि ।
आसरोरुहसम्भवाभव
वासवादि समस्तचेतन
राशियोळगिहनेन्दरितवनु अवने कोविदनु ॥

वासु-देवनु-ओळहो-रगेअव-काश-कोडुवन-भस्थ-नागिर-
मास-मेतवि-हार-माळपनु-पञ्च-रूपद-लि ।
आस-रोरुह-सम्भ-वाभव-वास-वादिस-मस्त-चेतन-
राशि-योळगिह-नेन्द-रितवनु-अवने-कोविद-नु ॥ ९-(८५)

वासु-देवनु-अन्न-दोळुना-नासु-भक्ष्यदि-सङ्ग-रुषणकृ-
तीश-परमा-न्नदोळु-घृतदोळ-गिप्प-ननिरु-द्ध ।
आसु-पर्णां-सगनु-सूपदि-वास-वानुज-शाक-दोळुमू-
लेश-नारा-यणनु-सर्व-त्रदलि-नेलेसिह-नु ॥ १०-(८६)

वासुदेवनु अन्नदोळु ना-
नासुभक्ष्यदि सङ्गरुषण कृ-
तीश परमान्नदोळु घृतदोळगिप्पननिरुद्ध ।
आ सुपर्णांसगनु सूपदि
वासवानुज शाकदोळु मू-
लेशनारायणनु सर्वत्रदलि नेलेसिहनु ॥

अगणि-तात्मसु-भोज-नपदा-र्थगळ-ओळगेअ-खण्ड-नोन्दो-
न्दगळि-नोळन-न्तांश-दिन्दलि-खण्ड-नेन्देनि-सि ।
जगदि-जीवर-तृप्ति-पडिसुव-स्वगत-भेदवि-वर्जि-तनइ-
ब्बगेय-रूपव-नरितु-भुञ्जिसि-अर्पि-सवनडि-गे ॥ ११-(८७)

अगणितात्म सुभोजन पदा-
र्थगळ ओळगे अखण्डनोन्दो-
न्दगळिनोळनन्तांशदिन्दलि खण्डनेन्देनिसि ।
जगदि जीवर तृप्तिपडिसुव
स्वगतभेदविवर्जितन इ-
ब्बगेय रूपवनरितु भुञ्जिसि अर्पिसवनडिगे ॥

ईप-रियोळरि-तुम्ब-नरनि-त्योप-वासिनि-राम-यनुनि-
ष्पापि-नित्यम-हत्सु-यज्ञग-ळाच-रिसिदव-नु ।
पोपु-दिप्पुदु-बप्पु-देल्लर-माप-तिगधि-ष्ठान-वेनलुकृ-
पाप-योनिधि-मात-नालिसु-वनुज-ननिय-न्ते ॥ १२-(८८)

ईपरियोळरितुम्ब नर नि-
त्योपवासि निरामयनु नि-
ष्पापि नित्य महत्सुयज्ञगळाचरिसिदवनु ।
पोपुदिप्पुदु बप्पुदेल्ल र-
मापतिगधिष्ठानवेनलु कृ-
पापयोनिधि मातनालिसुवनु जननियन्ते ॥

आरे-रडुसा-विरद-मेलि-न्नूर-ऐव-त्तोन्दु-रूपदि-
सार-भोक्तनि-रुध्ध-देवनु-अन्न-मयनेनि-प ।
मूरे-रडुवरे-सावि-रदमे-ल्मूर-धिकना-ल्वत्तु-रूपदि-
तोरु-तिह्प्र-द्युम्न-जगदोळु-प्राण-मयना-गि ॥ १३-(८९)

आरेरडुसाविरदमेलि-
न्नूरऐवत्तोन्दु रूपदि
सारभोक्तनिरुध्धदेवनु अन्नमयनेनिप ।
मूरेरडुवरेसाविरदमे-
ल्मूरधिकनाल्वत्तु रूपदि
तोरुतिह प्रद्युम्न जगदोळु प्राणमयनागि ॥

एरडु-कोशग-ळोळहो-रगेस-ङ्करुष-णैदुसु-लक्ष-दरव-
त्तेरडु-साविर-देळ-धिकशत-रूप-गळधरि-सि ।
करेसि-कोम्बम-नोम-यनुये-न्दरवि-दूरनु-ईरे-रडुसा-
विरद-मुन्नू-राद-मेल्ना-ल्कधिक-एप्प-त्तु- १४-(९०)

एरडु कोशगळोळहोरगे स-
ङ्करुषणैदु सुलक्षदरव-
त्तेरडुसाविरदेळधिकशत रूपगळ धरिसि ।
करेसिकोम्ब मनोमयनुये-
न्दरविदूरनु ईरेरडुसा-
विरदमुन्नूरादमेल्नाल्कधिक एप्पत्तु

रूप-दिंवि-ज्ञान-मयने-म्बीपे-सरिनिं-वासु-देवनु-
व्यापि-सिहमह-दादि-तत्त्वदि-तत्प-तिगळोळ-गे ।
ईपु-रुषना-मकन-शुभस्वे-दाप-ळेनिपर-माम्ब-ताब्र-
ह्मप-रोक्षिग-ळाद-वरलि-ङ्गाङ्ग-केडिसुव-ळु ॥ १५-(९१)

रूपदिं विज्ञानमयने-
म्बीपेसरिनिं वासुदेवनु
व्यापिसिह महदादि तत्त्वदि तत्पतिगळोळगे ।
ई पुरुषनामकन शुभस्वे-
दापळेनिप रमाम्ब ता ब्र-
ह्मापरोक्षिगळादवर लिङ्गाङ्ग केडिसुवळु ॥

ऐदु-साविर-नूर-इप्प-त्तैदु-नारा-यणन-रूपव-
ताध-रिसिको-ण्डनुदि-नदिआ-नन्द-मयनेनि-प ।
ऐदु-लक्षद-मेले-एम्भ-त्तैदु-साविर-नाल्कु-शतगळ-
लैदु-कोशा-त्मकवि-रिञ्च्या-ण्डदोळु-तुम्बिह-नु ॥ १६-(९२)

ऐदुसाविरनूर इप्प-
त्तैदु नारायणन रूपव
ता धरिसिकोण्डनुदिनदि आनन्दमयनेनिप ।
ऐदुलक्षदमेले एम्भ-
त्तैदुसाविरनाल्कुशतगळ-
लैदु कोशात्मक विरिञ्चयाण्डदोळु तुम्बिहनु ॥

नूर-ओन्दुसु-रूप-दिंशा-न्तीर-मणता-नन्न-नेनिपै-
नूरु-मेल्मू-रधिक-दशप्रा-णाख्य-प्रद्यु-म्न ।
तोरु-तिहनयि-वत्तु-ऐदुवि-कार-मनदोळु-सङ्क-रुषणै-
नूरु-चतुरा-शीति-विज्ञा-नात्म-विश्वा-ख्य ॥ १७-(९३)

नूरओन्दुसुरूपदिं शा-
न्तीरमण तानन्ननेनिपै-
नूरुमेल्मूरधिकदशप्राणाख्य प्रद्युम्न ।
तोरुतिहनयिवत्तुऐदु वि-
कारमनदोळु सङ्करुषणै-
नूरुचतुराशीति विज्ञानात्म विश्वाख्य ॥

मूरु-साविर-दर्ध-शतमे-लीर-धिकरू-पगळ-धरिसिश-
रीर-दोळगा-नन्द-मयना-राय-णाह्वय-नु ।
ईरि-रडुसा-विरद-मेल्मु-न्नूरु-ऐदुसु-रूप-दिन्दलि-
भार-तीशनो-ळिप्प-नवनी-तस्थ-घृतद-न्ते ॥ १८-(९४)

मूरुसाविरदर्धशतमे-
लीरधिक रूपगळ धरिसि श-
रीरदोळगानन्दमय नारायणाह्वयनु ।
ईरेरडुसाविरदमेल्मु-
न्नूरुऐदु सुरूपदिन्दलि
भारतीशनोळिप्प नवनीतस्थ घृतदन्ते ॥

मूर-धिकऐ-वत्तु-प्राणश-रीर-दोळगनि-रुद्ध-निप्पै-
नूरु-हन्नो-न्दधिक-पाननो-ळिप्प-प्रद्यु-म्न ।
मूर-नेव्या-ननोळ-गैदरे-नूरु-रूपदि-सङ्क-रुषणै-
नूरु-मूव-त्तैदु-दाननो-ळिप्प-माये-श ॥ १९-(९५)

मूरधिकऐवत्तु प्राणश-
रीरदोळगनिरुद्धनिप्पै-
नूरुहन्नोन्दधिकपाननोळिप्प प्रद्युम्न ।
मूरने व्याननोळगैदरे
नूरु रूपदि सङ्करुषणै-
नूरुमूवत्तैदुदाननोळिप्प मायेश ॥

मूल-नारा-यणनु-ऐव-त्तेळ-धिकऐ-नूरु-रूपव-
ताळि-सर्व-त्रदिस-माननो-ळिप्प-सर्व-ज्ञ ।
लीले-गैवनु-सावि-रदमे-लेळु-नूर्ह-न्नोन्दु-रूपव-
ताळि-पञ्च-प्राण-रोळुलो-कगळ-सलहुव-नु ॥ २०-(९६)

मूलनारायणनु ऐव-
त्तेळधिकऐनूरु रूपव-
ताळि सर्वत्रदि समाननोळिप्प सर्वज्ञ ।
लीलेगैवनु साविरदमे-
लेळुनूर्हन्नोन्दु रूपव
ताळि पञ्चप्राणरोळु लोकगळ सलहुवनु ॥

त्रिनव-तिसुरू-पात्म-कनिरु-द्धनुस-दायज-मान-नागि-
द्दनल-यमसो-मादि-पितृदे-वतेग-ळिगेअ-न्न-
एनिप-नाप्र-द्युम्न-सङ्करु-षणवि-भागव-माडि-कोण्डु-
ण्डुणिप-नित्या-नन्द-भोजन-दायि-तुर्या-ह्व ॥ २१-(९७)

त्रिनवति सुरूपात्मकनिरु-
द्धनु सदा यजमाननागि-
द्दनल यम सोमादि पितृदेवतेगळिगे अन्न
एनिपनाप्रद्युम्न सङ्करु-
षणविभागव माडिकोण्डु-
ण्डुणिप नित्यानन्द भोजनदायि तुर्याह्व ॥

षण्ण-वतिना-मकनु-वसुमू-गण्ण-भास्कर-रोळगे-निन्तुप्र-
पन्न-रनुदिन-निष्क-पटस-द्भक्ति-यलिमा-ळप ।
पुण्य-कर्मव-स्वीक-रिसिका-रुण्य-सागर-पितृ-गळिगेअ-
गण्य-सुखवि-त्तवर-पोरेवनु-एल्ल-कालद-लि ॥ २२-(९८)

षण्णवतिनामकनु वसु मू-
गण्ण भास्कररोळगे निन्तु प्र-
पन्नरनुदिन निष्कपट सद्भक्तियलि माळप ।
पुण्यकर्मव स्वीकरिसि का-
रुण्यसागर पितृगळिगे अ-
गण्य सुखवित्तवरपोरेवनु एल्लकालदलि ॥

कुतप-नेको-त्तरसु-पञ्चा-शतव-रणकर-णदिच-तुरविं-
शतिसु-तत्त्वदि-धातु-गळोळि-द्दविर-तनिरु-द्ध ।
जतन-माळपनु-जगदि-जीव-प्रतति-गळष-ण्णवति-नामक-
चतुर-मूर्तिग-ळर्चि-सुवरद-रिन्द-बल्लव-रु ॥ २३-(९९)

कुतपनेकोत्तर सुपञ्चा-
शत वरण करणदि चतुरविं-
शति सुतत्त्वदि धातुगळोळिद्दविरतनिरुद्ध ।
जतनमाळपनु जगदिजीव-
प्रततिगळ षण्णवतिनामक
चतुरमूर्तिगळर्चिसुवरदरिन्द बल्लवरु ॥

अबुज-जाण्डो-दरनु-विपिनदि-शबरि-येञ्चल-नुण्ड-गोकुल-
दबले-यरनोलि-सिदनु-ऋषिप-त्नियरु-कोट्ट-न्न-
सुभुज-ताभु-ञ्जिसिद-स्वरमण-कुबुजे-गन्धके-ओलिद-मुनिगण-
विबुध-सेवित-बिडुव-नेना-वित्त-कर्मफ-ल ॥ २४-(१००)

अबुजजाण्डोदरनु विपिनदि
शबरियेञ्चलनुण्ड गोकुल-
दबलेयरनोलिसिदनु ऋषिपत्नियरु कोट्टन्न
सुभुज ता भुञ्जिसिद स्वरमण
कुबुजेगन्धके ओलिद मुनिगण
विबुधसेवित बिडुवने नावित्त कर्मफल ॥

गणने-यिल्लद-परम-सुखस-द्रुणग-णङ्गळ-लेश-लेशके-
एणेये-निसदुर-माब्ज-भवश-क्रादि-गळसुख-वु ।
उणुतु-णुतमै-मरेतु-कृष्णा-र्पणवे-नलुकै-गोम्ब-नर्भक-
जननि-भोजन-समय-दलिकै-ओड्डु-वन्दद-लि ॥ २५-(१०१)

गणनेयिल्लद परमसुख स-
द्रुणगणङ्गळ लेश लेशके
एणेयेनिसदु रमाब्ज भव शक्रादिगळ सुखवु ।
उणुतुणुत मै मरेतु कृष्णा-
र्पणवेनलु कैगोम्बनर्भक
जननिभोजन समयदलि कै ओड्डुवन्ददलि ॥

जीव-कृतक-र्मगळ-बिडदेर-माव-रनुस्वी-करिसि-फलगळ-
नीव-नधिका-रानु-सारदि-अवरि-गनवर-त ।
पाव-कनुस-र्वस्व-भुञ्जिसि-तावि-कारव-नैद-नोम्मेगु-
पाव-नकेपा-वनने-निपहरि-युम्बु-देनरि-दु ॥ २६-(१०२)

जीवकृतकर्मगळ बिडदे र-
मावरनु स्वीकरिसि फलगळ-
नीवनधिकारानुसारदि अवरिगनवरत ।
पावकनु सर्वस्व भुञ्जिसि
ता विकारवनैदनोम्मेगु
पावनके पावननेनिप हरियुम्बुदेनरिदु ॥

कलुष-जिह्वेगे-सुष्टु-भोजन-जलमो-दलुविष-दोरु-वुदुनि-
ष्कलुष-जिह्वेगे-सुरस-तोरुवु-देल्ल-कालद-लि ।
सुललि-ताङ्गगे-सकल-रसम-ङ्गलवे-निसुतिहु-दन्न-मयकै-
गोळदे-बिडुवने-पूत-नियविष-मोलेय-नुण्डव-नु ॥ २७-(१०३)

कलुषजिह्वेगे सुष्टुभोजन
जलमोदलु विषदोरुवुदु नि-
ष्कलुषजिह्वेगे सुरस तोरुवुदेल्लकालदलि ।
सुललिताङ्गगे सकलरस म-
ङ्गलवेनिसुतिहुदन्नमय कै-
गोळदे बिडुवने पूतनिय विषमोलेयनुण्डवनु ॥

पेळ-लेनुस-मीर-देवनु-काल-कूटव-नुण्डु-लोकव-
पालि-सिदत-द्दास-नोर्वनु-अमृ-तनेनिसि-द ।
श्रील-कुमिव-ल्लभशु-भाशुभ-जाल-कर्मग-ळुम्ब-नुपचय-
देळि-गेगळव-गिल्ल-वेन्दिगु-स्वरस-गळबि-ट्टु ॥ २८-(१०४)

पेळलेनु समीरदेवनु
कालकूटवनुण्डु लोकव
पालिसिद तद्दासनोर्वनु अमृतनेनिसिद ।
श्रीलकुमिवल्लभ शुभाशुभ
जालकर्मगळुम्बनुपचय-
देळिगेगळवगिल्लवेन्दिगु स्वरसगळ बिट्टु ॥

ईप-रियोळ-च्युतन-तत्त-द्रूप-तन्ना-मगळ-सलेना-
नाप-दार्थदि-नेनेने-नेदुभु-ञ्जिसुत-लिरुविष-य-
प्राप-कस्था-पकनि-यामक-व्याप-कनुये-न्दरितु-नीनि-
र्लेप-नागिरु-पुण्य-पापग-ळर्पि-सवनडि-गे ॥ २९-(१०५)

ईपरियोळच्युतन तत्त-
द्रूप तन्नामगळ सले ना-
नापदार्थदि नेनेनेनेदु भुञ्जिसुतलिरु विषय
प्रापक स्थापक नियामक
व्यापकनुयेन्दरितु नी नि-
र्लेपनागिरु पुण्यपापगळर्पिसवनडिगे ॥

ऐदु-लक्षे-म्भत्त-रोम्भ-त्ताद-साविर-देळु-नूर्मे-
लैदु-रूपव-धरिसि-भोक्तृग-भोज्य-नेन्देनि-सि ।
श्रीध-रादु-र्गार-मणपा-दादि-शिरपरि-यन्त-व्यापिसि-
कादु-कोण्डिह-सन्त-तजग-न्नाथ-विट्ठल-नु ॥ ३०-(१०६)

ऐदुलक्षेम्भत्तरोम्भ-
त्तादसाविरदेळुनूर्मे-
लैदुरूपव धरिसि भोक्तृग भोज्यनेन्देनिसि ।
श्री धरा दुर्गारमण पा-
दादि शिरपरियन्त व्यापिसि
कादुकोण्डिह सन्तत जगन्नाथविट्ठलनु ॥

॥ ४. भोजनरसविभागसन्धि मुगियितु ॥ (४-१०६)
॥ श्री मध्वेशार्पणमस्तु ॥

श्रीमद्धरिकथाऽमृतसार ५. विभूतिसन्धि (शङ्कराभरण एकताळ)

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

श्रीत-रुणिव-ल्लभन-परमवि-भूति-रूपव-कण्ड-कण्ड-
ल्लीते-रदिचि-न्तिसुत-मनदलि-नोडु-सम्भ्रम-दि ।
नीत-साधा-रणवि-शेषस-जाति-नैजा-हितवु-सहजवि-
जाति-खण्डा-खण्ड-बगेगळ-नरितु-बुधरि-न्द ॥ १-(१०७)

श्रीतरुणिवल्लभन परमवि-
भूतिरूपव कण्डकण्ड-
ल्लीतेरदि चिन्तिसुत मनदलि नोडु सम्भ्रमदि ।
नीत साधारण विशेष स-
जाति नैजाहितवु सहज वि-
जाति खण्डाखण्ड बगेगळनरितु बुधरिन्द ॥

जलध-रागस-दोळगे-चरिसुव-हलवु-जीवर-निर्मि-सिहनद-
रोळुस-जातिवि-जाति-साधा-रणवि-शेषग-ळ -
तिळिदु-तत्त-त्स्थान-दलिवे-ग्गळिसि-हब्बिद-मनदि-पूजिसु-
तलव-व्याप्तन-रूप-गळनो-डुतले-हिग्गुति-रु ॥ २-(१०८)

जलधरागसदोळगे चरिसुव
हलवु जीवर निर्मिसिहनद-
रोळु सजाति विजाति साधारण विशेषगळ
तिळिदु तत्तत्स्थानदलि वे-
ग्गळिसि हब्बिदमनदि पूजिसु-
तलव व्याप्तन रूपगळ नोडुतले हिग्गुतिरु ॥

प्रतिमे-शाल-ग्राम-गोऽभ्या-गतअ-तिथिश्री-तुलशि-पिप्पल-
यतिव-नस्थगृ-हस्थ-वटुयज-मान-स्वपरज-न ।
पृथिवि-जलशिखि-पवन-तारा-पथन-वग्रह-योग-करणभ-
तिथिसि-तासित-पक्ष-सङ्क्रम-अवन-धिष्ठा-न ॥ ३-(१०९)

प्रतिमे शालग्राम गोऽभ्या-
गत अतिथि श्रीतुलशि पिप्पल
यति वनस्थ गृहस्थ वटु यजमान स्वपर जन ।
पृथिवि जल शिखि पवन तारा-
पथ नवग्रह योग करण भ
तिथि सितासितपक्ष सङ्क्रम अवनधिष्ठान ॥

काद-काञ्चन-दोळगे-शोभिप-आदि-तेया-स्यनते-रदिलकु-
मीध-वप्रति-दिनदि-शाल-ग्राम-दोळगि-प्प ।
ऐदु-साविर-वधिक-मूव-त्तैदु-मेलै-नूरु-रूपदि-
भूधर-गळभि-मानि-दिविजरो-ळिप्प-ननवर-त ॥ ४-(११०)

काद काञ्चनदोळगे शोभिप
आदितेयास्यन तेरदि लकु-
मीधव प्रतिदिनदि शालग्रामदोळगिप्प ।
ऐदुसाविरवधिकमूव-
त्तैदुमेलैनूरुरूपदि
भू धरगळभिमानि दिविजरोळिप्पननवरत ॥

श्रीर-मणप्रति-मेगळो-ळगेहदि-मूर-धिकवा-गिप्प-मेलै-
नूरु-रूपव-धरिसि-इप्पनु-आहि-ताचल-दि ।
दारु-मथनव-गैये-पावक-तोरु-वन्तेप्र-तीक-सुररोळु-
तोरु-तिप्पनु-तत्त-दाका-रदलि-नोळपरि-गे ॥ ५-(१११)

श्रीरमण प्रतिमेगळोळगे हदि-
मूरधिकवागिप्प मेलै-
नूरु रूपव धरिसि इप्पनु आहिताचलदि ।
दारु मथनवगैये पावक
तोरुवन्ते प्रतीक सुररोळु
तोरुतिप्पनु तत्तदाकारदलि नोळपरिगे ॥

करण-निय्या-मकनु-तानुप-करण-दोळगै-वत्तेर-रडुसा-
विरद-हदिनै-दधिक-शतरू-पङ्ग-ळनेधरि-सि-
इरुति-हनुत-द्रूप-नामग-ळरितु-पूजिसु-तिहर-पूजेय-
निरुत-कैगो-म्बतृ-षार्तनु-जलव-कोम्ब-न्ते ॥ ६-(११२)

करणनिय्यामकनु तानुप-
करणदोळगैवत्तेररडुसा-
विरदहदिनैदधिकशतरूपङ्गळने धरिसि
इरुतिहनु तद्रूपनामग-
ळरितु पूजिसुतिहर पूजेय
निरुत कैगोम्ब तृषार्तनु जलव कोम्बन्ते ॥

बिम्ब-रूपनु-ईते-रदिजड-पोम्ब-सुरमोद-लाद-सुररोळ-
गिम्बु-गोण्डिह-नेन्द-रितुध-र्मार्थ-कामग-ळ ।
हम्ब-लिसदनु-दिनदि-विश्वकु-टुम्बि-कोट्टक-णान्न-कुत्सित-
कम्ब-ळियेसौ-भाग्य-वेन्दव-नङ्घि-गळभजि-सु ॥ ७-(११३)

बिम्बरूपनु ई तेरदि जड
पोम्बसुरमोदलाद सुररोळ-
गिम्बुगोण्डिहनेन्दरितु धर्मार्थकामगळ ।
हम्बलिसदनुदिनदि विश्वकु-
टुम्बि कोट्ट कणान्न कुत्सित
कम्बळिये सौभाग्यवेन्दवनङ्घिगळ भजिसु ॥

वारि-योळगि-प्पत्तु-नालकु-मूरे-रडुसा-विरद-मेल्मु-
न्नूरु-हदिने-ळेनिप-रूपवु-श्रीतु-लशिदल-दि ।
नूरु-अरव-त्तोन्दु-पुष्पदि-मूर-धिकदश-दीप-दोळुना-
नूरु-मूरुसु-मूर्ति-गळुग-न्धदोळ-गिरुतिह-वु ॥ ८-(११४)

वारियोळगिप्पत्तुनालकु
मूरेरडुसाविरदमेल्मु-
न्नूरुहदिनेळेनिप रूपवु श्रीतुलशिदलदि ।
नूरुअरवत्तोन्दु पुष्पदि
मूरधिकदश दीपदोळु ना-
नूरुमूरु सुमूर्तिगळु गन्धदोळगिरुतिहवु ॥

अष्ट-दलस-द्धृदय-कमला-धिष्ठि-तनुता-नागि-सर्वो-
त्कृष्ट-महिमनु-दलग-ळलिस-श्चरिसु-तोळगि-दु ।
दुष्ट-रिगेदु-र्बुद्धि-कर्मवि-शिष्ट-रिगेसु-ज्ञान-धर्मसु-
पुष्टि-गैसुत-सन्त-यिपनि-र्दुष्ट-सुखपू-र्ण ॥ ९-(११५)

अष्टदल सद्धृदय कमला-
धिष्ठितनु तानागि सर्वो-
त्कृष्टमहिमनु दलगळलि सञ्चरिसुतोळगिद्दु ।
दुष्टरिगे दुर्बुद्धि कर्म वि-
शिष्टरिगे सुज्ञान धर्म सु-
पुष्टिगैसुत सन्तयिप निर्दुष्ट सुखपूर्ण ॥

वित्त-देहा-गार-दारा-पत्य-मित्रा-दिगळो-ळगेगुण-
चित्त-बुद्धच्या-दिन्द्रि-यगळोळु-ज्ञान-कर्मदो-ळु ।
तत्त-दाह्वय-नागि-करेसुत-सत्य-सङ्क-ल्पानु-सारदि-
नित्य-दलिता-माडि-माडिप-नेन्दु-स्मरिसुति-रु ॥ १०-(११६)

वित्त देहागार दारा-
पत्य मित्रादिगळोळगे गुण
चित्त बुद्धचादिन्द्रियगळोळु ज्ञान कर्मदोळु ।
तत्तदाह्वयनागि करेसुत
सत्यसङ्कल्पानुसारदि
नित्यदलि ता माडि माडिपनेन्दु स्मरिसुतिरु ॥

भाव-द्रव्य-क्रियेग-ळेनिसुव-ईवि-धद्वै-तत्र-यङ्गळ-
भावि-सुतस-द्भक्ति-यलिस-र्वत्र-मरेयद-ले ।
ताव-कनुता-नेन्दु-प्रतिदिन-सेवि-सुवभकु-तरिगे-तन्नने-
ईव-कावकृ-पालु-करिवर-गोलिद-तेरन-न्ते ॥ ११-(११७)

भाव द्रव्य क्रियेगळेनिसुव
ई विधद्वैतत्रयङ्गळ
भाविसुत सद्भक्तियलि सर्वत्र मरेयदले ।
तावकनु तानेन्दु प्रतिदिन
सेविसुव भकुतरिगे तन्नने
ईव काव कृपालु करिवरगोलिद तेरनन्ते ॥

बान्द-ळवेमोद-लादु-दरोळो-न्दोन्द-रलिपू-जासु-साधन-
वेन्दे-निसुवप-दार्थ-गळुबगे-बगेय-नूतन-दि ।
सन्द-णिसिको-ण्डिहवु-ध्यानके-तन्दि-नितुचि-न्तिसिस-दागो-
विन्द-नर्चिसि-नोडु-नलिनलि-दाडु-कोण्डा-डु ॥ १२-(११८)

बान्दळवे मोदलादुदरोळो-
न्दोन्दरलि पूजासुसाधन-
वेन्देनिसुव पदार्थगळु बगेबगेय नूतनदि ।
सन्दणिसि कोण्डिहवु ध्यानके
तन्दिनितु चिन्तिसि सदा गो-
विन्दनर्चिसि नोडु नलिनलिदाडु कोण्डाडु ॥

जलज-नाभन-मूर्ति-मनदलि-नेलेगो-ळिसिनि-श्चलभ-कुतियलि-
चळिबि-सिलुमळे-गाळि-गळनि-न्दिसदे-नित्यद-लि ।
नेलदो-ळिहग-न्धवेसु-गन्धवु-जलवे-रसरू-पवेसु-दीपवु-
एलरु-चामर-शब्द-वाद्यग-ळर्पि-सलुओलि-व ॥ १३-(११९)

जलजनाभन मूर्ति मनदलि
नेलेगोळिसि निश्चलभकुतियलि
चळि बिसिलु मळे गाळिगळ निन्दिसदे नित्यदलि ।
नेलदोळिह गन्धवे सुगन्धवु
जलवे रस रूपवे सुदीपवु
एलरु चामर शब्द वाद्य गळर्पिसलु ओलिव ॥

गोळ-कगळुर-मार-मणननि-जाल-यगळनु-दिनदि-सम्प्र-
क्षाल-नेयेस-म्मार्ज-नवुकर-णगळे-दीपग-ळ-
सालु-तत्तद्विषय-गळस-म्मेळ-नवेपरि-यङ्क-तत्सुख-
देळि-गेयेसु-प्पत्ति-गात्मनि-वेद-नवेवस-न ॥ १४-(१२०)

गोळकगळु रमारमणन नि-
जालयगळनुदिनदि सम्प्र-
क्षालनेये सम्मार्जनवु करणगळे दीपगळ
सालु, तत्तद्विषयगळ स-
म्मेळनवे परियङ्क तत्सुख-
देळिगेये सुप्पत्तिगात्मनिवेदनवे वसन ॥

पाप-कर्मवु-पादु-केगळनु-लेप-नवुस-त्पुण्य-शास्त्रा-
लाप-नवेश्री-तुलशि-सुमनो-वृत्ति-गळुसुम-न ।
कोप-धूपवु-भक्ति-भूषण-व्यापि-सिदस-द्बुद्धि-छत्रवु-
दीप-वेसु-ज्ञान-आरा-र्तिगळे-गुणकथ-न ॥ १५-(१२१)

पापकर्मवु पादुकेगळनु-
लेपनवु सत्पुण्य शास्त्रा-
लापनवे श्रीतुलशि सुमनोवृत्तिगळु सुमन ।
कोप धूपवु भक्ति भूषण
व्यापिसिद सद्बुद्धि छत्रवु
दीपवे सुज्ञान आरार्तिगळे गुणकथन ॥

मनव-चनका-यप्र-दक्षिणे-यनुदि-नदिस-र्वत्र-व्यापक-
वनरु-हेक्षण-गर्पि-सुतमो-दिसुत-लिरुसत-त ।
अनुभ-वकेत-न्दुकोस-कलसा-धनग-ळोळगिदु-मुख्य-पामर-
मनुज-रिगेपे-ळिदरे-तिळियदु-बुधरि-गल्लद-ले ॥ १६-(१२२)

मन वचन काय प्रदक्षिणे-
यनुदिनदि सर्वत्र व्यापक
वनरुहेक्षणगर्पिसुत मोदिसुतलिरु सतत ।
अनुभवके तन्दुको सकलसा-
धनगळोळगिदु मुख्य पामर
मनुजरिगे पेळिदरे तिळियदु बुधरिगल्लदले ॥

चतुर-विधपुरु-षार्थ-पडेवरे-चतुर-दशलो-कगळ-मध्यदो-
ळितरु-पायग-ळिल्ल-नोडलु-सकल-शास्त्रद-लि ।
सतत-विषये-न्द्रियग-ळलिप्रवि-ततने-निसिरा-जिसुव-लकुमी-
पतिगे-सर्वस-मर्प-णेयेमह-पूजे-सदुपा-य ॥ १७-(१२३)

चतुरविध पुरुषार्थ पडेवरे
चतुरदश लोकगळ मध्यदो-
ळितरुपायगळिल्ल नोडलु सकलशास्त्रदलि ।
सतत विषयेन्द्रियगळलि प्रवि-
ततनेनिसि राजिसुव लकुमी
पतिगे सर्वसमर्पणेये महपूजे सदुपाय ॥

गोळ-कवेकु-ण्डग्नि-करणवु-मेलो-दगिबह-विषय-समिधेयु-
गाळि-यत्नवु-काम-धूमवु-सन्नि-धाना-र्चि ।
मेळ-नवेप्र-ज्वाले-किडिगळु-तूळि-दान-न्दगळु-तत्त-
त्काल-मातुग-ळेल्ल-मन्त्रा-ध्यात्म-यज्ञवि-दु ॥ १८-(१२४)

गोळकवे कुण्डग्नि करणवु
मेलोदगिबह विषय समिधेयु
गाळि यत्नवु काम धूमवु सन्निधानार्चि ।
मेळनवे प्रज्वाले किडिगळु
तूळिदानन्दगळु तत्त-
त्काल मातुगळेल्ल मन्त्राध्यात्म यज्ञविदु ॥

मधुवि-रोधिय-पट्ट-णकेपू-र्वदक-वाटग-ळक्षि-नासिक-
वदन-श्रोत्रग-ळेरडु-दक्षिण-उत्त-रद्वा-र ।
गुदउ-पस्थग-ळेरडु-पश्चिम-कदग-ळेनिपुवु-षट्स-रोजवे-
सदन-हृदयवे-मण्ट-पत्रिगु-णगळे-कलशग-ळु ॥ १९-(१२५)

मधुविरोधिय पट्टणके पू-
र्वद कवाटगळक्षि नासिक
वदन श्रोत्रगळेरडु दक्षिण उत्तरद्वार ।
गुद उपस्थगळेरडु पश्चिम
कदगळेनिपुवु षट्सरोजवे
सदन हृदयवे मण्टप त्रिगुणगळे कलशगळु ॥

धातु-गळुस-स्राव-रणउप-वीथि-गळेना-डिगळु-मदगळु-
यूथ-पगळुसु-षुम्न-नाडिये-राज-पन्था-न ।
ईत-नूरुह-गळेव-नङ्गळु-मात-रिश्वनु-पञ्च-रूपदि-
पात-कगळे-म्बरिग-ळनुसं-हरिप-तळवा-र ॥ २०-(१२६)

धातुगळु सस्रावरण उप-
वीथिगळे नाडिगळु मदगळु
यूथपगळु सुषुम्ननाडिये राजपन्थान ।
ई तनूरुहगळे वनङ्गळु
मातरिश्वनु पञ्चरूपदि
पातकगळेम्बरिगळनु संहरिप तळवार ॥

इनश-शाङ्का-दिगळु-लक्ष्मी-वनिते-यरसन-द्वार-पालक-
रेनिसु-तिप्परु-मनद-वृत्तिग-ळेप-दातिग-ळु ।
अनुभ-विपविष-यङ्ग-ळेप-ट्टणके-बप्पप-सार-गळुजी-
वनुसु-वर्तक-कप्प-गळकै-गोम्ब-हरिता-नु ॥ २१-(१२७)

इन शशाङ्कादिगळु लक्ष्मी
वनितेयरसन द्वारपालक-
रेनिसुतिप्परु मनदवृत्तिगळे पदातिगळु ।
अनुभविप विषयङ्गळे प-
ट्टणके बप्प पसारगळु जी-
वनु सुवर्तक कप्पगळ कैगोम्ब हरि तानु ॥

उरुप-राक्रम-नरम-नेगेदश-करण-गळुक-न्नडिय-सालुग-
ळरवि-दूरन-सद्धि-हारके-चित्त-मण्टप-वु ।
मरळि-बीसुव-श्वास-गळुचा-मरवि-लासिनि-बुद्धि-दामो-
दरगे-साष्टा-ङ्गप्र-णामग-ळेसु-शयनग-ळु ॥ २२-(१२८)

उरुपराक्रमनरमनेगे दश
करणगळु कन्नडिय सालुग-
ळरविदूरन सद्विहारके चित्त मण्टपवु ।
मरळिबीसुव श्वासगळु चा-
मर विलासिनि बुद्धि दामो-
दरगे साष्टाङ्गप्रणामगळे सुशयनगळु ॥

मार-मणनर-मनेगे-सुमहा-द्वार-वेनिसुव-वदन-कोप्पुव-
तोर-णश्म-श्रुगळु-केशग-ळेप-ताकेग-ळु ।
ऊरि-नडेव-ङ्रिगळु-जङ्घेग-ळूरु-मध्यो-दरशि-रगळा-
गार-दुप्परि-गेगळु-कोशग-ळैदु-कोणेग-ळु ॥ २३-(१२९)

मारमणनरमनेगे सुमहा-
द्वारवेनिसुव वदनकोप्पुव
तोरण श्मश्रुगळु केशगळे पताकेगळु ।
ऊरि नडेवङ्रिगळु जङ्घेग-
ळूरु मध्योदर शिरगळा-
गारदुप्परिगेगळु कोशगळैदु कोणेगळु ॥

ईश-रीरवे-रथप-ताकसु-वास-गळुपु-ण्ड्रगळु-ध्वजसिं-
हास-नवेचि-त्तवुसु-बुद्धिये-कलश-सन्मन-वे-
पाश-गुणद-ण्डत्र-यगळुशु-भाशु-भद्वय-कर्म-चक्रम-
हास-मर्था-श्वगळु-दशकर-णङ्ग-ळेनिसुवु-वु ॥ २४-(१३०)

ई शरीरवे रथ पताक सु-
वासगळु पुण्ड्रगळु ध्वज सिं-
हासनवे चित्तवु सुबुद्धिये कलश सन्मनवे
पाश, गुण दण्डत्रयगळु शु-
भाशुभद्वय कर्मचक्र म-
हासमर्थाश्वगळु दश करणङ्गळेनिसुवुवु ॥

मात-रिश्वनु-देह-रथदोळु-सूत-नागिह-सर्व-कालदि-
श्रीत-रुणिव-ल्लभर-थिकने-न्दरितु-नित्यद-लि ।
प्रीति-यिन्दलि-पोषि-सुतवा-तात-पादिग-ळिन्द-अविरत-
ईत-नुविनोळु-ममते-बिट्टिह-नवने-महयो-गि ॥ २५-(१३१)

मातरिश्वनु देहरथदोळु
सूतनागिह सर्वकालदि
श्रीतरुणिवल्लभ रथिकनेन्दरितु नित्यदलि ।
प्रीतियिन्दलि पोषिसुत वा-
तातपादिगळिन्द अविरत
ई तनुविनोळु ममते बिट्टिहनवने महयोगि ॥

भववे-निपवन-धियोळु-कर्म-प्रवह-दोळुस-श्चरिसु-तिहदे-
हवसु-नावेय-माडि-तन्नव-रिन्द-ओडगू-डि ।
दिवस-दिवसग-ळल्लि-लकुमी-धवनु-क्रीडिप-नेन्दु-चिन्तिसे-
पवन-नय्यभ-वाब्धि-दाटिसि-परम-सुखवी-व ॥ २६-(१३२)

भववेनिप वनधियोळु कर्म
प्रवहदोळु सञ्चरिसुतिह दे-
हव सुनावेय माडि तन्नवरिन्द ओडगूडि ।
दिवसदिवसगळल्लि लकुमी
धवनु क्रीडिपनेन्दु चिन्तिसे
पवननय्य भवाब्धि दाटिसि परमसुखवीव ॥

आप-णालय-गतप-दार्थवु-स्त्रीपु-रुषरुग-ळिन्द्रि-यगळलि-
दीप-पावक-दोळिरु-तिहतै-लादि-द्रव्यग-ळु ।
आप-रमगव-दान-वेन्दुप-देप-देमरे-यदले-स्मरिसुत-
भूप-नन्ददि-सञ्च-रिसुनि-र्भयदि-सर्व-त्र ॥ २७-(१३३)

आपणालयगत पदार्थवु
स्त्री पुरुषरुगळिन्द्रियगळलि
दीप पावकदोळिरुतिह तैलादि द्रव्यगळु ।
आ परमगवदानवेन्दु प-
देपदे मरेयदले स्मरिसुत
भूपनन्ददि सञ्चरिसु निर्भयदि सर्वत्र ॥

वारि-जभवा-ण्डवेसु-मण्टप-मेरु-गिरिसिं-हास-नवुभा-
गीर-थियेम-ज्ञनवु-दिग्व-स्त्रगळु-नुडिम-न्त्र ।
भूरु-हजफल-पुष्प-गन्धस-मीर-शशिरवि-दीप-भूषण-
तार-केगळे-न्दर्पि-सलुकै-गोण्डु-मन्निसु-व ॥ २८-(१३४)

वारिजभवाण्डवे सुमण्टप-
मेरुगिरि सिंहासनवु भा-
गीरथिये मज्ञनवु दिग्वस्त्रगळु नुडि मन्त्र ।
भूरुहज फल पुष्प गन्ध स-
मीर शशिरवि दीप भूषण
तारकेगळेन्दर्पिसलु कैगोण्डु मन्निसुव ॥

भूसु-ररोळि-प्पब्ज-भवनोळु-वासु-देवनु-वायु-खगपस-
दाशि-वहिपे-न्द्रनुवि-वस्व-न्नाम-कस्सू-र्य ।
भेश-कामम-रास्य-वरुणा-दीसु-ररुक्ष-त्रियरो-ळिप्परु-
वास-वागिह-सङ्क-रुषणन-नोडि-मोदिप-रु ॥ २९-(१३५)

भूसुररोळिप्पब्जभवनोळु
वासुदेवनु वायु खगप स-
दाशिवहिपेन्द्रनु विवस्वन्नामकस्सूर्य ।
भेश काममरास्य वरुणा-
दीसुररु क्षत्रियरोळिप्परु
वासवागिह सङ्करुषणन नोडि मोदिपरु ॥

मीन-केतन-तनय-प्राणा-पान-व्यानो-दान-मुख्यै-
कोन-पञ्चा-शन्म-रुद्गण-रुद्र-वसुगण-रु ।
मेन-कात्मजे-कुवर-विष्व-क्सेन-धनपा-द्यनिमे-षरनुस-
दानु-रागदि-धेनि-पुदुवै-श्यरोळु-प्रद्यु-म्न ॥ ३०-(१३६)

मीनकेतनतनय प्राणा-
पान व्यानोदान मुख्यै-
कोन पञ्चाशन्मरुद्गण रुद्र वसुगणरु ।
मेनकात्मजेकुवर विष्व-
क्सेन धनपाद्यनिमेषरनु स-
दानुरागदि धेनिपुदु वैश्यरोळु प्रद्युम्न ॥

इरुति-हरुना-सत्य-दस्ररु-निरुक्र-तियुयम-धर्म-यमकि-
ङ्कररु-मेदिनि-काल-मृत्युश-नैश्च-रादिग-ळु ।
करेसि-कोम्बरु-शूद्र-रेन्दन-वरत-शूद्ररो-ळिप्प-रिवरोळ-
गरवि-दूरनि-रुद्ध-निहने-न्दरितु-मन्निपु-दु ॥ ३१-(१३७)

इरुतिहरु नासत्य दस्ररु
निरुक्रतियु यमधर्म यमकि-
ङ्कररु मेदिनि कालमृत्यु शनैश्चरादिगळु ।
करेसिकोम्बरु शूद्ररेन्दन-
वरत शूद्ररोळिप्परिवरोळ-
गरविदूरनिरुद्धनिहनेन्दरितु मन्निपुदु ॥

वीत-भयना-राय-णचतु-ष्पातु-ताने-न्देनिसि-तत्त-
ज्ञाति-धर्मसु-कर्म-गळता-माडि-माडिसु-त ।
चेत-नरओळ-होरगे-ओत-प्रोत-नागि-देल्ल-रिगेस-
म्प्रीति-यलिध-र्मार्थ-कामा-दिगळ-कोडुतिह-नु ॥ ३२-(१३८)

वीतभय नारायण चतु-
ष्पातु तानेन्देनिसि तत्त-
ज्ञाति धर्म सुकर्मगळ ता माडि माडिसुत ।
चेतनर ओळहोरगे ओत-
प्रोतनागिदेल्लरिगे स-
म्प्रीतियलि धर्मार्थ कामादिगळ कोडुतिहनु ॥

निधन-धनदवि-धात-विगता-भ्यधिक-समसम-वर्ति-सामग-
त्रिदश-गणस-म्पूज्य-त्रिककु-द्धाम-शुभना-म ।
मधुम-थनभृगु-राम-घोटक-वदन-सर्वप-दार्थ-दोळुतुदि-
मोदलु-तुम्बिह-नेन्दु-चिन्तिसु-बिम्ब-रूपद-लि ॥ ३३-(१३९)

निधन धनद विधात विगता-
भ्यधिकसमसमवर्ति सामग
त्रिदशगण सम्पूज्य त्रिककुद्धाम शुभनाम ।
मधुमथन भृगुराम घोटक
वदन सर्वपदार्थदोळु तुदि
मोदलु तुम्बिहनेन्दु चिन्तिसु बिम्बरूपदलि ॥

कन्न-डियकै-पिडिदु-नोडलु-तन्नि-रवुस-व्याप-सव्यदि-
कण्णि-गोप्पुव-तेरदि-अनिरु-द्धनिगे-ईजग-वु ।
भिन्न-भिन्नवे-तोरु-तिप्पुदु-जन्य-वादुद-रिन्द-प्रतिबि-
म्बन्न-मयगा-नेन्द-रितुपू-जिसलु-कैगो-म्ब ॥ ३४-(१४०)

कन्नडिय कैपिडिदु नोडलु
तन्निरवु सव्यापसव्यदि
कण्णिगोप्पुव तेरदि अनिरुद्धनिगे ई जगवु ।
भिन्नभिन्नवे तोरुतिप्पुदु
जन्यवादुदरिन्द प्रतिबि-
म्बन्नमयगानेन्दरितु पूजिसलु कैगोम्ब ॥

बिम्ब-रेनिपरु-स्वोत्त-मरुप्रति-बिम्ब-रेनिपरु-स्वाव-ररुप्रति-
बिम्ब-बिम्बग-ळोळगे-केवल-बिम्ब-हरिये-न्दु ।
सम्भ्र-मदिपा-डुतलि-नोडुत-उम्बु-डुवुदिडु-वुदुको-डुवुदे-
ल्लम्बु-जाम्बक-नङ्घ्रि-पूजेग-ळेन्दु-नलिदा-डु ॥ ३५-(१४१)

बिम्बरेनिपरु स्वोत्तमरु प्रति
बिम्बरेनिपरु स्वावररु प्रति
बिम्ब बिम्बगळोळगे केवल बिम्ब हरियेन्दु ।
सम्भ्रमदि पाडुतलि नोडुत
उम्बुडुवुदिडुवुदु कोडुवुदे-
ल्लम्बुजाम्बकनङ्घ्रिपूजेगळेन्दु नलिदाडु ॥

नदिय-जलनदि-गेरेव-तेरद-न्ददलि-भगव-द्दत्त-धर्मग-
ळुदधि-शयननि-गर्पि-सुतव्या-वृत्त-नीना-गि ।
विधिनि-षेधा-दिगळि-गोळगा-गदले-माडुत-दर्वि-यन्ददि-
पदुम-नाभन-सकल-कर्मग-ळल्लि-नेनेयुति-रु ॥ ३६-(१४२)

नदिय जल नदिगेरेवतेरद-
न्ददलि भगवद्दत्त धर्मग-
ळुदधिशयननिगर्पिसुत व्यावृत्त नीनागि ।
विधि निषेधादिगळिगोळगा-
गदले माडुत दर्वियन्ददि
पदुमनाभन सकलकर्मगळल्लि नेनेयुतिरु ॥

अरिय-दिर्दरु-एम्मो-ळिद्दन-वरत-विषयग-ळुम्ब-ज्ञानो-
त्तरदि-तनग-र्पिसलु-चित्सुख-वित्तु-सन्तै-प ।
सरितु-काल-प्रवह-गळुक-ण्डरेयु-सरिका-णदिरे-परिवुवु-
मरळि-मज्जन-पान-कर्मग-ळिन्दे-सुखवह-वु ॥ ३७-(१४३)

अरियदिर्दरु एम्मोळिद्दन-
वरत विषयगळुम्ब ज्ञानो-
त्तरदि तनगर्पिसलु चित्सुखवित्तु सन्तैप ।
सरितु काल प्रवहगळु क-
ण्डरेयु सरि काणदिरे परिवुवु
मरळि मज्जन पान कर्मगळिन्दे सुखवहवु ॥

एनु-माडुव-कर्म-गळलकु-मीनि-वासनि-गर्पि-सनुस-
न्धान-पूर्वक-दिन्द-सन्दे-हिसदे-दिनदिन-दि ।
मान-निधिकै-गोण्डु-सुखवि-त्तान-तरस-न्तैप-तृणजल-
धेनु-तानु-ण्डनव-रतपा-ल्गरेव-तेरन-न्ते ॥ ३८-(१४४)

एनु माडुव कर्मगळ लकु-
मीनिवासनिगर्पिसनुस-
न्धानपूर्वकदिन्द सन्देहिसदे दिनदिनदि ।
माननिधि कैगोण्डु सुखवि-
त्तानतर सन्तैप तृणजल
धेनु तानुण्डनवरत पाल्गरेव तेरनन्ते ॥

पूर्व-दक्षिण-पश्चि-मोत्तर-पार्व-तीपति-अग्नि-वायुसु-
शार्व-रीचर-दिग्व-लयदोळु-हंस-नामक-नु ।
सार्व-कालदि-सर्व-रोळुसुर-सार्व-भौमनु-स्वेच्छे-यलिम-
त्तोर्व-रिगेगो-चरिस-दव्य-क्तात्म-नेन्देनि-प ॥ ३९-(१४५)

पूर्व दक्षिण पश्चिमोत्तर
पार्वतीपति अग्नि वायु सु-
शार्वरीचर दिग्वलयदोळु हंसनामकनु ।
सार्वकालदि सर्वरोळु सुर
सार्वभौमनु स्वेच्छेयलि म-
त्तोर्वरिगे गोचरिसदव्यक्तात्मनेन्देनिप ॥

परिइ-डाव-त्सरनु-संव-त्सरदो-ळनिरु-द्धादि-रूपव-
धरिसि-बार्हस्पत्य-सौरभ-चान्द्र-मनुएनि-सि-
इरुति-हजग-न्नाथ-विट्टल-स्मरिसु-ववरनु-सन्त-यिसुवनु-
उरुप-राक्रम-नुचित-साधने-योग्यते-यनरि-तु ॥ ४०-(१४६)

परि इडा वत्सरनु संव-
त्सरदोळनिरुद्धादि रूपव
धरिसि बार्हस्पत्य सौरभ चान्द्रमनु एनिसि
इरुतिह जगन्नाथविट्टल
स्मरिसुववरनु सन्तयिसुवनु
उरुपराक्रमनुचित साधने योग्यतेयनरितु ॥

॥ ५. विभूतिसन्धि मुगियितु (५-१४६)॥
॥ श्रीमध्वेशार्पणमस्तु ॥

श्रीमद्धरिकथाऽमृतसार ६. पञ्चमहायज्ञसन्धि (आनन्दभैरवि मठचताळ)

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

जननि-पितभू-वारि-दम्बर-वेनिप-पञ्चा-ग्नियलि-नारा-
यणन-त्रिंशति-मूर्ति-गळव्या-पार-व्यासिग-ळ -
नेनेदु-दिवसग-ळेम्ब-समिधेग-ळनुनि-रन्तर-होमि-
सुतपावनके-पावन-नेनिप-परमन-बेडु-परमसु-ख ॥ १-(१४७)

जननि पित भू वारिदम्बर-
वेनिप पञ्चाग्नियलि नारा-
यणन त्रिंशतिमूर्तिगळ व्यापारव्यासिगळ
नेनेदु दिवसगळेम्ब समिधेग-
ळनु निरन्तर होमिसुत पा-
वनके पावननेनिप परमन बेडु परमसुख ॥

गगन-पावक-समिधे-रविर-श्मिगळे-धूमवु-अर्चि-येनिपुदे-
हगलु-नक्ष-त्रगळे-किडिगळु-चन्द्र-मङ्गा-र ।
मृगव-रोदर-नोळगे-ऐरू-पगळ-चिन्तिसि-भक्ति-रसमा-
तुगळ-मन्त्रव-माडि-होमिसु-वरुवि-पश्चित-रु ॥ २-(१४८)

गगन पावक समिधे रवि र-
श्मिगळे धूमवु अर्चियेनिपुदे
हगलु नक्षत्रगळे किडिगळु चन्द्रमङ्गार ।
मृगवरोदरनोळगे ऐरू-
पगळ चिन्तिसि भक्तिरस मा-
तुगळ मन्त्रव माडि होमिसुवरु विपश्चितरु ॥

पाव-कनुप-र्जन्य-समिधेयु-प्राव-हीपति-धूम-गळेमे-
घाव-ळिगळ-र्चिक्ष-णप्रभे-गर्ज-नवेकिडि-यु ।
भावि-सुवुद-ङ्गार-सिडिले-न्दीवि-धग्नियो-ळब्धि-जातन-
कोवि-दरुहो-मिसुव-रनुदिन-परम-भकुतिय-लि ॥ ३-(१४९)

पावकनु पर्जन्य समिधेयु
प्रावहीपति धूमगळे मे-
घावळिगळर्चि क्षणप्रभे गर्जनवे किडियु ।
भाविसुवुदङ्गार सिडिले-
न्दीविधग्नियोळब्धिजातन
कोविदरु होमिसुवरनुदिन परमभकुतियलि ॥

धरणि-येम्बुदे-अग्नि-संव-त्सरवे-समिधेवि-हाय-सवेहोगे-
इरुळु-रिदिश-ङ्गार-वान्तर-दिग्व-लयकिडि-यु ।
वरुष-वेम्बा-हुतिग-ळिन्दलि-हरिय-मेच्चिसि-सकल-रोळग-
ध्वरिय-नागिरु-सर्व-रूपा-त्मकन-चिन्तिसु-त ॥ ४-(१५०)

धरणियेम्बुदे अग्नि संव-
त्सरवे समिधे विहायसवे होगे
इरुळुरि दिशङ्गारवान्तर दिग्वलय किडियु ।
वरुषवेम्बाहुतिगळिन्दलि
हरिय मेच्चिसि सकलरोळग-
ध्वरियनागिरु सर्वरूपात्मकन चिन्तिसुत ॥

पुरुष-शिखिवा-क्समिधे-धूमवु-करण-अर्चियु-जिह्वे-श्रोत्रग-
ळेरडु-किडिगळु-लोच-नगळ-ङ्गार-वेनिसुवु-वु ।
निरुत-भुञ्जिसु-वन्न-यदुकुल-वरनि-गवदा-नगळु-एन्दी-
परिस-मर्पणे-गैये-कैगो-ण्डनुदि-नदिपोरे-व ॥ ५-(१५१)

पुरुष शिखि वाक्समिधे धूमवु
करण अर्चियु जिह्वे श्रोत्रग-
ळेरडु किडिगळु लोचनगळङ्गारवेनिसुवुवु ।
निरुत भुञ्जिसुवन्न यदुकुल
वरनिगवदानगळु एन्दी-
परि समर्पणेगैये कैगोण्डनुदिनदि पोरेव ॥

मत्ते-योषा-ग्नियोळु-तिळिवुदु-पस्थ-तत्त्ववे-समिधे-कामो-
त्पत्ति-परमा-तुगळे-धूमवु-योनि-महद-र्चि ।
तत्प्र-वेश-ङ्गार-किडिगळु-उत्स-हगळु-त्सर्ज-नवुपुरु-
षोत्त-मनिगव-दान-वेनेकै-गोण्डु-मन्निसु-व ॥ ६-(१५२)

मत्ते योषाग्नियोळु तिळिवुदु-
पस्थ तत्त्ववे समिधे कामो-
त्पत्तिपरमातुगळे धूमवु योनि महदर्चि ।
तत्प्रवेशङ्गार किडिगळु
उत्सहगळुत्सर्जनवु पुरु-
षोत्तमनिगवदानवेने कैगोण्डु मन्निसुव ॥

ऐदु-विधद-ग्नियलि-मरेयदे-ऐदु-रूपा-त्मकन-इप्प-
त्तैदु-रूपग-ळनुदि-नदिनेने-वरिगे-जनुमग-ळ-
ऐदि-सनुनळि-नाक्ष-रणदोळु-मैदु-ननका-य्दन्ते-सलहुव-
बैद-वगेगति-यित्त-भयहर-भक्त-वत्सल-नु ॥ ७-(१५३)

ऐदु विधदग्नियलि मरेयदे
ऐदु रूपात्मकन इप्प-
त्तैदु रूपगळनुदिनदि नेनेवरिगे जनुमगळ
ऐदिसनु नळिनाक्ष रणदोळु
मैदुननकाय्दन्ते सलहुव
बैदवगे गतियित्त भयहर भक्तवत्सलनु ॥

पञ्च-नारी-तुरग-दन्ददि-पञ्च-रूपा-त्मकनु-ताषट्-
पञ्च-रूपव-धरिसि-तत्त-न्नाम-दिंकरे-सि ।
पञ्च-पावक-मुखदि-गुणमय-पञ्च-भूता-त्मकश-रीरव-
पञ्च-विधजी-वरिगे-कोट्ट-ल्लल्ले-रमिसुव-नु ॥ ८-(१५४)

पञ्चनारीतुरगदन्ददि
पञ्चरूपात्मकनु ता ष-
ट्पञ्चरूपव धरिसि तत्तन्नामदिं करेसि ।
पञ्चपावकमुखदि गुणमय
पञ्चभूतात्मक शरीरव
पञ्चविध जीवरिगे कोट्टल्लल्ले रमिसुवनु ॥

विधिभ-वादिस-मस्त-जीवर-हृदय-दोळगे-कात्म-नेनिसुव-
पदुम-नाभनु-अच्यु-तान-न्तादि-रूपद-लि ।
अधिसु-भूत-ध्यात्म-अधिदै-वदोळु-करेसुव-प्राण-नागा-
भिधनु-दशरू-पदलि-दशविध-प्राण-रोळगि-द्दु ॥ ९-(१५५)

विधि भवादि समस्तजीवर
हृदयदोळगेकात्मनेनिसुव
पदुमनाभनु अच्युतानन्तादि रूपदलि ।
अधिसुभूतध्यात्म अधिदै-
वदोळु करेसुव प्राण नागा-
भिधनु दशरूपदलि दशविध प्राणरोळगिद्दु ॥

ईर-यिदुसा-विरद-यिप्प-त्तार-धिकमु-न्नूरु-रूपग-
ळीरे-रडुस्था-नदलि-चिन्तिप-रनुदि-नदिबुध-रु ।
नूर-यिप्प-त्तेळ-धिकमू-रारु-साविर-रूप-दिन्दश-
मारु-तरोळि-द्दवर-वरपेस-रिन्द-करेसुव-नु ॥ १०-(१५६)

चित्त-यिसुवुदु-एण्ट-धिकइ-प्पत्तु-साविर-नाल्कु-शतदै-
वत्त-मूरुसु-मूर्ति-गळुअह-वल्लि-परिय-न्त ।
हत्तु-नालकु-रूप-गळनेने-युत्त-अवनी-परिति-ळिदुपुरु-
षोत्त-मनस-र्वत्र-पूजेय-माडु-कोण्डा-डु ॥ ११-(१५७)

ईरे-रडुशत-द्व्यष्ट-धिकहदि-नारु-साविर-रूप-सर्वश-
रीर-दोळुश-ब्दादि-गळधि-ष्ठान-दोळगि-प्प ।
मारु-तरना-गादि-रूपदि-मूर-नेगुण-मानि-श्रीदु-
र्गार-मणवि-द्याकु-मोहव-कोडुव-करण-क्के ॥ १२-(१५८)

ईरयिदु साविरदयिप्प-
त्तारधिकमुन्नूरु रूपग-
ळीरेरडु स्थानदलि चिन्तिपरनुदिनदि बुधरु ।
नूरयिप्पत्तेळधिकमू-
रारुसाविर रूपदिं दश
मारुतरोळिद्दवरवर पेसरिन्द करेसुवनु ॥

चित्तयिसुवुदु एण्टधिकइ-
प्पत्तुसाविरनाल्कुशतदै-
वत्तमूरु सुमूर्तिगळु अहवल्लि परियन्त ।
हत्तु नालकु रूपगळ नेने-
युत्त अवनीपरि तिळिदु पुरु-
षोत्तमन सर्वत्र पूजेयमाडु कोण्डाडु ॥

ईरेरडुशतद्व्यष्टधिक हदि-
नारुसाविर रूप सर्वश-
रीरदोळु शब्दादिगळधिष्ठानदोळगिप्प ।
मारुतर नागादि रूपदि
मूरने गुणमानि श्रीदु-
र्गारमण विद्या कुमोहव कोडुव करणक्के ॥

ऐद-विद्येग-ळोळगे-इहना-गादि-गळधि-ष्ठान-दलिलकु-
मीध-वनुकृ-द्धोल्क-मोदला-दैदु-रूपग-ळ ।
ताध-रिसिस-ज्जनर-विद्येय-छेदि-सुवता-मसरि-गज्ञा-
नादि-गळको-ट्टवर-वरसा-धनव-माडिसु-व ॥ १३-(१५९)

गोवु-गळोळु-द्गीथ-निहप्र-स्ताव-हीङ्का-रेरडु-रूपदि-
आवि-अजगळो-ळिहनु-प्रतिहा-राह्व-हयगळो-ळु ।
जीव-नप्रद-निधन-मनुजरो-ळीवि-धदोळिह-पञ्च-सामव-
झाव-झावके-नेनेव-रिगेऐ-दिसनु-जनुमग-ळ ॥ १४-(१६०)

युगच-तुष्टय-गळलि-तानि-द्व्युगप्र-वर्तक-धर्म-कर्मग-
ळिगेप्र-वर्तक-वासु-देवा-दीरे-रडुरू-प-
तेगेदु-कोण्डुयु-गादि-कृतुता-युगप्र-वर्तक-नेनिसि-धर्म-
प्रघट-कनुता-नागि-भकुतरि-गीव-सम्पद-व ॥ १५-(१६१)

ऐदविद्येगळोळगे इह ना-
गादिगळधिष्ठानदलि लकु-
मीधवनु कृद्धोल्क मोदलादैदु रूपगळ ।
ता धरिसि सज्जनरविद्येय
छेदिसुव तामसरिगज्ञा-
नादिगळ कोट्टवरवर साधनव माडिसुव ॥

गोवुगळोळुद्गीथनिह प्र-
स्ताव हीङ्कारेरडु रूपदि
आवि अजगळोळिहनु प्रतिहाराह्व हयगळोळु ।
जीवनप्रद निधन मनुजरो-
ळीविधदोळिह पञ्चसामव
झाव झावके नेनेवरिगे ऐदिसनु जनुमगळ ॥

युगचतुष्टयगळलि तानि-
द्व्युगप्रवर्तक धर्मकर्मग-
ळिगे प्रवर्तक वासुदेवादीरेरडु रूप
तेगेदुकोण्डु युगादिकृतु ता-
युगप्रवर्तकनेनिसि धर्म
प्रघटकनु तानागि भकुतरिगीव सम्पदव ॥

तलेयो-ळिहना-राय-णनुग-ण्टलडि-ओडलोळु-वासु-देवनु-
बलद-लिहप्र-द्युम्न-एडभा-गदोळ-गनिरु-द्ध ।
केळगि-नङ्गदि-सङ्क-रुषणन-तिळिदु-ईपरि-सकल-देहग-
ळोळगे-पञ्चा-त्मकन-रूपव-नोडु-कोण्डा-डु ॥ १६-(१६२)

तलेयोळिह नारायणनु ग-
ण्टलडि ओडलोळु वासुदेवनु
बलदलिह प्रद्युम्न एडभागदोळगनिरुद्ध ।
केळगिनङ्गदि सङ्करुषणन
तिळिदु ईपरि सकलदेहग-
ळोळगे पञ्चात्मकन रूपव नोडु कोण्डाडु ॥

तनुवि-शिष्टदि-यिप्प-नारा-यणनु-कटिपा-दान्त-सङ्करु-
षणनु-शिरजघ-नान्त-वागिह-वासु-देवा-ख्य ।
अनिमे-षेशनि-रुद्ध-प्रद्यु-म्ननए-डदिबल-भाग-दलिचि-
न्तनेय-माळपरि-गुण्टे-मैलिगे-विधिनि-षेधग-ळु ॥ १७-(१६३)

तनुविशिष्टदियिप्प नारा-
यणनु कटि पादान्त सङ्करु-
षणनु शिर जघनान्तवागिह वासुदेवाख्य ।
अनिमेषेशनिरुद्ध प्रद्यु-
म्नन एडदि बलभागदलि चि-
न्तनेय माळपरिगुण्टे मैलिगे विधि निषेधगळु ॥

पदुम-नाभनु-पाणि-योळगिह-वदन-दलिहृषि-केश-नासिक-
सदन-दलिश्री-धरनु-जिह्वेयो-ळिप्प-वामन-नु ।
विदित-त्रीवि-क्रमनु-नेत्रदि-मधुह-त्वग्दे-शदोळ-गिहक-
र्णदलि-इप्पनु-विष्णु-नामक-श्रवण-नेन्देनि-सि ॥ १८-(१६४)

पदुमनाभनु पाणियोळगिह
वदनदलि हृषिकेश नासिक
सदनदलि श्रीधरनु जिह्वेयोळिप्प वामननु ।
विदित त्रीविक्रमनु नेत्रदि
मधुह त्वग्देशदोळगिह क-
र्णदलि इप्पनु विष्णुनामक श्रवणनेन्देनिसि ॥

मनदो-ळिहगो-विन्द-माधव-धनप-सखत-त्त्वदलि-नारा-
यणम-हत्त-त्त्वदलि-अव्य-क्तदोळु-केशव-नु ।
इनितु-रूपव-देह-दोळुचि-न्तनेय-गैवम-हात्म-रिळेयोळु-
मनुज-रल्लव-रमर-रेसरि-हरिकृ-पाबल-दि ॥ १९-(१६५)

मनदोळिह गोविन्द माधव
धनपसखतत्त्वदलि नारा-
यण महत्तत्त्वदलि अव्यक्तदोळु केशवनु ।
इनितु रूपव देहदोळु चि-
न्तनेयगैव महात्मरिळेयोळु
मनुजरल्लवरमररे सरि हरिकृपाबलदि ॥

नेलदो-ळिप्पनु-कृष्ण-रूपदि-जलदो-ळिप्पनु-हरिये-निसिशिखि-
योळगे-इप्पनु-परशु-रामनु-पेन्द्र-नेन्देनि-सि ।
एलरो-ळिप्पज-नार्द-ननुबा-न्दळदो-ळच्युत-गन्ध-नरहरि-
पोळेव-धोक्षज-रसग-ळोळुरस-रूप-ताना-गि ॥ २०-(१६६)

नेलदोळिप्पनु कृष्णरूपदि
जलदोळिप्पनु हरियेनिसि शिखि-
योळगे इप्पनु परशुरामनुपेन्द्रनेन्देनिसि ।
एलरोळिप्प जनार्दननु बा-
न्दळदोळच्युत गन्ध नरहरि
पोळेवधोक्षज रसगळोळु रसरूप तानागि ॥

रूप-पुरुषो-त्तमनु-स्पर्श-प्राप-कनुअनि-रुद्ध-शब्ददि-
व्यापि-सिहप्र-द्युम्यु-पस्थदि-वासु-देवनि-ह ।
तापो-ळेवपा-युस्थ-नागिज-याप-तियुस-ङ्करुष-णनुसु-
स्थाप-कनेनिसि-पाद-दोळुदा-मोद-रनुपोळे-व ॥ २१-(१६७)

रूप पुरुषोत्तमनु स्पर्श-
प्रापकनु अनिरुद्ध शब्ददि
व्यापिसिह प्रद्युम्न्युपस्थदि वासुदेवनिह ।
ता पोळेव पायुस्थनागि ज-
यापतियु सङ्करुषणनु सु-
स्थापकनेनिसि पाददोळु दामोदरनु पोळेव ॥

चतुर-विंशति-तत्त्व-दोळुश्री-पतियु-अनिरु-द्धादि-रूपदि-
वितत-नागि-द्दखिल-जीवर-संह-ननदोळ-गे ।
व्रतति-यन्ददि-सुत्तु-सुत्तुत-पितृग-ळिगेत-र्पकने-निसिको-
ण्डतुल-महिमनु-षण्ण-वतिना-मदलि-नेलेसिह-नु ॥ २२(१६८)

चतुरविंशति तत्त्वदोळु श्री-
पतियु अनिरुद्धादि रूपदि
वितत्तनागिद्दखिल जीवर संहननदोळगे ।
व्रततियन्ददि सुत्तुसुत्तुत
पितृगळिगे तर्पकनेनिसिको-
ण्डतुलमहिमनु षण्णवतिनामदलि नेलेसिहनु ॥

चतुर-विंशति-तत्त्व-दोळुत-त्पतिग-ळेनिसुव-ब्रह्म-मुखदे-
वतेग-ळोळुह-न्नोन्दु-नूरै-वत्ते-रडुरू-प ।
वितत-नागि-देल्ल-जीवर-जतन-माडुव-गोसु-गजग-
त्पतिगे-एना-दरुप्र-योजन-विल्ल-वदरि-न्द ॥ २३-(१६९)

चतुरविंशति तत्त्वदोळु त-
त्पतिगळेनिसुव ब्रह्ममुखदे-
वतेगळोळु हन्नोन्दुनूरैवत्तेरडु रूप ।
वितत्तनागिदेल्ल जीवर
जतन माडुवगोसुग जग-
त्पतिगे एनादरु प्रयोजनविल्लवदरिन्द ॥

इन्दि-राधव-शक्ति-मोदला-दोन्द-धिकदश-रूप-दिन्दलि-
पोन्दि-हनुसक-लेन्द्रि-यगळलि-पुरुष-नामक-नु ।
सुन्द-रप्रद-पूर्ण-ज्ञाना-नन्द-मयचि-देह-दोळुता-
नोन्द-रेक्षण-अगल-दलेपर-मात्म-नागि-प्प ॥ २४-(१७०)

इन्दिराधव शक्तिमोदला-
दोन्दधिकदश रूपदिन्दलि
पोन्दिहनु सकलेन्द्रियगळलि पुरुषनामकनु ।
सुन्दरप्रद पूर्णज्ञाना-
नन्दमय चिद्देहदोळु ता-
नोन्दरेक्षण अगलदले परमात्मनागिप्प ॥

आर-धिकदश-रूप-दिन्दलि-तोरु-तिप्पनु-विश्व-लिङ्गश-
रीर-दोळुतै-जसनु-प्राज्ञनु-तुरिय-नामक-नु ।
मूर-यिदुरू-पगळ-धरिसुत-ईर-यिदुकर-णदलि-मात्रदि-
खेर-शिखिजल-भूमि-योळगिह-नात्म-नामद-लि- २५-(१७१)

आरधिकदश रूपदिन्दलि
तोरुतिप्पनु विश्व लिङ्गश-
रीरदोळु तैजसनु प्राज्ञनु तुरियनामकनु ।
मूरयिदु रूपगळ धरिसुत
ईरयिदु करणदलि मात्रदि
खेर शिखि जल भूमियोळगिहनात्मनामदलि-

मनदो-ळुअह-ङ्कार-दलिचि-न्तनेय-माळपुदु-अन्त-रात्मन-
घनसु-तत्त्वदि-परम-नव्य-क्तदलि-ज्ञाना-त्म ।
इनितु-पञ्चा-शद्ध-रणवे-द्यनअ-जाद्यै-वत्तु-मूर्तिग-
ळनुस-दास-र्वत्र-देहग-ळल्लि-पूजिपु-दु ॥ २६-(१७२)

मनदोळु, अहङ्कारदलि चि-
न्तनेय माळपुदु अन्तरात्मन
घनसुतत्त्वदि परमनव्यक्तदलि ज्ञानात्म ।
इनितु पञ्चाशद्धरण वे-
द्यन अजाद्यैवत्तु मूर्तिग-
ळनु सदा सर्वत्र देहगळल्लि पूजिपुदु ॥

चतुर-विंशति-तत्त्व-दोळुत-त्पतिग-ळेनिसुव-ब्रह्म-मुखदे-
वतेग-ळोळुहदि-मूरु-साविर-देण्टु-नूरधि-क-
चतुर-विंशति-रूप-दिन्दलि-वितत-नागि-देल्ल-रोळुप्रा-
कृतपु-रुषन-न्ददलि-पञ्चा-त्मकनु-रमिसुव-नु ॥ २७-(१७३)

चतुरविंशति तत्त्वदोळु तत्पतिग-
ळेनिसुव ब्रह्ममुखदे-
वतेगळोळु हदिमूरुसाविरदेण्टुनूरधिक
चतुरविंशति रूपदिन्दलि
वितत्तनागिदेल्लरोळु प्रा-
कृत पुरुषनन्ददलि पञ्चात्मकनु रमिसुवनु ॥

केश-वादिसु-मूर्ति-द्वादश-मास-पुण्ड्रग-ळल्लि-वेद-
व्यास-अनिरु-द्धादि-रूपग-ळारु-ऋतुगळ-लि ।
वास-वागिह-वेन्दु-त्रिंशति-वास-रदिस-त्कर्म-धर्मनि-
राशे-यिन्दलि-माडु-करुणव-बेडु-कोण्डा-डु ॥ २८-(१७४)

केशवादि सुमूर्ति द्वादश
मास पुण्ड्रगळल्लि वेद-
व्यास अनिरुद्धादि रूपगळारु ऋतुगळलि ।
वासवागिहवेन्दु त्रिंशति
वासरदि सत्कर्म धर्म नि-
राशेयिन्दलि माडु करुणव बेडु कोण्डाडु ॥

लोष्ट-काञ्चन-लोह-शैलज-काष्ट-मोदला-दखिल-जडपर-
मेष्ठि-मोदला-देल्ल-चेतन-रोळगे-अनुदिन-वु ।
चेष्टे-गळमा-डिसुत-तिळिसदे-प्रेष्ठ-नागि-देल्ल-रिगेस-
र्वेष्ट-दायक-सन्त-यिसुवनु-सर्व-जीवर-नु ॥ २९-(१७५)

लोष्टकाञ्चन लोह शैलज
काष्ट मोदलादखिल जड पर-
मेष्ठिमोदलादेल्ल चेतनरोळगे अनुदिनवु ।
चेष्टेगळ माडिसुत तिळिसदे
प्रेष्ठनागिदेल्लरिगे स-
र्वेष्टदायक सन्तयिसुवनु सर्वजीवरनु ॥

वासु-देवनि-रुद्ध-रूपदि-पुंश-रीरदो-ळिहनु-सर्वद-
स्त्रीश-रीरदो-ळिहनु-सङ्करु-षणनु-प्रद्यु-म्न ।
द्वासु-पर्णा-श्रुतिवि-नुतस-र्वासु-निलयन-राय-णनसदु-
पास-नेयगै-ववरु-जीव-न्मुक्त-रेनिसुव-रु ॥ ३०-(१७६)

वासुदेवनिरुद्ध रूपदि पुंश-
रीरदोळिहनु सर्वद
स्त्रीशरीरदोळिहनु सङ्करुषणनु प्रद्युम्न ।
''द्वासुपर्णा''श्रुति विनुत स-
र्वासुनिलय नरायणन सदु-
पासनेय गैववरु जीवन्मुक्तरेनिसुवरु ॥

तन्न-नन्ता-नन्त-रूपहि-रण्य-गर्भा-दिगळो-ळगेका-
रुण्य-सागर-हरहि-अवरव-रखिल-व्यापा-र ।
बन्न-बडदेले-माडि-माडिसि-धन्य-रेनिसिस-मस्त-दिविजर-
पुण्य-कर्मव-स्वीक-रिसिफल-वित्तु-पालिसु-व ॥ ३१-(१७७)

तन्ननन्तानन्त रूप हि-
रण्यगर्भादिगळोळगे का-
रुण्यसागर हरहि अवरवरखिल व्यापार ।
बन्नबडदेले माडि माडिसि
धन्यरेनिसि समस्त दिविजर
पुण्यकर्मव स्वीकरिसि फलवित्तु पालिसुव ॥

साग-रदोळिह-नदिय-जलभे-दाग-सदोळि-प्पब्द-बल्लुदु-
कागे-गुब्बिग-ळरिय-बहवेन-दियज-लस्थिति-य ।
भोगि-वरपरि-यङ्क-शयननो-ळीगु-णत्रय-बद्ध-जगविहु-
दाग-मज्ञरु-तिळिव-रज्ञा-निगळि-गळवड-दु ॥ ३२-(१७८)

सागरदोळिह नदिय जलभे-
दागसदोळिप्पब्द बल्लुदु
कागेगुब्बिगळरियबहवे नदिय जलस्थितिय ।
भोगिवरपरियङ्कशयननो-
ळीगुणत्रयबद्धजगविहु-
दागमज्ञरु तिळिवरज्ञानिगळिगळवडदु ॥

करण-गुणभू-तगळो-ळगेत-द्धररे-निपब्र-ह्मादि-दिविजरो-
ळरितु-रूपच-तुष्ट-यगळनु-दिनदि-सर्वत्र ।
स्मरिसु-तनुमो-दिसुत-हिग्गुत-परव-शदिपा-डुवव-रिगेत-
न्निरव-तोरिसि-भवावि-मुक्तर-माडि-पोषिसु-व ॥ ३३-(१७९)

करण गुण भूतगळोळगे त-
द्धररेनिप ब्रह्मादिदिविजरो-
ळरितु रूपचतुष्टयगळनुदिनदि सर्वत्र ।
स्मरिसुतनुमोदिसुत हिग्गुत
परवशदि पाडुवरिगे त-
न्निरव तोरिसि भवविमुक्तर माडि पोषिसुव ॥

मूल-रूपनु-मनदो-ळिहश्रव-णालि-योळगिह-मत्स्य-कूर्मनु-
कोल-रूपनु-त्वग्र-सनदोळ-गिप्प-नरसिं-ह ।
बाल-वटुवा-मननु-नासिक-नाळ-दोळुवद-नदलि-भार्गव-
वालि-भञ्जन-हस्त-दोळुपा-ददलि-श्रीकृ-ष्ण ॥ ३४-(१८०)

मूलरूपनु मनदोळिह श्रव-
णालियोळगिह मत्स्य कूर्मनु
कोलरूपनु त्वग्रसनदोळगिप्प नरसिंह ।
बालवटु वामननु नासिक
नाळदोळु वदनदलि भार्गव
वालिभञ्जन हस्तदोळु पाददलि श्रीकृष्ण ॥

जिनवि-मोहक-बुद्ध-पायुग-दनुज-मर्दन-कल्कि-मेद्रदि-
इनितु-दशरू-पगळ-दशकर-णङ्ग-ळलितिळि-दु ।
अनुभ-विपविष-यगळ-कृष्णा-र्पणवे-नलुकै-गोम्ब-वृजिना-
र्दनवर-जगन्नाथ-विट्ठल-विश्व-व्यापक-नु ॥ ३५-(१८१)

जिनविमोहक बुद्धपायुग
दनुजमर्दनकल्कि मेद्रदि-
इनितु दशरूपगळ दशकरणङ्गळलि तिळिदु ।
अनुभविप विषयगळ कृष्णा-
र्पणवेनलु कैगोम्ब वृजिना-
र्दन वरजगन्नाथविट्ठल विश्वव्यापकनु ॥

॥ ६. पञ्चमहायज्ञसन्धि मुगियितु ॥(६-१८१)॥ श्रीमध्वेशार्पणमस्तु ॥

सज्जनरल्लि सुविद्येयन्नु प्रचोदिसुव

सज्जनरन्नु अविद्येयिन्द दूरमाडिसुव

नियामक										
भगवद्रूप :	अनिरुद्ध	प्रद्युम्न	सङ्कर्षण	वासुदेव	नारायण	कृद्धोल्क	महोल्क	वीरोल्क	द्युल्क	सहस्रोल्क
मरुत्तरु :	प्राण	अपान	व्यान	उदान	समान	नाग	कूर्म	कृकल	देवदत्त	धनञ्जय

पद्यगळु : १५८,१५९

श्रीमद्धरिकथाऽमृतसार ७. पञ्चतन्त्रात्रासन्धि (शङ्कराभरण त्रिपुटताळ)

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

भूस-लिलशिखि-पवन-भूता-काश-दोळगै-दैदु-तन्मा-
त्रास-हितओ-न्दधिक-पञ्चा-शद्ध-रणवे-द्य ।
ईश-रीरदि-व्यापि-सिद्दु-सु-रासु-ररिगेनि-रन्त-रदलिसु-
खासु-खप्रद-नागि-आडुव-द्वेषि-परबिडु-व ॥ १-(१८२)

भू सलिल शिखि पवन भूता-
काशदोळगैदैदु तन्मा-
त्रासहित ओन्दधिकपञ्चाशद्धरणवेद्य ।
ई शरीरदि व्यापिसिद्दु सु-
रासुररिगे निरन्तरदलि सु-
खासुखप्रदनागि आडुव द्वेषिपर बिडुव ॥

प्रणव-प्रतिपा-द्यत्रि-नामदि-तनुवि-नोळुत्रि-स्थान-गनिरु-
द्धनुत्रि-पञ्चक-एक-विंशति-चतुर-विंशति-ग-
नेनिसि-एप्प-त्तेरडु-साविर-इनितु-नाडिग-ळोळुनि-यामिसु-
तिनग-भस्तिग-लोक-दोळुस-र्वत्र-बेळगुव-नु ॥ २-(१८३)

प्रणवप्रतिपाद्य त्रिनामदि
तनुविनोळु त्रिस्थानगनिरु-
द्धनु त्रिपञ्चक एकविंशति चतुरविंशतिग-
नेनिसि एप्पत्तेरडुसाविर
इनितु नाडिगळोळु नियामिसु-
तिन गभस्तिग लोकदोळु सर्वत्र बेळगुवनु ॥

जीव-लिङ्गनि-रुद्ध-स्थूलक-लेव-रगळलि-विश्व-तुरग-
ग्रीव- मूले-शाच्यु-तत्रय-हंस-मूर्तिग-ळ ।
ईवि-धचतु-स्थान-दलिशा-न्तीव-रनई-रेरडु-रूपव-
भावि-सुवुदे-कोन-विंशति-मूर्ति-सर्व-त्र ॥ ३-(१८४)

जीव लिङ्गनिरुद्ध स्थूलक-
लेवरगळलि विश्व तुरग-
ग्रीव मूलेशाच्युतत्रय हंसमूर्तिगळ ।
ई विध चतुस्थानदलि शा-
न्तीवरन ईरेरडु रूपव
भाविसुवुदेकोनविंशति मूर्ति सर्वत्र ॥

कलुष-विल्लद-दर्प-णादिप्रति-फलिसि-सर्वप-दार्थ-गळुक-
ङ्गोळिसु-वन्ददि-बिम्ब-जडचे-तनग-ळोळगि-द्दु ।
पोळेव-बहुरू-पदलि-सज्जन-रोळगे-मनद-र्पणदि-तानि-
श्चलनि-रामय-निर्वि-कारनि-राश्र-यअन-न्त ॥ ४-(१८५)

कलुषविल्लद दर्पणदि प्रति
फलिसि सर्वपदार्थगलु क-
ङ्गोलिसुवन्ददि बिम्ब जड चेतनगळोळगिद्दु ।
पोळेव बहुरूपदलि सज्जन-
रोळगे मनदर्पणदि ता नि-
श्चल निरामय निर्विकार निराश्रय अनन्त ॥

ईश-रीरच-तुष्ट-यगळोळु-कोश-धातुग-भार-तिपप्रा-
णेश-निप्प-त्तोन्दु-साविर-दारु-नूरेनि-प ।
श्वास-रूपक-हंस-भास्कर-भेश-रोळगि-द्दवर-कैपिडि-
दीस-रोजभ-वाण्ड-दोळुस-र्वत्र-तुम्बिह-नु ॥ ५-(१८६)

ई शरीरचतुष्टयगळोळु
कोशधातुग भारतिप प्रा-
णेशनिप्पत्तोन्दुसाविरदारुनूरेनिप ।
श्वासरूपक हंस भास्कर
भेशरोळगिद्दवर कैपिडि-
दीसरोजभवाण्डदोळु सर्वत्र तुम्बिहनु ॥

शिरग-ळैदै-देरडु-बाहुग-ळेरडु-पादग-ळोन्दु-मध्यो-
दरदि-शोभिप-वाङ्म-नोमय-नेनिसि-नित्यद-लि ।
करण-धातुग-ळल्लि-एप्प-त्तेरडु-साविर-नाडि-गळलि-
प्परवि-दूरनु-भार-तप्रति-पाद्य-नेन्देनि-सि ॥ ६-(१८७)

शिरगळैदैदेरडु बाहुग-
ळेरडु पादगळोन्दु मध्यो-
दरदि शोभिप वाङ्मनोमयनेनिसि नित्यदलि ।
करण धातुगळल्लि एप्प-
त्तेरडुसाविर नाडिगळलि
प्परविदूरनु भारतप्रतिपाद्यनेन्देनिसि ॥

इरे-रडुदे-होर्मि-भूतग-नार-धिकदश-ऋग्वि-नुतल-
क्ष्मीर-मणवि-ष्णवाख्य-रूपदि-चतुः-षष्ठिक-ला-
धार-कनुता-नागि-ब्रह्मपु-रारि-मुख्यरो-ळिद्दु-सततवि-
हार-माळपनु-चतुः-पादा-ह्वयदि-लोकदो-ळु ॥ ७-(१८८)

इरेरडु देहोर्मिभूतग-
नारधिकदश ऋग्विनुत ल-
क्ष्मीरमण विष्णवाख्यरूपदि चतुःषष्ठिकला
धारकनु तानागि ब्रह्म पु-
रारिमुख्यरोळिद्दु सतत वि-
हार माळपनु चतुःपादाह्वयदि लोकदोळु ॥

तृणमो-दलुब्र-ह्मान्त-जीवर-तनुग-ळत्रय-गळलि-नारा-
यणन-साविर-दैदु-नूरि-प्पत्तु-मेला-रु ।
गणने-माळपरु-बुधरु-रूपव-घृणिय-सूर्या-दित्य-नामग-
ळनुदि-नदिजपि-सुवरि-गीवा-रोग्य-सम्पद-व ॥ ८-(१८९)

तृणमोदलु ब्रह्मान्त जीवर
तनुगळत्रयगळलि नारा-
यणन साविरदैदुनूरिप्पत्तु मेलारु ।
गणने माळपरु बुधरु रूपव
घृणिय सूर्यादित्य नामग-
ळनुदिनदि जपिसुवरिगीवारोग्य सम्पदव ॥

ऐदु-नूरे-प्पत्त-नालकु-आधि-भौतिक-दल्लि-तिळिवरु-
ऐदे-रडुशत-एक-विंशति-रूप-वाध्या-त्म-
भेद-गळलि-न्नूर-मूव-त्ताद-मेलो-न्दधिक-मूर्तिग-
ळाद-रदिअधि-दैव-दोळुचि-न्तिपरु-भूसुर-रु ॥ ९-(१९०)

ऐदुनूरेप्पत्तनालकु
आधिभौतिकदल्लि तिळिवरु
ऐदेरडुशतएकविंशति रूपवाध्यात्म
भेदगळलिन्नूरमूव-
त्तादमेलोन्दधिक मूर्तिग-
ळादरदि अधिदैवदोळु चिन्तिपरु भूसुररु ॥

सुरुचि-शार्वरि-करने-निसिस-ङ्करुष-णप्र-द्युम्न-शशिभा-
स्कररो-ळगेअर-वत्त-धिकमु-न्नूरु-रूपद-लि- ।
करेसि-कोम्बनु-अहः-संव-त्सरने-निपसुवि-शिष्ट-नामदि-
अरित-वरिगा-रोग्य-भाग्यव-नीव-नन्दम-य ॥ १०-(१९१)

सुरुचि शार्वरिकरनेनिसि स-
ङ्करुषण प्रद्युम्न शशि भा-
स्कररोळगे अरवत्तधिकमुन्नूरु रूपदलि ।
करेसिकोम्बनु अहः संव-
त्सरनेनिप सुविशिष्टनामदि
अरितवरिगारोग्य भाग्यवनीवनन्दमय ॥

एक-पञ्चा-शद्ध-रणगत-माक-लत्रनु-सर्व-रोळग-
व्याकृ-ताका-शान्त-व्यापिसि-निगम-ततिगळ-नु ।
व्याक-रणभा-रतमु-खादिअ-नेक-शास्त्रपु-राण-भाष्या-
नीक-गळक-ल्पिसिम-नोवा-ङ्मयने-निसिको-म्ब ॥११-(१९२)

एकपञ्चाशद्धरणगत
माकलत्रनु सर्वरोळग-
व्याकृताकाशान्त व्यापिसि निगमततिगळनु ।
व्याकरण भारतमुखादि अ-
नेक शास्त्र पुराण भाष्या-
नीकगळ कल्पिसि मनोवाङ्मयनेनिसिकोम्ब ॥

भार-भृन्ना-मकन-साविर-दारु-नूरि-प्पत्तु-नालकु-
मूरु-तिगळुच-राच-रदिस-र्वत्र-तुम्बिह-वु ।
आरु-नालकु-जडग-ळलिहदि-नारु-चेतन-गळलि-चिन्तिसे-
तोरि-कोम्बनु-तन्न-रूपव-सकल-ठाविन-लि ॥ १२-(१९३)

भारभृन्नामकन साविर-
दारुनूरिप्पत्तुनालकु
मूरुतिगळु चराचरदि सर्वत्र तुम्बिहवु ।
आरु नालकु जडगळलि हदि-
नारु चेतनगळलि चिन्तिसे
तोरिकोम्बनु तन्नरूपव सकलठाविनलि ॥

मिसुनि-मेलिन-मणिय-वोल्रा-जिसुव-ब्रह्मा-दिगळ-मनदलि-
बिसज-जाण्डा-धार-कनुआ-धेय-नेन्देनि-सि ।
द्विशत-नाल्व-त्तेरडु-रूपदि-शशियो-ळिप्पनु-शशदो-ळगेशो-
भिसुव-नाल्व-त्तेरड-धिकशत-रूप-दलिबिड-दे ॥ १३-(१९४)

मिसुनिमेलिन मणियवोल्रा-
जिसुव ब्रह्मादिगळ मनदलि
बिसजजाण्डाधारकनु आधेयनेन्देनिसि ।
द्विशतनाल्वत्तेरडुरूपदि शशियो-
ळिप्पनु शशदोळगे शो-
भिसुव नाल्वत्तेरडधिकशत रूपदलि बिडदे ॥

एरडु-साविर-देण्टु-रूपव-नरितु-सर्वप-दार्थ-दलिसिरि-
वरन-पूजेय-माडु-वरगळ-बेडु-कोण्डा-डु ।
बरिदे-जलदलि-मुळुगि-बिसिलोळु-बेरळ-नेणिसिद-रेनु-सद्गुरु-
हिरिय-रनुसरि-सिदर-मर्मव-नरिय-दिहनर-नु ॥ १४-(१९५)

एरडुसाविरदेण्टु रूपव-
नरितु सर्वपदार्थदलि सिरि
वरन पूजेयमाडु वरगळ बेडु कोण्डाडु ।
बरिदे जलदलि मुळुगि बिसिलोळु
बेरळनेणिसिदरेनु सद्गुरु
हिरियरनुसरिसिदरमर्मवनरियदिह नरनु ॥

मत्ते-चिद्दे-हदओ-ळगेए-म्भत्तु-साविर-देळु-नूरि-
प्पत्त-यिदुनर-सिंह-रूपद-लिद्दु-जीवरि-गे ।
नित्य-दलिहग-लिरुळु-बप्पप-मृत्यु-विगेता-मृत्यु-वेनिसुव-
भृत्य-वत्सल-भयवि-नाशन-भाग्य-सम्प-न्न ॥ १५-(१९६)

मत्ते चिद्देहद ओळगे ए-
म्भत्तुसाविरदेळुनूरि-
प्पत्तयिदु नरसिंह रूपदलिद्दु जीवरिगे ।
नित्यदलि हगलिरुळु बप्पप-
मृत्युविगे ता मृत्युवेनिसुव
भृत्यवत्सल भयविनाशन भाग्यसम्पन्न ॥

ज्वरनो-ळिप्प-त्तेळु-हरनोळ-गिरुव-निप्प-त्तेण्टु-रूपदि-
एरडु-साविर-देण्टु-नूरि-प्पत्त-एळेनि-प ।
ज्वरह-राह्वय-नार-सिंहन-स्मरणे-मात्रदि-दुरित-राशिग-
ळिरदे-पोपुवु-तरणि-बिम्बव-कण्ड-हिमद-न्ते ॥ १६-(१९७)

ज्वरनोळिप्पत्तेळु हरनोळ-
गिरुवनिप्पत्तेण्टु रूपदि
एरडुसाविरदेण्टुनूरिप्पत्तएळेनिप ।
ज्वरहराह्वय नारसिंहन
स्मरणे मात्रदि दुरितराशिग-
ळिरदे पोपुवु तरणिबिम्बव कण्ड हिमदन्ते ॥

मास-परिय-न्तरवु-बिडदेनृ-केस-रियशुभ-नाम-मन्त्रजि-
तास-नदिए-काग्र-चित्तदि-निष्क-पटदि-न्द ।
बेस-रदेजपि-सलुवृ-जिनगळ-नाश-गैसिम-नोर-थगळप-
रेश-पूर्तिय-माडि-कोडुवनु-कडेगे-परगति-य ॥ १७-(१९८)

मास परियन्तरवु बिडदे नृ-
केसरिय शुभनाममन्त्र जि-
तासनदि एकाग्रचित्तदि निष्कपटदिन्द ।
बेसरदे जपिसलु वृजिनगळ
नाशगैसि मनोरथगळ प-
रेश पूर्तियमाडि कोडुवनु कडेगे परगतिय ॥

चतुर-मूर्त्या-त्मकह-रियुत्रिं-शतिसु-रूपदि-ब्रह्म-नोळुमा-
रुतनो-ळिप्प-त्तेळु-रूपद-लिप्प-प्रद्यु-म्न-
सुतरो-ळिप्प-त्तैदु-हदिने-ण्टतुल-रूपग-ळरितु-वत्सर-
शतग-ळलिपू-जिसुत-लिरुचतु-रात्म-कनपद-व ॥ १८-(१९९)

चतुरमूर्त्यात्मक हरियु त्रिं-
शति सुरूपदि ब्रह्मनोळु मा-
रुतनोळिप्पत्तेळु रूपदलिप्प प्रद्युम्न
सुतरोळिप्पत्तैदु हदिने-
ण्टतुलरूपगळरितु वत्सर
शतगळलि पूजिसुतलिरु चतुरात्मकन पदव ॥

नूरु-वरुषके-दिवस-मूव-त्तारु-साविर-वहवु-नाडिश-
रीर-दोळगिनि-तिहवु-स्त्रीपुं-भेद-दलिहरि-य-
ईर-धिकवे-प्पत्तु-साविर-मूरु-तिगळनु-नेनेदु-सर्वा-
धार-कनस-र्वत्र-पूजिसु-पूर्ण-नेन्दरि-तु ॥ १९-(२००)

नूरुवरुषके दिवस मूव-
त्तारुसाविरवहवु नाडि श-
रीरदोळगिनितिहवु स्त्री पुं भेददलि हरिय
ईरधिकवेप्पत्तुसाविर
मूरुतिगळनु नेनेदु सर्वा-
धारकन सर्वत्र पूजिसु पूर्णनेन्दरितु ॥

काल-कर्मगु-णस्व-भावग-ळाल-यनुता-नागि-लकुमी-
लोल-तत्त-द्रूप-नामदि-करेसु-तोळगि-दु ।
लीले-यिन्दलि-सर्व-जीवर-पालि-सुवसं-हरिप-सृष्टिप-
मूल-कारण-प्रकृति-गुणका-र्यगळ-मनेमा-डि ॥ २०-(२०१)

काल कर्म गुण स्वभावग-
ळालयनु तानागि लकुमी
लोल तत्तद्रूपनामदि करेसुतोळगिदु ।
लीलेयिन्दलि सर्वजीवर
पालिसुव संहरिप सृष्टिप
मूल कारण प्रकृति गुण कार्यगळ मनेमाडि ॥

तिलज-वर्तिग-ळनुस-रिसिप्र-ज्वलिसि-दीपग-ळाल-यदक-
त्तलेय-भङ्गिसि-तद्व-तार्थव-तोरु-वन्दद-लि ।
जलरु-हेक्षण-तन्न-वरमन-दोळगे-भक्ति-ज्ञान-कर्मके-
ओलिदु-पोळेवुत-तोरु-वनुगुण-रूप-क्रियेगळ-नु ॥ २१-(२०२)

तिलज वर्तिगळनुसरिसि प्र-
ज्वलिसि दीपगळालयद क-
त्तलेय भङ्गिसि तद्वतार्थव तोरुवन्ददलि ।
जलरुहेक्षण तन्नवर मन-
दोळगे भक्ति ज्ञान कर्मके
ओलिदु पोळेवुत तोरुवनु गुण रूप क्रियेगळनु ॥

आव-देहव-कोडलि-हरिम-त्ताव-लोकदो-ळिडलि-ताम-
त्ताव-देशदो-ळिडलि-आवा-वस्थे-गळुबर-लि ।
ईवि-धदिजड-चेत-नदोळुप-राव-रेशन-रूप-गुणगळ-
भावि-सुवसु-ज्ञान-भकुतिय-बेडु-कोण्डा-डु ॥ २२-(२०३)

आव देहव कोडलि हरि म-
त्ताव लोकदोळिडलि ता म-
त्ताव देशदोळिडलि आवावस्थेगळु बरलि ।
ई विधदि जड चेतनदोळु प-
रावरेशन रूप गुणगळ
भाविसुव सुज्ञान भकुतिय बेडु कोण्डाडु ॥

ओन्द-रोळगो-न्दोन्दु-बेरेदिह-इन्दि-रेशन-रूप-गळमन-
बन्द-तेरदलि-चिन्ति-सिदकनु-मान-विनिति-ल्ल ।
सिन्धु-राजनो-ळम्ब-रालय-बन्धि-सलुप्रति-तन्तु-गळोळुद-
बिन्दु-व्यापिसि-दन्ते-इरुति-प्पनुच-राचर-दि ॥ २३-(२०४)

ओन्दरोळगोन्दोन्दु बेरेदिह
इन्दिरेशन रूपगळ मन
बन्दतेरदलि चिन्तिसिदकनुमानविनितिल्ल ।
सिन्धुराजनोळम्बरालय
बन्धिसलु प्रतितन्तुगळोळुद-
बिन्दु व्यापिसिदन्ते इरुतिप्पनु चराचरदि ॥

ओन्दु-रूपदो-ळोन्द-वयवदो-ळोन्दु-रोमदो-ळोन्दु-देशदि-
पोन्दि-इप्पव-जाण्ड-नन्ता-नन्त-कोटिग-ळु ।
हिन्दे-मार्का-ण्डेय-काणने-ओन्दे-रूपदि-सृष्टि-प्रलयव-
इन्दि-रेशनो-ळेनि-दच्चरि-अप्र-मेयस-द ॥ २४-(२०५)

ओन्दु रूपदोळोन्दवयवदो-
ळोन्दु रोमदोळोन्दु देशदि
पोन्दि इप्पवजाण्डनन्तानन्त कोटिगळु ।
हिन्दे मार्काण्डेय काणने
ओन्दे रूपदि सृष्टि प्रलयव
इन्दिरेशनोळेनिदच्चरि अप्रमेय सद ॥

ओन्द-नन्ता-नन्त-रूपग-ळोन्दे-रूपदो-ळिहवु-लोकदो-
ळोन्दे-रूपदि-सृष्टि-स्थितिमोद-लाद-व्यापा-र ।
ओन्दे-कालदि-माडि-तिळिसदे-सन्द-णिसिको-ण्डिप्प-जगदोळु-
नन्द-नन्दन-रणदो-ळिन्द्रा-त्मजगे-तोरिस-ने ॥ २५-(२०६)

ओन्दनन्तानन्त रूपग-
ळोन्दे रूपदोळिहवु लोकदो-
ळोन्दे रूपदि सृष्टि स्थिति मोदलाद व्यापार ।
ओन्देकालदि माडि तिळिसदे
सन्दणिसिकोण्डिप्प जगदोळु
नन्दनन्दन रणदोळिन्द्रात्मजगे तोरिसने ॥

श्रीर-मेशन-मूर्ति-गळुनव-नारि-कुञ्जर-दन्ते-एका-
कार-तोर्पुवु-अवय-वाह्वय-अवय-वगळ-ल्लि ।
बेरे-बेरेये-कङ्गो-ळिसुवश-रीर-दोळुना-नाप्र-कारवि-
कार-शून्यवि-राट-नेनिसुव-पदुम-जाण्डदो-ळु ॥ २६-(२०७)

श्रीरमेशन मूर्तिगळु नव
नारिकुञ्जरदन्ते एका-
कार तोर्पुवु अवयवाह्वय अवयवगळल्लि ।
बेरे बेरेये कङ्गोळिसुव श-
रीरदोळु नानाप्रकार वि-
कारशून्य विराटनेनिसुव पदुमजाण्डदोळु ॥

वारि-जभवा-ण्डदोळु-लकुमी-नार-सिंहन-रूप-गुणगळु-
वारि-धियोळिह-तेरेग-ळन्ददि-सन्द-णिसिइह-वु ।
कार-णांशा-वेश-व्याप्तव-तार-व्यक्ता-व्यक्त-कार्यग-
ळीर-यिदुसुवि-भूति-अन्त-र्यामि-रूपग-ळु ॥ २७-(२०८)

वारिजभवाण्डदोळु लकुमी
नारसिंहन रूप गुणगळु
वारिधियोळिह तेरेगळन्ददि सन्दणिसि इहवु ।
कारणांशावेश व्याप्तव-
तार व्यक्ताव्यक्त कार्यग-
ळीरयिदु सुविभूति अन्तर्यामि रूपगळु ॥

मणिग-ळोळगिह-सूत्र-दन्ददि-प्रणव-पाद्यनु-चेत-नाचे-
तनज-गत्तिनो-ळनुदि-नदोळा-डुवनु-सुखपू-र्ण ।
दणिवि-केयुइव-गिल्ल-बहुका-रुणिक-नन्ता-नन्त-जीवर-
गणदो-ळेकां-शंश-रूपदि-निन्तु-नियमिसु-व ॥ २८-(२०९)

मणिगळोळगिह सूत्रदन्ददि
प्रणवपाद्यनु चेतनाचे-
तन जगत्तिनोळनुदिनदोळाडुवनु सुखपूर्ण ।
दणिविकेयु इवगिल्ल बहुका-
रुणिकनन्तानन्त जीवर
गणदोळेकांशंश रूपदि निन्तु नियमिसुव ॥

जीव-जीवर-भेद-जडजड-जीव-जडजड-जीव-रिन्दलि-
श्रीव-रनुअ-त्यन्त-भिन्नवि-लक्ष-णनुलकु-मि-
मूव-रिन्दलि-पदुम-जाण्डदि-तावि-लक्षण-ळेनिसु-तिप्पळु-
साव-धिकसम-शून्य-ळेन्दरि-तीर्व-रनुभजि-सु ॥ २९-(२१०)

जीवजीवर भेद जडजड
जीवजड जडजीवरिन्दलि
श्रीवरनु अत्यन्तभिन्न विलक्षणनु लकुमि
मूवरिन्दलि पदुमजाण्डदि
ता विलक्षणळेनिसुतिप्पळु
सावधिकसमशून्यळेन्दरितीर्वरनु भजिसु ॥

आदि-तेयरु-तिळिय-दिहगुण-वेद-मानिग-ळेन्दे-निपवा-
ण्यादि-गळुब-ल्लरव-ररियद-गुणग-णङ्गळ-नु ।
वेध-बल्लनु-बोम्म-नरियद-गाध-गुणगळ-लकुमि-बल्लळु-
श्रीध-रोब्बनु-पास्य-सद्गुण-पूर्ण-हरिये-न्दु ॥ ३०-(२११)

आदितेयरु तिळियदिह गुण
वेदमानिगळेन्देनिप वा-
ण्यादिगळु बल्लरवररियद गुणगणङ्गळनु ।
वेध बल्लनु बोम्मनरियद-
गाधगुणगळ लकुमि बल्लळु
श्रीधरोब्बनुपास्य सद्गुणपूर्ण हरियेन्दु ॥

इन्त-नन्ता-नन्त-गुणगळ-प्रान्त-गाणदे-महल-कुमिभग-
वन्त-गाभर-णायु-धाम्बर-आल-यगळा-गि ।
स्वन्त-दलिनेले-गोळिसि-परमदु-रन्त-महिमन-दौत्य-कर्मनि-
रन्त-रदिमा-डुतलि-तदधी-नत्व-वैदिह-ळु ॥ ३१-(२१२)

इन्तनन्तानन्त गुणगळ
प्रान्तगाणदे महलकुमि भग-
वन्तगाभरणायुधाम्बर आलयगळागि ।
स्वन्तदलि नेलेगोळिसि परमदु-
रन्तमहिमन दौत्यकर्म नि-
रन्तरदि माडुतलि तदधीनत्ववैदिहळु ॥

प्रलय-जलधियो-ळुळ्ळ-नावेयु-होलबु-गाणदे-सुत्तु-वन्ददि-
जलरु-हेक्षण-नमल-गुणरू-पगळ-चिन्तिसु-त ।
नेलेय-गाणदे-महल-कुमिच-ञ्चलव-नैदिह-ळल्प-जीवरि-
गळव-डुवदे-निवन-महिमेग-ळीज-गत्त्रय-दि ॥ ३२-(२१३)

प्रलयजलधियोळुळ्ळ नावेयु
होलबुगाणदे सुत्तुबन्ददि
जलरुहेक्षणनमल गुण रूपगळ चिन्तिसुत ।
नेलेयगाणदे महलकुमि च-
ञ्चलवनैदिहळल्पजीवरि-
गळबडुवदेनिवन महिमेगळीजगत्त्रयदि ॥

श्रीनि-केतन-सात्व-तांपति-ज्ञान-गम्यग-यासु-रार्दन-
मौनि-कुलस-न्मान्य-मानद-मातु-लध्वं-सि ।
दीन-जनम-न्दार-मधुरिपु-प्राण-दजग-न्नाथ-विट्ठल-
ताने-गतिये-न्दनुदि-नदिन-म्बिदव-रनुपोरे-व ॥ ३३-(२१४)

श्रीनिकेतन सात्वतांपति
ज्ञानगम्य गयासुरार्दन
मौनिकुलसन्मान्य मानद मातुलध्वंसि ।
दीनजनमन्दार मधुरिपु
प्राणद जगन्नाथविट्ठल-
ताने गतियेन्दनुदिनदि नम्बिदवरनु पोरेव ॥

७. पञ्चतन्मात्रासन्धि मुगियितु ॥ (७-२१४)

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

पाद-मानि-जयन्त-नोळगेसु-मेध-नामक-निप्प-दक्षिण-
पाद-दङ्गुट-दल्लि-पवननु-भार-भृद्रू-प ।
कादु-कोण्डिह-टङ्कि-तरमोद-लाद-नामदि-सन्धि-गळली-
रैदु-रूपद-लिद्दु-सन्तत-नडेदु-नडेसुत-लि ॥ १-(२१५)

पादमानि जयन्तनोळगे सु-
मेधनामकनिप्प दक्षिण
पाददङ्गुटदल्लि पवननु भारभृद्रूप ।
कादुकोण्डिह टङ्कि तरमोद-
लादनामदि सन्धिगळली-
रैदु रूपदलिद्दु सन्तत नडेदु नडेसुतलि ॥

कपिल-चार्व-ङ्गादि-रूपदि-वपुग-ळोळुह-स्तगळ-सन्धियो-
ळपरि-मितक-र्मगळ-माडुत-लिप्प-दिनदिन-दि ।
कृपण-वत्सल-पार्श्व-दोळुपर-सुफलि-एनिसुव-गुदउ-पस्थदि-
विपुल-बलिभग-मनुवे-निसितु-न्दियोळ-गिरुतिह-नु ॥२-(२१६)

कपिल चार्वङ्गादि रूपदि
वपुगळोळु हस्तगळ सन्धियो-
ळपरिमित कर्मगळ माडुतलिप्प दिनदिनदि ।
कृपणवत्सल पार्श्वदोळु पर-
सुफलि एनिसुव गुद उपस्थदि
विपुल बलि भग मनुवेनिसि तुन्दियोळगिरुतिहनु ॥

ऐदु-मेलो-न्दधिक-दलवु-ळळैदु-पद्मवु-नाभि-मूलदि-
ऐदु-मूर्तिग-ळिहवु-अनिरु-द्धादि-नामद-लि ।
ऐदि-सुतग-र्भवनु-जीवर-नादि-कर्म-प्रकृ-तिगुणद-
हादि-तप्पलि-गोडदे-व्यापा-रगळ-माडुति-ह ॥ ३-(२१७)

ऐदुमेलोन्दधिक दलवु-
ळळैदु पद्मवु नाभिमूलदि
ऐदु मूर्तिगळिहवु अनिरुद्धादि नामदलि ।
ऐदिसुत गर्भवनु जीवर-
नादि कर्म प्रकृति गुणद
हादि तप्पलिगोडदे व्यापारगळ माडुतिह ॥

नाभि-यलिष-ट्कोण-मण्डल-दीभ-विष्य-द्भह्म-नोळुमु-
क्ताभ-श्रीप्र-द्युम्न-निप्पनु-विबुध-गणसे-व्य ।
शोभि-सुतकौ-स्तुभवे-मोदला-दाभ-रणआ-युधग-ळिन्दम-
हाभ-यङ्कर-पाप-पुरुषन-शोषि-सुतनि-त्य ॥ ४-(२१८)

नाभियलि षट्कोण मण्डल-
दीभविष्यद्भह्मनोळु मु-
क्ताभ श्रीप्रद्युम्ननिप्पनु विबुधगणसेव्य ।
शोभिसुत कौस्तुभवे मोदला-
दाभरण आयुधगळिन्द म-
हाभयङ्कर पापपुरुषन शोषिसुत नित्य ॥

द्वाद-शार्कर-मण्ड-लवुम-ध्योद-रदोळुसु-षुम्न-दोळगिहु-
दैदु-रूपा-त्मकनु-अरव-त्तधिक-मुन्नू-रु ।
ईदि-वारा-त्रिगळ-मानिग-ळाद-दिविजर-सन्त-यिसुतनि-
षाद-रूपक-दैत्य-रनुसं-हरिप-नित्यद-लि ॥ ५-(२१९)

द्वादशार्कर मण्डलवु म-
ध्योदरदोळु सुषुम्नदोळगिहु-
दैदु रूपात्मकनु अरवत्तधिकमुन्नूरु ।
ई दिवारात्रिगळ मानिग-
ळाद दिविजर सन्तयिसुत नि-
षादरूपकदैत्यरनु संहरिप नित्यदलि ॥

हृदय-दोळगिहु-दष्ट-दलकम-लदरो-ळगेप्रा-देश-नामक-
नुदित-भास्कर-नन्ते-तोर्पनु-बिम्ब-नेन्देनि-सि ।
पदुम-चक्रसु-शङ्ख-सुगदा-ङ्गदक-टकमुकु-टाङ्गु-लीयक-
पदक-कौस्तुभ-हार-ग्रैवे-यादि-भूषित-नु ॥ ६-(२२०)

हृदयदोळगिहुदष्टदलकम-
लदरोळगे प्रादेशनामक-
नुदित भास्करनन्ते तोर्पनु बिम्बनेन्देनिसि ।
पदुम चक्र सुशङ्ख सुगदा-
ङ्गदकटक मुकुटाङ्गुलीयक
पदक कौस्तुभहार ग्रैवेयादि भूषितनु ॥

द्विदल-पद्मवु-शोभि-पुदुक-ण्ठदलि-मुख्य-प्राण-तन्नय-
सुदति-यिन्दोड-गूडि-हंसो-पास-नेयमा-ळप ।
उदक-वन्ना-दिगळि-गवका-शदनु-ताना-गिद्दु-दाना-
भिधनु-शब्दव-नुडिदु-नुडिसुव-सर्व-जीवरो-ळु ॥ ७-(२२१)

द्विदलपद्मवु शोभिपुदु क-
ण्ठदलि मुख्यप्राण तन्नय
सुदतियिन्दोडगूडि हंसोपासनेय माळप ।
उदकवन्नादिगळिगवका-
शदनु तानागिद्दुदाना-
भिधनु शब्दव नुडिदु नुडिसुव सर्वजीवरोळु ॥

नासि-कदिना-सत्य-दस्ररु-श्वास-मानि-प्राण-भारति-
हंस-धन्व-न्त्रिगळु-अल्ल-ल्लिप्प-रवरोळ-गे ।
भेश-भास्कर-रक्षि-युगळक-धीश-रेनिपरु-अवरो-ळगेल-
क्ष्मीश-दधिवा-मनरु-निय्या-मिसुत-लिरुतिह-रु ॥ ८-(२२२)

नासिकदि नासत्य दस्ररु
श्वासमानि प्राण भारति
हंस धन्वन्त्रिगळु अल्लल्लिप्परवरोळगे ।
भेश भास्कररक्षियुगळक-
धीशरेनिपरु अवरोळगे ल-
क्ष्मीश दधिवामनरु निय्यामिसुतलिरुतिहरु ॥

स्तम्भ-रूपद-लिप्प-दक्षिण-अम्ब-कदिप्र-द्युम्न-गुणरू-
पाम्भ्रि-णियुता-नागि-इप्पळु-वत्स-रूपद-लि-
पोम्ब-सुरपद-योग्य-पवन-त्र्यम्ब-कादिस-मस्त-दिविजक-
दम्ब-सेवित-नागि-सर्वप-दार्थ-गळतो-र्प ॥ ९-(२२३)

स्तम्भ रूपदलिप्प दक्षिण
अम्बकदि प्रद्युम्न गुणरू-
पाम्भ्रिणियु तानागि इप्पळु, वत्सरूपदलि
पोम्बसुरपदयोग्य पवन
त्र्यम्बकादि समस्तदिविजक-
दम्ब सेवितनागि सर्वपदार्थगळ तोर्प ॥

नेत्र-गळलिव-सिष्ठ-विश्वा-मित्र-भार-द्वाज-गौतम-
रत्रि-याजम-दग्नि-नामग-ळिन्द-करेसुत-लि ।
पत्र-तापक-शक्र-सूर्यध-रित्रि-पर्ज-न्यादि-सुररुज-
गत्त्र-येशन-भजिप-रनुदिन-परम-भकुतिय-लि ॥ १०-(२२४)

नेत्रगळलि वसिष्ठ विश्वा-
मित्र भारद्वाज गौतम-
रत्रि या जमदग्नि नामगळिन्द करेसुतलि ।
पत्रतापक शक्र सूर्य ध-
रित्रिपर्जन्यादिसुररु ज-
गत्त्रयेशन भजिपरनुदिन परमभकुतियलि ॥

ज्योति-योळगि-प्पकपि-लनुपुरु-हूत-मुखदि-क्पतिग-ळिन्दस-
मेत-नागिह-दक्षि-णाक्षिय-मुखदो-ळिहवि-श्व-
श्वेत-वर्णच-तुर्भु-जनुस-म्प्रीति-यिन्दलि-स्थूल-विषयव-
चेत-नरिगु-ण्डुणिप-जाग्रते-यित्तु-नृगजा-स्य ॥ ११-(२२५)

ज्योतियोळगिप्प कपिलनु पुरु-
हूतमुख दिक्पतिगळिन्द स-
मेतनागिह दक्षिणाक्षिय मुखदोळिह बिश्व
श्वेतवर्ण चतुर्भुजनु स-
म्प्रीतियिन्दलि स्थूल विषयव
चेतनरिगुण्डुणिप जाग्रतेयित्तु नृगजास्य ॥

नेलेसि-हरुदि-ग्देव-तेगळि-क्केलदि-कर्ण-ङ्गळलि-तीर्थ-
ङ्गळिगे-मानिग-ळाद-सुरनदि-मुख्य-निर्जर-रु-
बलद-किवियलि-इरुति-हरुबा-म्बोळेय-जनकत्रि-विक्र-मनुनि-
र्मलिन-रनुमा-डुवनु-ईपरि-चिन्ति-सुवजन-र ॥ १२-(२२६)

नेलेसिहरु दिग्देवतेगळि-
क्केलदि कर्णङ्गळलि, तीर्थ-
ङ्गळिगे मानिगळाद सुरनदिमुख्य निर्जररु
बलद किवियलि इरुतिहरु बा-
म्बोळेय जनक त्रिविक्रमनु नि-
र्मलिनरनु माडुवनु ईपरि चिन्तिसुव जनर ॥

चित्त-जेन्द्ररु-मनदो-ळिप्परु-कृत्ति-वासनु-अह-ङ्कारदि-
चित्त-चेतन-मानि-विहगे-न्द्रफणि-परवरो-ळु-
नित्य-दलिनेले-गोण्डु-हत्तो-म्भत्तु-मोगतै-जसनु-स्वप्ना-
वस्थे-वैदिसि-जीव-रनुप्रवि-विक्त-भुकुवेनि-प ॥ १३-(२२७)

चित्तजेन्द्ररु मनदोळिप्परु
कृत्तिवासनु अहङ्कारदि
चित्त चेतनमानि विहगेन्द्र फणिपरवरोळु
नित्यदलि नेलेगोण्डु हत्तो-
म्भत्तुमोग तैजसनु स्वप्ना-
वस्थेवैदिसि जीवरनु प्रविविक्तभुकुवेनिप ॥

ज्ञान-मयतै-जसनु-हृदय-स्थान-वैदुत-प्राज्ञ-नेम्बभि-
धान-दिङ्करे-सुत्त-चित्सुख-व्यक्ति-यनेकोडु-व ।
आन-तेष्ट-प्रदनु-अनुस-न्धान-वीयदे-सुप्ति-यैदिसि-
ताने-पुनरपि-स्वप्न-जाग्रते-ईव-चेतन-के ॥ १४-(२२८)

ज्ञानमय तैजसनु हृदय
स्थानवैदुत प्राज्ञनेम्बभि-
धानदिङ्करेसुत्त चित्सुखव्यक्तियने कोडुव ।
आनतेष्टप्रदनु अनुस-
न्धानवीयदे सुप्तियैदिसि
ताने पुनरपि स्वप्न जाग्रते ईव चेतनके ॥

नालि-गेयोळिह-वरुण-मत्स्यणु-नालि-गेयोळुउ-पेन्द्र-रिन्द्ररु-
तालु-पर्ज-न्याख्य-सूर्यनु-अर्द्ध-गर्भनि-ह ।
आलि-योळुवा-मनसु-भामन-फाल-दोळुशिव-केश-वरुसुक-
पोल-दोळगेर-तीश-कामनु-अल्ले-प्रद्यु-म्न ॥ १५-(२२९)

नालिगेयोळिह वरुण मत्स्यणु
नालिगेयोळु उपेन्द्ररिन्द्ररु
तालु पर्जन्याख्य सूर्यनु अर्द्धगर्भनिह ।
आलियोळु वामन सुभामन
फालदोळु शिव केशवरु सुक-
पोलदोळगे रतीश कामनु अल्ले प्रद्युम्न ॥

रोम-गळोळुव-सन्त-त्रिककु-द्धाम-मुखदोळ-गग्नि-भार्गव-
ताम-रसभव-वासु-देवरु-मस्त-कदोळिह-रु ।
ईम-नदोळिह-विष्णु-शिखदोळु-माम-हेश्वर-नार-सिंह-
स्वामि-तन्ननु-दिनने-नेवरप-मृत्यु-परिहरि-प ॥ १६-(२३०)

रोमगळोळु वसन्त त्रिककु-
द्धाम मुखदोळगग्नि भार्गव
तामरसभव वासुदेवरु मस्तकदोळिहरु ।
ई मनदोळिह विष्णु शिखदोळु-
मामहेश्वर नारसिंह
स्वामि तन्ननुदिन नेनेवरपमृत्यु परिहरिप ॥

मौळि-योळगिह-वासु-देवनु-एळ-धिकनव-जादि-रूपव-
ताळि-मुखदोळु-नयन-श्रवणा-द्यवय-वगळ-ल्लि ।
आळ-रसुता-नागि-सततसु-लीले-गैयुत-लिप्प-सुखमय-
केळि-केळिसि-नोडि-नोडिसि-नुडिदु-नुडिसुव-नु ॥१७-(२३१)

मौळियोळगिह वासुदेवनु
एळधिकनवजादि रूपव
ताळि मुखदोळु नयन श्रवणाद्यवयवगळल्लि ।
आळरसु तानागि सतत सु-
लीलेगैयुतलिप्प सुखमय
केळि केळिसि नोडि नोडिसि नुडिदु नुडिसुवनु ॥

एरड-धिकए-प्पत्ते-निपसा-विरद-नाडिगे-मुख्य-वेको-
त्तरश-तगळ-ल्लिहवु-नूरा-ओन्दु-मूर्तिग-ळु ।
अरितु-देहदि-कलश-नामक-हरिगे-कलेगळि-वेन्दु-नैर-
न्तरदि-पूजिसु-तिहरु-परमा-दरदि-भूसुर-रु ॥ १८-(२३२)

एरडधिकएप्पत्तेनिपसा-
विरदनाडिगे मुख्यवेको-
त्तरशतगळल्लिहवु नूराओन्दु मूर्तिगळु ।
अरितु देहदि कलशनामक
हरिगे कलेगळिवेन्दु नैर-
न्तरदि पूजिसुतिहरु परमादरदि भूसुररु ॥

इदके-कारण-वेनिसु-वुदुएर-डधिक-दशना-डिगळो-ळगेसुर-
नदिये-मोदला-दमल-तीर्थग-ळिहवु-करणद-लि-
पदुम-नाभनु-केश-वादि-द्विदश-रूपद-लिप्प-नल्क्यति-
मृदुल-वादसु-षुम्न-दोळगे-कात्म-नेनिसुव-नु ॥ १९-(२३३)

इदके कारणवेनिसुवुदु एर-
डधिकदश नाडिगळोळगे सुर
नदिये मोदलादमलतीर्थगळिहवु करणदलि
पदुमनाभनु केशवादि
द्विदश रूपदलिप्पनल्कयति
मृदुलवाद सुषुम्नदोळगेकात्मनेनिसुवनु ॥

अम्न-यप्रति-पाद्य-श्रीप्र-द्युम्न-देवनु-देह-दोळगेसु-
षुम्न-दीडा-पिङ्ग-लदिवि-श्वादि-रूपद-लि ।
निर्म-लात्मनु-वाणि-वायुच-तुर्मु-खरोळि-द्दखिल-जीवर-
कर्म-गुणवनु-सरिसि-नडेवनु-विश्व-व्यापक-नु ॥ २०-(२३४)

अम्नयप्रतिपाद्य श्रीप्र-
द्युम्नदेवनु देहदोळगे सु-
षुम्नदीडा पिङ्गलदि विश्वादि रूपदलि ।
निर्मलात्मनु वाणि वायु च-
तुर्मुखरोळिद्दखिल जीवर
कर्म गुणवनुसरिसि नडेवनु विश्वव्यापकनु ॥

अब्द-यनऋतु-मास-पक्षसु-शब्द-दिन्दलि-करेसु-तलिनी-
लब्द-वर्णनि-रुद्ध-मोदला-दैदु-रूपद-लि ।
हब्बि-हनुस-र्वत्र-दलिकरु-णब्धि-नाल्व-त्तैदु-रूपदि-
लभ्य-नागुव-नीप-रिलिधे-निसुव-भकुतरि-गे ॥ २१-(२३५)

अब्दयन ऋतु मास पक्ष सु-
शब्ददिन्दलि करेसुतलि नी-
लब्दवर्णनिरुद्धमोदलादैदु रूपदलि ।
हब्बिहनु सर्वत्रदलि करु-
णब्धि नाल्वत्तैदु रूपदि
लभ्यनागुवनीपरिलि धेनिसुव भकुतरिगे ॥

ऐदु-रूपा-त्मकनु-इप्प-त्तैदु-रूपद-लिप्प-मत्थदि-
नैदु-तिथिइ-प्पत्तु-नालक-रिन्द-पेच्चिस-लु ।
ऐदि-दरव-त्तधिक-वरव-त्तैदु-दिवसा-ह्वयनो-ळगेमन-
तोय्द-वगेता-पत्र-यदमह-दोष-वेल्लिहु-दु ॥ २२-(२३६)

ऐदुरूपात्मकनु इप्प-
त्तैदु रूपदलिप्प मत्थदि-
नैदु तिथि इप्पत्तुनालकरिन्द पेच्चिसलु ।
ऐदिदरवत्तधिकवरव-
त्तैदु दिवसाह्वयनोळगे मन
तोय्दवगे तापत्रयद महदोषवेल्लिहुदु ॥

दिवस-याममु-हूर्त-घटिका-द्यवय-वगळोळ-गिदु-गङ्गा-
प्रवह-दन्ददि-काल-नामक-प्रवहि-सुतलि-प्प ।
इवन-गुणरू-पक्रि-यङ्गळ-निवह-दोळुमुळु-ग्याडु-तलिभा-
र्गविस-दान-न्दात्म-ळागिह-ळेल्ल-कालद-लि ॥ २३-(२३७)

दिवस याम मुहूर्त घटिका-
द्यवयवगळोळगिदु गङ्गा
प्रवहदन्ददि कालनामक प्रवहिसुतलिप्प ।
इवन गुण रूप क्रियङ्गळ
निवहदोळु मुळुग्याडुतलि भा-
र्गवि सदानन्दात्मळागिहळेल्लकालदलि ॥

वेद-ततिगळ-मानि-लकुमिध-राध-रनरू-पक्रि-येगुणग-
ळादि-मध्या-न्तवनु-काणदे-मनदि-योचिसु-त-
आद-पेनेई-तनिगे-पत्रिकृ-पोद-धियुस्वी-करिसि-दनुलो-
काधि-पनुभि-क्षुकन-मनेयौ-तणव-कोम्ब-न्ते ॥ २४-(२३८)

वेदततिगळमानि लकुमि ध-
राधरन रूप क्रिये गुणग-
ळादि मध्यान्तवनु काणदे मनदि योचिसुत
आदपेने ईतनिगे पत्रि कृ-
पोदधियु स्वीकरिसिदनु लो-
काधिपनु भिक्षुकन मनेयौतणव कोम्बन्ते ॥

कोवि-दरुचि-त्तैसु-वुदुश्री-देवि-योळगिह-निखिल-गुणतृण-
जीव-रलिक-ल्पिसेयु-कुतियलि-मत्तु-क्रमदि-न्द-
देव-देवकि-इप्प-ळेन्दरि-दावि-रिश्चिय-जननि-ईतन-
आव-कालकु-अरिय-ळन्तेने-नरर-पाडे-नु ॥ २५-(२३९)

कोविदरु चित्तैसुवुदु श्री-
देवियोळगिह निखिलगुण तृण
जीवरलि कल्पिसे युकुतियलि मत्तु क्रमदिन्द
देवदेवकि इप्पळेन्दरि-
दाविरिश्चिय जननि ईतन
आवकालकु अरियळन्तेने नरर पाडेनु ॥

क्षीर-दधिनव-नीत-घृतदोळु-सौर-भरसा-ह्वयने-निसिशा-
न्तीर-मणज्ञा-नक्रि-येच्छा-शक्ति-येन्दे-म्ब-
ईरे-रडुना-मदलि-करेसुव-भार-तीवा-ग्देवि-वायुस-
रोरु-हासन-रल्लि-नेलेसिह-रेल्ल-कालद-लि ॥ २६-(२४०)

क्षीर दधि नवनीत घृतदोळु
सौरभ रसाह्वयनेनिसि शा-
न्तीरमण ज्ञान क्रियेच्छाशक्तियेन्देम्ब
ईरेरडु नामदलि करेसुव
भारती वाग्देवि वायु स-
रोरुहासनरल्लि नेलेसिहरेल्लकालदलि ॥

वसुग-ळेण्टुन-वप्र-जेशरु-श्वसन-गणवे-ळेळु-एका-
दशदि-वाकर-रनितु-रुद्ररु-अश्वि-निगळेर-डु ।
दशवि-हीनश-ताख्य-रीसुम-नसरो-ळगेचतु-रात्म-निय्या-
मिसुव-ब्रह्मस-मीर-खगपफ-णीन्द्र-रोळगि-द्दु ॥ २७-(२४१)

वसुगळेण्टु नवप्रजेशरु
श्वसनगणवेळेळु एका-
दश दिवाकररनितु रुद्ररु अश्विनिगळेरडु ।
दशविहीन शताख्यरीसुम-
नसरोळगे चतुरात्म निय्या-
मिसुव ब्रह्म समीर खगप फणीन्द्ररोळगिद्दु ॥

तोरु-तिप्पनु-चक्र-दलिही-ङ्कार-नामक-शङ्ख-दलिप्रति-
हार-गदेयलि-निधन-पद्मद-लिप्प-प्रस्ता-व ।
कारु-णिकनु-द्गीथ-नामदि-मार-मणनै-रूप-गळश-
ङ्कारि-मोदला-दायु-धगळलि-स्मरिसि-धरिसुति-रु ॥२८-(२४२)

तोरुतिप्पनु चक्रदलि ही-
ङ्कारनामक शङ्खदलि प्रति-
हार गदेयलि निधन पद्मदलिप्प प्रस्ताव ।
कारुणिकनुद्गीथनामदि
मारमणनैरूपगळ श-
ङ्कारिमोदलादायुधगळलि स्मरिसि धरिसुतिरु ॥

तनुवे-रथवा-गाभि-मानिये-गुणवे-निसुवळु-श्रोत्र-दलिरो-
हिणिश-शाङ्करु-पाश-पाणी-अश्व-वेन्देनि-सि-
इननु-सञ्ज्ञा-देवि-यरुइह-रनल-लोचन-सूत-नेनिसुव-
प्रणव-पाद्य-प्राण-नामक-रथिक-नेनिसुव-नु ॥ २९-(२४३)

तनुवे रथ वागाभिमानिये
गुणवेनिसुवळु श्रोत्रदलि रो-
हिणि शशाङ्करु पाशपाणी अश्ववेन्देनिसि
इननु सञ्ज्ञादेवियरु इह-
रनललोचन सूतनेनिसुव
प्रणवपाद्य प्राणनामक रथिकनेनिसुवनु ॥

अमित-महिमन-पार-गुणगळ-समित-वर्णग-ळश्रु-तिस्मृति-
गमिस-लापवे-तदभि-मानिग-ळेन्दे-निसिको-म्ब ।
कमल-सम्भव-भवसु-रेन्द्रा-द्यमर-रनुदिन-तिळिय-लरियरु-
स्वमहि-मेगळा-द्यन्त-मध्यग-ळरिव-सर्व-ज्ञ ॥ ३०-(२४४)

अमित महिमनपार गुणगळ
समित वर्णगळ श्रुतिस्मृति
गमिसलापवे तदभिमानिगळेन्देनिसिकोम्ब ।
कमलसम्भव भव सुरेन्द्रा-
द्यमररनुदिन तिळियलरियरु
स्वमहिमेगळाद्यन्त मध्यगळरिव सर्वज्ञ ॥

वित्त-देहा-गार-दारा-पत्य-मित्रा-दिगळो-ळगेहरि-
प्रत्य-गात्मनु-एन्दे-निसिनेले-सिप्प-नेन्दरि-तु ।
नित्य-दलिस-न्तृप्ति-पडिसुत-उत्त-माधम-मध्य-मरकृत-
कृत्य-नागु-न्मत्त-नागदे-भृत्य-नाने-न्दु ॥ ३१-(२४५)

वित्त देहागार दारा-
पत्य मित्रादिगळोळगे हरि
प्रत्यगात्मनु एन्देनिसि नेलेसिप्पनेन्दरितु ।
नित्यदलि सन्तृप्तिपडिसुत
उत्तमाधम मध्यमर कृत
कृत्यनागुन्मत्तनागदे भृत्यनानेन्दु ॥

देव-देवे-शनसु-मूर्तिक-लेव-रगळोळ-गनव-रतस-
म्भावि-सुतपू-जिसुत-नोडुत-सुखिसु-तिरुबिड-दे ।
श्रीव-रजग-न्नाथ-विट्ठल-ताओ-लिदुका-रुण्य-दलिभव-
नोव-परिहरि-सुवनु-प्रवितत-पतित-पावन-नु ॥ ३२-(२४६)

देवदेवेशन सुमूर्ति क-
लेवरगळोळगनवरत स-
म्भाविसुत पूजिसुत नोडुत सुखिसुतिरु बिडदे ।
श्रीवर जगन्नाथविट्ठल
ता ओलिदु कारुण्यदलि भव-
नोव परिहरिसुवनु प्रवितत पतितपाववनु ॥

८. मातृकासन्धि मुगियितु (८-२४६)

॥ श्रीमध्वेशार्पणमस्तु ॥

श्रीमद्धरिकथाऽमृतसार ९. उदात्तनुदात्त/जीवप्रकरणसन्धि (अरभि अटताळ)

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

हरिये-पञ्चा-शद्ध-रणसु-स्वरउ-दात्तनु-दात्त-प्रचय-
स्वरित-सन्धिवि-सर्ग-बिन्दुग-ळोळगे-तद्धा-च्य-
इरुव-तत्त-न्नाम-रूपग-ळरितु-पासने-गैव-रिळेयोळु-
सुररे-सरिनर-रल्ल-अवरा-डुवुदे-वेदा-र्थ ॥ १-(२४७)

हरिये पञ्चाशद्धरण सु-
स्वर उदात्तनुदात्त प्रचय
स्वरित सन्धि विसर्ग बिन्दुगळोळगे तद्धाच्य
इरुव तत्तन्नाम रूपग-
ळरितुपासनेगैवरिळेयोळु
सुररे सरि नररल्ल अवराडुवुदे वेदार्थ ॥

ईश-नलिवि-ज्ञान-भगव-द्दास-रलिस-द्भक्ति-विषयनि-
रासे-मिथ्या-वाद-दलिप्र-द्वेष-नित्यद-लि ।
ईस-मस्त-प्राणि-गळलिर-मेश-निहने-न्दरितु-अवरभि-
लाषे-गळपू-रैसु-वुदेमह-यज्ञ-हरिपू-जे ॥ २-(२४८)

ईशनलि विज्ञान भगव-
द्दासरलि सद्भक्ति विषय नि-
रासे मिथ्यावाददलि प्रद्वेषनित्यदलि ।
ई समस्त प्राणिगळलि र-
मेशनिहनेन्दरितु अवरभि-
लाषेगळ पूरैसुवुदे महयज्ञ हरिपूजे ॥

त्रिदश-एका-त्मकने-निसिभू-उदक-शिखियोळु-हत्तु-करणदि-
अधिप-रेनिसुव-प्राण-मुख्या-दित्य-रोळुनेले-सि ।
विदित-नागि-द्दनव-रतनिर-वधिक-महिमनु-सकल-विषयव-
निधन-नामक-सङ्क-रुषणा-ह्वयदि-स्वीकरि-प ॥ ३-(२४९)

त्रिदश एकात्मकनेनिसि भू-
उदक शिखियोळु हत्तु करणदि
अधिपरेनिसुव प्राणमुख्यादित्यरोळु नेलेसि ।
विदितनागिद्दनवरत निर-
वधिकमहिमनु सकल विषयव
निधननामक सङ्करुषणाह्वयदि स्वीकरिप ॥

दहिक-दैशिक-कालि-कत्रय-गहन-कर्मग-ळुण्टु-इदरोळु-
विहित-कर्मग-ळरितु-निष्का-मकनु-नीना-गि ।
बृहति-नामक-भार-तीशन-महित-रूपव-नेनेदु-मनदलि-
अहर-हर्भग-वन्त-गर्पिसु-परम-भकुतिय-लि ॥ ४-(२५०)

दहिक दैशिक कालिक त्रय
गहन कर्मगळुण्टु इदरोळु
विहित कर्मगळरितु निष्कामकनु नीनागि ।
बृहतिनामक भारतीशन
महित रूपव नेनेदु मनदलि-
अहरहर्भगवन्तगर्पिसु परमभकुतियलि ॥

मूरु-विधक-र्मगळो-ळगेकं-सारि-भार्गव-हयव-दनस-
म्प्रेर-कनुता-नागि-नवरू-पङ्ग-ळनेधरि-सि ।
सूरि-मानव-दान-वरोळुवि-कार-शून्यनु-माडि-माडिसि-
सार-भोक्तनु-स्वीक-रिसिकोडु-तिप्प-जीवरि-गे ॥ ५-(२५१)

मूरुविध कर्मगळोळगे कं-
सारि भार्गव हयवदन स-
म्प्रेरकनु तानागि नव रूपङ्गळने धरिसि ।
सूरि मानव दानवरोळु वि-
कारशून्यनु माडि माडिसि
सारभोक्तनु स्वीकरिसि कोडुतिप्प जीवरिगे ॥

अनल-पक्कव-गैसि-दन्नव-अनल-नोळुहो-मिसुव-तेरन-
न्तनिमे-षेशनु-माडि-माडिसि-दखिल-कर्मग-ळ ।
मनव-चनका-यदलि-तिळिदनु-दिनदि-कोडुश-ङ्किसदे-वृजिना-
र्दनस-दाकै-गोण्डु-सन्तै-सुवनु-तन्नव-र ॥ ६-(२५२)

अनलपक्कवगैसिदन्नव
अनलनोळु होमिसुव तेरन-
न्तनिमेषेशनु माडि माडिसिदखिल कर्मगळ ।
मन वचन कायदलि तिळिदनु-
दिनदि कोडु शङ्किसदे वृजिना-
र्दन सदा कैगोण्डु सन्तैसुवनु तन्नवर ॥

कुदुरे-बालद-कोनेय-कूदल-तुदिवि-भागव-माडि-शतविध-
अदरो-ळोन्दनु-नूरु-भागव-माड-लेन्तिहु-दो ।
विधिभ-वादिस-मस्त-दिविजर-मोदलु-माडितृ-णान्त-जीवरो-
ळधिक-न्यूनते-इल्ल-वेन्दिगु-जीव-परमा-णु ॥ ७-(२५३)

कुदुरेबालद कोनेय कूदल
तुदि विभागव माडि शतविध
अदरोळोन्दनु नूरु भागव माडलेन्तिहुदो ।
विधि भवादि समस्तदिविजर
मोदलुमाडि तृणान्त जीवरो-
ळधिकन्यूनते इल्लवेन्दिगु जीव परमाणु ॥

जीव-नङ्गु-ष्ठाग्र-मूरुति-जीव-नङ्गुट-मात्र-मूरुति-
जीव-नप्रा-देश-जीवा-कार-मूर्तिग-ळु ।
एव-मादिअ-नन्त-रूपदि-याव-दवयव-गळोळु-व्यापिसि-
काव-करुणा-ळुगळ-देवनु-ईज-गत्त्रय-व ॥ ८-(२५४)

जीवनङ्गुष्ठाग्र मूरुति
जीवनङ्गुट मात्र मूरुति
जीवन प्रादेश जीवाकार मूर्तिगळु ।
एवमादि अनन्त रूपदि
यावदवयवगळोळु व्यापिसि
काव करुणाळुगळ देवनु ई जगत्त्रयव ॥

बिम्ब-जीवा-ङ्गुष्ठ-मात्रदि-इम्बु-गोण्डिह-सर्व-रोळुसू-
क्ष्मम्ब-रदिह्-त्कमल-मध्यनि-वासि-येन्देनि-सि ।
एम्ब-रीतगे-कोवि-दरुवि-श्वम्भ-रात्मक-प्राज्ञ-भक्तकु-
टुम्बि-सन्तै-सुवनु-ईपरि-बल्ल-भजकर-नु ॥ ९-(२५५)

बिम्ब जीवाङ्गुष्ठ मात्रदि
इम्बुगोण्डिह सर्वरोळु सू-
क्ष्मम्बरदि हृत्कमलमध्यनिवासियेन्देनिसि ।
एम्बरीतगे कोविदरु वि-
श्वम्भरात्मक प्राज्ञ भक्तकु-
टुम्बि सन्तैसुवनु ईपरि बल्ल भजकरनु ॥

पुरुष-नामक-सर्व-जीवरो-ळिरुव-देहा-कार-रूपदि-
करण-निय्या-मकहृ-षीकप-निन्द्रि-यङ्गळ-लि ।
तुरिय-नामक-विश्व-ताह-न्नेरडु-बेरळुळि-दुत्त-माङ्गदि-
एरड-धिकए-प्पत्तु-साविर-नाडि-गळोळि-प्प ॥ १०-(२५६)

पुरुषनामक सर्वजीवरो-
ळिरुव देहाकार रूपदि
करण निय्यामक हृषीकपनिन्द्रियङ्गळलि ।
तुरियनामक विश्व ता ह-
न्नेरडु बेरळुळिदुत्तमाङ्गदि
एरडधिकएप्पत्तुसाविर नाडिगळोळिप्प ॥

व्याप-कनुता-नागि-जीवस्व-रूप-देहद-ओळहो-रगेनि-
र्लेप-नागिह-जीव-कृतक-र्मगळ-नाचरि-सि ।
श्रीप-योजभ-वेर-रिन्दप्र-दीप-वर्णस्व-मूर्ति-मध्यग-
तापो-ळेववि-श्वादि-रूपदि-सेवे-कैगोळु-त ॥ ११-(२५७)

व्यापकनु तानागि जीव स्व-
रूपदेहद ओळहोरगे नि-
र्लेपनागिह जीवकृत कर्मगळनाचरिसि ।
श्रीपयोजभवेररिन्द प्र-
दीपवर्ण स्वमूर्ति मध्यग
ता पोळेव विश्वादि रूपदि सेवे कैगोळुत ॥

गरुड-शेषभ-वादि-नामव-धरिसि-पवनस्व-रूप-देहदि-
करण-निय्या-मकनु-ताना-गिप्प-हरिय-न्ते ।
सरसि-जासन-वाणि-भारति-भरत-निन्दोड-गूडि-लिङ्गद-
लिरुति-हरुमि-क्कादि-तेयरि-गिल्ल-वास्था-न ॥ १२-(२५८)

गरुड शेष भवादि नामव
धरिसि पवन स्वरूपदेहदि
करण निय्यामकनु तानागिप्प हरियन्ते ।
सरसिजासन वाणि भारति
भरतनिन्दोडगूडि लिङ्गद-
लिरुतिहरु मिक्कादितेयरिगिल्लवास्थान ॥

जीव-निगेतुष-दन्ते-लिङ्गवु-साव-काशदि-पोन्दि-सुत्तलु-
प्राव-रणरू-पदलि-इप्पुदु-भगव-दिच्छेय-लि ।
केव-लजड-प्रकृ-तियुअधि-देव-तेयुमह-लकुमि-येनिपळु-
आवि-रजेय-स्नान-पर्यन्त-रदि-हत्तिहु-दु ॥ १३-(२५९)

जीवनिगे तुषदन्ते लिङ्गवु-
सावकाशदि पोन्दि सुत्तलु
प्रावरण रूपदलि इप्पुदु भगवदिच्छेयलि ।
केवल जडप्रकृतियु अधि-
देवतेयु महलकुमियेनिपळु
आ विरजेय स्नानपर्यन्तरदि हत्तिहुदु ॥

आर-धिकदश-कलेग-ळुळ्ळश-रीर-अनिरु-द्धगळ-मध्यदि-
सेरि-यिप्पुवु-जीव-परमा-च्छादि-कद्वय-वु ।
बार-दन्ददि-दान-वरअति-दूर-गैसुत-श्रीज-नार्दन-
मूरु-गुणदोळ-गिप्प-नेन्दिगु-त्रिवृ-तेन्देनि-सि ॥ १४-(२६०)

आरधिकदशकलेगळुळ्ळ श-
रीर अनिरुद्धगळ मध्यदि
सेरियिप्पुवु जीव परमाच्छादिक द्वयवु ।
बारदन्ददि दानवर अति
दूरगैसुत श्रीजनार्दन
मूरु गुणदोळगिप्पनेन्दिगु त्रिवृतेन्देनिसि ॥

रुद्रमोदला-दमर-रिगेअनि-रुद्ध-देहवे-मनेये-निसुवुदु-
इद्दु-केलसव-माड-रल्लि-न्दित्त-स्थूलद-लि ।
कृद्ध-खलदिवि-जरुप-रस्पर-स्पर्धे-यिन्दलि-द्वन्द्व-कर्मस-
मृद्धि-गळना-चरिसु-वरुप्रा-णेश-नाज्ञेय-लि ॥ १५-(२६१)

रुद्रमोदलादमररिगे अनि-
रुद्ध देहवे मनेयेनिसुवुदु
इद्दु केलसव माडरल्लिन्दित्त स्थूलदलि ।
कृद्धखल दिविजरु परस्पर
स्पर्धेयिन्दलि द्वन्द्वकर्म स-
मृद्धिगळनाचरिसुवरु प्राणेशनाज्ञेयलि ॥

महियो-ळगेसु-क्षेत्र-तीर्थदि-तुहिन-वरुषव-सन्त-कालदि-
दहिक-दैशिक-कालि-कत्रय-धर्म-कर्मग-ळ-
द्रुहिण-मोदला-दमर-रेल्लरु-वहिसि-गुणगळ-ननुस-रिसिस-
न्निहित-रागि-द्वेल्ल-रोळुमा-डुवरु-व्यापा-र ॥ १६-(२६२)

महियोळगे सुक्षेत्र तीर्थदि
तुहिन वरुष वसन्तकालदि
दहिक दैशिक कालिक त्रय धर्मकर्मगळ
द्रुहिणमोदलादमररेल्लरु
वहिसि गुणगळननुसरिसि स-
न्निहितरागिद्वेल्लरोळु माडुवरु व्यापार ॥

केश-सासिर-विधवि-भागव-गैस-लेनितनि-तिहसु-षुम्नवु-
आशि-रान्तदि-व्यापि-सिहुदी-देह-मध्यद-लि ।
आसु-षुम्नके-वज्रि-कार्यप्र-काशि-नीवै-द्युतिग-ळिहवुप्र-
देश-दलिप-श्चिमके-उत्तर-पूर्व-दक्षिण-के ॥ १७-(२६३)

केश सासिरविध विभागव
गैसलेनितनितिह सुषुम्नवु
आ शिरान्तदि व्यापिसिहुदीदेह मध्यदलि ।
आ सुषुम्नके वज्रिकार्य प्र-
काशिनी वैद्युतिगळिहवु प्र-
देशदलि पश्चिमके उत्तर पूर्व दक्षिणके ॥

आन-लिनभव-नाडि-योळगेत्रि-कोन-चक्रवु-इप्पु-दल्लिक्रु-
शानु-मण्डल-मध्य-दोळुस-ङ्करुष-णाह्वय-नु ।
हीन-पापा-त्मकपु-रुषनद-हान-गैसुत-दिनदि-नदिवि-
ज्ञान-मयश्री-वासु-देवन-ऐदि-सुवकरु-णि ॥ १८-(२६४)

आ नलिनभव नाडियोळगे त्रि-
कोनचक्रवु इप्पुदल्लि कृ-
शानुमण्डल मध्यदोळु सङ्करुषणाह्वयनु ।
हीन पापात्मक पुरुषन द-
हानगैसुत दिनदिनदि वि-
ज्ञानमय श्रीवासुदेवन ऐदिसुव करुणि ॥

मध्य-नाडिय-मध्य-दलिह्र-त्पद्म-मूलदि-मूल-पतिपद-
पद्म-मूलद-लिप्प-पवनन-पाद-मूलद-लि ।
पोद्दि-कोण्डिह-जीव-लिङ्गनि-रुद्ध-देहवि-शिष्ट-नागिक-
पर्दि-मोदला-दमर-रेल्लरु-कादु-कोण्डिह-रु ॥ १९-(२६५)

मध्यनाडिय मध्यदलि ह्र-
त्पद्ममूलदि मूलपति पद
पद्म मूलदलिप्प पवनन पादमूलदलि ।
पोद्दिकौण्डिह जीव लिङ्गनि-
रुद्धदेह विशिष्टनागि क-
पर्दिमोदलादमररेल्लरु कादुकोण्डिहरु ॥

नाल-मध्यद-लिप्प-ह्रत्की-लाल-जदोळि-प्पष्ट-दलदिकु-
लाल-चक्रद-तेरदि-चरिसुत-हंस-नामक-नु ।
काल-कालग-ळल्लि-एण्देसे-पाल-करकै-सेवे-कोळुतक्रु-
पालु-अवरभि-लाषे-गळपू-रैसि-कोडुति-प्प ॥ २०-(२६६)

नाल मध्यदलिप्प ह्रत्की-
लालजदोळिप्पष्टदलदि कु-
लालचक्रद तेरदि चरिसुत हंसनामकनु ।
काल कालगळल्लि एण्देसे
पालकर कैसेवे कोळुत कृ-
पालु अवरभिलाषेगळ पूरैसि कोडुतिप्प ॥

वास-वानुज-रेणु-कात्मज-दाश-रथिवृजि-नार्द-नमलज-
लाश-यालय-हयव-दनश्री-कपिल-नरसिं-ह ।
ईसु-रूपदि-अवर-वरस-न्तोष-पडिसुत-नित्य-सुखमय-
वास-वागिह-ह्रत्क-मलदोळु-बिम्ब-नेन्देनि-सि ॥ २१-(२६७)

वासवानुज रेणुकात्मज
दाशरथि वृजिनार्दनमलज-
लाशयालय हयवदन श्रीकपिल नरसिंह ।
ईसुरूपदि अवरवर स-
न्तोषपडिसुत नित्यसुखमय
वासवागिह ह्रत्कमलदोळु बिम्बनेन्देनिसि ॥

सुरप-नालय-कैदि-दोडेमन-वेरगु-वुदुस-त्पुण्य-मार्गदि-
बरलु-वह्निय-मनेगे-निद्रा-लस्य-हसितृषे-यु ।
तरणि-तनयनि-केत-नदिस-म्भरित-कोपा-टोप-तोरुवु-
दरवि-दूरनु-निऋति-यलिबरे-पाप-गळमा-ळप ॥ २२-(२६८)

सुरपनालयकैदिदोडे मन-
वेरगुवुदु सत्पुण्य मार्गदि
बरलु वह्नियमनेगे निद्रालस्य हसि तृषेयु ।
तरणितनय निकेतनदि स-
म्भरित कोपाटोप तोरुवु-
दरविदूरनु निऋतियलि बरे पापगळ माळप ॥

वरुण-नल्लिवि-नोद-हास्यवु-मरुत-नोळुगम-नाग-मनहिम-
करध-नाधिप-नल्लि-धर्मद-बुद्धि-जनिसुवु-दु ।
हरन-मन्दिर-दल्लि-गोधन-धरणि-कन्या-दान-गळओ-
न्दरघ-ळिगेतडे-यदले-कोडुतिह-चित्त-पुट्टुवु-दु ॥ २३-(२६९)

वरुणनल्लि विनोद हास्यवु
मरुतनोळु गमनागमन हिम-
कर धनाधिपनल्लि धर्मद बुद्धि जनिसुवुदु ।
हरनमन्दिरदल्लि गो धन
धरणि कन्यादानगळ ओ-
न्दरघळिगे तडेयदले कोडुतिह चित्त पुट्टुवुदु ॥

हृदय-दोळगेवि-रक्ति-केसर-कोदगे-स्वप्नसु-षुप्ति-लिङ्गदि-
मधुह-करणिके-यल्लि-बरेजा-ग्रतेयु-पुट्टुवु-दु ।
सुदरु-शनमोद-लाद-अष्टा-युधव-पिडिदुदि-शाधि-पतिगळ-
सदन-दलि-सञ्चरिसु-तीपरि-बुद्धि-गळकोडु-व ॥ २४-(२७०)

हृदयदोळगे विरक्ति केसर-
कोदगे स्वप्न सुषुप्ति लिङ्गदि
मधुह करणिकेयल्लि बरे जाग्रतेयु पुट्टुवुदु ।
सुदरुशनमोदलाद अष्टा-
युधव पिडिदु दिशाधिपतिगळ
सदनदलि सञ्चरिसुतीपरि बुद्धिगळ कोडुव ॥

सूत्र-नामक-प्राण-पतिगा-यत्रि-सम्प्रति-पाद्य-नागी-
गात्र-दोळुनेले-सिरलु-तिळियदे-कण्ड-कण्ड-ल्लि ।
धात्रि-योळुस-ञ्चरिसि-पुत्रक-लत्र-सहितनु-दिनदि-तीर्थ-
क्षेत्र-यात्रेय-माडि-देवुए-न्देनुत-हिग्गुव-रु ॥ २५-(२७१)

सूत्रनामक प्राणपति गा-
यत्रिसम्प्रतिपाद्यनागी-
गात्रदोळु नेलेसिरलु तिळियदे कण्डकण्डल्लि ।
धात्रियोळु सञ्चरिसि पुत्र क-
लत्रसहितनुदिनदि तीर्थ
क्षेत्र यात्रेय माडिदेवु एन्देनुत हिग्गुवरु ॥

नार-सिंहस्व-रूप-दोळगेश-रीर-नामदि-करेसु-वनुहदि-
नारु-कलेगळ-नुळ्ळ-लिङ्गदि-पुरुष-नामक-नु ।
तोरु-वनुअनि-रुद्ध-दोळुशा-न्तीर-मणननि-रुद्ध-रूपदि-
प्रेरि-सुवप्र-द्युम्न-स्थूलक-लेव-रदोळि-द्दु ॥ २६-(२७२)

नारसिंह स्वरूपदोळगे श-
रीरनामदि करेसुवनु हदि-
नारु कलेगळनुळ्ळ लिङ्गदि पुरुषनामकनु ।
तोरुवनु अनिरुद्धदोळु शा-
न्तीरमणननिरुद्ध रूपदि
प्रेरिसुव प्रद्युम्न स्थूल कलेवरदोळिद्दु ॥

मोदलु-त्वक्च-र्मगळु-मांसवु-रुधिर-मेदा-मज्ज-वस्थिग-
ळदरो-ळगेए-कोन-पञ्चा-शन्म-रुद्गण-वु ।
निधन-हीङ्का-रादि-सामग-अदर-नामदि-करेसु-तोम्भ-
त्तधिक-नाल्व-त्तेनिप-रूपदि-धातु-गळोळि-प्प ॥ २७-(२७३)

मोदलु त्वक्चर्मगळु मांसवु
रुधिर मेदा मज्जवस्थिग-
ळदरोळगे एकोनपञ्चाशन्मरुद्गणवु ।
निधन हीङ्कारादि सामग
अदर नामदि करेसुतोम्भ-
त्तधिकनाल्वत्तेनिप रूपदि धातुगळोळिप्प ॥

सप्त-धातुग-ळोळहो-रगेस-न्तप्त-लोहग-तग्नि-यन्ददि-
सप्त-सामग-निप्प-नन्न-मयादि-कोशदो-ळु ।
लिप्त-नागदे-तत्त-दाह्वय-क्लृप्त-भोगव-कोडुत-स्वप्नसु-
षुप्ति-जाग्रते-यीव-तैजस-प्राज्ञ-विश्वा-ख्य ॥ २८-(२७४)

सप्तधातुगळोळहोरगे स-
न्तप्त लोहगतग्नियन्ददि
सप्तसामगनिप्पनन्नमयादि कोशदोळु ।
लिप्तनागदे तत्तदाह्वय
क्लृप्त भोगव कोडुत स्वप्न सु-
षुप्ति जाग्रतेयीव तैजस प्राज्ञ विश्वाख्य ॥

तीवि-कोण्डिह-वल्लि-मज्जक-लेव-रदिअ-ङ्गुलिय-पर्वद-
ठावि-नलिमु-न्नूरु-अरव-त्तेनिप-त्रिस्थल-दि ।
सावि-रदए-म्भत्तु-रूपदि-कोवि-दरुपे-ळुवरु-देहदि-
देव-तेगळोड-गूडि-क्रीडिसु-वनुर-मारम-ण ॥ २९-(२७५)

तीविकोण्डिहवल्लि मज्ज क-
लेवरदि अङ्गुलिय पर्वद
ठाविनलि मुन्नूरुअरवत्तेनिप त्रिस्थलदि ।
साविरदएम्भत्तु रूपदि
कोविदरु पेळुवरु देहदि
देवतेगळोडगूडि क्रीडिसुवनु रमारमण ॥

कीट-पेश-स्कार-नेनविलि-कीट-भावव-तोरेदु-तद्वत्-
खेट-रूपव-नैदि-आडुव-तेरदि-भकुतिय-लि ।
कैट-भारिय-ध्यान-दिन्दभ-वाट-वियनति-शीघ्र-दिन्दलि-
दाटि-सारू-प्यवनु-ऐदुव-रल्प-जीविग-ळु ॥ ३०-(२७६)

कीट पेशस्कारनेनविलि कीट
भावव तोरेदु तद्वत्
खेटरूपवनैदि आडुव तेरदि भकुतियलि ।
कैटभारिय ध्यानदिन्द भ-
वाटवियनति शीघ्रदिन्दलि
दाटि सारूप्यवनु ऐदुवरल्पजीविगळु ॥

ईप-रियदे-हदोळु-भगव-द्रूप-गळमरे-यदेले-मनदिप-
देप-देभकु-तियलि-स्मरिसुत-लिप्प-भकुतर-नु ।
गोप-तिजग-न्नाथ-विठलस-मीप-गनुता-नागि-सन्तत-
ताप-रोक्षव-नीडि-पोरेवनु-एल्ल-कालद-लि ॥ ३१-(२७७)

ईपरिय देहदोळु भगव-
द्रूपगळ मरेयदेले मनदि प-
देपदे भकुतियलि स्मरिसुतलिप्प भकुतरनु ।
गोपति जगन्नाथविठल स-
मीपगनु तानागि सन्तत
तापरोक्षव नीडि पोरेवनु एल्लकालदलि ॥

९. उदात्तनुदात्त/जीवप्रकरणसन्धि मुगियितु (९-२७७) ॥ श्री मध्वेशार्पणमस्तु ॥

गुरुविगे नमन	—	गुरवे नमः
हरिगे नमन	—	हरये नमः
हरनिगे नमन	—	हराय नमः
*मनुविगे नमन	—	मनवे नमः

* पद्य २१६

ओदि पदव सुधावणुसुधावादि, तिळि, सिद्धान्त मध्वर,
हादियु सुगम. माडु राद्धान्त, परिपरि विधदि ।

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

आव-परबो-म्मनति-विमला-ङ्गाव-बद्धरु-एन्दे-निपरा-
जीव-भवमोद-लाद-मररनु-दिनदि-हरिपद-व ।
सेवि-परिगनु-कूल-रल्लदे-तावु-इवरनु-केडिस-बल्लरे-
श्रीवि-लासा-स्पदन-दासरि-गुण्टे-अपजय-वु ॥ १-(२७८)

आव परबोम्मनति विमला-
ङ्गावबद्धरु एन्देनिप रा-
जीवभवमोदलादमररनुदिनदि हरिपदव ।
सेविपरिगनुकूलरल्लदे
तावु इवरनु केडिसबल्लरे
श्रीविलासास्पदन दासरिगुण्टे अपजयवु ॥

श्रीद-नङ्घ्रिस-रोज-युगळे-काद-शस्था-नात्म-दोळगि-
ट्टाद-रदिस-न्तुतिसु-ववरिगे-ईन-वग्रह-वु ।
आदि-तेयरु-सन्त-ताधि-व्याधि-गळपरि-हरिसु-तवरनु-
कादु-कोण्डिह-रेल्ल-रोन्दा-गीश-नाज्ञेय-लि ॥ २-(२७९)

श्रीदनङ्घ्रिस्रोजयुगळे-
कादशस्थानात्मदोळगि-
ट्टादरदि सन्तुतिसुवबरिगे ई नवग्रहवु ।
आदितेयरु सन्ततादि-
व्याधिगळ परिहरिसुतवरनु
कादुकोण्डिहरेल्लरोन्दागीशनाज्ञेयलि ॥

मेदि-नियमे-लुळळ-गोष्पा-दोद-कगळे-ल्लमल-तीर्थवु-
पाद-पाद्रिध-रात-लवेसु-क्षेत्र-जीवग-ण-
श्रीद-नप्रति-मेगळु-अवरु-म्बोद-नवेनै-वेद्य-नित्यदि-
हादि-नडेवुदे-नर्त-नगळे-न्दरित-वनेयो-गि ॥ ३-(२८०)

मेदिनिय मेलुळळ गोष्पा-
दोदकगळेल्लमलतीर्थवु
पादपाद्रि धरातलवे सुक्षेत्र जीवगण
श्रीदन प्रतिमेगळु अवरु-
म्बोदनवे नैवेद्य नित्यदि
हादिनडेवुदे नर्तनगळेन्दरितवने योगि ॥

सर्व-देशवु-पुण्य-देशवु-सर्व-कालवु-पुण्य-कालवु-
सर्व-जीवरु-दान-पात्ररु-मूरु-लोकदो-ळु ।
सर्व-मातुग-ळेल्ल-मन्त्रवु-सर्व-केलसग-ळेल्ल-पूजेयु-
शर्व-वन्द्यन-विमल-मूर्ति-ध्यान-वुळळव-गे ॥ ४-(२८१)

सर्वदेशवु पुण्यदेशवु
सर्वकालवु पुण्यकालवु
सर्वजीवरु दानपात्ररु मूरु लोकदोळु ।
सर्वमातुगळेल्ल मन्त्रवु
सर्वकैलसगळेल्ल पूजेयु
शर्वबन्द्यन विमलमूर्ति ध्यानवुळळवगे ॥

देव-खातत-टाक-वापिस-रोव-रगळभि-मानि-सुररुक-
लेव-रदोळिह-रोम-कूपग-ळोळगे-तुम्बिह-रु ।
आवि-यद्ग-ङ्गादि-नदिगळु-भावि-सुवुदे-प्पत्ते-रडेनिप-
सावि-रसुना-डिगळो-ळगेप्रव-हिसुत-लिहवे-न्दु ॥ ५-(२८२)

देवखात तटाक वापि स-
रोवरगळभिमानि सुररु क-
लेवरदोळिह रोमकूपगळोळगे तुम्बिहरु ।
आ वियद्गङ्गादि नदिगळु
भाविसुवुदेप्पत्तेरडेनिप
साविर सुनाडिगळोळगे प्रवहिसुतलिहवेन्दु ॥

मूरु-कोटिय-मेले-शोभिप-ईर-धिकए-प्पत्तु-साविर-
मारु-तान्त-र्यामि-माधव-प्रतिदि-वसद-ल्लि ।
तार-मिसुतिह-नेन्दु-तिळिदिह-सूरि-गळेदे-वतेग-ळवरश-
रीर-गळेसु-क्षेत्र-अवर-र्चनेये-हरिपू-जे ॥ ६-(२८३)

मूरु कोटियमेले शोभिप
ईरधिकएप्पत्तुसाविर
मारुतान्तर्यामि माधव प्रतिदिवसदल्लि ।
ता रमिसुतिहनेन्दु तिळिदिह
सूरिगळे देवतेगळवर श-
रीरगळे सुक्षेत्र अवरर्चनेये हरिपूजे ॥

श्रीव-रनिगभि-षेक-वेन्दरि-दीव-सुन्धरे-योळगे-बल्लव-
राव-जलदलि-मिन्द-रेयुग-ङ्गादि-तीर्थग-ळु ।
ताओ-लिदुब-न्दल्ले-नेलेगो-ण्डीवु-वखिला-र्थगळ-नरियद-
जीव-रमरत-रङ्गि-णियनै-दिदरु-फलवे-नु ॥ ७-(२८४)

श्रीवरनिगभिषेकवेन्दरि-
दी वसुन्धरेयोळगे बल्लव-
राव जलदलि मिन्दरेयु गङ्गादि तीर्थगळु ।
ता ओलिदुबन्दल्ले नेलेगो-
ण्डीवुवखिलार्थगळनरियद
जीवरमरतरङ्गिणियनैदिदरु फलवेनु ॥

नदन-दिगळिळे-योळगे-परिवुवु-उदधि-पर्य-न्तरदि-तरुवा-
यदलि-रमिसुवु-वल्लि-तन्मय-वागि-तोरद-ले ।
विधिनि-षेधग-ळाच-रिसुवरु-बुधरु-भगव-द्रूप-सर्व-
त्रदलि-चिन्तने-बरलु-त्यजिसुव-रखिल-कर्मग-ळ ॥ ८-(२८५)

नद नदिगळिळेयोळगे परिवुवु
उदधिपर्यन्तरदि तरुवा-
यदलि रमिसुवुवल्लि तन्मयवागि तोरदले ।
विधि निषेधगळाचरिसुवरु
बुधरु भगवद्रूप सर्व-
त्रदलि चिन्तने बरलु त्यजिसुवरखिल कर्मगळ ॥

कलिये-मोदला-दखिल-दानव-रोळगे-ब्रह्मभ-वादि-देव-
र्कळुनि-यामक-रागि-हरिया-ज्ञेयलि-अवरव-र ।
कलुष-कर्मव-माडि-माडिसि-जलरु-हेक्षण-गर्पि-सुतनि-
श्चलसु-भक्ति-ज्ञान-पूर्णरु-सुखिप-रवरोळ-गे ॥ ९-(२८६)

कलियेमोदलादखिल दानव-
रोळगे ब्रह्मभवादि देव-
र्कळु नियामकरागि हरियाज्ञेयलि अवरवर ।
कलुषकर्मव माडि माडिसि
जलरुहेक्षणगर्पिसुत नि-
श्चल सुभक्ति ज्ञानपूर्णरु सुखिपरवरोळगे ॥

आव-जीवरो-ळिद्द-रेनि-न्नाव-कर्मव-माड-लेनि-
न्नाव-गुणरू-पगळु-पासने-माड-लेनव-रु ।
काव-नय्यन-परम-सत्करु-णाव-लोकन-बलदि-चलिसुव-
देव-तेगळनु-मुट्ट-लापवे-पाप-कर्मग-ळु ॥ १०-(२८७)

आव जीवरोळिद्दरेनि-
न्नाव कर्मव माडलेनि-
न्नाव गुण रूपगळुपासने माडलेनवरु ।
कावनय्यन परमसत्करु-
णावलोकन बलदि चलिसुव
देवतेगळनु मुट्टलापवे पापकर्मगळु ॥

पतियो-डनेमन-बन्द-तेरदलि-प्रतिदि-वसदलि-रमिसि-मोदिसि-
सुतर-पडेदिळे-योळुजि-तेन्द्रिय-ळेन्दु-करेसुव-ळु ।
कृतिप-तिकथा-मृतसु-भोजन-रतम-हात्मरि-गितर-दोष-
प्रतति-गळुस-म्बन्धि-सुवुवे-च्युतन-दासरि-गे ॥ ११-(२८८)

पतियोडने मनबन्द तेरदलि
प्रतिदिवसदलि रमिसि मोदिसि
सुतर पडेदिळेयोळु जितेन्द्रियळेन्दु करेसुवळु ।
कृतिपतिकथाऽमृत सुभोजन-
रत महात्मरिगितर दोष
प्रततिगळु सम्बन्धिसुवुवेऽच्युतन दासरिगे ॥

सूसि-बहनदि-योळगे-तन्नस-हास-तोरुवे-नेन्दु-जलकेदु-
रीसि-दरेकै-सोतु-मुळुगुव-हरिय-बिट्टव-नु
क्लेश-वैदुव-नादि-यलिस-र्वेश-क्लृप्तिय-माडि-दुदबि-
ट्टासे-यिन्दलि-अन्य-रारा-धिसुव-मानव-नु ॥ १२-(२८९)

सूसिबह नदियोळगे तन्न स-
हास तोरुवेनेन्दु जलकेदु-
रीसिदरे कैसोतु मुळुगुव हरिय बिट्टवनु
क्लेशवैदुवनादियलि स-
र्वेशक्लृप्तिय माडिदुद बि-
ट्टासेयिन्दलि अन्यराराधिसुव मानवनु ॥

नानु-नन्नदु-एम्ब-जडमति-मान-वनुदिन-दिनदि-माडुव-
स्नान-जपदे-वार्च-नेयेमोद-लाद-कर्मग-ळ ।
दान-वरुसेळे-दोय्व-रल्लदे-श्रीनि-वासनु-स्वीक-रिसम-
द्दाने-पक्कक-पित्थ-फलभ-क्षिसिद-वोलहु-दु ॥ १३-(२९०)

धात्रि-योळगु-ळ्ळखिल-तीर्थ-क्षेत्र-चरिसिद-रेनु-पात्रा-
पात्र-वरित-न्नादि-दानव-माडि-फलवे-नु ।
गात्र-निर्मल-नागि-मन्त्र-स्तोत्र-पठिसिद-रेनु-हरिस-
र्वत्र-गतने-न्दरिय-दलेता-कर्तृ-एम्बुव-नु ॥ १४-(२९१)

कण्ड-नीरोळु-मुळुगि-देहव-दण्डि-सलुफल-वेनु-दण्डक-
मण्ड-लुगळने-धरिसि-यतिये-न्देनिसि-फलवे-नु ।
अण्ड-जाधिप-नंस-गनपद-पुण्ड-रीकदि-मनव-हर्निशि-
बण्डु-णियवो-लिरिसि-सुखबड-दिप्प-मानव-नु ॥ १५-(२९२)

नानु नन्नदु एम्ब जडमति
मानवनु दिनदिनदि माडुव
स्नान जप देवार्चनेयेमोदलाद कर्मगळ ।
दानवरु सेळेदोय्वरल्लदे
श्रीनिवासनु स्वीकरिस म-
द्दाने पक्क कपित्थफल भक्षिसिदवोलहुदु ॥

धात्रियोळगुळ्ळखिलतीर्थ
क्षेत्रचरिसिदरेनु पात्रा-
पात्रवरितन्नादि दानव माडि फलवेनु ।
गात्रनिर्मलनागि मन्त्र
स्तोत्र पठिसिदरेनु हरि स-
र्वत्रगतनेन्दरियदले ता कर्तृ एम्बुवनु ॥

कण्डनीरोळु मुळुगि देहव
दण्डिसलु फलवेनु दण्डक-
मण्डलुगळने धरिसि यतियेन्देनिसि फलवेनु ।
अण्डजाधिपनंसगन पद
पुण्डरीकदि मनवहर्निशि
बण्डुणियवोलिरिसि सुखबडदिप्प मानवनु ॥

वेद-शास्त्रपु-राण-कथेगळ-नोदि-पेळिद-रेनु-सकलनि-
षेध-कर्मव-तोरेदु-सत्क-र्मगळ-माडे-नु ।
ओद-नङ्गळ-जरिदु-श्वासनि-रोध-गैसिद-रेनु-काम-
क्रोध-वळियदे-नानु-नन्नदु-एम्ब-मानव-नु ॥ १६-(२९३)

एनु-केळिद-रेनु-नोडिद-रेनु-ओदिद-रेनु-पेळिद-
रेनु-पाडिद-रेनु-माडिद-रेनु-दिनदिन-दि ।
श्रीनि-वासन-ज्ञान-कर्मदि-सानु-रागदि-नेनेदु-तत्त-
त्स्थान-दलित-द्रूप-तन्ना-मकन-स्मरिसद-व ॥ १७-(२९४)

बुद्धि-विद्या-बलदि-पेळिद-शुद्ध-काव्यवि-दल्ल-तत्त्वसु-
पद्ध-तिगळनु-तिळिद-मानव-नल्ल-बुधरि-न्द ।
मध्व-वल्लभ-ताने-हृदयदो-ळिदु-नुडिद-न्ददलि-नुडिदेन-
पद्ध-गळनो-डदले-किविगो-ट्टालि-पुदुबुध-रु ॥ १८-(२९५)

वेदशास्त्रपुराणकथेगळ-
नोदि पेळिदरेनु सकल नि-
षेधकर्मव तोरेदु सत्कर्मगळ माडेनु ।
ओदनङ्गळ जरिदु श्वास नि-
रोधगैसिदरेनु काम
क्रोधवळियदे नानु नन्नदु एम्ब मानवनु ॥

एनुकेळिदरेनु नोडिद-
रेनु ओदिदरेनु पेळिद-
रेनु पाडिदरेनु माडिदरेनु दिनदिनदि ।
श्रीनिवासन ज्ञान कर्मदि
सानुरागदि नेनेदु तत्त-
त्स्थानदलि तद्रूप तन्नामकन स्मरिसदव ॥

बुद्धि विद्याबलदि पेळिद
शुद्धकाव्यविदल्ल तत्त्व सु-
पद्धतिगळनु तिळिद मानवनल्ल बुधरिन्द ।
मध्ववल्लभ ताने हृदयदो-
ळिदु नुडिदन्ददलि नुडिदेन-
पद्धगळ नोडदले किविगोट्टालिपुदु बुधरु ॥

कब्बि-नोळगिह-रसवि-दन्तनि-गब्ब-बल्लुदे-भाग्य-यौवन-
मब्बि-नलिमै-मरेद-वगेहरि-सुचरि-तामृत-वु ।
लभ्य-वागदु-हरिप-दाब्जदि-हब्बि-दतिस-द्भक्ति-रसउ-
ण्डुब्बि-कोब्बिसु-खाब्धि-योळगा-डुवव-गल्लद-ले ॥१९-(२९६)

कब्बिनोळगिह रस विदन्तनि-
गब्बबल्लुदे भाग्य यौवन
मब्बिनलि मैमरेदवगे हरिसुचरिताऽमृतवु ।
लभ्यवागदु हरिपदाब्जदि
हब्बिदति सद्भक्तिरस उ-
ण्डुब्बि कोब्बि सुखाब्धियोळगाडुववगल्लदले ॥

खगव-रध्वज-नङ्घ्रि-भकुतिय-बगेय-नरियद-मान-वरिगिदु-
ओगटि-नन्ददि-तोरु-तिप्पुदु-एल्ल-कालद-लि ।
त्रिगुण-वर्जित-नमल-गुणगळ-पोगळि-हिग्गुव-भाग-वतरिगे-
मिगेभ-कुतिवि-ज्ञान-सुखवि-त्तवर-रक्षिपु-दु ॥ २०-(२९७)

खगवरध्वजनङ्घ्रि भकुतिय
बगेयनरियद मानवरिगिदु
ओगटिनन्ददि तोरुतिप्पुदु एल्ल कालदलि ।
त्रिगुणवर्जितनमल गुणगळ
पोगळि हिग्गुव भागवतरिगे
मिगे भकुति विज्ञान सुखवित्तवररक्षिपुदु ॥

परम-तत्त्वर-हस्य-विदुभू-सुररु-केळ्वुदु-साद-रदिनि-
ष्ठुरिग-ळिगेमू-ढरिगे-पण्डित-मानि-पिशुनरि-गे ।
अरसि-करिगिदु-पेळ्वु-दल्लन-वरत-भगव-त्पाद-युगळा-
म्बुरुह-मधुकर-रेनिसु-वरिगिद-नरुपु-मोदद-लि ॥ २१-(२९८)

परमतत्त्वरहस्यविदु भू
सुररु केळ्वुदु सादरदि नि-
ष्ठुरिगळिगे मूढरिगे पण्डितमानि पिशुनरिगे ।
अरसिकरिगिदुपेळ्वुदल्लन-
वरत भगवत्पादयुगळा-
म्बुरुह मधुकररेनिसुवरिगिदनरुपु मोददलि ॥

लोक-वार्तेइ-दल्ल-परलो-कैक-नाथन-वार्ते-केळ्वडे-
काकु-मनुजरि-गिदुस-मर्पक-वागि-सोगयिस-दु ।
कोक-नदपरि-मळव-षट्पद-स्वीक-रिसुव-न्ददलि-जलचर-
भेक-बल्लुदे-इदर-रसहरि-भकुत-गल्लद-ले ॥ २२-(२९९)

लोकवार्ते इदल्ल परलो-
कैकनाथन वार्ते केळ्वडे
काकुमनुजरिगिदु समर्पकवागि सोगयिसदु ।
कोकनद परिमळव षट्पद
स्वीकरिसुवन्ददलि जलचर
भेक बल्लुदे इदर रस हरिभकुतगल्लदले ॥

स्वप्र-योजन-रहित-सकले-ष्टप्र-दायक-सर्व-गुणपू-
र्णप्र-मेयज-राम-रणव-र्जितवि-गतक्ले-श ।
विप्र-तमवि-श्वात्म-घृणिसू-र्यप्र-काशा-नन्त-महिमघृ-
तप्र-तीका-राधि-तङ्घ्रिस-रोज-सुररा-ज ॥ २३-(३००)

स्वप्रयोजनरहित सकले-
ष्टप्रदायक सर्वगुणपू-
र्णप्रमेय जरामरणवर्जित विगतक्लेश ।
विप्रतम विश्वात्म घृणि सू-
र्यप्रकाशानन्तमहिम घृ-
तप्रतीकाराधितङ्घ्रिसरोज सुरराज ॥

वनच-राद्रिध-राध-रनेजय-मनुज-मृगवर-वेष-जयवा-
मनत्रि-विक्रम-देव-जयभृगु-राम-भूमज-य ।
जनक-जाव-ल्लभने-जयरु-क्मिणिम-नोरथ-सिद्धि-दायक-
जिनवि-मोहक-कलिवि-दारण-जयज-यारम-ण ॥ २४-(३०१)

वनचराद्रि धराधरने जय
मनुजमृगवरवेषजय वा-
मन त्रिविक्रमदेवजय भृगुराम भूमजय ।
जनकजावल्लभने जय रु-
क्मिणिमनोरथसिद्धिदायक
जिनविमोहक कलिविदारण जय जयारमण ॥

सच्चि-दान-न्दात्म-ब्रह्मक-रर्चि-तङ्घ्रिस-रोज-सुमनस-
प्रोच्छ-सन्म-ङ्गलद-मध्वा-न्तःक-रणरू-ढ ।
अच्यु-तजग-न्नाथ-विट्ठल-निच्च-नेच्चिद-जनर-बिडका-
ड्गिच्च-नुण्डुअ-रण्य-दोळुगो-गोप-रनुका-य्द ॥ २५-(३०२)

सच्चिदानन्दात्म ब्रह्मक-
रर्चितङ्घ्रिसरोज सुमनस
प्रोच्छ सन्मङ्गलद मध्वान्तःकरणरूढ ।
अच्युत जगन्नाथविट्ठल
निच्चनेच्चिद जनर बिड का-
ड्गिच्चनुण्डु अरण्यदोळु गो गोपरनु काय्द ॥

१०. सर्वप्रतीकसन्धि मुगियितु (१०३०२)
॥ श्री मध्वेशार्पणमस्तु ॥

श्रीमद्धरिकथाऽमृतसार **११.स्थावर-जङ्गमसन्धि** **(पन्तुवराळि त्रिपुटताळ)**

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु
पादु-केयक-ण्टकसि-कतमोद-लादु-वनुदिन-बाधि-सवुए-
काद-शेन्द्रिय-गळलि-बिडदेह्-षीक-पनमू-र्ति ।
साद-रदिनेने-ववरु-एनप-राध-गळमा-डिदरु-सरियेनि-
रोध-गैसवु-मोक्ष-मार्गके-दुरित-राशिग-ळु ॥ १-(३०३)

पादुकेय कण्टक सिकतमोद-
लादुवनुदिन बाधिसवु ए-
कादशेन्द्रियगळलि बिडदे हृषीकपन मूर्ति ।
सादरदि नेनेववरु एनप-
राधगळ माडिदरु सरिये नि-
रोधगैसवु मोक्षमार्गके दुरितराशिगळु ॥

हगल-नन्दा-दीप-दन्ददि-निगम-वेद्यन-पूजि-सुतकै-
मुगिदु-नाल्करो-ळोन्दु-पुरुषा-र्थवनु-बेडद-ले ।
जगदु-दरको-ट्टुदनु-भुञ्जिसि-मगम-डदिप्रा-णेन्द्रि-यात्मा-
दिगळु-भगवद-धीन-वेन्दडि-गडिगे-नेनेवुति-रु ॥ २-(३०४)

हगलनन्दादीपदन्ददि
निगमवेद्यन पूजिसुत कै-
मुगिदु नाल्करोळोन्दु पुरुषार्थवनु बेडदले ।
जगदुदर कोट्टुदनु भुञ्जिसि
मग मडदि प्राणेन्द्रियात्मा-
दिगळु भगवदधीनवेन्दडिगडिगे नेनेवुतिरु ॥

अस्व-तन्त्रनु-जीव-हरिस-र्वस्व-तन्त्रनु-नित्य-सुखमय-
निस्स्व-बद्ध-ल्पज्ञ-शक्तस-दुःख-निर्वि-ण्ण ।
हस्व-देहिस-नाथ-जीवनु-विश्व-व्यापक-कर्तृ-ब्रह्मस-
रस्व-तीशा-द्यमर-नुतहरि-येन्दु-कोण्डा-डु ॥ ३-(३०५)

अस्वतन्त्रनु जीव हरिस-
र्वस्वतन्त्रनु नित्यसुखमय
निस्स्वबद्धल्पज्ञशक्त सदुःख निर्विण्ण ।
हस्वदेहि सनाथ जीवनु
विश्वव्यापक कर्तृ ब्रह्म स-
रस्वतीशाद्यमरनुत हरियेन्दु कोण्डाडु ॥

मत्ते-विश्वा-द्येण्टु-रूपो-म्भत्त-रिन्दलि-पेच्चि-सलुए-
प्पत्ते-रडुरू-पगळ-हवुओ-न्दोन्दे-साह-स्र ।
पृथ्क्पृ-थकुना-डिगळो-ळगेस-र्वोत्त-मनतिळि-येन्दु-भीष्मनु-
बित्त-रिसिदनु-धर्म-तनयगे-शान्ति-पर्वद-लि ॥ ४-(३०६)

मत्ते विश्वाद्येण्टु रूपो-
म्भत्तरिन्दलि पेच्चिसलु ए-
प्पत्तेरडु रूपगळहवु ओन्दोन्दे साहस्र ।
पृथ्क्पृथकु नाडिगळोळगे स-
र्वोत्तमन तिळियेन्दु भीष्मनु
बित्तरिसिदनु धर्मतनयगे शान्तिपर्वदलि ॥

एण्टु-प्रकृतिग-ळोळगे-विश्वा-द्येण्टु-रूपद-लिदु-भकुतर-
कण्ट-कवपरि-हरिसु-तलिपा-लिसुव-प्रतिदिन-दि ।
नेण्ट-नन्ददि-एडेबि-डदेवै-कुण्ठ-रमणनु-तन्न-वरनि-
ष्कण्ट-कसुमा-र्गदलि-नडेसुव-दुर्ज-नरबिडु-व ॥ ५-(३०७)

एण्टु प्रकृतिगळोळगे विश्वा-
द्येण्टु रूपदलिदु भकुतर
कण्टकव परिहरिसुतलि पालिसुव प्रतिदिनदि ।
नेण्टनन्ददि एडेबिडदे वै-
कुण्ठरमणनु तन्नवर नि-
ष्कण्टक सुमार्गदलि नडेसुव दुर्जनर बिडुव ॥

स्वरम-णनुश-क्त्यादि-रूपदि-करण-मानिग-ळोळगे-नेलेसि-
द्दरवि-दूरनु-स्थूल-विषयग-ळुण्डु-णिपनि-त्य ।
अरिय-देलेना-नुम्बे-नेम्बुव-निरय-गळनु-म्बुवनु-निश्चय-
मरळि-मरळिभ-वाट-वियस-श्चरिसि-बळलुव-नु ॥ ६-(३०८)

स्वरमणनु शक्त्यादिरूपदि
करणमानिगळोळगे नेलेसि-
द्दरविदूरनु स्थूल विषयगळुण्डुणिप नित्य ।
अरियदेले नानुम्बेनेम्बुव
निरयगळनुम्बुवनु निश्चय
मरळि मरळि भवाटविय सञ्चरिसि बळलुवनु ॥

सुरुचि-रुचिरसु-गन्ध-शुचिए-न्दिरुति-हनुष-ड्रसग-ळोळुह-
न्नेरडु-रूपद-लिप्प-श्रीभू-दुर्गे-यरसहि-त ।
स्वरम-णनुए-प्पत्ते-रडुसा-विरस-मीरन-रूप-दोळगि-
द्दुरुप-राक्रम-कर्तृ-येनिसुव-नाडि-गळोळि-द्दु ॥ ७-(३०९)

सुरुचि रुचिर सुगन्ध शुचि ए-
न्दिरुतिहनु षड्रसगळोळु ह-
न्नेरडु रूपदलिप्प श्री भू दुर्गेयर सहित ।
स्वरमणनु एप्पत्तेरडुसा-
विर समीरन रूपदोळगि-
द्दुरुपराक्रम कर्तृयेनिसुव नाडिगळोळिद्दु ॥

निन्न-सर्वत्र-दलि-नेनेवव-रन्य-कर्मव-माडि-दरुसरि-
पुण्य-कर्मग-ळेनिसु-वुवुस-न्देह-विनिति-ल्ल ।
निन्न-स्मरिसदे-स्नान-जपहो-मान्न-वस्त्रग-जाश्व-भूधन-
धान्य-मोदला-दखिल-दानव-माडि-फलवे-नु ॥ ८-(३१०)

निन्न सर्वत्रदलि नेनेवव-
रन्यकर्मव माडिदरु सरि
पुण्यकर्मगळेनिसुवुवु सन्देहविनितिल्ल ।
निन्न स्मरिसदे स्नान जप हो-
मान्न वस्त्र गजाश्व भू धन
धान्यमोदलादखिल दानव माडि फलवेनु ॥

इष्ट-भोग्यप-दार्थ-दोळुशिपि-विष्ट-नामदि-सर्व-जीवर-
तुष्टि-बडिसुव-दिनदि-नदिस-न्तुष्ट-ताना-गि ।
कोष्ट-दोळुनेले-सिद्दु-रसमय-पुष्टि-यैदिसु-तिन्द्रि-यगळोळु-
प्रेष्ठ-नागि-देल्ल-विषयग-ळुम्ब-तिळिसद-ले ॥ ९-(३११)

इष्टभोग्य पदार्थदोळु शिपि-
विष्टनामदि सर्वजीवर
तुष्टिबडिसुव दिनदिनदि सन्तुष्ट तानागि ।
कोष्टदोळु नेलेसिद्दु रसमय
पुष्टियैदिसुतिन्द्रियगळोळु
प्रेष्ठनागिदेल्ल विषयगळुम्ब तिळिसदले ॥

कार-णाह्वय-ज्ञान-कर्म-प्रेर-कनुता-नागि-क्रियेगळ-
तोरु-वनुक-र्मेन्द्रि-याधिप-रोळगे-नेलेसि-द्दु ।
मूरु-गुणमय-द्रव्य-गतदा-कार-तन्ना-मदलि-करेसुव-
तोरि-कोळ्ळदे-जनर-मोहिप-मोह-कल्पक-नु ॥ १०-(३१२)

कारणाह्वय ज्ञान कर्म
प्रेरकनु तानागि क्रियेगळ
तोरुवनु कर्मेन्द्रियाधिपरोळगे नेलेसिद्दु ।
मूरु गुणमय द्रव्यग तदा-
कार तन्नामदलि करेसुव
तोरिकोळ्ळदे जनरमोहिप मोहकल्पकनु ॥

द्रव्य-नेनिसुव-भूत-मात्रदो-ळव्य-यनुक-र्मेन्द्रि-यगळोळु-
भव्य-सत्क्रिय-नेनिप-ज्ञाने-न्द्रियग-ळोळगि-द्दु ।
स्तव्य-कारक-नेनिसि-सुखमय-सेव्य-सेवक-नेनिसि-जगदोळु-
हव्य-वाहन-अरणि-योळगि-प्पन्ते-इरुति-प्प ॥ ११-(३१३)

द्रव्यनेनिसुव भूत मात्रदो-
ळव्ययनु कर्मेन्द्रियगळोळु
भव्य सत्क्रियनेनिप ज्ञानेन्द्रियगळोळगिद्दु ।
स्तव्य कारकनेनिसि सुखमय
सेव्य सेवकनेनिसि जगदोळु
हव्यवाहन अरणियोळगिप्पन्ते इरुतिप्प ॥

मनवे-मोदला-दिन्द्रि-यगळोळ-गनिल-देवनु-शुचिये-निसिको-
ण्डनव-रतनेले-सिप्प-शुचिष-द्धोत-नेन्देनि-सि ।
तनुवि-नोळगि-प्पनुस-दावा-मनहृ-षीके-शाख्य-रूपदि-
अनुभ-वकेत-न्दीव-विषयज-सुखव-जीवरि-गे ॥ १२-(३१४)

मनवे मोदलादिन्द्रियगळोळ-
गनिलदेवनु शुचियेनिसिको-
ण्डनवरत नेलेसिप्प शुचिषद्धोतनेन्देनिसि ।
तनुविनोळगिप्पनु सदा वा-
मन हृषीकेशाख्य रूपदि
अनुभवके तन्दीव विषयज सुखव जीवरिगे ॥

प्रेर-कप्रे-र्यरोळु-प्रेर्य-प्रेर-कनुता-नागि-हरिनि-
र्वैर-दिन्दलि-वर्ति-सुवत-न्नाम-रूपद-लि ।
तोरि-कोळ्ळदे-सर्व-रोळुभा-गीर-थीजन-कनुस-कलव्या-
पार-गळता-माडि-माडिसि-नोडि-नगुति-प्प ॥ १३-(३१५)

प्रेरक प्रेर्यरोळु प्रेर्य
प्रेरकनु तानागि हरि नि-
र्वैरदिन्दलि वर्तिसुव तन्नामरूपदलि ।
तोरिकोळ्ळदे सर्वरोळु भा-
गीरथीजनकनु सकलव्या-
पारगळ ता माडि माडिसि नोडि नगुतिप्प ॥

हरिये-मुख्यनि-याम-कनुए-न्दरिदु-पुण्या-पुण्य-हरुषा-
मरुष-लाभा-लाभ-सुखदुः-खादि-द्वन्द्वग-ळ ।
निरुत-अवन-ङ्घिगेस-मर्पिसु-नरक-भूस्व-र्गाप-वर्गदि-
करण-निय्या-मकन-सर्व-त्रदलि-नेनेवुति-रु ॥ १४-(३१६)

हरिये मुख्यनियामकनु ए-
न्दरिदु पुण्यापुण्य हरुषा-
मरुष लाभालाभ सुखदुःखादि द्वन्द्वगळ ।
निरुत अवनङ्घिगे समर्पिसु
नरक भू स्वर्गापवर्गदि
करणनिय्यामकन सर्वत्रदलि नेनेवुतिरु ॥

माण-वकत-त्फलग-ळनुस-न्धान-विल्लदे-कर्म-गळस्वे-
च्छानु-सारदि-माडि-मोदिसु-वन्ते-प्रतिदिन-दि ।
ज्ञान-पूर्वक-विधिनि-षेधग-ळेनु-नोडदे-माडु-कर्मप्र-
धान-पुरुषे-शनलि-भकुतिय-बेडु-कोण्डा-डु ॥ १५-(३१७)

माणवक तत्फलगळनुस-
न्धानविल्लदे कर्मगळ स्वे-
च्छानुसारदि माडि मोदिसुवन्ते प्रतिदिनदि ।
ज्ञानपूर्वक विधि निषेधग-
ळेनु नोडदे माडु कर्मप्र-
धानपुरुषेशनलि भकुतिय बेडु कोण्डाडु ॥

हानि-वृद्धिज-याप-जयगळ-एनु-कोट्टुद-भुञ्जि-सुतल-
क्ष्मीनि-वासन-करुण-वनेस-म्पादि-सनुदिन-दि ।
ज्ञान-सुखमय-तन्न-वरपर-मानु-रागदि-सन्त-यिपदे-
हानु-बन्धिग-ळन्ते-ओळहोर-गिद्दु-करुणा-ळु ॥ १६-(३१८)

हानि वृद्धि जयापजयगळ
एनु कोट्टुद भुञ्जिसुत ल-
क्ष्मीनिवासन करुणवने सम्पादिसनुदिनदि ।
ज्ञानसुखमय तन्नवर पर-
मानुरागदि सन्तयिप दे-
हानुबन्धिगळन्ते ओळहोरगिद्दु करुणाळु ॥

आप-रमसक-लेन्द्रि-यगळोळु-व्याप-कनुता-नागि-विषयव-
ताप-रिग्रहि-सुवनु-तिळिसदे-सर्व-जीवरो-ळु ।
पाप-रहितपु-राण-पुरुषस-मीप-दलिनेले-सिद्दु-नाना-
रूप-धारक-तोरि-कोळ्ळदे-कर्म-गळमा-ळप ॥ १७-(३१९)

आ परम सकलेन्द्रियगळोळु
व्यापकनु तानागि विषयव
ता परिग्रहिसुवनु तिळिसदे सर्वजीवरोळु ।
पापरहित पुराणपुरुष स-
मीपदलि नेलेसिद्दु नाना
रूपधारक तोरिकोळ्ळदे कर्मगळ माळप ॥

खेच-ररुभू-चररु-वारिनि-शाच-ररोळि-द्दवर-कर्मग-
ळाच-रिसुवनु-घनम-हिमपर-मल्प-नोपा-दि ।
गोच-रिसनुब-हुप्र-कारा-लोच-नेयमा-डिदरु-मनसिगे-
कीच-कारिय-प्रीय-कविजन-गेय-महरा-य ॥ १८-(३२०)

खेचररु भूचररु वारिनि-
शाचररोळिद्दवर कर्मग-
ळाचरिसुवनु घनमहिम परमल्पनोपादि ।
गोचरिसनु बहुप्रकारा-
लोचनेय माडिदरु मनसिगे
कीचकारियप्रीय कविजनगेय महराय ॥

ओन्दे-गोत्र-प्रवर-सन्ध्या-वन्द-नेगळनु-माडि-प्रान्तके-
तन्दे-तनयरु-बेरे-तम्मय-पेसरु-गोम्ब-न्ते ।
ओन्दे-देहदो-ळिद्दु-निन्द्या-निन्द्य-कर्मव-माडि-माडिसि-
इन्दि-रेशनु-सर्व-जीवरो-ळीश-नेनिसुव-नु ॥ १९-(३२१)

ओन्दे गोत्र प्रवर सन्ध्या
वन्दनेगळनु माडि प्रान्तके
तन्दे तनयरु बेरे तम्मय पेसरुगोम्बन्ते ।
ओन्दे देहदोळिद्दु निन्द्या-
निन्द्य कर्मव माडि माडिसि
इन्दिरेशनु सर्वजीवरोळीशनेनिसुवनु ॥

किट्ट-गट्टिद-लोह-पावक-सुट्ट-विङ्गड-माडु-वन्तेघ-
रट्ट-व्रीहियो-ळिप्प-तण्डुल-कडेगे-तेगेव-न्ते ।
विट्ट-लाये-न्दोम्मे-मैमरे-दट्ट-हासदि-करेये-दुरितग-
ळट्टु-ळिबिडिसि-अवन-तन्नोळ-गिट्टु-सलहुव-नु ॥ २०-(३२२)

किट्टगट्टिद लोह पावक
सुट्टु विङ्गड माडुवन्ते घ-
रट्ट व्रीहियोळिप्प तण्डुल कडेगे तेगेवन्ते ।
विट्टलायेन्दोम्मे मै मरे-
दट्टहासदि करेये दुरितग-
ळट्टुळि बिडिसि अवन तन्नोळगिट्टु सलहुवनु ॥

जलधि-योळुस्वे-च्छानु-सारदि-जलच-रप्रा-णिगळु-तत्त-
त्स्थल-गळलिस-न्तोष-पडुतलि-सञ्च-रिसुव-न्ते ।
नलिन-नाभनो-ळब्ज-भवमु-प्पोळलु-रिगमै-गण्ण-मोदला-
दलव-जीवर-गणवु-वर्तिसु-तिहुदु-नित्यद-लि ॥ २१-(३२३)

जलधियोळु स्वेच्छानुसारदि
जलचरप्राणिगळु तत्त-
त्स्थलगळलि सन्तोषपडुतलि सञ्चरिसुवन्ते ।
नलिननाभनोळब्जभव मु-
प्पोळलुरिग मैगण्ण मोदला-
दलव जीवर गणवु वर्तिसुतिहुदु नित्यदलि ॥

वासु-देवनु-ओळहो-रगेआ-भास-कनुता-नागि-बिम्बप्र-
काशि-सुवत-द्रूप-तन्ना-मदलि-सर्व-त्र ।
ईस-मन्वय-वेन्दे-निपसदु-पास-नेयगै-वपनु-मोक्षा-
न्वेषि-गळोळु-त्तमनु-जीव-न्मुक्त-नवनियो-ळु ॥ २२-(३२४)

वासुदेवनु ओळहोरगे आ-
भासकनु तानागि बिम्ब प्र-
काशिसुव तद्रूप तन्नामदलि सर्वत्र ।
ई समन्वयवेन्देनिप सदु-
पासनेय गैवपनु मोक्षा-
न्वेषिगळोलुत्तमनु जीवन्मुक्तनवनियोळु ॥

भोग्य-वस्तुग-ळोळगे-योग्या-योग्य-रसगळ-नरितु-योग्या-
योग्य-रलिनेले-सिप्प-हरिगेस-मर्पि-सनुदिन-दि ।
भाग्य-बडतन-बरलु-हिग्गदे-कुग्गि-सोरगदे-सद्भ-कुतिवै-
राग्य-गळने-माडु-नीनि-र्भाग्य-नेनिसद-ले ॥ २३-(३२५)

भोग्यवस्तुगळोळगे योग्या-
योग्य रसगळनरितु योग्या-
योग्यरलि नेलेसिप्प हरिगे समर्पिसनुदिनदि ।
भाग्य बडतन बरलु हिग्गदे
कुग्गि सोरगदे सद्भकुति वै-
राग्यगळने माडु नी निर्भाग्यनेनिसदले ॥

स्थलज-लाद्रिग-ळल्लि-जनिसुव-फलसु-पुष्पसु-गन्ध-रसश्री-
तुलशि-मोदला-दखिल-पूजा-साध-नपदा-र्थ ।
हलवु-बगेयि-न्दर्पि-सुतबा-म्बोळेय-जनकगे-नित्य-नित्यदि-
तिळिव-रिदुव्यति-रेक-पूजेग-ळेन्दु-कोविद-रु ॥ २४-(३२६)

स्थल जलाद्रिगळल्लि जनिसुव
फल सुपुष्प सुगन्धरस श्री
तुलशि मोदलादखिल पूजासाधन पदार्थ ।
हलवु बगेयिन्दर्पिसुत बा-
म्बोळेय जनकगे नित्यनित्यदि
तिळिवरिदु व्यतिरेकपूजेगळेन्दु कोविदरु ॥

श्रीक-रनरू-पक्रि-येगुणव-लोकि-सुतस-र्वत्र-दिव्यति-
रेक-तिळियदे-अन्व-यिसुबि-म्बनलि-मरेयद-ले ।
स्वीक-रिसुवनु-करुण-दिन्दनि-राक-रिसदेकृ-पालु-भक्तर-
शोक-गळपरि-हरिसि-सुखवि-त्तनव-रतपोरे-व ॥ २५-(३२७)

श्रीकरन रूप क्रिये गुणव-
लोकिसुत सर्वत्रदि व्यति-
रेक तिळियदे अन्वयिस्बिम्बनलि मरेयदले ।
स्वीकरिसुवनु करुणदिन्द नि-
राकरिसदे कृपालु भक्तर
शोकगळ परिहरिसि सुखवित्तनवरत पोरेव ॥

इनितु-व्यतिरे-कान्व-यगळे-न्देनिप-पूजा-विधिग-ळनुतिळि-
दनिमे-षेशन-तृप्ति-बडिसुत-लिरुनि-रन्तर-दि ।
घनम-हिमकै-गोण्डु-स्थितिमृति-जनुम-गळपरि-हरिसि-सेवक-
जनरो-ळिट्टा-नन्द-बडिसुव-भक्त-वत्सल-नु ॥ २६-(३२८)

इनितु व्यतिरेकान्वयगळे-
न्देनिप पूजाविधिगळनु तिळि-
दनिमेषेशन तृप्तिबडिसुतलिरु निरन्तरदि ।
घनमहिम कैगोण्डु स्थिति मृति
जनुमगळ परिहरिसि सेवक
जनरोळिट्टानन्द बडिसुव भक्तवत्सलनु ॥

जलज-नाभनि-गेरडु-प्रतिमेग-ळिळेयो-ळगेजड-चेत-नात्मक-
चलदो-ळिर्बगे-स्त्रीपु-रुषभे-ददलि-जडदोळ-गे
तिळिवु-दाहित-सहज-मिगेजड-चलग-ळेन्दि-र्बगेप्र-तीकदि-
ललित-पञ्च-त्रयसु-गोळक-वरितु-भजिसुति-रु ॥ २७-(३२९)

जलजनाभनिगेरडु प्रतिमेग-
ळिळेयोळगे जड चेतनात्मक
चलदोळिर्बगे स्त्री पुरुषभेददलि, जडदोळगे
तिळिवुदाहित सहज मिगे जड
चलगळेन्दिर्बगे प्रतीकदि
ललित पञ्च त्रय सुगोळकवरितु भजिसुतिरु ॥

वारि-जासन-वायु-वीन्द्रउ-मार-मणना-केश-स्मरह-
ङ्कारि-कप्रा-णादि-गळुपुरु-षरक-लेवर-दि ।
तोरि-कोळदनि-रुद्ध-दोषवि-दूर-नारा-यणन-रूपश-
रीर-मानिग-ळागि-भजिसुत-सुखव-कोडुतिह-रु ॥ २८-(३३०)

वारिजासन वायु वीन्द्र उ-
मारमण नाकेश स्मरह-
ङ्कारिक प्राणादिगळु पुरुषर कलेवरदि ।
तोरिकोळदनिरुद्ध दोषवि-
दूर नारायणनरूप श-
रीरमानिगळागि भजिसुत सुखव कोडुतिहरु ॥

सिरिस-रस्वति-भार-तीसौ-परणि-वारुणि-पार्व-तीमुख-
रिरुति-हरुस्त्री-यरोळ-गभिमा-निगळु-तावेनि-सि ।
अरुण-वर्णनि-भाङ्ग-श्रीस-ङ्करुष-णप्र-द्युम्न-रूपग-
ळिरुळु-हगलुउ-पास-नवगै-वुतलि-मोदिप-रु ॥ २९-(३३१)

सिरि सरस्वति भारती सौ-
परणि वारुणि पार्वतीमुख-
रिरुतिहरु स्त्रीयरोळगभिमानिगळु तावेनिसि ।
अरुणवर्णनिभाङ्ग श्रीस-
ङ्करुषण प्रद्युम्नरूपग-
ळिरुळु हगलु उपासनव गैवुतलि मोदिपरु ॥

कृतप्र-तीकदि-टङ्कि-भार्गव-हुतव-हानिल-मुख्य-दिविजरु-
तुतिसि-कोळुतभि-मानि-गळुता-वागि-नेलेसि-द्दु ।
प्रतिदि-वसश्री-तुलशि-गन्धा-क्षतेकु-सुमफल-दीप-पञ्चा-
मृतदि-पूजिप-भकुत-रिगेकोडु-तिहरु-पुरुषार्थ ॥ ३०-(३३२)

कृतप्रतीकदि टङ्कि भार्गव
हुतवहानिलमुख्य दिविजरु
तुतिसिकोळुतभिमानिगळु तावागि नेलेसिद्दु ।
प्रतिदिवस श्रीतुलशि गन्धा-
क्षते कुसुम फल दीप पञ्चा-
मृतदि पूजिप भकुतरिगे कोडुतिहरु पुरुषार्थ ॥

नगग-ळभिमा-निगळे-निपसुर-रुगळु-सहजा-चलग-ळिगेमा-
निगळे-निसिश्री-वासु-देवन-पूजि-सुतलिह-रु ।
स्वगत-भेदवि-वर्जि-तनना-ल्बगेप्र-तीकदि-तिळिदु-पूजिसे-
विगड-संसा-राब्धि-दाटिसि-मुक्त-रनुमा-ळप ॥ ३१-(३३३)

नगगळभिमानिगळेनिप सुर-
रुगळु सहजाचलगळिगे मा-
निगळेनिसि श्रीवासुदेवन पूजिसुतलिहरु ।
स्वगतभेदविवर्जितन ना-
ल्बगे प्रतीकदि तिळिदु पूजिसे
विगडसंसाराब्धि दाटिसि मुक्तरनु माळप ॥

आव-क्षेत्रके-पोद-रेनि-न्नाव-तीर्थदि-मुळुग-लेनि-
न्नाव-जपतप-होम-दानव-माडि-फलवे-नु ।
श्रीव-रजग-न्नाथ-विठल-नीवि-धदिस्था-वरदि-जङ्गम-
जीव-रोळुपरि-पूर्ण-नेन्दरि-यदिह-मानव-नु ॥ ३२-(३३४)

आव क्षेत्रके पोदरेनि-
न्नाव तीर्थदि मुळुगलेनि-
न्नाव जप तप होम दानव माडि फलवेनु ।
श्रीवर जगन्नाथविठलनी
विधदि स्थावरदि जङ्गम
जीवरोळु परिपूर्णनेन्दरियदिह मानवनु ॥

११. स्थावर-जङ्गमसन्धि मुगियितु (११-३३४)
॥ श्री मध्वेशार्पणमस्तु ॥

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

वासु-देवनु-प्राण-मुखत-त्त्वेश-रिन्दलि-सेवे-कैगोळु-
तीश-रीरदो-ळिप्प-मूव-त्तारु-साह-स्र ।
ईसु-नाडिग-ळोळगे-श्रीभू-मीस-मेतवि-हार-गैवप-
रेश-नमलसु-मूर्ति-गळचि-न्तिसुत-हिग्गुति-रु ॥ १-(३३५)

वासुदेवनु प्राणमुखत-
त्त्वेशरिन्दलि सेवेकैगोळु-
तीशरीरदोळिप्प मूवत्तारुसाहस्र ।
ई सुनाडिगळोळगे श्री भू-
मी समेत विहारगैव प-
रेशनमल सुमूर्तिगळ चिन्तिसुत हिग्गुतिरु ॥

चरण-गळोळिह-नाडि-गळुह-न्नेरडु-साविर-मध्य-देहदो-
ळिरुति-हवुहदि-नाल्कु-बाहुग-ळोळगे-ईरेर-डु ।
शिरदो-ळारुस-हस्र-चिन्तिसि-इरुळु-हगलभि-मानि-दिविजर-
नरितु-पासने-गैव-रिळेयोळु-स्वर्ग-वासिग-ळु ॥ २-(३३६)

चरणगळोळिह नाडिगळु ह-
न्नेरडुसाविर मध्यदेहदो-
ळिरुतिहवु हदिनाल्कु बाहुगळोळगे ईरेरडु ।
शिरदोळारु सहस्र चिन्तिसि
इरुळु हगलभिमानि दिविजर-
नरितुपासनेगैवरिळेयोळु स्वर्गवासिगळु ॥

बृहति-नामक-वासु-देवनु-वहिसि-स्त्रीपुं-रूप-दोषवि-
रहित-एप्प-त्तेरडु-साविर-नाडि-गळोळि-द्दु ।
द्रुहिण-मोदला-दमर-गणस-न्महित-सर्व-प्राणि-गळमह-
महिम-सन्तै-सुवनु-सन्तत-परम-करुणा-ळु ॥ ३-(३३७)

बृहतिनामक वासुदेवनु
वहिसि स्त्री पुंरूप दोषवि-
रहित एप्पत्तेरडुसाविर नाडिगळोळिद्दु ।
द्रुहिणमोदलादमरगणस-
न्महित सर्वप्राणिगळ मह
महिम सन्तैसुवनु सन्तत परमकरुणाळु ॥

नूरु-वरुषके-दिवस-मूव-त्तारु-साविर-वहवु-नाडिश-
रीर-दोळगिनि-तिहवु-येन्दरि-तोन्दु-दिवसद-लि ।
सूरि-गळस-त्करिसि-दवप्रति-वार-दलिद-म्पतिग-ळर्चने-
तार-चिसिदव-सत्य-संशय-विल्ल-वेन्दे-न्दु ॥ ४-(३३८)

नूरुवरुषके दिवस मूव-
त्तारुसाविरवहवु नाडि श-
रीरदोळगिनितिहवु येन्दरितोन्दु दिवसदलि ।
सूरिगळ सत्करिसिदव प्रति
वारदलि दम्पतिगळर्चने
ता रचिसिदव सत्य संशयविल्लवेन्देन्दु ॥

चतुर-विंशति-तत्त्व-गळुत-त्पतिग-ळेनिसुव-ब्रह्म-मुखदे-
वतेग-ळनुदिन-प्रति-प्रतिना-डियोळ-गिरुति-द्दु ।
चतुर-दशलो-कदोळु-जीव-प्रतति-गळसं-रक्षि-सुवशा-
श्वतन-तत्त-त्स्थान-दलिनो-डुतले-मोदिप-रु ॥ ५-(३३९)

चतुरविंशतितत्त्वगळु त-
त्पतिगळेनिसुव ब्रह्ममुखदे-
वतेगळनुदिन प्रतिप्रति नाडियोळगिरुतिद्दु ।
चतुरदश लोकदोळु जीव
प्रततिगळ संरक्षिसुव शा-
श्वतन तत्तत्स्थानदलि नोडुतले मोदिपरु ॥

सत्य-सङ्क-ल्पनुस-दाए-प्पत्ते-रडुसा-हस्र-दोळुमू-
वत्तु-नालकु-लक्ष-दैव-त्तारु-साह-स्र ।
चित्प्र-कृतियोड-गूडि-परमनु-नित्य-मङ्गल-मूर्ति-भकुतर-
तेत्ति-गनुता-नागि-सर्व-त्रदलि-सन्तै-प ॥ ६-(३४०)

सत्यसङ्कल्पनु सदा ए-
प्पत्तेरडुसाहस्रदोळु मू-
वत्तुनालकुलक्षदैवत्तारुसाहस्र ।
चित्प्रकृतियोडगूडि परमनु
नित्यमङ्गलमूर्ति भकुतर
तेत्तिगनु तानागि सर्वत्रदलि सन्तैप ॥

मणिग-ळोळगिह-सूत्र-दन्ददि-प्रणव-पाद्यनु-सर्व-चेतन-
गणदो-ळिद्दन-वरत-सन्तै-सुवनु-तन्नव-र ।
प्रणत-कामद-भक्त-चिन्ता-मणिचि-दान-न्दैक-देहनु-
अणुम-हद्वत-नल्प-नोपा-दियलि-नेलेसि-प्प ॥ ७-(३४१)

मणिगळोळगिह सूत्रदन्ददि
प्रणवपाद्यनु सर्वचेतन
गणदोळिद्दनवरत सन्तैसुवनु तन्नवर ।
प्रणतकामद भक्तचिन्ता-
मणि चिदानन्दैकदेहनु
अणु महद्वतनल्पनोपादियलि नेलेसिप्प ॥

ईसु-षण्मा-द्यखिल-नाडी-कोश-नाभी-मूल-दलिवृष-
णास-नदम-ध्यदलि-इप्पुदु-तुन्दि-नामद-लि ।
आस-रोजा-सनमु-खरुमू-लेश-नान-न्दादि-सुगुणो-
पास-नेयगै-वुतलि-देहग-ळोळगे-इरुतिह-रु ॥ ८-(३४२)

ई सुषम्नाद्यखिल नाडी
कोश नाभी मूलदलि वृष-
णासनद मध्यदलि इप्पुदु तुन्दिनामदलि ।
आ सरोजासनमुखरु मू-
लेशनानन्दादि सुगुणो-
पासनेय गैवुतलि देहगळोळगे इरुतिहरु ॥

सूरि-गळुचि-त्तैसु-वुदुभा-गीर-थियेमोद-लाद-तीर्थग-
ळीर-धिकवे-प्पत्तु-सावित-नाडि-योळगिह-वु ।
इर-हस्यव-नल्प-जनरिगे-तोरि-पेळदे-नाडि-नदियोळु-
धीर-रनुदिन-मज्ज-नवमा-डुतले-सुखिसुव-रु ॥ ९-(३४३)

सूरिगळु चित्तैसुवुदु भा-
गीरथिये मोदलाद तीर्थग-
ळीरधिकवेप्पत्तुसावित नाडियोळगिहवु ।
ई रहस्यवनल्प जनरिगे
तोरिपेळदे नाडिनदियोळु
धीररनुदिन मज्जनव माडुतले सुखिसुवरु ॥

तिळिवु-दीदे-हदोळ-गिहएड-बलद-नाडिग-ळोळुदि-विजरनु-
जलज-सम्भव-वायु-वाण्या-दिगळु-बलद-ल्लि ।
एलरु-णिगविह-गेन्द्र-चळिवे-ट्टळिय-षण्महि-षियरु-वारुणि-
कुलिश-धरका-मादि-गळुएड-भाग-दोळगिह-रु ॥ १०-(३४४)

तिळिवुदीदेहदोळगिह एड
बलद नाडिगळोळु दिविजरनु
जलजसम्भव वायु वाण्यादिगळु बलदल्लि ।
एलरुणिग विहगेन्द्र चळिवे
ट्टळिय षण्महिषियरु वारुणि
कुलिशधर कामादिगळु एडभागदोळगिहरु ॥

इक्के-लदोळिह-नाडि-योळुदे-वक्क-ळिन्दोड-नाडु-तलिपो-
म्बक्कि-देरनु-जीव-रधिका-रानु-सारद-लि ।
तक्क-साधन-माडि-माडिसु-तक्क-रदिस-न्तैप-भकुतर-
दक्क-गोडनुअ-सुरर-सत्पु-ण्यगळ-नपहरि-प ॥ ११-(३४५)

इक्केलदोळिह नाडियोळु दे-
वक्कळिन्दोडनाडुतलि पो-
म्बक्किदेरनु जीवरधिकारानुसारदलि ।
तक्कसाधन माडि माडिसु-
तक्करदि सन्तैप भकुतर
दक्कगोडनु असुरर सत्पुण्यगळनपहरिप ॥

तुन्दिविडिदाशिरद पर्य-
न्तोन्दे व्यापिसि इहुदु तावरे
कन्दनिहनदरोळगे अदकीरैदु शाखेगळु ।
ओन्दधिक दशकरणगळु स-
म्बन्धगैदिहवल्लि रवि शशि
सिन्धु नासत्यादिगळु नेलेगोण्डिहरु सतत ॥

तुन्दि-विडिदा-शिरद-पर्य-न्तोन्दे-व्यापिसि-इहुदु-तावरे-
कन्द-निहनद-रोळगे-अदकी-रैदु-शाखेग-ळु ।
ओन्द-धिकदश-करण-गळुस-म्बन्ध-गैदिह-वल्लि-रविशशि-
सिन्धु-नास-त्यादि-गळुनेले-गोण्डि-हरुसत-त ॥ १२-(३४६)

पोक्क-ळडिविडि-दोन्दे-नाडियु-सुक्क-दलेधा-राळ-रूपदि-
सिक्कि-हुदुनडु-देह-दोळगेसु-षुम्न-नामद-लि ।
रक्क-सरनोळ-पोगगो-डदेदश-दिक्कि-नोळगेस-मीर-देवनु-
लेक्कि-सदेम-त्तोब्ब-रनुस-श्चरिप-देहदो-ळु ॥ १३-(३४७)

पोक्कळडिविडिदोन्दे नाडियु
सुक्कदले धाराळरूपदि
सिक्किहुदु नडुदेहदोळगे सुषुम्ननामदलि ।
रक्कसरनोळपोगगोडदे दश
दिक्किनोळगे समीरदेवनु
लेक्किसदे मत्तोब्बरनु सश्चरिप देहदोळु ॥

इनितु-नाडी-शाखे-गळुई-तनुवि-नोळगिह-वेन्दु-एका-
त्मनुद्वि-सप्तति-सावि-रात्मक-नागि-नाडियो-ळु ।
वनिते-यिन्दोड-गूडि-नारा-यणदि-वारा-त्रियोळ-गीपरि-
वनज-जाण्डदो-ळखिल-जीवरो-ळिद्दु-मोदिसु-व ॥१४-(३४८)

इनितु नाडीशाखेगळु ई
तनुविनोळगिह्वेन्दु एका-
त्मनु द्विसप्ततिसाविरात्मकनागि नाडियोळु ।
वनितेयिन्दोडगूडि नारा-
यण दिवारात्रियोळगीपरि
वनजजाण्डदोळखिल जीवरोळिद्दु मोदिसुव ॥

दिनदि-नदिव-र्धिसुव-कुमुदा-प्तनम-यूखद-सोबग-गतलो-
चनव-लोकिसि-मोद-पडब-ल्लनेनि-रन्तर-दि ।
कुनर-गीसुक-थामृ-तदभो-जनद-सुखदोर-कुवुदे-लकुमी-
मनह-रनस-द्गुणव-कीर्तिप-भकुत-गल्लद-ले ॥ १५-(३४९)

दिनदिनदि वर्धिसुव कुमुदा-
प्तन मयूखद सोबग गतलो-
चनवलोकिसि मोद पडबल्लने निरन्तरदि ।
कुनरगीसुकथाऽमृतद भो-
जनद सुख दोरकुवुदे लकुमी
मनहरन सद्गुणव कीर्तिप भकुतगल्लदले ॥

ईत-नुविनोळ-गिह्वु-ओत-प्रोत-रूपदि-नाडि-गळुपुरु-
हूत-मुखर-ल्लिहरु-तम्मि-न्दधिक-रोडगू-डि ।
भीति-गोळिसुत-दान-वरस-ङ्गात-नामक-हरिय-गुणस-
म्प्रीति-यलिसदु-पास-नेयगै-युतले-मोदिप-रु ॥ १६-(३५०)

ई तनुविनोळगिहवु ओत
प्रोतरूपदि नाडिगळु पुरु-
हूतमुखरल्लिहरु तम्मिन्दधिकरोडगूडि ।
भीतिगोळिसुत दानवर स-
ङ्गातनामक हरिय गुण स-
म्प्रीतियलि सदुपासनेय गैयुतले मोदिपरु ॥

जलट-कुक्कुट-खेट-जीवर-कलेव-रगळोळ-गिद्दु-काणिसि-
कोळदे-तत्त-द्रूप-तन्ना-मदलि-करेसुत-लि ।
जलरु-हेक्षण-विविध-कर्म-ङ्गळनि-रन्तर-माडि-मडिसि-
फलग-ळुण्णदे-सश्च-रिसुवनु-नित्य-सुखपू-र्ण ॥ १७-(३५१)

जलट कुक्कुट खेट जीवर
कलेवरगळोळगिद्दु काणिसि-
कोळदे तत्तद्रूप तन्नामदलि करेसुतलि ।
जलरुहेक्षण विविध कर्म-
ङ्गळ निरन्तर माडि मडिसि
फलगळुण्णदे सश्चरिसुवनु नित्यसुखपूर्ण ॥

तिळिदु-पासने-गैयु-तीपरि-मलिन-नन्तिरु-दुर्ज-नरक-
ङ्गळिगे-गोचरि-सदेवि-पश्चित-रोडने-गर्विस-दे ।
मळेबि-सिलुहसि-तृषेज-याजय-खलर-निन्दा-निन्दे-भयगळि-
गळुक-दलेम-द्दाने-यन्ददि-चरिसु-धरेयोळ-गे ॥ १८-(३५२)

तिळिदुपासनेगैयुतीपरि
मलिननन्तिरु दुर्जनर क-
ङ्गळिगे गोचरिसदे विपश्चितरोडने गर्विसदे ।
मळे बिसिलु हसि तृषे जयाजय
खलर निन्दानिन्दे भयगळि-
गळुकदले मद्दानेयन्ददि चरिसु धरेयोळगे ॥

कान-नग्रा-मस्थ-सर्व-प्राणि-गळुप्रति-दिवस-दलिए-
नेनु-माडुव-कर्म-गळुहरि-पूजे-येन्दरि-दु ।
धेनि-सुतस-द्भक्ति-यलिपव-मान-मुखदे-वान्त-रात्मक-
श्रीनि-वासनि-गर्पि-सुतमो-दिसुत-नलियुति-रु ॥ १९-(३५३)

कानन ग्रामस्थ सर्व-
प्राणिगळु प्रतिदिवसदलि ए-
नेनु माडुव कर्मगळु हरिपूजेयेन्दरिदु ।
धेनिसुत सद्भक्तियलि पव-
मानमुख देवान्तरात्मक
श्रीनिवासनिगर्पिसुत मोदिसुत नलियुतिरु ॥

नोक-नीयनु-लोक-दोळुशुनि-सूक-रादिग-ळोळगे-नेलेसि-
द्वेक-मेवा-द्वितिय-बहुरू-पाह्व-यगळि-न्द ।
ताक-रेसुतोळ-गिद्दु-तिळिसदे-श्रीक-मलभव-मुख्य-सकलदि-
वौक-सगणा-राध्य-कैगो-ण्डनुदि-नदिपोरे-व ॥ २०-(३५४)

नोकनीयनु लोकदोळु शुनि
सूकरादिगळोळगे नेलेसि-
द्वेकमेवाद्वितिय बहु रूपाह्वयगळिन्द ।
ता करेसुतोळगिद्दु तिळिसदे
श्रीकमलभवमुख्य सकलदि-
वौकसगणाराध्य कैगोण्डनुदिनदि पोरेव ॥

इनितु-पासने-गैयु-तिहस-ज्ञनरु-संसा-रदलि-प्रतिप्रति-
दिनग-ळलिए-नेनु-माडुवु-देल्ल-हरिपू-जे
एनिसि-कोम्बुवु-सत्य-ईमा-तिनलि-संशय-पडुव-नरन-
ल्पनुसु-निश्चय-बाह्य-कर्मव-माडि-फलवे-नु ॥ २१-(३५५)

इनितुपासनेगैयुतिह स-
ज्ञनरु संसारदलि प्रतिप्रति
दिनगळलि एनेनु माडुवुदेल्ल हरिपूजे
एनिसिकोम्बुवु सत्य ई मा-
तिनलि संशयपडुव नरन-
ल्पनु सुनिश्चय बाह्यकर्मव माडि फलवेनु ॥

भोग्य-भोक्तृग-ळोळगे-हरिता-भोग्य-भोक्तनु-एनिसि-योग्या-
योग्य-रसगळ-देव-दानव-गणके-उणिसुव-नु ।
भाग्य-निधिभ-क्तरिगे-सद्वै-राग्य-भक्ति-ज्ञान-वीवअ-
योग्य-रिगेद्वे-षादि-गळत-न्नल्लि-कोडुति-प्प ॥ २२-(३५६)

भोग्य भोक्तृगळोळगे हरि ता
भोग्य भोक्तनु एनिसि योग्या-
योग्य रसगळ देव दानव गणके उणिसुवनु ।
भाग्यनिधि भक्तरिगे सद्वै-
राग्य भक्ति ज्ञानवीव अ-
योग्यरिगे द्वेषादिगळ तन्नल्लि कोडुतिप्प ॥

ईच-तुर्दश-भुवन-दोळगेच-राच-रात्मक-जीव-रल्लिवि-
रोच-नात्मज-वश्च-कनुनेले-सिद्दु-दिनदिन-दि-
याच-कनुए-न्देनिसि-कोम्बम-रीचि-दमनसु-हंस-रूपिनि-
षेच-काह्वय-नागि-जनरभि-लाषे-पूरै-प ॥ २३-(३५७)

ई चतुर्दश भुवनदोळगे च-
राचरात्मक जीवरल्लि वि-
रोचनात्मज वश्चकनु नेलेसिद्दु दिनदिनदि
याचकनु एन्देनिसिकोम्ब म-
रीचिदमन सुहंसरूपि नि-
षेचकाह्वयनागि जनरभिलाषे पूरैप ॥

अन्न-दन्ना-दन्न-मयस्वय-मन्न-ब्रह्मा-द्यखिल-चेतन-
कन्न-कल्पक-नाह-ननिरु-द्धादि-रूपद-लि ।
अन्य-रनपे-क्षिसदे-गुणका-रुण्य-सागर-सृष्टि-सुवनुहि-
रण्य-गर्भनो-ळिद्दु-पालिसु-वनुज-गत्त्रय-व ॥ २४-(३५८)

अन्नदन्नादन्नमय स्वय-
मन्न ब्रह्माद्यखिल चेतन-
कन्नकल्पकनाहननिरुद्धादि रूपदलि ।
अन्यरनपेक्षिसदे गुणका-
रुण्यसागर सृष्टिसुवनु हि-
रण्यगर्भनोळिद्दु पालिसुवनु जगत्त्रयव ॥

त्रिपद-त्रिदशा-ध्यक्ष-त्रिस्थ-त्रिपथ-गामिनि-पितत्रि-विक्रम-
कृपण-वत्सल-कुवल-यदल-श्याम-निस्सी-म ।
अपरि-मितचि-त्सुखगु-णात्मक-वपुष-वैकु-ण्ठादि-लोका-
धिपत्र-यीमय-तन्न-वरनि-ष्कपट-दिंपोरे-व ॥ २५-(३५९)

त्रिपद त्रिदशाध्यक्ष त्रिस्थ
त्रिपथगामिनिपित त्रिविक्रम
कृपणवत्सल कुवलयदलश्याम निस्सीम ।
अपरिमित चित्सुखगुणात्मक
वपुष वैकुण्ठादि लोका-
धिप त्रयीमय तन्नवर निष्कपटदिं पोरेव ॥

लवण-मिश्रित-जलवु-तोर्पुदु-लवण-दोपा-दियलि-जिह्वेगे-
विवर-गैसलु-शक्य-वागुवु-देनु-नोळपरि-गे ।
स्ववश-व्यापी-एनिसि-लकुमी-धवच-राचर-दोळगे-तुम्बिह-
नविदि-तनसा-कल्य-बल्लव-रारु-सुररोळ-गे ॥ २६-(३६०)

लवणमिश्रित जलवु तोर्पुदु
लवणदोपादियलि जिह्वेगे
विवरगैसलु शक्यवागुवुदेनु नोळपरिगे ।
स्ववशव्यापी एनिसि लकुमी
धव चराचरदोळगे तुम्बिह-
नविदितन साकल्य बल्लवरारु सुररोळगे ॥

व्याप्य-नन्ददि-सर्व-जीवरो-ळिप्प-चिन्मय-घोर-भवस-
न्तप्य-मानरु-भजिसे-भकुतिग-ळिन्द-लिहपर-दि ।
प्राप्य-नागुव-नवर-वगुणग-ळोप्पु-गोम्बनु-भक्त-वत्सल-
तप्पि-सुवबहु-जन्म-दोषग-ळवरि-गनवर-त ॥ २७-(३६१)

व्याप्यनन्ददि सर्वजीवरो-
ळिप्प चिन्मय घोरभवस-
न्तप्यमानरु भजिसे भकुतिगळिन्दलिहपरदि ।
प्राप्यनागुवनवरवगुणग-
ळोप्पुगोम्बनु भक्तवत्सल
तप्पिसुव बहुजन्मदोषगळवरिगनवरत ॥

हलवु-बगेयलि-हरिय-मनदलि-ओलिसि-निल्लिसि-एनु-माडुव-
केलस-गळुअव-नङ्घ्रि-पूजेग-ळेन्दु-नेनेवुति-रु ।
हलध-रानुज-ताने-सर्व-स्थलग-ळलिनेले-सिद्दु-निश्च-
श्चलभ-कुतिसु-ज्ञान-भाग्यव-कोट्टु-सन्तै-प ॥ २८-(३६२)

हलवु बगेयलि हरिय मनदलि
ओलिसि निल्लिसि एनु माडुव
केलसगळु अवनङ्घ्रिपूजेगळेन्दु नेनेवुतिरु ।
हलधरानुज ताने सर्व
स्थलगळलि नेलेसिद्दु निश्च-
श्चल भकुति सुज्ञान भाग्यव कोट्टु सन्तैप ॥

दोष-गन्धवि-दूर-नाना-वेष-धारक-ईज-गत्त्रय-
पोष-कपुरा-तनपु-रुषपुरु-हूत-मुखविनु-त ।
शेष-वरपरि-यङ्क-शयनवि-भीष-णप्रिय-विजय-सखस-
न्तोष-बडिसुव-सुजन-रिष्टा-र्थगळ-पूरै-सि ॥ २९-(३६३)

दोषगन्धविदूर नाना
वेषधारक ई जगत्त्रय
पोषक पुरातनपुरुष पुरुहूतमुख विनुत ।
शेषवरपरियङ्कशयन वि-
भीषणप्रिय विजयसख स-
न्तोषबडिसुव सुजनरिष्टार्थगळ पूरैसि ॥

श्रीम-हीसे-वितप-दाम्बुज-भूम-सद्भ-क्त्यैक-लभ्यपि-
ताम-हाद्यम-रासु-रार्चित-पाद-पङ्के-ज ।
वाम-वामन-राम-संसा-राम-यौषध-हेम-मकुल-
स्वामि-सन्तै-सेनलु-बन्दोद-गुवनु-करुणा-ळु ॥ ३०-(३६४)

श्रीमहीसेवितपदाम्बुज
भूम सद्भक्त्यैकलभ्य पि-
तामहाद्यमरासुरार्चितपादपङ्केज ।
वाम वामन राम संसा-
रामयौषध हे ममकुल
स्वामि सन्तैसेनलु बन्दोदगुवनु करुणाळु ॥

दनुज-दिविजरो-ळिद्दु-अवरव-रनुस-रिसिक-र्मगळ-माळ्पनु-
जनन-मरणा-द्यखिल-दोषवि-दूर-एम्मोड-ने-
जनिसु-वनुजी-विसुव-संर-क्षणेय-माडुव-नेल्ल-कालदि-
धनव-काय्दिह-सर्प-नन्तनि-मित्त-बान्धव-नु ॥ ३१-(३६५)

दनुज दिविजरोळिद्दु अवरव-
रनुसरिसि कर्मगळ माळ्पनु
जनन मरणाद्यखिलदोषविदूर एम्मोडने
जनिसुवनु जीविसुव संर-
क्षणेय माडुवनेल्लकालदि
धनव काय्दिह सर्पनन्तनिमित्त बान्धवनु ॥

बिसुरु-हास्ता-गसदि-तानुद-यिसलु-वृक्ष-ङ्गळने-ळलुपस-
रिसुव-विळेयोळु-अस्त-मिसल-ल्लल्ले-लीनिप-वु ।
श्वसन-मुख्यम-रान्त-रात्मन -वशदो-ळगेइ-प्पुदुज-गत्त्रय-
बसुरो-ळिम्बि-ट्टेल्ल-कर्मव-तोर्प-नोळ्परि-गे ॥ ३२-(३६६)

बिसुरुहास्तागसदि तानुद-
यिसलु वृक्षङ्गळ नेळलु पस-
रिसुवविळेयोळु अस्तमिसलल्लल्लेलीनिपवु ।
श्वसनमुख्यमरान्तरात्मन
वशदोळगे इप्पुदु जगत्त्रय
बसुरोळिम्बिट्टेल्ल कर्मव तोर्प नोळपरिगे ॥

त्रिभुव-नैका-राध्य-लक्ष्मी-सुभुज-युगळा-लिङ्गि-ताङ्ग-
स्वभुसु-खात्मसु-वर्ण-वर्णसु-पर्ण-वरवह-न ।
अभय-दान-न्तार्क-शशिस-न्निभनि-रञ्जन-नित्य-दलितन-
गभिन-मिसुवरि-गीव-सर्वा-र्थगळ-तडेयदे-ले ॥ ३३-(३६७)

त्रिभुवनैकाराध्य लक्ष्मी
सुभुजयुगळालिङ्गिताङ्ग
स्वभु सुखात्म सुवर्णवर्णसुपर्णवरवहन ।
अभयदानन्तार्क शशिस-
न्निभ निरञ्जन नित्यदलि तन-
गभिनमिसुवरिगीव सर्वार्थगळ तडेयदेले ॥

कविग-ळिन्दलि-तिळिदु-प्रातः-सवन-माध्य-न्दिनवु-सायम-
सवन-गळवसु-रुद्र-आदि-त्यरोळु-राजिसु-व ।
पवन-नोळुकृति-जयसु-माया-धवन-मूर्ति-त्रयव-चिन्तिसि-
दिवस-वेम्बा-हुतिग-ळिन्द-र्चिसुत-सुखिसुति-रु ॥३४-(३६८)

कविगळिन्दलि तिळिदु प्रातः
सवन माध्यन्दिनवु सायम
सवनगळ वसु रुद्र आदित्यरोळु राजिसुव ।
पवननोळु कृति जय सुमाया
धवन मूर्तित्रयव चिन्तिसि
दिवसवेम्बाहुतिगळिन्दर्चिसुत सुखिसुतिरु ॥

चतुर-विंश-त्यब्द-वसुदे-वतेग-ळोळुप्र-द्युम्न-निप्पनु-
चतुः-चत्वा-रिंश-तिगळलि-सङ्ग-रुषणा-ख्य-
हुतव-हाक्षरो-ळिहनु-माया-पतियु-हदिना-रधिक-द्वात्रिं-
शतिव-रुषगळ-लिप्प-नादि-त्यरोळु-सितका-य ॥ ३५-(३६९)

चतुरविंशत्यब्द वसुदे-
वतेगळोळु प्रद्युम्ननिप्पनु
चतुःचत्वारिंशतिगळलि सङ्गरुषणाख्य
हुतवहाक्षरोळिहनु माया
पतियु हदिनारधिकद्वात्रिं-
शति वरुषगळलिप्पनादित्यरोळु सितकाय ॥

षोडशोत्तर-शतव-रुषदलि-षोड-शोत्तर-शतसु-रूपदि-
क्रीडि-सुववसु-रुद्र-आदि-त्यरोळु-सतिसहि-त ।
व्रीड-विल्लदे-भजिप-भकुतर-पीडि-सुवदुरि-तौघ-गळदू-
रोडि-सुतबळि-यलिबि-डदेनेले-सिप्प-भयहा-रि ॥ ३६-(३७०)

षोडशोत्तरशत वरुषदलि
षोडशोत्तरशत सुरूपदि
क्रीडिसुव वसु रुद्र आदित्यरोळु सतिसहित ।
व्रीडविल्लदे भजिप भकुतर
पीडिसुव दुरितौघगळ दू-
रोडिसुत बळियलि बिडदे नेलेसिप्प भयहारि ॥

मूर-धिकवे-म्भत्स-हस्रै-नूर-यिप्प-त्तेनिप-रूपदि-
तोरु-तिप्पदि-वानि-शाधिप-रोळगे-नित्यद-लि ।
भार-तीप्रा-णरोळ-गिद्दुनि-वारि-सुतभकु-तरदु-रितही-
ङ्कार-निधन-प्रथम-रूपदि-पितृ-गळपोरे-व ॥ ३७-(३७१)

मूरधिकवेम्भत्सहस्रै-
नूरयिप्पत्तेनिप रूपदि
तोरुतिप्प दिवानिशाधिपरोळगे नित्यदलि ।
भारती प्राणरोळगिद्दु नि-
वारिसुत भकुतर दुरित ही-
ङ्कार निधन प्रथमरूपदि पितृगळ पोरेव ॥

बुद्धि-पूर्वक-उत्त-मोत्तम-शुद्ध-ऊर्णा-म्बरव-पङ्कदो-
ळद्दि-तेगेयलु-लेप-वागुवु-देप-रीक्षिस-लु ।
पद्म-नाभनु-सर्व-जीवरो-ळिद्द-रेनुगु-णत्र-यगळि-
म्बद्ध-नागुव-नेनु-नित्यसु-खात्म-चिन्मय-नु ॥ ३८-(३७२)

बुद्धिपूर्वक उत्तमोत्तम
शुद्ध ऊर्णाम्बरव पङ्कदो-
ळद्दि तेगेयलु लेपवागुवुदे परीक्षिसलु ।
पद्मनाभनु सर्वजीवरो-
ळिद्दरेनु गुणत्रयगळि-
म्बद्धनागुवनेनु नित्यसुखात्म चिन्मयनु ॥

सकल-दोषवि-दूर-शशिपा-वकस-हस्रा-नन्त-सूर्य-
प्रखर-सन्निभ-गात्र-लकुमिक-लत्र-सुरमि-त्र ।
विखन-साण्डदो-ळिप्प-ब्रह्मा-द्यखिल-चेतन-गणके-ताने-
सखने-निसिको-ण्डकुटि-लात्मक-निप्प-नवर-न्ते ॥ ३९(३७३)

सकलदोषविदूर शशि पा-
वकसहस्रानन्तसूर्य
प्रखरसन्निभगात्र लकुमिकलत्र सुरमित्र ।
विखनसाण्डदोळिप्प ब्रह्मा-
द्यखिल चेतनगणके ताने
सखनेनिसिकोण्डकुटिलात्मकनिप्पनवरन्ते ॥

देश-भेदग-ळल्लि-इप्पा-काश-दोपा-दियलि-चेतन-
राशि-योळुनेले-सिप्प-नव्यव-धान-दलिनिरु-त ।
श्रीस-हितस-र्वत्र-दिनिरव-काश-कोडुव-न्ददलि-कोडुतनि-
राशे-यलिस-र्वान्त-रात्मक-शोभि-सुवसुख-द ॥ ४०-(३७४)

देशभेदगळल्लि इप्पा-
काशदोपादियलि चेतन
राशियोळु नेलेसिप्पनव्यवधानदलि निरुत ।
श्रीसहित सर्वत्रदि निरव-
काश कोडुवन्ददलि कोडुत नि-
राशेयलि सर्वान्तरात्मक शोभिसुव सुखद ॥

श्रीवि-रिञ्चा-द्यमर-गणसं-सेवि-ताङ्घ्रिस-रोज-नीजड-
जीव-राशिग-ळोळहो-रगेनेले-सिद्दु-नित्यद-लि ।
साव-काशनु-एनिसि-तन्नक-लेव-रदलि-म्बिट्टु-सलहुव-
देव-देवकि-रमण-दानव-हरण-जितमर-ण ॥ ४१-(३७५)

श्रीविरिञ्चाद्यमरगण सं-
सेविताङ्घ्रिसरोजनी जड
जीवराशिगळोळहोरगे नेलेसिद्दु नित्यदलि ।
सावकाशनु एनिसि तन्न क-
लेवरदलिम्बिट्टु सलहुव
देवदेवकिरमण दानवहरण जितमरण ॥

मास-ओन्दके-प्रतिदि-वसदलि-श्वास-गळहवु-अष्ट-चत्वा-
रिंश-तिसह-स्राधि-कारुसु-लक्ष-सङ्ख्येय-लि ।
हंस-नामक-हरिय-षोडश-ईश-ताब्ददि-भजिसे-ओलिवद-
यास-मुद्रकु-चेल-गोलिद-न्ददलि-दिनदिन-दि ॥ ४२-(३७६)

मास ओन्दके प्रतिदिवसदलि
श्वासगळहवु अष्टचत्वा-
रिंशतिसहस्राधिकारुसुलक्ष सङ्ख्येयलि ।
हंसनामकहरिय षोडश
ई शताब्ददि भजिसे ओलिव द-
यासमुद्र कुचेलगोलिदन्ददलि दिनदिनदि ॥

स्थूल-देहदो-ळिद्दु-वरुषके-एळ-धिकवे-प्पत्तु-लक्षद-
मेले-एप्प-त्तारु-साविर-श्वास-जपगळ-नु ।
गाळि-देवनु-करुण-दलिई-रेळु-लोकदो-ळुळ्ळ-चेतन-
जाल-दोळुमा-डुवनु-त्रिजग-द्व्याप्त-परमा-प्त ॥ ४३-(३७७)

ईरि-रडुदे-हगळो-ळिद्दुस-मीर-देवनु-श्वास-जपना-
नूर-धिकवा-गिप्प-एम्भ-त्तारु-साह-स्र ।
तार-चिसुवनु-दिवस-ओन्दके-मूरु-विधजी-वरोळ-गिद्दुख-
रारि-करुणा-बलव-देन्तुटो-पवन-रायनो-ळु ॥ ४७-(३७८)

श्रीध-वजग-न्नाथ-विट्ठल-ताद-यदिवद-नदोळु-नुडिदो-
पादि-यलिना-नुडिदे-नल्लदे-केळि-बुधजन-रु ।
साधु-लिङ्ग-प्रदरु-शकरुनि-षेधि-सिदरे-नहुदु-एन्नप-
राध-वेनिद-रोळगे-पेळ्वुदु-तिळिद -कोविद-रु ॥ ४५-(३७९)

१२. नाडीप्रकरणसन्धि मुगियितु (१२-३७९)

॥ श्रीमध्वेशार्पणमस्तु ॥

स्थूलदेहदोळिद्दु वरुषके
एळधिकवेप्पत्तुलक्षद
मेलेएप्पत्तारुसाविर श्वासजपगळनु ।
गाळिदेवनु करुणदलि ई-
रेळु लोकदोळुळ्ळ चेतन
जालदोळु माडुवनु त्रिजगद्व्याप्त परमाप्त ॥

ईरेरडु देहगळोळिद्दु स-
मीरदेवनु श्वासजप ना-
नूरधिकवागिप्पएम्भत्तारुसाहस्र ।
ता रचिसुवनु दिवस ओन्दके
मूरुविध जीवरोळगिद्दु ख-
रारिकरुणाबलवदेन्तुटो पवनरायनोळु ॥

श्रीधव जगन्नाथविट्ठल
ता दयदि वदनदोळु नुडिदो-
पादियलि ना नुडिदेनल्लदे केळि बुधजनरु ।
साधुलिङ्गप्रदरुशकरु नि-
षेधिसिदरेनहुदु एन्नप-
राधवेनिदरोळगे पेळ्वुदु तिळिद कोविदरु ॥

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

मक्क-ळाडिसु-वाग-मडदियो-ळक्क-रदिनलि-वाग-हयप-
ल्लक्कि-गजमोद-लाद-वाहन-वेरि-मेरवा-ग ।
बिक्कु-वागा-कळिसु-तलिदे-वक्कि-तनयन-नेनवु-तिहनर-
सिक्क-नेमदू-तरिगे-आवा-वल्लि-नोडिद-रु ॥ १-(३८०)

सरितु-प्रवहग-ळल्लि-दिव्या-म्बरदि-पत्रा-दियलि-हरुषा-
मरुष-विस्मृति-यिन्द-लागलि-ओम्मे-बाय्देरे-दु ।
हरिह-रीहरि-येम्ब-एरड-क्षरनु-डिदमा-त्रदलि-दुरितग-
ळिरदे-पोपुवु- तूल-राशियो-ळनल-पोक्क-न्ते ॥ २-(३८१)

मलगु-वागलि-एळु-वागलि-कुळितु-माता-डुतलि-मनेयोळु-
केलस-गळमा-डुतलि-मैदोळे-वाग-मेलुवा-ग ।
कलुष-दूरन-सकल-ठाविलि-तिळिये-तत्त-न्नाम-रूपदि-
बळिय-लिप्पनु-ओन्द-रेक्षण-बिट्ट-गलनव-र ॥ ३-(३८२)

मक्कळाडिसुवाग मडदियो-
ळक्करदि नलिवाग हय प-
ल्लक्कि गजमोदलाद वाहनवेरि मेरवाग ।
बिक्कुवागाकळिसुतलि दे-
वक्कितनयन नेनवुतिह नर
सिक्कनेमदूतरिगे आवावल्लि नोडिदरु ॥

सरितु प्रवहगळल्लि दिव्या-
म्बरदि पत्रादियलि हरुषा-
मरुष विस्मृतियिन्दलागलि ओम्मे बाय्देरेदु ।
हरि हरी हरियेम्ब एरड-
क्षर नुडिद मात्रदलि दुरितग-
ळिरदे पोपुवु तूलराशियोळनल पोक्कन्ते ॥

मलगुवागलि एळुवागलि
कुळितु माताडुतलि मनेयोळु
केलसगळ माडुतलि मैदोळेवाग मेलुवाग ।
कलुषदूरन सकलठाविलि
तिळिये तत्तन्नाम रूपदि
बळियलिप्पनु ओन्दरेक्षण बिट्टगलनवर ॥

आव-कुलदव-नाद-डेनि-न्नाव-देशदो-ळिद्द-डेनि-
न्नाव-कर्मव-माड-लेनि-न्नाव-कालद-लि ।
श्रीव-रनस-र्वत्र-दलिस-म्भावि-सुतपू-जिसुत-मोदिप-
कोवि-दरिगु-ण्टेनु-भयदुः-खादि-दोषग-ळु ॥ ४-(३८३)

आव कुलदवनादडेनि-
न्नाव देशदोळिद्दडेनि-
न्नाव कर्मव माडलेनिन्नावकालदलि ।
श्रीवरन सर्वत्रदलि स-
म्भाविसुत पूजिसुत मोदिप
कोविदरिगुण्टेनु भय दुःखादि दोषगळु ॥

वासु-देवन-गुणस-मुद्रदो-ळीस-बल्लव-भवस-मुद्रा-
यास-विल्लदे-दाटु-वनुशी-घ्रदलि-जगदोळ-गे ।
बेस-रदेदु-र्विषय-गळअभि-लाषे-यलिबळ-लुवव-नाना-
क्लेश-गळननु-भविप-भक्तिसु-मार्ग-काणद-ले ॥ ५-(३८४)

वासुदेवन गुणसमुद्रदो-
ळीसबल्लव भवसमुद्रा-
यासविल्लदे दाटुवनु शीघ्रदलि जगदोळगे ।
बेसरदे दुर्विषयगळ अभि-
लाषेयलि बळलुवव नाना
क्लेशगळननुभविप भक्ति सुमार्ग काणदले ॥

स्नान-जपदे-वार्च-नेयुव्या-ख्यान-भारत-मुखम-हउपपु-
राण-कथेगळ-पेळि-केळिद-रेनु-दिनदिन-दि ।
ज्ञान-कर्मे-न्द्रियग-ळिन्दे-नेनु-माडुव-कर्म-गळुल-
क्ष्मीनि-वासन-पूजे-येन्द-र्पिसद-मानव-नु ॥ ६-(३८५)

स्नान जप देवार्चनेयु व्या-
ख्यान भारतमुख मह उप पु-
राणकथेगळ पेळि केळिदरेनु दिनदिनदि ।
ज्ञान कर्मेन्द्रियगळिन्दे-
नेनु माडुव कर्मगळु ल-
क्ष्मीनिवासन पूजेयेन्दर्पिसद मानवनु ॥

देव-गङ्गेयो-ळुळ्ळ-वगेदुरि-ताव-ळिगळु-ण्टेवि-चारिसे-
पावु-गळभय-उण्टे-विहगा-धिपन-मन्दिर-दि ।
जीव-कर्तृ-त्ववनु-मरेदुप-राव-रेशने-कर्तृ-वेन्दरि-
दाव-कर्मव-माडि-दरुले-पिसवु-कर्मग-ळु ॥ ७-(३८६)

देवगङ्गेयोळुळ्ळवगे दुरि-
तावळिगळुण्टे विचारिसे
पावुगळ भयउण्टे विहगाधिपन मन्दिरदि ।
जीवकर्तृत्ववनु मरेदु प-
रावरेशने कर्तृवेन्दरि-
दाव कर्मव माडिदरु लेपिसवु कर्मगळु ॥

एनु-माडुव-पुण्य-पापग–ळाने-माडुवे-नेम्बु-वनधम-
हीन-कर्मके-पात्र-नापु-ण्यक्के-हरिये-म्ब-
मान-वनुम-ध्यमनु-द्वन्द्वके-श्रीनि-वासने-कर्तृ-वेन्दुस-
दानु-रागदि-नेनेदु-सुखिसुव-वनेन-रोत्तम-नु ॥ ८-(३८७)

एनु माडुव पुण्यपापग–
ळाने माडुवेनेम्बुवनधम
हीनकर्मके पात्र ना पुण्यक्के हरियेम्ब
मानवनु मध्यमनु द्वन्द्वके
श्रीनिवासने कर्तृवेन्दु स-
दानुरागदि नेनेदु सुखिसुववने नरोत्तमनु ॥

ई-उ-पासने-गैव-रिळेयोळु-देव-तेगळ-ल्लदले-नरर-
ल्लाव-बगेयि-न्दाद-रिवर-र्चनवे-हरिपू-जे ।
केव-लप्रति-मेगळे-निपरुर-मावि-नोदिगे-इवर-नुग्रह-
वेव-रानु-ग्रहवे-निसुवुदु-मुकुति-योग्यरि-गे ॥ ९-(३८८)

ईउपासनेगैवरिळेयोळु
देवतेगळल्लदले नरर-
ल्लाव बगेयिन्दादरिवरर्चनवे हरिपूजे ।
केवल प्रतिमेगळेनिपरु र-
माविनोदिगे इवरनुग्रह-
वे वरानुग्रहवेनिसुवुदु मुकुतियोग्यरिगे ॥

तनुवे-नाने-म्बुवनु-सतिसुत-मनेध-नादिग-ळेन्न-देम्बुव-
द्युनदि-मोदला-दुदक-गळेस-त्तीर्थ-वेम्बुव-नु ।
अनल-लोहा-दिप्र-तीका-र्चनवे-देवर-पूजे-सुजनर-
मनुज-रहुदे-म्बुवनु-गोखर-नेनिप-बुधरि-न्द ॥ १०-(३८९)

तनुवे नानेम्बुवनु सति सुत
मने धनादिगळेन्नदेम्बुव
द्युनदिमोदलादुदकगळे सत्तीर्थवेम्बुवनु ।
अनल लोहादि प्रतीका-
र्चनवे देवरपूजे सुजनर
मनुजरहुदेम्बुवनु गोखरनेनिप बुधरिन्द ॥

अनल-सोमा-र्केन्दु-तारा-वनिसु-रापग-मुख्य-तीर्थग-
ळनिल-गगनम-नादि-इन्द्रिय-गळिगे-अभिमा-नि-
एनिप-सुररुवि-पश्चि-तरस-न्मनदि-भजिसद-लिप्प-वरपा-
वनव-माडरु-तम्म-पूजेय-माडि-दरुसरि-ये ॥ ११-(३९०)

अनल सोमार्केन्दु तारा-
वनि सुरापगमुख्य तीर्थग-
ळनिल गगन मनादि इन्द्रियगळिगे अभिमानि
एनिप सुररु विपश्चितर स-
न्मनदि भजिसदलिप्पवर पा-
वनवमाडरु तम्मपूजेय माडिदरु सरिये ॥

केण्ड-काणदे-मुट्टि-दरुसरि-कण्डु-मुट्टलु-दहिस-दिप्पुदे-
पुण्ड-रीकद-लाय-ताक्षन-विमल-पदप-द्म-
बण्डु-णिगळे-न्देनिप-भकुतर-हिण्डु-नोडिद-मात्र-दलितनु-
दिण्डु-गेडहिद-नरन-पावन-माळ्पु-दाक्षण-दि ॥ १२-(३९१)

केण्ड काणदे मुट्टिदरु सरि
कण्डु मुट्टलु दहिसदिप्पुदे
पुण्डरीकदलायताक्षन विमलपदपद्म
बण्डुणिगळेन्देनिप भकुतर
हिण्डु नोडिद मात्रदलि तनु-
दिण्डुगेडहिद नरन पावनमाळ्पुदाक्षणदि ॥

ईनि-मत्तपु-नःपु-नःसु-ज्ञानि-गळसह-वास-माडुकु-
मान-वरकू-डाड-दिरुलौ-किकके-मरुळा-गि ।
वैन-तेयां-सगन-सर्व-स्थान-दलित-न्नाम-रूपव-
धेनि-सुतस-श्वरिसु-इतरा-लोच-नेयबि-ट्ट ॥ १३-(३९२)

ई निमत्त पुनःपुनः सु-
ज्ञानिगळ सहवास माडु कु-
मानवर कूडाडदिरु लौकिकके मरुळागि ।
वैनतेयांसगन सर्व
स्थानदलि तन्नाम रूपव
धेनिसुत सश्वरिसु इतरालोचनेय बिट्टु ॥ १३

ईन-लिनजा-ण्डदोळु-सर्व-प्राणि-गळोळि-द्दनव-रतवि-
ज्ञान-मयव्या-पार-गळमा-डुवनु-तिळिसद-ले ।
एनु-काणदे-सकल-कर्मग-ळाने-माडुवे-नेम्ब-नरनुकु-
योनि-ऐदुव-कर्तृ-हरिए-न्दवने-मुक्तन-ह ॥ १४-(३९३)

ई नलिनजाण्डदोळु सर्व
प्राणिगळोळिद्दनवरत वि-
ज्ञानमय व्यापारगळ माडुवनु तिळिसदले ।
एनु काणदे सकलकर्मग-
ळानेमाडुवेनेम्ब नरनु कु-
योनि ऐदुव कर्तृहरि एन्दवने मुक्तनह ॥

कलिम-लापह-ळेनिसु-तिहबा-म्बोळेयो-ळगेस-श्वरिसि-बदुकुव-
जलच-रप्रा-णिगळु-बल्लवे-तीर्थ-महिमेय-नु ।
हलवु-बगेयलि-हरिय-करुणा-बलदि-बल्लिद-राद-ब्रह्मा-
निलवि-पेशा-द्यमर-ररियर-नन्त-नमलगु-ण ॥ १५-(३९४)

कलिमलापहळेनिसुतिह बा-
म्बोळेयोळगे सश्वरिसि बदुकुव
जलचरप्राणिगळु बल्लवे तीर्थमहिमेयनु ।
हलवु बगेयलि हरिय करुणा-
बलदि बल्लिदराद ब्रह्मा-
निल विपेशाद्यमररियरनन्तनमल गुण ॥

श्रील-कुमिव-ल्लभनु-हृत्की-लाल-जदोळि-द्दखिल-चेतन-
जाल-वनुमो-हिसुव-त्रिगुणदि-बद्ध-रनुमा-डि ।
स्थूल-कर्मदि-रतर-माडिस्व-लीले-गळतिळि-सदले-भवदिकु-
लाल-चक्रद-तेरदि-तिरुगिसु-तिहनु-मानव-र ॥ १६-(३९५)

श्रीलकुमिवल्लभनु हृत्की-
लालजदोळिद्दखिल चेतन
जालवनु मोहिसुव त्रिगुणदि बद्धरनु माडि ।
स्थूलकर्मदि रतर माडि स्व-
लीलेगळ तिळिसदले भवदि कु-
लालचक्रद तेरदि तिरुगिसुतिहनु मानवर ॥

वेद-शास्त्रवि-चार-गैदुनि-षेध-कर्मव-तोरेदु-नित्यदि-
साधु-कर्मव-माळप-रिगेस्व-र्गादि-सुखवी-व ।
ऐदि-सुवपा-पिगळ-निरयव-खेद-मोदम-नुष्य-रिगेदु-
र्वादि-गळिग-न्धन्त-मदिमह-दुःख-गळनुणि-प ॥ १७-(३९६)

वेद शास्त्रविचारगैदु नि-
षेधकर्मव तोरेदु नित्यदि
साधुकर्मव माळपरिगे स्वर्गादि सुखवीव ।
ऐदिसुव पापिगळ निरयव
खेद मोद मनुष्यरिगे दु-
र्वादिगळिगन्धन्तमदि महद्दुःखगळनुणिप ॥

निर्गु-णोपा-सकगे-गुणसं-सर्ग-दोषग-ळीय-दलेअप-
वर्ग-दलिसुख-वित्तु-पालिसु-वनुकृ-पासा-न्द्र ।
दुर्ग-मनुए-न्देनिप-त्रैवि-ध्यर्गे-त्रिगुणा-तीत-सन्तत-
स्वर्ग-भूनर-कदलि-सञ्चा-रवने-माडिसु-व ॥ १८-(३९७)

निर्गुणोपासकगे गुणसं-
सर्गदोषगळीयदले अप-
वर्गदलि सुखवित्तु पालिसुवनु कृपासान्द्र ।
दुर्गमनु एन्देनिप त्रैवि-
ध्यर्गे त्रिगुणातीत सन्तत
स्वर्ग भू नरकदलि सञ्चारवने माडिसुव ॥

मूव-रोळगि-द्दरुस-रियेसुख-नोवु-गळुस-म्बन्ध-वागवु-
पाव-नकेपा-वनप-रात्पर-पूर्ण-सुखवन-धि ।
ईव-नरुहभ-वाण्ड-दोळुस्वक-लेव-रतदा-कार-माडिप-
राव-रेशच-राच-रात्मक-लोक-गळपोरे-व ॥ १९-(३९८)

मूवरोळगिद्दरु सरिये सुख
नोवुगळु सम्बन्धवागवु
पावनके पावन परात्पर पूर्णसुखवनधि ।
ई वनरुहभवाण्डदोळु स्व क-
लेवर तदाकार माडि प-
रावरेश चराचरात्मक लोकगळ पोरेव ॥

ईनि-मित्तनि-रन्त-रदिस्वा-धीन-कर्तृ-त्ववनु-मरेदे-
नेनु-माडुवु-देल्ल-हरिओळ-होरगे-नेलेसि-दु ।
ताने-माडुव-नेन्द-रिदुम-द्दाने-यन्ददि-सञ्च-रिसुपव-
मान-वन्दित-नोन्द-रेक्षण-बिट्ट-गलनि-न्न ॥ २०-(३९९)

ईनिमित्त निरन्तरदि स्वा-
धीनकर्तृत्ववनु मरेदे-
नेनु माडुवुदेल्ल हरि ओळहोरगे नेलेसिद्दु ।
ताने माडुवनेन्दरिदु म-
द्दानेयन्ददि सञ्चरिसु पव-
मानवन्दितनोन्दरेक्षण बिट्टगल निन्न ॥

हलवु-कर्मव-माडि-देहव-बळलि-सदेदिन-दिनदि-हृदयक-
मलस-दनदिवि-राजि-सुवहरि-मूर्ति-यनेभजि-सु ।
तिळिय-दीपू-जाप्र-करणव-फलसु-पुष्पा-ग्र्योद-कश्री-
तुलशि-दलव-र्पिसलु-ओप्पनु-वासु-देवस-द ॥ २१-(४००)

हलवु कर्मव माडि देहव
बळलिसदे दिनदिनदि हृदयक-
मलसदनदि विराजिसुव हरिमूर्तियने भजिसु ।
तिळियदी पूजाप्रकरणव
फल सुपुष्पाग्र्योदक श्री
तुलशिदलवर्पिसलु ओप्पनु वासुदेव सद ॥

धरणि-नारा-यणनु-उदकदि-तुरिय-नामक-अग्नि-योळुस-
ङ्करुष-णाह्वय-वायु-गप्र-द्युम्न-अनिरु-द्ध-
निरुति-हनुआ-काश-दोळुमू-रेरडु-रूपव-धरिसि-भूतग-
करेसु-वनुत-न्नाम-रूपदि-प्रजर-सन्तै-प ॥ २२-(४०१)

धरणि नारायणनु उदकदि
तुरियनामक अग्नियोळु स-
ङ्करुषणाह्वय वायुग प्रद्युम्न अनिरुद्ध-
निरुतिहनु आकाशदोळु मू-
रेरडु रूपव धरिसि भूतग
करेसुवनु तन्नामरूपदि प्रजर सन्तैप ॥

घनग-तनुता-नागि-नारा-यणनु-तन्ना-मदलि-करेसुव-
वनद-गर्भो-दकदि-नेलेसिह-वासु-देवा-ख्य ।
ध्वनिसि-डिलुस-ङ्करुष-णनुमि-श्निनोळु-श्रीप्र-द्युम्न-वृष्टिय-
हनिग-ळोळगनि-रुद्ध-निप्पनु-वर्ष-नेन्देनि-सि ॥ २३-(४०२)

घनगतनु तानागि नारा-
यणनु तन्नामदलि करेसुव
वनद गर्भोदकदि नेलेसिह वासुदेवाख्य ।
ध्वनि सिडिलु सङ्करुषणनु मि-
श्निनोळु श्रीप्रद्युम्न वृष्टिय
हनिगळोळगनिरुद्धनिप्पनु वर्षनेन्देनिसि ॥

गृहकु-टुम्बध-नादि-गळस-न्नहग-ळुळ्ळव-रागि-विहिता-
विहित-धर्मसु-कर्म-गळतिळि-यदले-नित्यद-लि ।
अहर-मैथुन-निद्रे-गोळगा-गिहरु-सर्व-प्राणि-गळुह्-
द्रुहनि-वासिय-नरिय-दलेभव-दोळगे-बळलुव-रु ॥२४-(४०३)

गृह कुटुम्ब धनादिगळ स-
न्नहगळुळळवरागि विहिता-
विहितधर्म सुकर्मगळ तिळियदले नित्यदलि ।
अहर मैथुन निद्रेगोळगा-
गिहरु सर्वप्राणिगळु ह्-
द्रुह निवासियनरियदले भवदोळगे बळलुवरु ॥

जडज-सम्भव-खगफ-णिपके-ञ्जडेय-रिन्दोड-गूडि-राजिसु-
तडवि-योळगि-प्पनुस-दागो-जाद्रि-जनुएनि-सि ।
उडुप-निन्दभि-वृद्धि-गळता-कोडुत-पक्षिमृ-गाहि-गळका-
रोडल-कावनु-तत्त-दाह्वय-नागि-जीवर-नु ॥ २५-(४०४)

जडजसम्भव खग फणिप के-
ञ्जडेयरिन्दोडगूडि राजिसु-
तडवियोळगिप्पनु सदा गोजाद्रिजनु एनिसि ।
उडुपनिन्दभिवृद्धिगळ ता
कोडुत पक्षि मृगाहिगळ का-
रोडल कावनु तत्तदाह्वयनागि जीवरनु ॥

अपरि-मितस-न्महिम-नरहरि-विपिन-दोळुस-न्तैसु-वनुका-
श्यपिय-नळेदव-स्थलग-ळलिस-र्वत्र-केशव-नु ।
खपति-गगनदि-जलग-ळलिमह-शफर-नामक-भक्त-रनुनि-
ष्कपट-दिन्दलि-सलहु-वनुकरु-णाळु-दिनदिन-दि ॥२६(४०५)

अपरिमित सन्महिम नरहरि
विपिनदोळु सन्तैसुवनु का-
श्यपियनळेदव स्थलगळलि सर्वत्र केशवनु ।
खपति गगनदि जलगळलि मह
शफरनामक भक्तरनु नि-
ष्कपटदिन्दलि सलहुवनु करुणाळु दिनदिनदि ॥

कार-णन्त-र्यामि-स्थूलव-तार-व्याप्तं-शादि-रूपके-
सार-शुभप्र-विविक्त-नन्द-स्थूल-निस्सा-र ।
आरु-रसगळ-नर्पि-सल्परि-गीर-हस्यव-पेळ-देसदा-
पार-महिमन-रूप-गुणगळ-नेनेदु-सुखिसुति-रु ॥ २७-(४०६)

कारणन्तर्यामि स्थूलव-
तार व्याप्तंशादि रूपके
सार शुभ प्रविविक्तनन्द स्थूल निस्सार ।
आरु रसगळनर्पिसल्परि-
गीरहस्यव पेळदे सदा-
पारमहिमन रूप गुणगळ नेनेदु सुखिसुतिरु ॥

जलग-तोडुप-नमल-बिम्बव-मेलुवे-वेम्बति-हरुष-दिन्दलि-
जलच-रप्रा-णिगळु-नित्यदि-यत्न-गैव-न्ते ।
हलध-रानुज-भोग्य-रसगळ-नेलेय-नरियदे-पूजि-सुतह-
म्बलिसु-वरुपुरु-षार्थ-गळस-त्कुलज-रावे-न्दु ॥ २८-(४०७)

जलगतोडुपनमल बिम्बव
मेलुवेवेम्बति हरुषदिन्दलि
जलचर प्राणिगळु नित्यदि यत्नगैवन्ते ।
हलधरानुजभोग्यरसगळ
नेलेयनरियदे पूजिसुत ह-
म्बलिसुवरु पुरुषार्थगळ सत्कुलजरावेन्दु ॥

देव-ऋषिपि-तृगळु-गायक-देव-नरनर-दनुज-गोजख-
रावि-मोदला-दखिल-चेतन-भोग्य-रसगळ-नु ।
याव-दवयव-गळोळ-गिद्दुर-माव-रनुस्वी-करिप-याव-
ज्जीव-गणकेस्व-योग्य-रसगळ-नीय-नेन्दे-न्दु ॥ २९-(४०८)

देव ऋषि पितृगळु गायक
देव नर नर दनुज गोज ख-
रावि मोदलादखिल चेतनभोग्य रसगळनु ।
यावदवयवगळोळगिद्दु र-
मावरनु स्वीकरिप याव-
ज्जीव गणके स्वयोग्य रसगळनीयनेन्देन्दु ॥

ओरटु-बुद्धिय-बिट्टु-लौकिक-हरटे-गळनी-डाडि-काञ्चन-
परट-लोष्टा-दिगळु-समवे-न्दरितु-नित्यद-लि ।
पुरट-गर्भा-ण्डोद-रनुस-त्पुरुष-नेन्देनि-स्येल्ल-रोळगि-
द्दुरुटु-कर्मव-माळप-नेन्दडि-गडिगे-नेनेयुति-रु ॥ ३०-(४०९)

ओरटु बुद्धिय बिट्टु लौकिक
हरटेगळनीडाडि काञ्चन
परट लोष्टादिगळु समवेन्दरितु नित्यदलि ।
पुरटगर्भाण्डोदरनु स-
त्पुरुषनेन्देनिस्येल्लरोळगि-
द्दुरुटु कर्मव माळपनेन्दडिगडिगे नेनेयुतिरु ॥

भूत-लदिजन-रुगळु-मर्मक-मातु-गळना-डिदरे-सहिसदे-
घाति-सुवरति-कोप-दिन्दलि-एच्च-रिपतेर-दि ।
मातु-लान्तक-जार-हेनव-नीत-चोरने-एनलु-तन्ननि-
केत-नदोळि-ट्टवर-सन्तै-सुवनु-करुणा-ळु ॥ ३१-(४१०)

भूतलदि जनरुगळु मर्मक
मातुगळनाडिदरे सहिसदे
घातिसुवरतिकोपदिन्दलि एच्चरिप तेरदि ।
मातुलान्तक जार हे नव-
नीत चोरने एनलु तन्न नि-
केतनदोळिट्टवर सन्तैसुवनु करुणाळु ॥

हरिक-थामृत-सार-विदुस-न्तरुस-दाचि-त्तैसु-वुदुनि-
ष्टुरिग-ळिगेपिशु-नरिग-योग्यरि-गिदनु-पेळद-ले ।
निरुत-सद्भ-क्तियलि-भगव-च्चरिते-गळको-ण्डाडि-हिग्गुव-
परम-भगव-द्दास-रिगेतिळि-सुवुदु-ईरह-स्य ॥ ३२-(४११)

हरिकथाऽमृतसारविदु स-
न्तरु सदा चित्तैसुवुदु नि-
ष्टुरिगळिगे पिशुनरिगयोग्यरिगिदनु पेळदले ।
निरुत सद्भक्तियलि भगव-
च्चरितेगळ कोण्डाडि हिग्गुव
परमभगवद्दासरिगे तिळिसुवुदु ई रहस्य ॥

सत्य-सङ्क-ल्पनुस-दाए-नित्तु-देपुरु-षार्थ-वेन्दरि-
तत्य-धिकस-न्तोष-दिंनेने-वुत्त-भुञ्जिपु-दु ।
नित्य-सुखस-म्पूर्ण-परमसु-हृत्त-मजग-न्नाथ-विट्ठल-
बत्ति-सिभवा-म्बुधिय-चित्सुख-व्यक्ति-कोडुति-प्प ॥ ३३(४१२)

सत्यसङ्कल्पनु सदा ए-
नित्तुदे पुरुषार्थवेन्दरि-
तत्यधिक सन्तोषदिं नेनेवुत्त भुञ्जिपुदु ।
नित्य सुखसम्पूर्ण परमसु-
हृत्तम जगन्नाथविट्ठल
बत्तिसि भवाम्बुधिय चित्सुखव्यक्ति कोडुतिप्प॥

॥ १३. नामस्मरणसन्धि मुगियितु ॥ (१३-४१२)

॥ श्रीमध्वेशार्पणमस्तु ॥

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

कृतिर-मणप्र-द्युम्न-वसुदे-वतेग-ळअह-ङ्कार-त्रयदोळु-
चतुर-विंशति-रूप-दिन्दलि-भोज्य-नेनिसुव-नु ।
हुतव-हाक्षा-न्तर्ग-तजया-पतियु-ताने-मूर-धिकत्रिं-
शतिसु-रूपदि-भोक्तृ-एनिसुव-भोक्तृ-गळोळि-द्दु ॥ १-(४१३)

कृतिरमण प्रद्युम्न वसुदे-
वतेगळ अहङ्कार त्रयदोळु
चतुरविंशति रूपदिन्दलि भोज्यनेनिसुवनु ।
हुतवहाक्षान्तर्गत जया-
पतियु ताने मूरधिक त्रिं-
शति सुरूपदि भोक्तृ एनिसुव भोक्तृगळोळिद्दु ॥

आर-धिकमू-वत्तु-रूपदि-वारि-जासनो-ळिरुति-हनुमा-
यार-मणश्री-वासु-देवनु-काल-नामद-लि ।
मूरु-विधपितृ-गळोळु-वसुत्रिपु-रारि-आदि-त्यगनि-रुद्धनु-
तोरि-कोळळदे-कर्तृ-कर्म-क्रियवे-निसिको-म्ब ॥ २-(४१४)

आरधिक मूवत्तु रूपदि
वारिजासनोळिरुतिहनु मा-
यारमण श्रीवासुदेवनु कालनामदलि ।
मूरुविध पितृगळोळु वसु त्रिपु-
रारि आदित्यगनिरुद्धनु
तोरिकोळळदे कर्तृ कर्म क्रियवेनिसिकोम्ब ॥

स्ववश-नारा-यणनु-ताष-ण्णवति-नामदि-करेसु-तलिवसु-
शिवदि-वाकर-कर्तृ-कर्म-क्रियेग-ळोळगि-द्दु ।
नेवन-विल्लदे-नित्य-दलित-न्नवरु-माडुव-सेवे-कैगो-
ण्डवर-पितृगळि-गीव-नन्ता-नन्त-सुखगळ-नु ॥ ३-(४१५)

स्ववश नारायणनु ता ष-
ण्णवतिनामदि करेसुतलि वसु
शिव दिवाकर कर्तृ कर्म क्रियेगळोळगिद्दु ।
नेवनविल्लदे नित्यदलि त-
न्नवरु माडुव सेवेकैगो-
ण्डवर पितृगळिगीवनन्तानन्त सुखगळनु ॥

तन्तु-पटद-न्ददलि-लकुमी-कान्त-पञ्चा-त्मकने-निसिवसु-
कन्तु-हररवि-कर्तृ-गळोळि-द्दनव-रतत-न्न-
चिन्ति-सुवस-न्तरनु-गुरुम-ध्वन्त-रात्मक-सन्त-यिसुवनु-
सन्त-तखिला-र्थगळ-पालिसि-इहप-रङ्गळ-लि ॥ ४-(४१६)

तन्तुपटदन्ददलि लकुमी-
कान्त पञ्चात्मकनेनिसि वसु-
कन्तुहर रवि कर्तृगळोळिद्दनवरत तन्न
चिन्तिसुव सन्तरनु गुरु म-
ध्वन्तरात्मक सन्तयिसुवनु
सन्ततखिलार्थगळ पालिसि इह परङ्गळलि ॥

तन्दे-ताग्गळ-प्रीति-गोसुग-निन्द्य-कर्मव-तोरेदु-विहितग-
ळोन्दु-मीरदे-साङ्ग-कर्मग-ळाच-रिसुवव-रु ।
वन्द-नियरा-गिइळे-योळुदै-नन्दि-नदिदै-शिकद-हिकसुख-
दिन्द-बाळवरु-बहुदि-वसदलि-कीर्ति-युतरा-गि ॥ ५-(४१७)

तन्दे ताग्गळ प्रीतिगोसुग
निन्द्यकर्मव तोरेद् विहितग-
ळोन्दु मीरदे साङ्ग कर्मगळाचरिसुववरु ।
वन्दनियरागि इळेयोळु दै-
नन्दिनदि दैशिक दहिक सुख-
दिन्द बाळवरु बहुदिवसदलि कीर्तियुतरागि ॥

अंशि-अंश-न्तर्ग-तत्रय-हंस-वाहन-मुख्य-दिविजर-
संश-रेन्तिळि-दन्त-रात्मक-श्रीज-नार्दन-न ।
संस्म-रणेपू-र्वकदि-षडधिक-त्रिंश-तित्रय-रूप-वरितुवि-
पंस-गनपू-जिसुव-रवरेकृ-तार्थ-रेनिसुव-रु ॥ ६-(४१८)

अंशि अंशन्तर्गत त्रय
हंसवाहन मुख्य दिविजर
संशरेन्तिळिदन्तरात्मक श्रीजनार्दनन ।
संस्मरणे पूर्वकदि षडधिक
त्रिंशतित्रय रूपवरितु वि-
पंसगन पूजिसुवरवरे कृतार्थरेनिसुवरु ॥

मूरे-रडुवरे-सविर-दैव-त्मूरु-रूपद-लिहज-नार्दन-
सूरि-गळुमा-डुवस-मारा-धनेगे-विघ्नग-ळु ।
बार-दन्तेब-हुप्र-कारख-रारि-कापा-डुवनु-सर्वश-
रीर-गळोळि-द्दवर-वरपेस-रिन्द-करेसुत-लि ॥ ७-(४१९)

मूरेरडुवरेसविरदैव-
त्मूरु रूपदलिह जनार्दन
सूरिगळु माडुव समाराधनेगे विघ्नगळु ।
बारदन्ते बहुप्रकार ख-
रारि कापाडुवनु सर्वश-
रीरगळोळिद्दवरवर पेसरिन्द करेसुतलि ॥

जयज-यजया-कान्त-दत्ता-त्रेयक-पिलमहि-दास-भक्त-
प्रियपु-रातन-पुरुष-पूर्णा-नन्द-ज्ञानघ-न ।
हयव-दनहरि-हंस-लोक-त्रयवि-लक्षण-निखिल-जगदा-
श्रयनि-रामय-दयदि-सन्तै-सेन्दु-प्रार्थिपु-दु ॥ ८-(४२०)

जय जय जयाकान्त दत्ता-
त्रेय कपिल महिदास भक्त-
प्रिय पुरातनपुरुष पूर्णानन्द ज्ञानघन ।
हयवदन हरि हंस लोक-
त्रयविलक्षण निखिल जगदा-
श्रय निरामय दयदि सन्तैसेन्दु प्रार्थिपुदु ॥

षण्ण-वतिए-म्बक्ष-रेङ्यनु-षण्ण-वतिना-मदलि-करेसुत-
तन्न-वरुस-द्भक्ति-पूर्वक-दिन्द-माडुति-ह ।
पुण्य-कर्मव-स्वीक-रिसिका-रुण्य-सागर-सलहु-वनुब्र-
ह्मण्य-देवभ-वाब्धि-पोतब-हुप्र-कारद-लि ॥ ९-(४२१)

षण्णवति एम्बक्षरेङ्चनु
षण्णवति नामदलि करेसुत
तन्नवरु सद्भक्तिपूर्वकदिन्द माडुतिह ।
पुण्यकर्मव स्वीकरिसि का-
रुण्यसागर सलहुवनु ब्र-
ह्मण्यदेव भवाब्धिपोत बहुप्रकारदलि ॥

देहग-ळकोडुव-वनुअ-वरवर-अहर-वनुकोड-दिहने-सुमनस-
महित-मङ्गल-चरित-सद्गुण-भरित-अनवर-त ।
अहिक-पार-त्रिकसु-खप्रद-वहिसि-बेन्नलि-बेट्ट-वमृत-
द्रुहिण-मोदला-दवरि-गुणिसिद-मुरिद-नहितर-नु ॥१०-(४२२)

देहगळ कोडुववनु अवरवर
अहरवनु कोडदिहने सुमनस
महित मङ्गलचरित सद्गुणभरित अनवरत ।
अहिक पारत्रिक सुखप्रद
वहिसि बेन्नलि बेट्टवमृत
द्रुहिण मोदलादवरिगुणिसिद मुरिदनहितरनु ॥

द्रुहिण-मोदला-दमर-रिगेस-न्महित-माया-रमण-ताने-
स्वहने-निसिस-न्तृप्ति-बडिसुव-सर्व-कालद-लि ।
प्रहित-सद्गुरु-षणपि-तरुगळि-गहर-नेनिपस्व-धारव्य-रूपदि-
महिज-फलतृण-पेसरि-नलिप्र-द्युम्न-ननिरु-द्ध - ११-(४२३)

द्रुहिण मोदलादमररिगे स-
न्महित मायारमण ताने
स्वहनेनिसि सन्तृप्तिबडिसुव सर्वकालदलि ।
प्रहित सद्गुरुषण पितरुगळि-
गहरनेनिप स्वधारव्य रूपदि
महिज फल तृणपेसरिनलि प्रद्युम्ननिरुद्ध

अन्न-नेनिसुव-नृपशु-गळिगेहि-रण्य-गर्भा-ण्डदोळु-सन्तत-
तन्न-नीपरि-यिन्दु-पासने-गैव-भकुतर-न ।
बन्न-बडिसदे-भवस-मुद्रम-होन्न-तियदा-टिसिच-तुरविध-
अन्न-मयना-त्मप्र-दर्शन-सुखव-नीवह-रि ॥ १२-(४२४)

अन्ननेनिसुव नृ पशुगळिगे हि-
रण्यगर्भाण्डदोळु सन्तत
तन्ननीपरियिन्दुपासनेगैव भकुतरन ।
बन्नबडिसदे भवसमुद्र म-
होन्नतिय दाटिसि चतुरविध
अन्नमयनात्मप्रदर्शन सुखवनीव हरि ॥

मनव-चनका-यगळ-देशेयि-न्दनुदि-नदिबिड-दाच-रिसुति-
प्पनुचि-तोचित-कर्म-गळस-द्भक्ति-पूर्वक-दि ।
अनिल-देवनो-ळिप्प-नारा-यणगि-दन्नवु-एन्दु-कृष्णा-
र्पणवे-नुतकोडे-स्वीक-रिसिस-न्तैप-करुणा-ळु ॥ १३-(४२५)

मन वचन कायगळ देशेयि-
न्दनुदिनदि बिडदाचरिसुति-
प्पनुचितोचितकर्मगळ सद्भक्तिपूर्वकदि ।
अनिलदेवनोळिप्प नारा-
यणगिदन्नवु एन्दु कृष्णा-
र्पणवेनुत कोडे स्वीकरिसि सन्तैप करुणाळु ॥

एळु-विधद-न्नप्र-करणव-केळि-कोविद-रास्य-दिन्दलि-
आल-सवमा-डदले-अनिरु-द्धादि-रूपग-ळ ।
काल-कालदि-नेनेदु-पूजिसु-स्थूल-मतिगळि-गिदनु-पेळदे-
श्रील-कुमिव-ल्लभने-अन्ना-दन्न-अन्नद-नु- १४-(४२६)

एळु विधदन्नप्रकरणव
केळि कोविदरास्यदिन्दलि
आलसव माडदले अनिरुद्धादि रूपगळ ।
कालकालदि नेनेदु पूजिसु
स्थूलमतिगळिगिदनु पेळदे
श्रीलकुमिवल्लभने अन्नादन्न अन्नदनु

एन्द-रितुस-न्नान्न-गळदै-नन्दि-नदिमरे-यदेस-दागो-
विन्द-गर्पिसु-निर्भ-यदिमह-यज्ञ-विदुये-न्दु ।
इन्दि-रेशनु-स्वीक-रिसिदय-दिन्द-बेडिसि-कोळदे-तवकदि-
तन्दु-कोडुवनु-परम-मङ्गल-तन्न-दासरिगे- १५-(४२७)

एन्दरितु सन्नान्नगळ दै-
नन्दिनदि मरेयदे सदा गो-
विन्दगर्पिसु निर्भयदि महयज्ञविदुयेन्दु ।
इन्दिरेशनु स्वीकरिसि दय-
दिन्द बेडिसिकोळदे तवकदि
तन्दुकोडुवनु परममङ्गल तन्न दासरिगे

सूजि-करदलि-पिडिदु-समरव-नाज-यिसुवेनु-एम्ब-नरन-
न्तीज-गत्तिनो-ळुळ्ळ-अज्ञा-निगळु-नित्यद-लि ।
श्रीज-गत्पति-चरण-युगळस-रोज-भक्ति-ज्ञान-पूर्वक-
पूजि-सदेध-र्मार्थ-कामव-बयसि-बळलुव-रु ॥ १६-(४२८)

सूजि करदलि पिडिदु समरव
ना जयिसुवेनु एम्ब नरन-
न्ती जगत्तिनोळुळ्ळ अज्ञानिगळु नित्यदलि ।
श्रीजगत्पतिचरणयुगळ स-
रोज भक्ति ज्ञानपूर्वक
पूजिसदे धर्मार्थ कामव बयसि बळलुवरु ॥

शकट-भञ्जन-सकल-जीवर-निकट-गनुता-नागि-लोकके-
प्रकट-नागदे-सकल-कर्मव-माडि-माडिसु-त ।
अकुटि-लात्मक-भकुत-जनरिगे-सुखद-नेनिसुव-सर्व-कालदि-
अकट-कटई-तनम-हामहि-मेगळि-गेने-म्बे ॥ १७-(४२९)

शकटभञ्जन सकलजीवर
निकटगनु तानागि लोकके
प्रकटनागदे सकलकर्मव माडि माडिसुत ।
अकुटिलात्मक भकुतजनरिगे
सुखदनेनिसुव सर्वकालदि
अकटकट ईतन महा महिमेगळिगेनेम्बे ॥

श्रील-कुमिव-ल्लभनु-वैकु-ण्ठाल-यदिप्रण-वप्र-कृतिकी-
लाल-जासन-मुख्य-चेतन-रोळगे-नेलेसि-द्दु ।
मूल-कारण-अंशि-नामदि-लीले-गैसुत-तोरि-कोळ्ळदे-
पालि-नोळुघृत-विद्द-तेरद-न्तिप्प-त्रिस्थल-दि ॥ १८-(४३०)

श्रीलकुमिवल्लभनु वैकु-
ण्ठालयदि प्रणव प्रकृति की-
लालजासनमुख्य चेतनरोळगे नेलेसिद्दु ।
मूल कारण अंशिनामदि
लीलेगैसुत तोरिकोळ्ळदे
पालिनोळु घृतविद्दतेरदन्तिप्प त्रिस्थलदि ॥

मूरु-युगदलि-मूल-रूपनु-सूरि-गळस-न्तैसि-दितिजकु-
मार-रनुसं-हरिसि-धर्मव-नुळुह-बेके-न्दु ।
कारु-णिकभू-मियोळु-निजपरि-वार-सहितव-तरिसि-बहुविध-
तोरि-दनुनर-वत्प्र-वृत्तिय-सकल-चेतन-के ॥ १९-(४३१)

मूरुयुगदलि मूलरूपनु
सूरिगळ सन्तैसि दितिज कु-
मारनु संहरिसि धर्मवनुळुहबेकेन्दु ।
कारुणिक भूमियोळु निजपरि
वारसहितवतरिसि बहुविध
तोरिदनु नरवत्प्रवृत्तिय सकल चेतनके ॥

कार-णाह्वय-प्रकृति-योळगि-द्दार-धिकहदि-नेण्टु-तत्त्वव-
तार-चिसित-द्रूप-तन्ना-मङ्ग-ळनेधरि-सि ।
नीर-जभवा-ण्डवनु-निर्मिसि-कारु-णिकका-र्याख्य-रूपदि-
तोरु-वनुसह-जाहि-ताचल-गळलि-प्रतिदिन-दि ॥ २०-(४३२)

कारणाह्वय प्रकृतियोळगि-
द्दारधिक हदिनेण्टु तत्त्वव
ता रचिसि तद्रूप तन्नामङ्गळने धरिसि ।
नीरजभवाण्डवनु निर्मिसि
कारुणिक कार्याख्य रूपदि
तोरुवनु सहजाहिताचलगळलि प्रतिदिनदि ॥

जीव-रन्त-र्यामि-अंशिक-लेव-रगळोळ-गिन्द्रि-यगळलि-
तावि-हारव-गैवु-तनुदिन-अंश-नामद-लि ।
ईवि-षयगळ-नुण्डु-सुखमय-ईव-सुखसं-सार-दुःखव-
देव-मानव-दान-वरिगवि-रतसु–धामस-ख ॥ २१-(४३३)

जीवरन्तर्यामि अंशि क-
लेवरगळोळगिन्द्रियगळलि
ता विहारवगैवुतनुदिन अंशनामदलि ।
ई विषयगळनुण्डु सुखमय
ईव सुख संसार दुःखव
देव मानव दानवरिगविरत सुधामसख ॥

देश-देशव-सुत्ति-देहा-यास-गोळिसदे-काम्य-कर्मदु-
रासे-गोळगा-गदले-ब्रह्मा-द्यखिल-चेतन-रु ।
भूस-लिलपा-वकस-मीरा-काश-मोदला-दखिल-तत्त्वप-
रेश-गिवधि-ष्ठान-वेन्दरि-तर्चि-सनवर-त ॥ २२-(४३४)

देश देशवसुत्ति देहा-
यासगोळिसदे काम्यकर्म दु-
रासेगोळगागदले ब्रह्माद्यखिल चेतनरु ।
भू सलिल पावक समीरा-
काश मोदलादखिल तत्त्व प-
रेशगिवधिष्ठानवेन्दरितर्चिसनवरत ॥

एरडु-विधदलि-लोक-दोळुजी-वरुग-ळिप्परु-सन्त-तक्षरा-
क्षरवि-लिङ्गस-लिङ्ग-सृज्या-सृज्य-भेदद-लि ।
करेसु-वुदुजड-प्रकृति-प्रणवा-क्षरम-हद्दणु-काल-नामदि-
हरिस-हितभे-दगळ-पञ्चक-स्मरिसु-सर्व-त्र ॥ २३-(४३५)

एरडु विधदलि लोकदोळु जी-
वरुगळिप्परु सन्तत क्षरा-
क्षर विलिङ्ग सलिङ्ग सृज्यासृज्य भेददलि ।
करेसुवुदु जड प्रकृति प्रणवा-
क्षर महद्दणु कालनामदि
हरिसहित भेदगळ पञ्चक स्मरिसु सर्वत्र ॥

जीव-जीवर-भेद-जडजड-भेद-जीव-जडगळ-भेद-परमनु-
जीव-जडसुवि-लक्ष-णनुए-न्दरितु-नित्यद-लि ।
ईवि-रिञ्च्या-ण्डदलि-एल्ला-ठावि-नलितिळि-दैदु-भेदक-
लेव-रदोळरि-तच्यु-तनपद-वैदु-शीघ्रद-लि ॥ २४-(४३६)

जीव जीवर भेद जड जड
भेद जीव जडगळभेद परमनु
जीव जड सुविलक्षणनु एन्दरितु नित्यदलि ।
ई विरिञ्च्याण्डदलि एल्ला
ठाविनलि तिळिदैदु भेद क-
लेवरदोळरितच्युतन पदवैदु शीघ्रदलि ॥

आदि-यल्लिहु-दक्ष-रक्षर-द्वेध-अक्षर-दोळुर-मामधु-
सूद-नरुक्षर-गळोळु-प्रकृति-प्रणव-कालग-ळु ।
वेध-मुख्यतृ-णान्त-जीवर-भेद-गळनरि-तीर-हस्यव-
बोधि-सदेम-न्दरिगे-सर्व-त्रदलि-चिन्तिपु-दु ॥ २५-(४३७)

आदियल्लिहुदक्षरक्षर
द्वेध अक्षरदोळु रमा मधु-
सूदनरु क्षरगळोळु प्रकृति प्रणव कालगळु ।
वेधमुख्य तृणान्त जीवर
भेदगळनरिती रहस्यव
बोधिसदे मन्दरिगे सर्वत्रदलि चिन्तिपुदु ॥

दीप-दिन्दी-पगळु-पोरम-ट्टाप-णालय-गतति-मिरगळ-
ताप-रिहरिसि-तद्र-तपदा-र्थगळ-तोर्प-न्ते ।
सौप-रणिवर-वहन-ताबहु-रूप-नामदि-एल्ल-कडेयलि-
व्यापि-सिद्दु-थेष्ट-महिमेय-तोर्प-तिळिसद-ले ॥ २६-(४३८)

दीपदिन्दीपगळु पोरम-
ट्टापणालयगत तिमिरगळ
ता परिहरिसि तद्गत पदार्थगळ तोर्पन्ते ।
सौपरणिवरवहन ता बहु
रूप नामदि एल्ल कडेयलि
व्यापिसिद्दु यथेष्ट महिमेय तोर्प तिळिसदले ॥

नलिन-मित्रगे-इन्द्र-धनुप्रति-फलिसु-वन्तेज-गत्र-यवुक-
ङ्गोळिपु-दनुपा-धियलि-प्रतिबि-म्बाह्व-यदिहरि-गे ।
तिळिये-त्रिककु-द्धाम-नतिम-ङ्गलसु-रूपव-सर्व-ठाविलि-
पोळेव-हृदयके-प्रतिदि-वसप्र-ह्लाद-पोषक-नु ॥ २७-(४३९)

नलिनमित्रगे इन्द्रधनु प्रति-
फलिसुवन्ते जगत्त्रयवु क-
ङ्गोळिपुदनुपाधियलि प्रतिबिम्बाह्वयदि हरिगे ।
तिळिये त्रिककुद्धामनतिम-
ङ्गल सुरूपव सर्वठाविलि
पोळेव हृदयके प्रतिदिवस प्रह्लादपोषकनु ॥

रसवि-शेषदो-ळतिवि-मलसित-वसन-तोयिसि-अग्नि-योळगिडे-
पसरि-सुवुदुप्र-काश-नसुगु-न्ददले-सर्व-त्र ।
त्रिशिर-दूषण-वैरि-भक्तिसु-रसदि-तोय्दम-हात्म-रनुबा-
धिसवु-भवदोळ-गिद्द-रुसरिये-दुरित-राशिग-ळु ॥ २८-(४४०)

रसविशेषदोळतिविमलसित
वसन तोयिसि अग्नियोळगिडे
पसरिसुवुदु प्रकाश नसुगुन्ददले सर्वत्र ।
त्रिशिर दूषणवैरि भक्ति सु-
रसदि तोय्द महात्मरनु बा-
धिसवु भवदोळगिद्दरु सरिये दुरितराशिगळु ॥

वारि-निधियोळ-गखिल-नदिगळु-बेरे-बेरेनि-रन्त-रदलिवि-
हार-गैवुत-परम-मोदद-लिप्प-तेरन-न्ते ।
मूरु-गुणगळ-मानि-एनिसुव-श्रीर-मारू-पगळु-हरियलि-
तोरु-तिप्पुवु-सर्व-कालदि-समर-हितवेनि-सि ॥ २९-(४४१)

वारिनिधियोळगखिल नदिगळु
बेरेबेरे निरन्तरदलि वि-
हारगैवुत परम मोददलिप्प तेरनन्ते ।
मूरुगुणगळ मानि एनिसुव
श्रीरमारूपगळु हरियलि
तोरुतिप्पुवु सर्वकालदि समरहितवेनिसि ॥

कोक-नदसख-नुदय-घूकव-लोक-नकेसोग-सदिरे-भास्कर-
ताक-ळङ्कने-कृति-पजग-न्नाथ-निदरोळि-रे ।
स्वीक-रिसिसुख-बडल-रियदवि-वेकि-गळुनि-न्दिसिद-रेनहु-
दीक-वित्ववव-केळि-सुखबड-दिहरे-कोविद-रु ॥ ३०-(४४२)

कोकनद सखनुदय घूकव-
लोकनके सोगसदिरे भास्कर
ता कळङ्कने कृतिप जगन्नाथनिदरोळिरे ।
स्वीकरिसि सुखबडलरियद वि-
वेकिगळु निन्दिसिदरेनहु-
दीकवित्ववव केळि सुखबडदिहरे कोविदरु ॥

चेत-नाचे-तनग-ळलिगुरु-मात-रिश्वा-न्तर्ग-तजग-
न्नाथ-विठलनि-रन्तर-दिव्या-पिसिति-ळिसिकोळ-दे ।
कात-रवपु-ट्टिसिवि-षयदलि-यातु-धानर-मोहि-सुवनि-
र्भीत-नित्या-नन्द-मयनि-र्दोष-निरव-द्य ॥ ३१-(४४३)

चेतनाचेतनगळलि गुरु
मातरिश्वान्तर्गत जग-
न्नाथविठल निरन्तरदि व्यापिसि तिळिसिकोळदे ।
कातरव पुट्टिसि विषयदलि
यातुधानर मोहिसुव नि-
र्भीत नित्यानन्दमय निर्दोष निरवद्य ॥

१४. पितृगणसन्धि मुगियितु (१४-४४३) ॥ श्रीमध्वेशार्पणमस्तु ॥

लिङ्गशरीरद १६ कलेगळु :
श्रद्धा, पञ्चभूतगळु, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, नाम, मन्त्र, कर्म, लोक, तपस्सु, प्राण(जीव) । पद्य २६०, २७२

---

१. ५ परमसूक्ष्मक्षणगळु × ५० त्रुटि × २ लव × ८ निमेष × २ मात्र × १० गुरु × ६ प्राण × १२ पळ ×५(बाण) × ६० घळिगे = १७२,८०,००,००० परमसूक्ष्मक्षणगळु = १ दिवस

२. ईगिन कालमानद १ दिवस एन्दरे २४ घण्टे × ६० निमिष × ६० सेकण्डु = ८६,४०० सेकेण्डुगळु

३. $\frac{१७२,८०,००,०००}{८६,४००}$ = २०,००० परमसूक्ष्मकणगळु ओन्दु सेकेण्डिनल्लि इवे एन्दायितु.

पद्य-७७६

श्रीमद्धरिकथाऽमृतसार १५. श्वाससन्धि (वराळि त्रिपुटताळ)

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

भार-तीशनु-घळिगे-योळुमु-न्नूरु-अरव-त्तुसिरु-जपगळ-
तार-चिसुवनु-सर्व-जीवरो-ळिद्दु-बेसर-दे ।
कारु-णिकनव-रवर-साधन-पूर-यिसिभू-स्वर्ग-नरकव-
सेरि-सुवस-र्वज्ञ-सकले-ष्टप्र-दायक-नु ॥ १-(४४४)

भारतीशनु घळिगेयोळु मु-
न्नूरु अरवत्तुसिरु जपगळ
ता रचिसुवनु सर्वजीवरोळिद्दु बेसरदे ।
कारुणिकनवरवर साधन
पूरयिसि भू स्वर्ग नरकव
सेरिसुव सर्वज्ञ सकलेष्टप्रदायकनु ॥ १

तासि-गोम्भै-नूरु-श्वासो-च्छ्वास-गळनडे-सुतलि-चेतन-
राशि-योळुहग-लिरुळु-जागृत-नागि-नित्यद-लि ।
ईसु-मनसो-त्तंस-लेशा-यास-विल्लदे-पोषि-सुतमू-
लेश-नङ्घ्रि-रोज-मूलद-लिप्प-काणिस-दे ॥ २-(४४५)

तासिगोम्भैनूरु श्वासो-
च्छ्वासगळ नडेसुतलि चेतन
राशियोळु हगलिरुळु जागृतनागि नित्यदलि ।
ई सुमनसोत्तंस लेशा-
यासविल्लदे पोषिसुत मू-
लेशनङ्घ्रिसरोज मूलदलिप्प काणिसदे ॥ २

अरिवु-दोन्द्या-मदोळु-श्वासग-ळेरडु-साविर-देळु-नूरनु-
शरस-हस्रद-मेले-नानू-रहवु-द्वितिय-क्के ।
मरळि-याम-त्रयके-वसुसा-विरद-मेल्नू-रेणिके-यलिह-
न्नेरडु-तासिगे-हत्तु-साविर-देण्टु-नूरह-वु ॥ ३-(४४६)

अरिवुदोन्द्यामदोळु श्वासग-
ळेरडु साविरदेळु नूरनु
शर सहस्रद मेले नानूरहवु द्वितियक्के ।
मरळि यामत्रयके वसु सा-
विरद मेल्नूरेणिकेयलि ह-
न्नेरडु तासिगे हत्तुसाविरदेण्टुनूरहवु ॥ ३

ओन्दु-दिनदोळ-गनिल-निप्प-त्तोन्दु-साविर-दारु-नूरुमु-
कुन्द-नाज्ञदि-माडि-माडिसि-लोक-गळपोरे-व-
नेन्दु-पवनन-पोगळु-तिरुए-न्देन्दु-मरेयदे-ईम-हिमेस-
ङ्कन्द-नाद्यरि-गुण्टे-नोडलु-सर्व-कालद-लि ॥ ४-(४४७)

ओन्दु दिनदोळगनिलनिप्प-
त्तोन्दु साविरदारुनूरु मु-
कुन्दनाज्ञदि माडि माडिसि लोकगळ पोरेव-
नेन्दु पवनन पोगळुतिरु ए-
न्देन्दु मरेयदे ई महिमे स-
ङ्कन्दनाद्यरिगुण्टे नोडलु सर्वकालदलि ॥ ४

मूरु-लक्षद-मेले-विंशति-ईरे-रडुसा-विरवु-पक्षके-
आरु-लक्षद-मेले-नाल्व-त्तेण्टु-साविर-वु ।
मारु-तनुमा-सकेज-पिसिसं-सार-सागर-दिन्द-सुजनर-
पारु-गाणिसि-सलहु-वनुबहु-भोग-गळनि-त्तु ॥ ५-(४४८)

मूरुलक्षद मेले विंशति
ईररडुसाविरवु पक्षके
आरुलक्षद मेले नाल्वत्तेण्टुसाविरवु ।
मारुतनु मासके जपिसि सं-
सारसागरदिन्द सुजनर
पारुगाणिसि सलहुवनु बहुभोगगळनित्तु ॥ ५

एरडु-तिङ्गळि-गहवु-ऋतुभू-सुररु-तिळिवरु-श्वास-जपह-
न्नेरडु-लक्षद-मेले-तोम्भ-त्तारु-साह-स्र ।
करेसु-वदुअय-नाह्व-यदोळरे-वरुष-मूव-त्तेण्टु-लक्षो-
परिति-ळिवरे-म्भत्त-एण्टुस-हस्र-कोविद-रु ॥ ६-(४४९)

एरडु तिङ्गळिगहवु ऋतु भू-
सुररु तिळिवरु श्वासजप ह-
न्नेरडुलक्षद मेले तोम्भत्तारुसाहस्र ।
करेसुवदु अयनाह्वयदोळरे-
वरुष मूवत्तेण्टु लक्षो-
परि तिळिवरेम्भत्तएण्टुसहस्र कोविदरु ॥ ६

वरुष-किदरि-म्मडिज-पङ्गळ-गुरुव-रियता-माडि-माडिसि-
दुरित-गळपरि-हरिसु-वनुचि-न्तिसुव-सज्जन-र ।
सुरवि-रोधिग-ळोळगे-नेलेसि-द्दरवि-दूरत-मोधि-कारिग-
ळिरव-रितुसो-हम्मु-पासने-माळप-नवर-न्ते ॥ ७-(४५०)

वरुषकिदरिम्मडि जपङ्गळ
गुरुवरिय ता माडि माडिसि
दुरितगळ परिहरिसुवनु चिन्तिसुव सज्जनर ।
सुरविरोधिगळोळगे नेलेसि-
द्दरविदूर तमोधिकारिग-
ळिरवरितु सोहम्मुपासने माळपनवरन्ते ॥ ७

इनितु-पासने-सर्व-जीवरो-ळनिल-देवनु-माडु-तिरेचि-
न्तनेय-माडदे-कण्ड-नीरोळु-मुळुगि-नित्यद-लि ।
मनेयो-ळगेकृ-ष्णाजि-नाद्या-सनदि-कुळितुवि-शिष्ट-बहुस-
ज्ञनने-निसिजप-मणिग-ळेणिसिद-रेनु-बेसर-दे ॥ ८-(४५१)

इनितुपासने सर्वजीवरो-
ळनिलदेवनु माडुतिरे चि-
न्तनेय माडदे कण्डनीरोळु मुळुगि नित्यदलि ।
मनेयोळगे कृष्णाजिनाद्या-
सनदि कुळितु विशिष्ट बहुस-
ज्ञननेनिसि जपमणिगळेणिसिदरेनु बेसरदे ॥ ८

ओद-नोदक-वेरडु-तेजदो-ळैदु-वुवुलय-तदभि-मानिग-
ळाद-शिवपव-नरुर-माधी-नत्व-वैदुव-रु ।
ईदि-विजरोड-गूडि-श्रीमधु-सूद-नननै-दुवळु-एन्दरि-
दाद-रदिअ-न्नोद-कवकोडु-तुणुत-सुखिसुति-रु ॥ ९-(४५२)

ओदनोदकवेरडु तेजदो-
ळैदुवुवु लय तदभिमानिग-
ळाद शिव पवनरु रमाधीनत्ववैदुवरु ।
ई दिविजरोडगूडि श्री मधु-
सूदननैदुवळु एन्दरि-
दादरदि अन्नोदकव कोडुतुणुत सुखिसुतिरु ॥ ९

जालि-तोप्पल-जावि-गळुमे-द्दाल-यदिस्वे-च्छानु-सारदि-
पालु-करेव-न्ददलि-लकुमी-रमण-तन्नव-र ।
कीळु-कर्मव-स्वीक-रिसित-न्नाल-यदोळि-ट्टवर-पोरेवकृ-
पालु-कामद-कैर-वदल-श्याम-श्रीरा-म ॥ १०-(४५३)

जालितोप्पलजाविगळु मे-
द्दालयदि स्वेच्छानुसारदि
पालु करेवन्ददलि लकुमीरमण तन्नवर ।
कीळुकर्मव स्वीकरिसि त-
न्नालयदोळिट्टवर पोरेव कृ-
पालु कामद कैरवदलश्याम श्रीराम ॥

शशिदि-वाकर-पाव-करोळिह-असित-सितलो-हितग-ळलिशिव-
श्वसन-भार्गवि-मूव-रोळुश्री-कृष्ण-हयवद-न ।
वसुधि-पार्दन-त्रिवृ-तुएनिसि-वसुम-तियोळ-न्नोद-कअनल-
पेसरि-निन्दलि-सर्व-जीवर-सलहु-वनुकरु-णि ॥ ११-(४५४)

शशि दिवाकर पावकरोळिह
असित सित लोहितगळलि शिव
श्वसन भार्गवि मूवरोळु श्रीकृष्ण हयवदन ।
वसुधिपार्दन त्रिवृतु एनिसि
वसुमतियोळन्नोदक अनल
पेसरिनिन्दलि सर्वजीवर सलहुवनु करुणि ॥

दीप-करदलि-पिडिदु-काणदे-कूप-दोळुबि-द्दन्ते-वेदम-
होप-निषद-र्थगळ-नित्यदि-पेळु-ववरे-ल्ल ।
श्रीप-वनमुख-विनुत-नमलसु-रूप-गळव्या-पार-तिळियदे-
पाप-पुण्यके-जीव-कर्तृअ-कर्तृ-हरिए-न्दु ॥ १२-(४५५)

दीप करदलि पिडिदु काणदे
कूपदोळु बिद्दन्ते वेदम-
होपनिषदर्थगळ नित्यदि पेळुवरेल्ल ।
श्री पवनमुख विनुतनमल सु-
रूपगळ व्यापार तिळियदे
पापपुण्यके जीवकर्तृ अकर्तृ हरिएन्दु ॥

अनिल-देवनु-वाङ्म-नोमय-नेनिसि-पावक-वरुण-सङ्क-
न्दनमु-खाद्यरो-ळिद्दु-भगव-द्रूप-गुणगळ-नु ।
नेनेने-नेदुउ-च्चरिसु-तलिन-म्मनुस-दास-न्तैसु-वनुस-
न्मुनिग-णारा-धितप-दाम्बुज-गोज-सुररा-ज ॥ १३-(४५६)

अनिलदेवनु वाङ्मनोमय-
नेनिसि पावक वरुण सङ्क-
न्दनमुखाद्यरोळिद्दु भगवद्रूप गुणगळनु ।
नेनेनेनेदु उच्चरिसुतलि न-
म्मनु सदा सन्तैसुवनु स-
न्मुनिगणाराधितपदाम्बुज गोज सुरराज ॥

पाद-वेनिपवु-वाङ्म-नसुगळु-पाद-रूप-द्वयग-ळोळुप्र-
ह्लाद-पोषक-सङ्क-रुषणा-ह्वयदि-नेलेसि-द्दु ।
वेद-शास्त्रपु-राण-गळसं-वाद-रूपदि-मनन-गैसुत-
मोद-मयसुख-वित्तु-सलहुव-सर्व-सज्जन-र ॥ १४-(४५७)

पादवेनिपवु वाङ्मनसुगळु
पादरूपद्वयगळोळु प्र-
ह्लादपोषक सङ्करुषणाह्वयदि नेलेसिद्दु ।
वेद शास्त्र पुराणगळ सं-
वादरूपदि मननगैसुत
मोदमयसुखवित्तु सलहुव सर्वसज्जनर ॥

गन्ध-वहदश-दिशग-ळोळगर-विन्द-सौरभ-पसरि-सुतघ्रा-
णेन्द्रि-यगळिगे-सुखव-नीवुत-सञ्च-रिसुव-न्ते ।
इन्दि-रेशन-सुगुण-गळदै-नन्दि-नदितुति-सुतनु-मोदिसु-
तन्ध-बधिरसु-मूक-नन्तिरु-मन्द-जनरोड-ने ॥ १५-(४५८)

गन्धवह दश दिशगळोळगर-
विन्दसौरभ पसरिसुत घ्रा-
णेन्द्रियगळिगे सुखवनीवुत सञ्चरिसुवन्ते ।
इन्दिरेशन सुगुणगळ दै-
नन्दिनदि तुतिसुतनुमोदिसु-
तन्ध बधिर सुमूकनन्तिरु मन्दजनरोडने ॥

श्रीर-मणनर-मनेय-पूर्व-द्वार-दल्लिह-सञ्ज्ञ-सूर्यग-
भार-तीपति-प्राण-नोळगिह-लकुमि-नरयण-न-
सेरि-मनुजो-त्तमरु-सर्वश-रीर-गतना-राय-णनअव-
तार-गुणगळ-तुतिसु-तलिमो-दिपरु-मुक्तिय-लि ॥ १६-(४५९)

श्रीरमणनरमनेय पूर्व
द्वारदल्लिह सञ्ज्ञ सूर्यग
भारतीपति प्राणनोळगिह लकुमिनरयणन
सेरि मनुजोत्तमरु सर्वश-
रीरगत नारायणन अव-
तार गुणगळ तुतिसुतलि मोदिपरु मुक्तियलि ॥

प्रणव-प्रतिपा-द्यनपु-रदद-क्षिणक-वाटद-लिप्प-शशिरो-
हिणिग-तव्या-नस्थ-कृतिप्र-द्युम्न-रूपव-नु ।
गुणग-ळनुस-न्तुतिसु-तलिपितृ-गणग-दाधर-नतिवि-मलप-
ट्टणदो-ळगेस्वे-च्छानु-सारदि-सञ्च-रिसुतिह-रु ॥ १७-(४६०)

प्रणवप्रतिपाद्यन पुरद द-
क्षिणकवाटदलिप्प शशिरो-
हिणिगत व्यानस्थ कृतिप्रद्युम्न रूपवनु ।
गुणगळनु सन्तुतिसुतलि पितृ-
गण गदाधरनतिविमल प-
ट्टणदोळगे स्वेच्छानुसारदि सञ्चरिसुतिहरु ॥

अमित-विक्रम-नाल-यदप-श्विमक-वाटदि-सतिस-हितस-
म्भ्रमदि-भगव-द्गुणग-ळनेपोग-ळुतलि-मोदिसु-व-
सुमन-सास्यनो-ळिप्प-पानग-दमन-सङ्करु-षणन-निजह-
त्कमल-दोळुधे-निसुव-ऋषिगण-वैदि-सुखिसुव-रु ॥१८-(४६१)

अमितविक्रमनालयद प-
श्विम कवाटदि सतिसहित स-
म्भ्रमदि भगवद्गुणगळने पोगळुतलि मोदिसुव
सुमनसास्यनोळिप्पपानग-
दमन सङ्करुषणन निजह-
त्कमलदोळु धेनिसुव ऋषिगणवैदि सुखिसुवरु ॥

स्वरम-णनगुण-रूप-सप्त-स्वरग-ळिन्दलि-पाडु-तिहतु-
म्बुरने-मोदला-दखिल-गन्ध-र्वरुर-मापति-य ।
पुरद-उत्तर-बागि-लाधिप-सुरप-शचिगस-मान-वायुग-
हरिन्-मणिनिभ-शान्ति-पतिअनि-रुद्ध-नैदुव-रु ॥ १९-(४६२)

स्वरमणन गुण रूप सप्त-
स्वरगळिन्दलि पाडुतिह तु-
म्बुरनेमोदलादखिल गन्धर्वरु रमापतिय ।
पुरद उत्तर बागिलाधिप
सुरपशचिग समानवायुग
हरिन्मणिनिभ शान्तिपति अनिरुद्धनैदुवरु ॥

गरुड-शेषम-रेन्द्र-मुखपु-ष्करने-कडेया-गिप्प-खिलनि-
र्जररु-ऊर्ध्व-द्वार-गतभा-रतिउ-दाननो-ळु-
मेरेव-माया-वासु-देवन-परम-मङ्गल-वयव-गळम-
न्दिरव-नैदिस-दामु-कुन्दन-नोडि-सुखिसुव-रु ॥ २०-(४६३)

गरुड शेषमरेन्द्रमुख पु-
ष्करने कडेयागिप्पखिल नि-
र्जररु ऊर्ध्वद्वारगत भारति उदाननोळु
मेरेव मायावासुदेवन
परम मङ्गलवयवगळ म-
न्दिरवनैदि सदा मुकुन्दन नोडि सुखिसुवरु ॥

द्वार-पञ्चक-पाल-करोळिह-भार-तीप्रा-णान्त-रात्मक-
मार-मणनै-रूप-तत्त-द्वार-दलिब-प्प ।
मूरे-रडुविध-मुक्ति-योग्यर-तार-तम्यव-नरित-वरकं-
सारि-संसा-राब्धि-दाटिसि-मुक्त-रनुमा-ळप ॥ २१-(४६४)

द्वारपञ्चक पालकरोळिह
भारतीप्राणान्तरात्मक
मारमणनैरूप तत्तद्वारदलि बप्प ।
मूरेरडुविध मुक्तियोग्यर
तारतम्यवनरितवर कं-
सारि संसाराब्धि दाटिसि मुक्तरनु माळप ॥

बेळगि-द्दहूजियु-नोळप-रिगेथळ-थळिसु-तलिक-ङ्गोळिसु-वन्ददि-
तोळेदु-देहव-नाम-मुद्रेग-ळिन्द-लङ्करि-सि ।
ओलिसि-नित्यकु-तर्क-युक्तिग-ळलव-बोधर-शास्त्र-मर्मव-
तिळिय-दिहनर-बरिदे-इदरोळु-शङ्कि-सिदरे-नु ॥ २२-(४६५)

बेळगिद्दहूजियु नोळपरिगे थळ-
थळिसुतलि कङ्गोळिसुवन्ददि
तोळेदु देहव नाम मुद्रेगळिन्दलङ्करिसि ।
ओलिसि नित्य कुतर्क युक्तिग-
ळलव बोधर शास्त्र मर्मव
तिळियदिह नर बरिदे इदरोळु शङ्किसिदरेनु ॥

उदधि-योळगू-र्मिगळु-तोर्प-न्ददलि-हंसो-द्गीथ-हरिहय-
वदन-कृष्णा-द्यमित-अवता-रगळु-नित्यद-लि ।
पदुम-नाभनो-ळिरुति-हवुस-र्वद-समस्त-प्राणि-गळचि-
द्धृदय-गतरू-पगळु-अव्यव-धान-दलिबिड-दे ॥ २३-(४६६)

उदधियोळगूर्मिगळु तोर्प-
न्ददलि हंसोद्गीथ हरि हय-
वदन कृष्णाद्यमित अवतारगळु नित्यदलि ।
पदुमनाभनोळिरुतिहवु स-
र्वद समस्तप्राणिगळ चि-
द्धृदयगत रूपगळु अव्यवधानदलि बिडदे ॥

शरधि-योळुमक-रादि-जीवरु-इरुळु-हगले-कप्र-कारदि-
चरिसु-तनुमो-दिसुत-लिप्प-न्ददिज-गत्त्रय-वु-
इरुति-हुदुजग-दीश-नुदरदि-करेसु-वुदुप्रति-बिम्ब-नामदि-
धरिसि-हुदुहरि-नाम-रूप-ङ्गळनु-अनवर-त ॥ २४-(४६७)

शरधियोळु मकरादि जीवरु
इरुळु हगलेकप्रकारदि
चरिसुतनुमोदिसुतलिप्पन्ददि जगत्त्रयवु
इरुतिहुदु जगदीशनुदरदि
करेसुवुदु प्रतिबिम्बनामदि
धरिसिहुदु हरिनाम रूपङ्गळनु अनवरत ॥

जननि-सौष्टप-दार्थ-गळभो-जनव-माडलु-गर्भ-गतशिशु-
दिनदि-नदिअभि-वृद्धि-ऐदुव-तेरदि-जीवरि-गे ।
वनज-नाभनु-सर्व-रसउ-ण्डुणिसि-संर-क्षिसुव-जाह्नवि-
जनक-जन्मा-द्यखिल-दोषवि-दूर-गम्भी-र ॥ २५-(४६८)

जननि सौष्ट पदार्थगळ भो-
जनव माडलु गर्भगत शिशु
दिनदिनदि अभिवृद्धि ऐदुव तेरदि जीवरिगे ।
वनजनाभनु सर्वरस उ-
ण्डुणिसि संरक्षिसुव जाह्नवि
जनक जन्माद्यखिल दोषविदूर गम्भीर ॥

आसेगोळगादवनु-जनरिगे-दास-नेनिसुव-नासे-यनुनिज-
दासि-गैदिह-पुंस-रेल्लरु-दास-रेनिसुव-रु ।
श्रीश-नङ्घ्रिस-रोज-युगळनि-रासे-यिन्दलि-भजिसे-ओलिदुर-
मास-हितत-न्ननेको-ड्डवकरु-णास-मुद्रह-रि ॥ २६-(४६९)

आसेगोळगादवनु जनरिगे
दासनेनिसुवनासेयनु निज-
दासिगैदिह पुंसरेल्लरु दासरेनिसुवरु ।
श्रीशनङ्घ्रिसरोजयुगळ नि-
रासेयिन्दलि भजिसे ओलिदु र-
मासहित तन्नने कोड्डव करुणासमुद्र हरि ॥

द्युनदि-याद्य-न्तवनु-काणदे-मनुज-नेक-त्रदलि-ताम-
ज्ञनव-गैदुस-मस्त-दोषदि-मुक्त-नहतेर-दि ।
अनघ-नमला-नन्त-नन्तसु-गुणग-ळोळगो-न्देगुण-दउपा-
सनव-गैवम-हात्म-धन्यकृ-तार्थ-नेनिसुव-नु ॥ २७-(४७०)

द्युनदियाद्यन्तवनु काणदे
मनुजनेकत्रदलि ता म-
ज्ञनवगैदु समस्तदोषदि मुक्तनहतेरदि ।
अनघनमलानन्तनन्त सु-
गुणगळोळगोन्दे गुणद उपा-
सनवगैव महात्म धन्य कृतार्थनेनिसुवनु ॥

वासु-देवनु-करेसु-वनुका-र्पास-नामदि-सङ्क-रुषणनु-
वास-वागिह-तूल-दोळुत-न्तुगनु-प्रद्यु-म्न ।
वास-रूपनि-रुद्ध-देवनु-भूष-णनुता-नागि-तोर्पप-
रेश-नारा-यणनु-सर्वद-मान्य-मानद-नु ॥ २८-(४७१)

वासुदेवनु करेसुवनु का-
र्पासनामदि सङ्करुषणनु
वासवागिह तूलदोळु तन्तुगनु प्रद्युम्न ।
वासरूपनिरुद्धदेवनु
भूषणनु तानागि तोर्प प-
रेश नारायणनु सर्वद मान्य मानदनु ॥

ललने-यिन्दोड-गूडि-चैलग-ळोळगे-ओत-प्रोत-रूपदि-
नेलेसि-हनुचतु-रात्म-कजग-न्नाथ-विट्ठल-नु ।
चळिबि-सिलुमळे-गाळि-येन्दरे-घळिगे-बिडदले-काव-नेन्दरि-
दिळेयो-ळर्चिसु-तिरुस-दास-र्वान्त-रात्मक-न ॥ २९-(४७२)

ललनेयिन्दोडगूडि चैलग-
ळोळगे ओतप्रोत रूपदि
नेलेसिहनु चतुरात्मक जगन्नाथविट्ठलनु ।
चळि बिसिलु मळे गाळियेन्दरे-
घळिगे बिडदले काबनेन्दरि-
दिळेयोळर्चिसुतिरु सदा सर्वान्तरात्मकन ॥

१५. श्वाससन्धि मुगियितु (१५-४७२)
॥ श्री मध्वेशार्पणमस्तु ॥

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

कारु-णिकहरि-तन्नो-ळिप्पअ-पार-स्वात-न्त्रियगु-णादिना-
नूरु-तेगेदुस-पाद-आरो-न्दधिक-अरव-त्तु ।
नारि-गित्तुद्वि-षोड-शाधिक-नूरु-पाद-त्रयव-तन्नश-
रीर-दोळगी-परिवि-भागव-माड्द-त्रिपदा-ह्व ॥ १-(४७३)

कारुणिक हरि तन्नोळिप्प अ-
पार स्वातन्त्रियगुणदि ना-
नूरु तेगेदु सपाद आरोन्दधिकअरवत्तु ।
नारिगित्तु द्वि षोडशाधिक
नूरु पादत्रयव तन्न श-
रीरदोळगीपरि विभागव माड्द त्रिपदाह्व ॥

सत्य-लोका-धिपनो-ळगेऐ-वत्ते-रडुपव-मान-नोळुना-
ल्वत्तु-मेले-ण्टधिक-शिवनोळ-गिट्ट-निप्प-त्तु ।
चित्त-जेन्द्ररो-ळैद-धिकदश-तत्त्व-मानिग-ळेनिप-सुररोळु-
हत्तु-ईरै-दखिल-जीवरो-ळिट्ट-निरव-द्य ॥ २-(४७४)

सत्यलोकाधिपनोळगे ऐ-
वत्तेरडु पवमाननोळु ना-
ल्वत्तु मेलेण्टधिक शिवनोळगिट्टनिप्पत्तु ।
चित्तजेन्द्ररोळैदधिकदश
तत्त्वमानिगळेनिप सुररोळु
हत्तु ईरैदखिल जीवरोळिट्ट निरवद्य- ॥

कलिमो-दलुगो-ण्डखिल-दानव-रोळगे-नाल्व-त्तैदु-ईपरि-
तिळिदु-पासने-माडु-मरेयदे-परम-भकुतिय-लि ।
इळेयो-ळगेस-श्वरिसु-लकुमी-निलय-नाळा-नेन्दु-सर्व-
स्थलग-ळलिस-न्तैसु-तिप्पनु-गेळेय-नन्दद-लि ॥ ३-(४७५)

कलि मोदलुगोण्डखिल दानव-
रोळगे नाल्वत्तैदु ई परि
तिळिदुपासने माडु मरेयदे परमभकुतियलि ।
इळेयोळगे सश्वरिसु लकुमी-
निलयनाळानेन्दु सर्व
स्थलगळलि सन्तैसुतिप्पनु गेळेयनन्ददलि ॥

अवनि-पस्वा-मित्व-धर्मव-स्ववश-मात्यरि-तित्तु-ताम-
त्तवर-मुखदलि-राज-कार्यव-माडि-सुवतेर-दि ।
कविभि-रीडित-तन्न-कलेगळ-दिविज-दानव-मान-वरोळि-
ट्टविर-तगुण-त्रयज-कर्मव-माडि-माडिसु-व ॥ ४-(४७६)

अवनिप स्वामित्व धर्मव
स्ववशमात्यरितित्तु ता म-
त्तवर मुखदलि राजकार्यव माडिसुव तेरदि ।
कविभिरीडित तन्न कलेगळ
दिविज दानव मानवरोळि-
ट्टविरत गुणत्रयजकर्मव माडि माडिसुव ॥

पुण्य-पापव-नीते-रदिका-रुण्य-सागर-देव-दानव-
मान-वरोळि-ट्टवर-फलव्य-त्यास-वनेमा-डि ।
बन्न-बडिसुव-भक्ति-हीनर-सन्नु-तसुक-र्मफल-तेगेदुप्र-
पन्न-रिगेको-ट्टवर-सुखबडि-सुवनु-सुभुजा-ह्व ॥ ५-(४७७)

पुण्यपापवनीतेरदि का-
रुण्यसागर देव दानव
मानवरोळिट्टवर फलव्यत्यासवने माडि ।
बन्नबडिसुव भक्तिहीनर
सन्नुत सुकर्मफल तेगेदु प्र-
पन्नरिगे कोट्टवर सुखबडिसुवनु सुभुजाह्व ॥

माणि-कवको-ण्डङ्ग-डियोळजि-वान-कोट्टा-पुरुष-नसमा-
धान-माडुव-तेरदि-दैत्यरु-नित्य-दलिमा-ळप ।
दान-यज्ञा-दिगळ-फलपव-मान-पितनप-हरिसि-असमी-
चीन-सुखगळ-कोट्टु-असुरर-मत्त-रनुमा-ळप ॥ ६-(४७८)

माणिकव कोण्डङ्गडियोळजि-
वान कोट्टापुरुषन समा-
धान माडुवतेरदि दैत्यरु नित्यदलि माळप ।
दान यज्ञादिगळ फल पव-
मानपितनपहरिसि असमी-
चीनसुखगळ कोट्टु असुरर मत्तरनु माळप ॥

एण-लाञ्छन-नमल-किरणक्र-मेण-वृद्धिय-नैदि-लोगर-
काण-गोडदिह-कत्त-लेयभ-ङ्गिसुव-तेरन-न्ते ।
वैन-तेयां-सगन-मूर्ति-ध्यान-उळळम-हात्म-रिगेसु-
ज्ञान-भक्त्या-दिगळु-वर्धिसि-सुखव-कोडुतिह-वु ॥ ७-(४७९)

एण लाञ्छननमलकिरण क्र-
मेण वृद्धियनैदि लोगर
काणगोडदिह कत्तलेय भङ्गिसुव तेरनन्ते ।
वैनतेयांसगन मूर्ति
ध्यानउळळ महात्मरिगे स-
ज्ञान भक्त्यादिगळु वर्धिसि सुखव कोडुतिहवु ॥

जनप-नरिकेय-चोर-पोळलोळु-धनव-कद्दोयि-दीय-लवनव-
गुणग-ळेणिसदे-पोरेव-कोडदिरे-शिक्षि-सुवतेर-दि ।
अनुचि-तोचित-कर्म-कृष्णा-र्पणवे-नलुकै-गोण्डु-तन्नर-
मनेयो-ळिट्टा-नन्द-बडिसुव-माध-वानत-र ॥ ८-(४८०)

जनपनरिकेय चोर पोळलोळु
धनव कद्दोयिदीयलवनव-
गुणगळेणिसदे पोरेव कोडदिरे शिक्षिसुवतेरदि ।
अनुचितोचितकर्म कृष्णा-
र्पणवेनलु कैगोण्डु तन्नर-
मनेयोळिट्टानन्दबडिसुव माधवानतर ॥

अन्न-दन्ना-दन्न-नामक-मुन्ने-पेळदप्र-कार-जीवरो-
ळन्न-रूपप्र-वेश-गैदव-रवर-व्यापा-र ।
बन्न-बडदले-माडि-माडिसि-धन्य-रिवरहु-देन्दे-निसित्रै-
गुण्य-वर्जित-तत्त-दाह्वय-नागि-करेसुव-नु ॥ ९-(४८१)

अन्नदन्नादन्ननामक
मुन्ने पेळद प्रकार जीवरो-
ळन्नरूप प्रवेशगैदवरवर व्यापार ।
बन्नबडदले माडि माडिसि
धन्यरिवरहुदेन्देनिसि त्रै-
गुण्यवर्जित तत्तदाह्वयनागि करेसुवनु ॥

सलिल-बिन्दुप-योब्धि-योळुबी-ळलुवि-कारव-नैद-बल्लुदे-
जलवु-तद्रू-पवने-ऐदुवु-देल्ल-कालद-लि ।
कलिम-लापह-नर्चि-सुवस-त्कुलज-रकुक-र्मगळु-तानि-
ष्कलुष-कर्मग-ळागि-पुरुषा-र्थगळ-कोडुतिह-वु ॥ १०-(४८२)

सलिलबिन्दु पयोब्धियोळु बी-
ळलु विकारवनैदबल्लुदे
जलवु तद्रूपवने ऐदुवुदेल्लकालदलि ।
कलिमलापहनर्चिसुव स-
त्कुलजर कुकर्मगळु ता नि-
ष्कलुष कर्मगळागि पुरुषार्थगळ कोडुतिहवु ॥

मोगदो-ळगेमोग-विट्टु-मुद्दिसि-मगुवि-नम्बिगि-दप्पि-नेहदि-
तेगेदु-तन्न-स्तनग-ळुणिसुव-जननि-यन्दद-लि ।
अगणि-तात्मनु-तन्न-पादा-ब्जगळ-धेनिप-भक्त-जनरिगे-
प्रघट-कनुता-नागि-सौख्यग-ळीव-सर्व-त्र ॥ ११-(४८३)

मोगदोळगे मोगविट्टु मुद्दिसि
मगुविनम्बिगिदप्पि नेहदि
तेगेदु तन्न स्तनगळुणिसुव जननियन्ददलि ।
अगणितात्मनु तन्न पादा-
ब्जगळ धेनिप भक्तजनरिगे
प्रघटकनु तानागि सौख्यगळीव सर्वत्र ॥

तोटि-गनुभू-मियोळु-बीजव-नाट-बेके-न्देनुत-हितदलि-
मोटे-यिंनी-रेत्ति-ससिगळ-सन्त-यिसुव-न्ते ।
पाटु-बडदले-जगदि-जीवर-घोट-कास्यनु-सृजिसि-योग्यते-
दाट-गोडदले-सलहु-तिप्पनु-सर्व-कालद-लि ॥ १२-(४८४)

तोटिगनु भूमियोळु बीजव
नाटबेकेन्देनुत हितदलि
मोटेयिं नीरेत्ति ससिगळ सन्तयिसुवन्ते ।
पाटुबडदले जगदि जीवर
घोटकास्यनु सृजिसि योग्यते
दाटगोडदले सलहुतिप्पनु सर्वकालदलि ॥

भूमि-योळुजल-विरेतृ-षार्तनु-ताम-रेतुमोग-वेत्ति-एण्देसे-
व्योम-मण्डल-दोळगे-काणदे-हुडुकु-वन्दद-लि ।
श्रीम-नोरम-सर्व-रन्त-र्यामि-यागिरे-तिळिय-दनुदिन-
भ्राम-करुभजि-सुवरु-भकुतियो-ळन्य-देवते-य ॥ १३-(४८५)

भूमियोळु जलविरे तृषार्तनु
ता मरेतु मोगवेत्ति एण्देसे
व्योममण्डलदोळगे काणदे हुडुकुबन्ददलि ।
श्रीमनोरम सर्वरन्त-
र्यामियागिरे तिळियदनुदिन
भ्रामकरु भजिसुवरु भकुतियोळन्यदेवतेय ॥

मुख्य-फलवै-कुण्ठ-मुख्या-मुख्य-फलमह-रादि-लोकअ-
मुख्य-फलवै-षयिक-वेन्दरि-दतिभ-कुतियि-न्द ।
रक्क-सारिय-भजिसु-तलिनि-र्दुःख-नागुनि-रन्त-रदिमोरे-
पोक्क-वरबिड-भक्त-वत्सल-भार-तीशपि-त ॥ १४-(४८६)

मुख्यफल वैकुण्ठ मुख्या-
मुख्यफल महरादि लोक अ-
मुख्यफल वैषयिकवेन्दरिदतिभकुतियिन्द ।
रक्कसारिय भजिसुतलि नि-
र्दुःखनागु निरन्तरदि मोरे
पोक्कवर बिड भक्तवत्सल भारतीशपित ॥

व्याधि-यिंपी-डितशि-शुविगेगु-डोद-कवनेरे-ददके-औषध-
तेदु-कुडिसुव-तायि-योपा-दियलि-सर्व-ज्ञ ।
बाद-रायण-भकुत-जनकेप्र-साद-रूपक-नागि-भागव-
तादि-यलिपे-ळिदरु-धर्मा-दिगळे-फलवे-न्दु ॥ १५-(४८७)

व्याधियिं पीडित शिशुविगे गु-
डोदकवनेरेददके औषध
तेदु कुडिसुव तायियोपादियलि सर्वज्ञ ।
बादरायण भकुतजनके प्र-
सादरूपकनागि भागव-
तादियलि पेळिदरु धर्मादिगळे फलवेन्दु ॥

दूर-दल्लिह-पर्व-तघना-कार-तोर्पुदु-नोळप-जनरिगे-
सारे-गैयलु-सर्प-व्याघ्रग-ळिन्दे-भयविहु-दु ।
घोर-तरसं-सार-सुखवुअ-सार-तरवे-न्दरिदु-नित्यर-
मार-मणना-राधि-सुवरद-रिन्द-बल्लव-रु ॥ १६-(४८८)

दूरदल्लिह पर्वत घना-
कार तोर्पुदु नोळप जनरिगे
सारेगैयलु सर्प व्याघ्रगळिन्दे भयविहुदु ।
घोरतरसंसार सुखवु अ-
सारतरवेन्दरिदु नित्य र-
मारमणनाराधिसुवरदरिन्द बल्लवरु ॥

केसर-घटगळ-माडि-बेसिगे-बिसिलो-ळिट्टोण-गिसिद-रवुघन-
रसव-तुम्बलु-बहुदे-सर्वस्व-तन्त्र-ताने-म्ब-
पशुप-नरने-नेनु-माळपअ-नशन-दान-स्नान-कर्मग-
ळोसरि-पोपुवु-बरिदे-देहा-यास-वनेको-ट्ट ॥ १७-(४८९)

केसरघटगळ माडि बेसिगे
बिसिलोळिट्टोणगिसिदरवु घन
रसव तुम्बलु बहुदे सर्वस्वतन्त्र तानेम्ब
पशुप नरनेनेनु माळप अ-
नशन दान स्नान कर्मग-
ळोसरिपोपुवु बरिदे देहायासवने कोट्ट ॥

एरडु-दीक्षेग-ळिहवु-बाह्या-न्तरवे-निपना-मदलि-बुधरि-
न्दरितु-दीक्षित-नागु-दीर्घ-द्वेष-गळबि-ट्ट ।
हरिये-सर्वो-त्तमक्ष-राक्षर-पुरुष-पूजित-पाद-जन्मा-
द्यरवि-दूरसु-खात्म-सर्वग-नेन्दु-स्मरिसुति-रु ॥ १८-(४९०)

एरडु दीक्षेगळिहवु बाह्या-
न्तरवेनिप नामदलि बुधरि-
न्दरितु दीक्षितनागु दीर्घद्वेषगळ बिट्टु ।
हरिये सर्वोत्तम क्षराक्षर-
पुरुषपूजितपाद जन्मा-
द्यरविदूर सुखात्म सर्वगनेन्दु स्मरिसुतिरु ॥

हेय-वस्तुग-ळिल्ल-ऊपा-देय-वस्तुग-ळिल्ल-न्याया-
न्याय-धर्म-गळिल्ल-द्वेषा-सूये-मोदलि-ल्ल ।
तायि-तन्देग-ळिल्ल-कमलद-लाय-ताक्षगे-एनलु-ईसुव-
कायि-यन्ददि-मुळुग-गोडदेभ-वाब्धि-दाटिसु-व ॥ १९-(४९१)

हेयवस्तुगळिल्ल ऊपा-
देयवस्तुगळिल्ल न्याया-
न्याय धर्मगळिल्ल द्वेषासूये मोदलिल्ल ।
तायितन्देगळिल्ल कमलद-
लायताक्षगे एनलु ईसुव
कायियन्ददि मुळुगगोडदे भवाब्धि दाटिसुव ॥

मन्द-नादरु-सरिये-गोपी-चन्द-नश्री-मुद्रे-गळनल-
विन्दे-धरिसुत-श्रीतु-लशिप-द्माक्ष-सरगळ-नु ।
कन्ध-रदम-ध्यदलि-धरिसिमु-कुन्द-श्रीभू-रमण-त्रिजग-
द्वन्द्य-सर्व-स्वामि-ममकुल-दैव-एनेपोरे-व ॥ २०-(४९२)

मन्दनादरु सरिये गोपी-
चन्दन श्रीमुद्रेगळ नल-
विन्दे धरिसुत श्रीतुलशि पद्माक्ष सरगळनु ।
कन्धरद मध्यदलि धरिसि मु-
कुन्द श्री भूरमण त्रिजग-
द्वन्द्य सर्वस्वामि ममकुलदैव एने पोरेव ॥

प्राय-धनमद-दिन्द-जनरिगे-नाय-कप्रभु-वेम्बि-पूर्वदि-
तायि-पोट्टेयो-ळिरलु-प्रभुवे-न्देके-करेयरे-ले-
काय-निन्ननु-बिट्टु-पोगलु-राय-नीने-म्बुवप्र-भुत्वप-
लाय-नवनै-दितुस-मीपद-लिद्द-रदतो-रु ॥ २१-(४९३)

प्राय धनमददिन्द जनरिगे
नायक प्रभुवेम्बि पूर्वदि
तायिपोट्टेयोळिरलु प्रभुवेन्देके करेयरेले
काय निन्ननु बिट्टुपोगलु
राय नीनेम्बुव प्रभुत्व प-
लायनवनैदितु समीपदलिद्दरद तोरु ॥

वासु-देवै-कप्र-कारदि-ईश-नेनिसुव-ब्रह्म-रुद्रश-
चीश-मोदला-दमर-रेल्लरु-दास-रेनिसुव-रु ।
ईसु-मार्गव-बिट्टु-सोहमु-पास-नेयगै-वनर-देहज-
दैशि-कक्ले-शगळु-बरलव-नेके-बिडिसिको-ळ ॥ २२-(४९४)

आप-रब्र-ह्मनलि-त्रिजग-द्व्याप-कत्वनि-याम-कत्व-
स्थाप-कत्वव-शत्व-ईश-त्वादि-गुणगळि-गे ।
लोप-विल्लै-कप्र-कारस्व-रूप-वेनिपुवु-सर्व-कालदि-
पोप-वल्लवु-जीव-रिगेदा-सत्व-दोपा-दि ॥ २३-(४९५)

नित्य-नूतन-निर्वि-कारसु-हृत्त-मप्रण-वस्थ-वर्णो-
त्पत्ति-कारण-वाङ्म-नोमय-साम-गानर-त ।
दत्त-कपिलह-यास्य-रूपदि-पृथक्पृ-थग्जी-वरोळ-गिद्दुप्र-
वर्ति-सुवनव-रवर-योग्यते-कर्म-वनुसरि-सि ॥ २४-(४९६)

वासुदेवैकप्रकारदि
ईशनेनिसुव ब्रह्म रुद्र श-
चीशमोदलादमररेल्लरु दासरेनिसुवरु ।
ई सुमार्गव बिट्टु सोहमु-
पासनेय गैवनर देहज
दैशिक क्लेशगळु बरलवनेके बिडिसिकोळ ॥

आ परब्रह्मनलि त्रिजग-
द्व्यापकत्व नियामकत्व
स्थापकत्व वशत्व ईशत्वादि गुणगळिगे ।
लोपविल्लैकप्रकार स्व-
रूपवेनिपुवु सर्वकालदि
पोपवल्लवु जीवरिगे दासत्वदोपादि ॥

नित्य नूतन निर्विकार सु-
हृत्तम प्रणवस्थ वर्णो-
त्पत्तिकारण वाङ्मनोमय सामगानरत ।
दत्त कपिल हयास्यरूपदि
पृथक्पृथग्जीवरोळगिद्दु प्र-
वर्तिसुवनवरवर योग्यते कर्मवनुसरिसि ॥

श्रुतिग-ळातन-मातु-विमल-स्मृतिग-ळातन-शिक्षे-जीव-
प्रतति-प्रकृतिग-ळेरडु-प्रतिमेग-ळेनिसि-कोळुतिह-वु ।
इतर-कर्मग-ळेल्ल-लकुमी-पतिगे-पूजेग-ळेन्दु-स्मरिसुत-
चतुर-विधपुरु-षार्थ-गळबे-डदिरु-स्वप्नद-लु ॥ २५-(४९७)

भूत-लाधिप-नाज्ञ-धारक-दूत-रिगेसे-वानु-सारदि-
वेत-नवको-ट्टवर-सन्तो-षपडि-सुवतेर-दि ।
मात-रिश्व-प्रिय-नुपरम-प्रीति-पूर्वक-सद्गु-णङ्गळ-
गाथ-करस-न्तोष-बडिसुव-निहप-रङ्गळ-लि ॥ २६-(४९८)

दीप-दिवदलि-कण्ड-रादडे-लोप-गैसुव-राक्ष-णहरिस-
मीप-दल्लिरे-नन्द-नामसु-नन्द-वेनिसुवु-दु ।
औप-चारिक-वल्ल-सुजनर-पाप-कर्मवु-पुण्य-वेनिपुदु-
पापि-गळस-त्पुण्य-कर्मवु-पाप-वेनिसुवु-दु ॥ २७-(४९९)

श्रुतिगळातन मातु विमल
स्मृतिगळातन शिक्षे जीव-
प्रतति प्रकृतिगळेरडु प्रतिमेगळेनिसिकोळुतिहवु ।
इतर कर्मगळेल्ल लकुमी-
पतिगे पूजेगळेन्दु स्मरिसुत
चतुरविध पुरुषार्थगळ बेडदिरु स्वप्नदलु ॥

भूतलाधिपनाज्ञधारक
दूतरिगे सेवानुसारदि
वेतनव कोट्टवरसन्तोषपडिसुव तेरदि ।
मातरिश्वप्रियनु परम
प्रीतिपूर्वक सद्गुणङ्गळ
गाथकर सन्तोषबडिसुवनिहपरङ्गळलि ॥

दीप दिवदलि कण्डरादडे
लोपगैसुवराक्षण हरिस-
मीपदल्लिरे नन्दनाम सुनन्दवेनिसुवुदु ।
औपचारिकवल्ल सुजनर
पापकर्मवुपुण्यवेनिपुदु
पापिगळ सत्पुण्यकर्मवु पापवेनिसुवुदु ॥

धनव-सम्पा-दिसुव-प्रद्रा-वणिक-रन्ददि-कोवि-दरमने-
मनेग-ळलिस-श्वरिसु-शास्त्र-श्रवण-गोसुग-दि ।
मनन-गैदुप-देशि-सुतदु-र्जनर-कूडा-डदिरु-स्वप्नदि-
प्रणत-कामद-कोडुव-सौख्यव-निहप-रङ्गळ-लि ॥ २८-(५००)

धनव सम्पादिसुव प्रद्रा-
वणिकरन्ददि कोविदर मने
मनेगळलि सञ्चरिसु शास्त्रश्रवणगोसुगदि ।
मननगैदुपदेशिसुत दु-
र्जनर कूडाडदिरु स्वप्नदि
प्रणतकामद कोडुव सौख्यवनिहपरङ्गळलि ॥

कार-कक्रिय-द्रव्य-विभ्रम-मूरु-विधजी-वरिगे-बहुसं-
सार-किवुका-रणवे-निसुववु-एल्ल-कालद-लि ।
दूर-ओडिसि-भ्राम-कत्रय-मारि-गोळगा-गदले-सर्वा-
धार-कनचि-न्तिसुत-लिरुस-र्वत्र-मरेयद-ले ॥ २९-(५०१)

कारक क्रिय द्रव्य विभ्रम
मूरुविधजीवरिगे बहुसं-
सारकिवु कारणवेनिसुववु एल्लकालदलि ।
दूर ओडिसि भ्रामकत्रय
मारिगोळगागदले सर्वा-
धारकन चिन्तिसुतलिरु सर्वत्र मरेयदले ॥

करण-कर्मव-माडि-दरेवि-स्मरणे-कालदि-मातु-गळिगु-
त्तरव-कोडदले-सुम्म-निप्पनु-जाग-राव-स्थे-
करुणि-सलुव्या-पार-माडुव-बरलु-नाल्का-वस्थे-गळुपरि-
हरिसि-कोळने-तकेस्व-तन्त्रनु-ताने-एम्बुव-नु ॥ ३०-(५०२)

करण कर्मव माडिदरे वि-
स्मरणेकालदि मातुगळिगु-
त्तरव कोडदले सुम्मनिप्पनु जागरावस्थे
करुणिसलु व्यापार माडुव
बरलु नाल्कावस्थेगळ्परि-
हरिसिकोळनेतके स्वतन्त्रनु ताने एम्बुवनु ॥

युक्ति-मातुग-ळल्ल-श्रुतिस्मृ-त्युक्त-मातुग-ळिवुवि-चारिसे-
मुक्ति-गिवुसो-पान-वेनिपवु-प्रतिप्र-तीपद-वु ।
भक्ति-पूर्वक-पठिसु-ववरिगे-व्यक्ति-कोडुवस्व-रूप-सुखप्रवि-
वित्त-रनुमा-डुवनु-भवभय-दिन्द-बहुरू-प ॥ ३१-(५०३)

युक्तिमातुगळल्ल श्रुतिस्मृ-
त्युक्तमातुगळिवु विचारिसे
मुक्तिगिवु सोपानवेनिपवु प्रतिप्रतीपदवु ।
भक्तिपूर्वक पठिसुववरिगे
व्यक्तिकोडुव स्वरूपसुख प्रवि-
वित्तरनु माडुवनु भवभयदिन्द बहुरूप ॥

श्रीनि-वासन-सुगुण-मणिगळ-प्राण-मतवयु-नाख्य-सूत्रदि-
पोणि-सिदमा-लिकेय-वाङ्मय-नंस-गर्पिसि-दे ।
ज्ञानि-गळद्द-ग्विषय-वहुद-ज्ञानि-गळिगेअ-सह्य-तोर्पुदु-
माणि-कवम-र्कटन-कैयोळु-कोट्ट-तेरन-न्ते ॥ ३२-(५०४)

श्रीनिवासन सुगुणमणिगळ
प्राणमत वयुनाख्यसूत्रदि
पोणिसिद मालिकेय वाङ्मयनंसगर्पिसिदे ।
ज्ञानिगळ दृग्विषयवहुद-
ज्ञानिगळिगे असह्य तोर्पुदु
माणिकव मर्कटन कैयोळु कोट्ट तेरनन्ते ॥

श्रीवि-धीरवि-पाहि-पेशश-चीव-रात्मभ-वार्क-शशिदि-
ग्देव-ऋषिग-न्धर्व-किन्नर-सिद्ध-साध्यग-ण-
सेवि-तपदा-म्भोज-तत्पा-दाव-लम्बिग-ळाद-भकुतर-
काव-करुणा-सान्द्र-लक्ष्मी-हृत्कु-मुदच-न्द्र ॥ ३३-(५०५)

श्री विधीर विपाहिपेश श-
चीवरात्मभवार्क शशि दि-
ग्देव ऋषि गन्धर्व किन्नर सिद्ध साध्यगण
सेवितपदाम्भोज तत्पा-
दावलम्बिगळाद भकुतर
काव करुणासान्द्र लक्ष्मीहृत्कुमुदचन्द्र ॥

आद-रुशव-ताक्ष-भाषा-भेद-दिन्दलि-करेय-लदनुनि-
षेध-गैदव-लोकि-सदेबिडु-वरेवि-वेकिग-ळु ।
माध-वनगुण-पेळव-प्राकृत-वाद-रेयुसरि-केळि-परमा-
ह्लाद-बडदि-प्परेनि-रन्तर-बल्ल-कोविद-रु ॥ ३४-(५०६)

आदरुशव गताक्ष भाषा-
भेददिन्दलि करेयलदनु नि-
षेधगैदवलोकिसदे बिडुवरे विवेकिगळु ।
माधवन गुणपेळ्व प्राकृत-
वादरेयु सरि केळि परमा-
ह्लादबडदिप्परे निरन्तर बल्ल कोविदरु ॥

भास्क-रनम-ण्डलव-कण्डुन-मस्क-रिसिमो-दिसदे-द्वेषदि-
तस्क-रनुनि-न्दिसलु-कुन्दहु-देदि-वाकर-गे ।
संस्कृ-तविद-ल्लेन्दु-कुहकति-रस्क-रिसले-नहुदु-भक्तिपु-
रस्क-रदिके-ळ्वरिगे-ओलिवनु-पुष्क-राक्षस-द ॥ ३५-(५०७)

भास्करन मण्डलव कण्डु न-
मस्करिसि मोदिसदे द्वेषदि
तस्करनु निन्दिसलु कुन्दहुदे दिवाकरगे ।
संस्कृतविदल्लेन्दु कुहक ति-
रस्करिसलेनहुदु भक्तिपु-
रस्करदि केळ्वरिगे ओलिवनु पुष्कराक्षसद ॥

पतित-नकपा-लदोळु-भागी-रथिय-जलविरे-पेय-वेनिपुदे-
इतर-कविनि-र्मितकु-काव्य-श्राव्य-बुधरि-न्द ।
कृतिप-तिकथा-न्वितवे-निपप्रा-कृतवे-तासं-स्कृतवे-निसिस-
न्मतिय-नीवुदु-भक्ति-पूर्वक-केळि-पेळ्वरि-गे ॥ ३६-(५०८)

पतितन कपालदोळु भागी-
रथिय जलविरे पेयवेनिपुदे
इतर कविनिर्मित कुकाव्यश्राव्य बुधरिन्द ।
कृतिपतिकथान्वितवेनिप प्रा-
कृतवे ता संस्कृतवेनिसि स-
न्मतियनीवुदु भक्तिपूर्वक केळि पेळ्वरिगे ॥

वेद-शास्त्रस-युक्ति-ग्रन्थग-ळोदि-केळ्दव-नल्ल-सन्तत-
साधु-गळसह-वास-सल्ला-पगळु-मोदलि-ल्ल ।
मोद-तीर्था-र्यरम-तानुग-राद-वरकरु-णदलि-पेळ्देर-
माध-वजग-न्नाथ-विट्ठल-तिळिसि-दुदरोळ-गे ॥ ३७-(५०९)

वेदशास्त्र सयुक्ति ग्रन्थग-
ळोदि केळ्दवनल्ल सन्तत
साधुगळ सहवास सल्लापगळु मोदलिल्ल ।
मोदतीर्थार्यर मतानुग-
रादवर करुणदलि पेळ्दे र-
माधव जगन्नाथविट्ठल तिळिसिदुदरोळगे ॥

१६. दत्तस्वातन्त्र्यसन्धि मुगियितु (१६-५०९) ॥ श्री मध्वेशार्पणमस्तु ॥

हरे हरे हरे हरे हरे हरे हरे हरे ।
हरे हरे हरे हरे हरये नमः ॥ × ९

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि ।
हरि हरि हरि हरि हरये नमः ॥ × ९

हरि बिडु हरियोळु बरिदामनव ।
सरिपडे अवना इरविन अरिव ॥

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

परम-विष्णुस्व-तन्त्र-माया-तरुणि-वक्ष-स्थलनि-वासिनि-
सरसि-जोद्भव-प्राण-रीर्वरु-सचिव-रेनिसुव-रु ।
सरुव-कर्मग-ळल्लि-तत्प्रिय-रुरग-भूषण-हङ्कृ-तित्रय-
करेसु-वमरे-न्द्रार्क-मुखरि-न्द्रियप-रेनिसुव-रु ॥ १-(५१०)

परमविष्णु स्वतन्त्र माया-
तरुणि वक्षस्थलनिवासिनि
सरसिजोद्भव प्राणरीर्वरु सचिवरेनिसुवरु ।
सरुव कर्मगळल्लि तत्प्रिय-
रुरगभूषणहङ्कृतित्रय
करेसुवमरेन्द्रार्कमुखरिन्द्रियपरेनिसुवरु ॥

ईदि-वौकस-रन्ते-कलिमोद-लाद-दैत्यरु-सर्व-देहदि-
तोद-करुता-वागि-व्यापा-रगळ-माडुव-रु ।
वेध-नन्ददि-कलिय-हङ्का-राधि-पाधम-मधुकु-कैटभ-
क्रोधि-शम्बर-मुखरु-मनसिगे-स्वामि-येनिसुव-रु ॥ २-(५११)

ई दिवौकसरन्ते कलिमोद-
लाद दैत्यरु सर्वदेहदि
तोदकरु तावागि व्यापारगळ माडुवरु ।
वेधनन्ददि कलियहङ्का-
राधिपाधम मधु कुकैटभ
क्रोधि शम्बरमुखरु मनसिगे स्वामियेनिसुवरु ॥

देव-तेगळो-पादि-नित्यदि-एव-मादिस-नाम-दिन्दलि-
याव-दिन्द्रिय-गळोळु-व्यापा-रगळ-माडुव-रु ।
सेव-करसे-वानु-गुणफल-वीव-नृपन-न्ददलि-तन्नस्व-
भाव-स्वात-न्त्यवबि-भागव-माडि-कोट्टह-रि ॥ ३-(५१२)

देवतेगळोपादि नित्यदि
एवमादि सनामदिन्दलि
यावदिन्द्रियगळोळु व्यापारगळ माडुवरु ।
सेवकर सेवानुगुण फल-
वीव नृपनन्ददलि तन्न स्व-
भावस्वातन्त्र्यव बिभागव माडिकोट्ट हरि ॥

अगणि-तस्वा-तन्त्रि-यवना-ल्बगेवि-भागव-माडि-ओन्दनु-
तेगेदु-दशविध-गैसि-पादोन-पञ्च-प्राणन-लि ।
मोगच-तुष्टय-नोळुस-पादै-दुगुण-विरिसिद-मत्ते-दशविध-
युगळ-गुणवनु-माडि-एरडुस-दाशि-वनोळि-ट्ट ॥ ४-(५१३)

अगणित स्वातन्त्रियव ना-
ल्बगे बिभागव माडि ओन्दनु
तेगेदु दशविधगैसि पादोनपञ्च प्राणनलि ।
मोगचतुष्टयनोळु सपादै-
दुगुणबिरिसिद मत्ते दशविध
युगळ गुणवनु माडि एरडु सदाशिवनोळिट्ट ॥

पाक-शासन-काम-रोळुसा-र्धैक-विट्टद-शेन्द्रि-यपसुदि-
वौक-साद्यरो-ळोन्दु-याव-ज्जीव-रोळगो-न्दु ।
नाल्कु-वरेक-ल्यादि-दैत्या-नीक-कित्तनु-एरडु-त्रिविधवि-
भाग-गैसि-न्दिरेगे-ओन्देर-डात्म-तन्नोळ-गे ॥ ५-(५१४)

पाकशासन कामरोळु सा-
र्धैकविट्ट दशेन्द्रियप सुदि-
वौकसाद्यरोळोन्दु यावज्जीवरोळगोन्दु ।
नाल्कुवरे कल्यादि दैत्या-
नीककित्तनु एरडु त्रिविध वि-
भागगैसिन्दिरेगे ओन्देरडात्म तन्नोळगे ॥

ईवि-धदिस्वा-तन्त्रि-यत्वव-देव-मानव-दान-वरोळुर-
माबि-नोदिवि-भाग-माडि-ट्टल्ले-रमिसुव-नु ।
मूव-रोळगि-द्दवर-कर्मव-ताबि-कारव-गैस-दलेक-
ल्पाव-सानके-कोडुव-नाया-सवर-वरगति-य ॥ ६-(५१५)

ई विधदि स्वातन्त्रियत्वव
देव मानव दानवरोळु र-
माबिनोदि बिभाग माडिट्टल्ले रमिसुवनु ।
मूवरोळगिद्दवर कर्मव
ता विकारवगैसदले क-
ल्पावसानके कोडुवनायासवरवर गतिय ॥

आल-यगळोळ-गिप्प-दीप-ज्वाले-वर्तिग-ळनुस-रिसिजन-
रालि-गळिगो-प्पुवते-रदिहरि-तोर्प-सर्व-त्र ।
काल-कालदि-श्रीध-रादु-र्गाल-लनेयर-कूडि-सुखमय-
लीले-गैयलु-त्रिगुण-कार्यग-ळहवु-जीवरि-गे ॥ ७-(५१६)

आलयगळोळगिप्प दीप
ज्वाले वर्तिगळनुसरिसि जन-
रालिगळिगोप्पुव तेरदि हरितोर्प सर्वत्र ।
कालकालदि श्री धरा दु-
र्गा ललनेयर कूडि सुखमय
लीलेगैयलु त्रिगुणकार्यगळहवु जीवरिगे ॥

इन्द्रि-यगळिं-माळप-कर्म-द्वन्द्व-गळतन-गर्पि-सलुगो-
विन्द-पुण्यव-कोण्डु-पापव-भस्म-वनेमा-ळप ।
इन्दि-रेशनु-भक्त-जनरनु-निन्दि-सुवरोळ-गिप्प-पुण्यव-
तन्दु-तन्नव-गीव-पापग-ळवरि-गुणिसुव-नु ॥ ८-(५१७)

इन्द्रियगळिं माळप कर्म
द्वन्द्वगळ तनगर्पिसलु गो-
विन्द पुण्यव कोण्डु पापव भस्मवने माळप ।
इन्दिरेशनु भक्तजनरनु
निन्दिसुवरोळगिप्प पुण्यव
तन्दु तन्नवगीव पापगळवरिगुणिसुवनु ॥

होत्तु-होत्तिगे-पाप-कर्मप्र-वर्त-करनि-न्दिसदे-तनगि-
न्दुत्त-मरगुण-कर्म-गळको-ण्डाद-दलेइ-प्प ।
मर्त्य-रिगेगो-ब्राह्म-णस्त्री-हत्य-मोदलाद-खिल-दोषग-
ळित्त-पनुस-न्देह-बडस-ल्लखिल-शास्त्रम-त ॥ ९-(५१८)

होत्तुहोत्तिगे पापकर्म प्र-
वर्तकर निन्दिसदे तनगि-
न्दुत्तमर गुण कर्मगळ कोण्डाददले इप्प ।
मर्त्यरिगे गो ब्राह्मण स्त्री-
हत्य मोदलादखिल दोषग-
ळित्तपनु सन्देहबडसल्लखिलशास्त्रमत ॥

तन्न-स्वात-न्त्रियगु-णगळहि-रण्य-गर्भा-द्यरिगे-कलिमुख-
दान-वरस-न्ततिगे-अवरधि-कार-वनुसरि-सि-
पुण्य-पापग-ळीव-बहुका-रुण्य-सागर-अल्प-शक्तिग-
ळुण्ण-लरियदे-इरलु-उणगलि-सुवनु-सर्वरि-गे ॥ १०-(५१९)

तन्न स्वातन्त्रिय गुणगळ हि-
रण्यगर्भाद्यरिगे कलिमुख
दानवर सन्ततिगे अवरधिकारवनुसरिसि
पुण्यपापगळीव बहुका-
रुण्यसागर अल्पशक्तिग-
ळुण्णलरियदे इरलु उणगलिसुवनु सर्वरिगे ॥

सत्य-विक्रम-पुण्य-पापस-मस्त-रिगेकोड-लोसु-गदिना-
ल्वत्तु-भागव-माडि-लेशां-शवनु-जनकी-व ।
अत्य-लुपपर-मअणु-विगेसा-मर्थ्य-वनुता-कोट्टु-स्थूलप-
दार्थ-गळउ-ण्डुणिप-सर्वद-सर्व-जीवरि-गे ॥ ११-(५२०)

सत्यविक्रम पुण्यपाप स-
मस्तरिगे कोडलोसुगदि ना-
ल्वत्तु भागव माडि लेशांशवनु जनकीव ।
अत्यलुप परम अणुविगे सा-
मर्थ्यवनु ता कोट्टु स्थूलप-
दार्थगळ उण्डुणिप सर्वद सर्वजीवरिगे ॥

तिमिर-तरणिग-ळेक-देशदि-समनि-सिप्पवे-एन्दि-गादरु-
भ्रमण-चळिबिसि-लञ्जि-केगळु-ण्टेनु-पर्वत-के ।
अमित-जीवरो-ळिद्दु-लकुमी-रमण-व्यापा-रगळ-माडुव-
कमल-पत्रस-रोवर-गळोळ-गिप्प-तेरन-न्ते ॥ १२-(५२१)

तिमिर तरणिगळेक देशदि
समनिसिप्पवे एन्दिगादरु
भ्रमण चळि बिसिलञ्जिकेगळुण्टेनु पर्वतके ।
अमित जीवरोळिद्दु लकुमी-
रमण व्यापारगळ माडुव
कमलपत्र सरोवरगळोळगिप्प तेरनन्ते ॥

अम्बु-जोद्भव-मुख्य-सुरकलि-शम्ब-रादिस-मस्त-दैत्यक-
दम्ब-कनुदिन-पुण्य-पापवि-भाग-वनेमा-डि ।
अम्बु-धियजल-वणुम-हद्धट-दिम्ब-नितुतु-म्बुवते-रदिप्रति-
बिम्ब-रोळुता-निदु-योग्यते-यन्ते-फलवी-व ॥ १३-(५२२)

अम्बुजोद्भवमुख्यसुर कलि
शम्बरादि समस्तदैत्यक-
दम्बकनुदिन पुण्यपाप विभागवने माडि ।
अम्बुधिय जलवणुमहद्धट-
दिम्बनितु तुम्बुव तेरदि प्रति-
बिम्बरोळु तानिद्दु योग्यतेयन्ते फलवीव ॥

इनितु-विष्णुर-हस्य-दोळुभृगु-मुनिप-इन्द्र-द्युम्न-गरुपिदु-
दनुबु-धरुके-ळुवुदु-नित्यदि-मत्स-रवबि-ट्ट ।
अनुचि-तोक्तिग-ळिद्द-रेयुसरि-गणने-माडदि-रेन्दु-विद्व-
ज्जनके-विज्ञा-पनेय-माडुवे-विनय-पूर्वक-दि ॥ १४-(५२३)

इनितु विष्णुरहस्यदोळु भृगु
मुनिप इन्द्रद्युम्नगरुपिदु-
दनु बुधरु केळुवुदु नित्यदि मत्सरव बिट्टु ।
अनुचितोक्तिगळिद्दरेयु सरि
गणनेमाडदिरेन्दु विद्व-
ज्जनके विज्ञापनेय माडुवे विनयपूर्वकदि ॥

वीत-भयवि-श्वेश-विधिपित-मातु-लान्तक-मध्व-वल्लभ-
भूत-भावन-नन्त-भास्कर-तेज-महरा-ज ।
गौत-मरमड-दियनु-काय्दअ-नाथ-रक्षक-गुरुत-मजग-
न्नाथ-विट्टल-तन्न-नम्बिद-भकुत-रनुपोरे-व ॥ १५-(५२४)

वीतभय विश्वेश विधिपित
मातुलान्तक मध्ववल्लभ
भूत भावननन्त भास्करतेज महराज ।
गौतमर मडदियनु काय्द अ-
नाथरक्षक गुरुतम जग-
न्नाथविट्टल तन्न नम्बिद भकुतरनु पोरेव ॥

१७ ॥ स्वगतस्वातन्त्र्यसन्धि मुगियितु ॥(१७-५२४)

॥ श्रीमध्वेशार्पणमस्तु ॥

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

पचन-भक्षण-गमन-भोजन-वचन-मैथुन-शयन-वीक्षण-
अचल-नचलन-गळप्र-यत्नवु-साध्य-वेजन-के ।
शुचिस-दनदय-दिन्द-जीवर-निचय-दोळुता-निन्तु-माडुव-
उचित-वनुचित-कर्म-गळने-न्दरिदु-कोण्डा-डु ॥ १-(५२५)

पचन भक्षण गमन भोजन
वचन मैथुन शयन वीक्षण
अचलन चलनगळ प्रयत्नवु साध्यवे जनके ।
शुचिसदन दयदिन्द जीवर
निचयदोळु तानिन्तु माडुव
उचितवनुचितकर्मगळनेन्दरिदु कोण्डाडु ॥ १

विष्ट-रश्रव-देह-दोळगेप्र-विष्ट-नागिनि-रन्त-रदिबहु-
चेष्टे-गळमा-डुतिरे-कण्डुस-जीवि-एनुतिह-रु ।
हृष्ट-रागुव-रवन-नोडिक-निष्ट-रेल्लरु-सेवे-माळपरु-
बिट्ट-क्षणदलि-कुणप-वेन्दरि-ददनु-पेक्षिप-रु ॥ २-(५२६)

विष्टरश्रव देहदोळगे प्र-
विष्टनागि निरन्तरदि बहु
चेष्टेगळ माडुतिरे कण्डु सजीवि एनुतिहरु ।
हृष्टरागुवरवननोडि क-
निष्टरेल्लरु सेवेमाळपरु
बिट्टक्षणदलि कुणपवेन्दरिददनुपेक्षिपरु ॥ २

क्रीडे-गोसुग-अवर-वरगति-नीड-लोसुग-देह-गळको-
ट्टाडु-वनुस्वे-च्छेयलि-ब्रह्मे-शाद्य-रोळुपो-क्कु ।
माडु-वनुव्या-पार-बहुविध-मूढ-दैत्यरो-ळिद्दु-प्रतिदिन-
केडु-लाभवि-ल्लवनि-गदरि-न्दाव-कालद-लि ॥ ३-(५२७)

क्रीडेगोसुग अवरवर गति
नीडलोसुग देहगळ को-
ट्टाडुवनु स्वेच्छेयलि ब्रह्मेशाद्यरोळु पोक्कु ।
माडुवनु व्यापार बहुविध
मूढदैत्यरोळिद्दु प्रतिदिन
केडु लाभविल्लवनिगदरिन्दावकालदलि ॥ ३

अक्ष-रेड्यनु-ब्रह्म-वायु-त्र्यक्ष-सुरपसु-रासु-ररोळ-
ध्यक्ष-नागि-देल्ल-रोळुव्या-पार-माडुति-ह ।
अक्ष-यसुस-त्वात्म-कपरा-पेक्षे-यिल्लदे-सर्व-रोळगेवि-
लक्ष-णनुता-नागि-लोकव-रक्षि-सुतलि-प्प ॥ ४-(५२८)

अक्षरेडचनु ब्रह्म वायु
त्र्यक्ष सुरप सुरासुररोळ-
ध्यक्षनागिदेल्लरोळु व्यापार माडुतिह ।
अक्षय सुसत्वात्मक परा-
पेक्षेयिल्लदे सर्वरोळगे वि-
लक्षणनु तानागि लोकव रक्षिसुतलिप्प ॥ ४

श्रीस-रस्वति-भार-तीगिरि-जाश-चीरति-रोहि-णीस-
ज्ञासु-शतरू-पाद्य-खिलस्त्री-यरोळु-स्त्रीरू-प-
वास-वागि-देल्ल-रिगेवि-श्वास-तन्नलि-कोट्टु-अवरभि-
लाषे-गळपू-रैसु-तिप्पनु-योग्य-तेगळरि-तु ॥ ५-(५२९)

श्री सरस्वति भारती गिरि-
जा शची रति रोहिणी स-
ज्ञा सुशतरूपाद्यखिल स्त्रीयरोळु स्त्रीरूप
वासवागिदेल्लरिगे वि-
श्वास तन्नलि कोट्टु अवरभि-
लाषेगळ पूरैसुतिप्पनु योग्यतेगळरितु ॥ ५

कोलु-कुदुरेय-माडि-आडुव-बाल-करतेर-नन्ते-लकुमी-
लोल-स्वात-न्त्रियगु-णवब्र-ह्माद्य-रोळगि-ट्ट ।
लीले-गैवनु-तन्न-वरिगनु-कूल-नागि-देल्ल-कालदि-
खूळ-रिगेप्रति-कूल-नागिह-प्रकट-नागद-ले ॥ ६-(५३०)

कोलुकुदुरेय माडि आडुव
बालकर तेरनन्ते लकुमी-
लोल स्वातन्त्रिय गुणव ब्रह्माद्यरोळगिट्टु ।
लीलेगैवनु तन्नवरिगनु-
कूलनागिदेल्लकालदि
खूळरिगे प्रतिकूलनागिह प्रकटनागदले ॥ ६

सौप-रणिवर-वहन-नाना-रूप-नामदि-करेसु-तवरस-
मीप-दल्लि-द्दखिल-व्यापा-रगळ-माडुव-नु ।
पाप-पुण्यग-ळेरडु-अवरस्व-रूप-गळननु-सरिसि-उणिपप-
रोप-कारिप-रेश-पूर्णा-नन्द-ज्ञानघ-न ॥ ७-(५३१)

सौपरणिवरवहन नाना
रूप नामदि करेसुतवर स-
मीपदल्लिद्दखिल व्यापारगळ माडुवनु ।
पापपुण्यगळेरडु अवर स्व-
रूपगळननुसरिसि उणिप प-
रोपकारि परेश पूर्णानन्द ज्ञानघन ॥ ७

अहर-निद्रा-मैथु-नगळह-रहर-बयसिब-ळलुव-वलकुमि-
महित-नमहा-महिमे-गळने-न्तरिव-नित्यद-लि ।
अहिक-सौख्यव-मरेदु-मनदलि-ग्रहिसि-शास्त्रा-र्थगळ-परमो-
त्सहदि-कोण्डा-डुतलि-मैमरे-दवरि-गल्लद-ले ॥ ८-(५३२)

अहर निद्रा मैथुनगळह-
रहर बयसि बळलुवव लकुमि
महितन महामहिमेगळनेन्तरिव नित्यदलि ।
अहिक सौख्यव मरेदु मनदलि
ग्रहिसि शास्त्रार्थगळ परमो-
त्सहदि कोण्डाडुतलि मैमरेदवरिगल्लदले ॥ ८

बन्ध-मोक्ष-प्रदन-ज्ञानवु-मन्द-मतिगळि-गेन्तु-दोरेवुदु-
बिन्दु-मात्रसु-खानु-भवप-र्वतके-समदुः-ख-
एन्दु-तिळियदे-अन्य-दैवग-ळिन्द-सुखवन-पेक्षि-सुवरुमु-
कुन्द-नारा-धनेय-बिट्टव-गुण्टे-मुक्तिसु-ख ॥ ९-(५३३)

बन्ध मोक्षप्रदन ज्ञानवु
मन्दमतिगळिगेन्तु दोरेवुदु
बिन्दु मात्र सुखानुभव पर्वतके समदुःख
एन्दु तिळियदे अन्यदैवग-
ळिन्द सुखवनपेक्षिसुवरु मु-
कुन्दनाराधनेय बिट्टवगुण्टे मुक्तिसुख ॥ ९

राज-तन्नअ-मात्य-करुणादि-नैज-जनरिगे-कोट्टु-कार्यनि-
योजि-सुतमा-नाप-मानव-माळप-तेरन-न्ते ।
श्रीज-नार्दन-सकल-रोळगप-राजि-तनुता-नागि-सर्वप्र-
योज-नवमा-डिसुव-माडुव-फलके-गुरिमा-डि ॥ १०-(५३४)

राज तन्न अमात्य करुणादि
नैज जनरिगे कोट्टु कार्य नि-
योजिसुत मानापमानव माळप तेरनन्ते ।
श्रीजनार्दन सकलरोळगप-
राजितनु तानागि सर्वप्र-
योजनव माडिसुव माडुव फलके गुरिमाडि ॥

वासु-देवस्व-तन्त्र्य-वसरो-जास-नाद्यम-रासु-ररिगिय-
लोसु-गर्धव-तेगेद-दरोळ-र्धवच-तुर्भा-ग-
गैसि-ओन्दनु-शतवि-धद्विप-श्वाश-तब्जज-गष्ट-चत्वा-
रिंश-तिअनिल-गित्त-वाणी-भार-तीग-र्ध ॥ ११-(५३५)

वासुदेव स्वतन्त्र्यव सरो-
जासनाद्यमरासुररिगिय-
लोसुगर्धव तेगेददरोळर्धव चतुर्भाग
गैसि ओन्दनु शतविध द्विप-
श्वाशतब्जजगष्टचत्वा-
रिंशति अनिलगित्त वाणी भारतीगर्ध ॥

द्वितिय-पादव-तेगेदु-कोण्डद-शतवि-भागव-माडि-ताविं-
शतिउ-मेशनो-ळिट्ट-इन्द्रनो-ळैद-धिकह-त्तु ।
रतिप-नोळगिनि-तिट्ट-खिलदे-वतेग-ळोळगी-रैदु-जीव-
प्रतति-योळुदश-ऐद-धिकना-ल्वत्तु-दैत्यरो-ळु ॥ १२-(५३६)

द्वितिय पादव तेगेदुकोण्डद
शत विभागव माडि ता विं-
शति उमेशनोळिट्ट इन्द्रनोळैदधिक हत्तु ।
रतिपनोळगिनितिट्टखिल दे-
वतेगळोळगीरैदु जीव-
प्रततियोळु दश ऐदधिकनाल्वत्तु दैत्यरोळु ॥

कारु-णिकस्वा-तन्त्रि-यत्वव-मूरु-विधगै-सेरडु-तन्नोळु-
नारि-गोन्दनु-कोट्ट-स्वात-न्त्र्यवनु-सर्वरि-गे ।
धारु-णिपत-न्ननुग-रिगेव्या-पार-कोट्टुगु-णवगु-णगळवि-
चार-माडुव-तेरदि-त्रिगुणव-व्यक्त-वनुमा-ळप ॥ १३-(५३७)

कारुणिक स्वातन्त्रियत्वव
मूरु विधगैसेरडु तन्नोळु
नारिगोन्दनु कोट्ट स्वातन्त्र्यवनु सर्वरिगे ।
धारुणिप तन्ननुगरिगे व्या-
पारकोट्टु गुणवगुणगळ वि-
चार माडुव तेरदि त्रिगुणव व्यक्तवनु माळप ॥

पुण्य-कर्मके-सहय-वागुव-धन्य-रिगेक-ल्यादि-दैत्यर-
पुण्य-फलगळ-नीव-दिविजर-पाप-कर्मफ-ल-
अन्य-कर्मव-माळप-रिगेअनु-गुण्य-जनरिगे-कोडुव-बहुका-
रुण्य-सागर-नीते-रदिभ-क्तरनु-सन्तै-प ॥ १४-(४३८)

पुण्यकर्मके सहयवागुव
धन्यरिगे कल्यादि दैत्यर
पुण्यफलगळनीव दिविजर पापकर्मफल
अन्य कर्मव माळपरिगे अनु-
गुण्य जनरिगे कोडुव बहुका-
रुण्यसागरनीतेरदि भक्तरनु सन्तैप ॥

निरुप-मगेसरि-युण्टु-एन्दु-च्चरिसु-ववत-द्भक्त-रोळुम-
त्सरिसु-ववगुणि-गुणग-ळिगेभे-दगळ-पेळुव-व ।
दरसु-दर्शन-ऊर्ध्व-पुण्ड्रव-धरिसि-दवरनु-द्वेषि-पनहरि-
चरिते-गळके-ळदले-लोगर-वार्ते-केळुव-व- १५-(५३९)

निरुपमगे सरियुण्टु एन्दु-
च्चरिसुवव तद्भक्तरोळु म-
त्सरिसुवव गुणिगुणगळिगे भेदगळ पेळुवव ।
दर सुदर्शन ऊर्ध्वपुण्ड्रव
धरिसिदवरनु द्वेषिपन हरि
चरितेगळ केळदले लोगरवार्ते केळुवव

एव-मादि-द्वेष-वुळ्ळकु-जीव-रेल्लरु-दैत्य-रेनिपरु-
कोवि-दरवि-ज्ञान-कर्मव-नोडि-निन्दिप-रु ।
देव-देवन-बिट्टु-याव-ज्जीव-परिय-न्तरदि-तुच्छर-
सेवे-यिन्दुप-जीवि-सुवर-ज्ञान-कोळगा-गि ॥ १६-(५४०)

एवमादि द्वेषवुळ कु–
जीवरेल्लरु दैत्यरेनिपरु
कोविदर विज्ञान कर्मव नोडि निन्दिपरु ।
देवदेवन बिट्टु याव-
ज्जीवपरियन्तरदि तुच्छर
सेवेयिन्दुपजीविसुवरज्ञानकोळगागि ॥

काम-लोभ-क्रोध-मदहिं-साम-यानृत-दम्भ-कपटत्रि-
धाम-नवता-रगळ-भेदअ-पूर्ण-सुखब-द्ध ।
आमि-षनिवे-दितअ-भोज्यति-ताम-सान्नव-नुम्ब-तामस-
श्रीम-दान्धर-सङ्ग-दिन्दलि-तमवे-वर्धिपु-दु ॥ १७-(५४१)

काम लोभ क्रोध मद हिं-
सामयानृत दम्भ कपट त्रि-
धामनवतारगळ भेद अपूर्ण सुखबद्ध ।
आमिषनिवेदित अभोज्यति-
तामसान्नवनुम्ब तामस
श्री मदान्धर सङ्गदिन्दलि तमवे वर्धिपुदु ॥

ज्ञान-भक्तिवि-रक्ति-विनयपु-राण-शास्त्र-श्रवण-चिन्तन-
दान-शमदम-यज्ञ-सत्यअ-हिंस-भूतद-य ।
ध्यान-भगव-न्नाम-कीर्तन-मौन-जपतप-व्रतसु-तीर्थ-
स्नान-मन्त्र-स्तोत्र-वन्दन-सज्ज-नरगुण-वु ॥ १८-(५४२)

ज्ञान भक्ति विरक्ति विनय पुराण
शास्त्रश्रवण चिन्तन
दान शम दम यज्ञ सत्य अहिंस भूतदय ।
ध्यान भगवन्नाम कीर्तन
मौन जप तप व्रत सुतीर्थ
स्नान मन्त्र स्तोत्र वन्दन सज्जनर गुणवु ॥

लेश-स्वात-न्त्र्यगु-णवनुप्र-वेश-गैसिद-कार-णदिगुण-
दोष-गळुतो-रुवुवु-सत्वा-सत्व-जीवरो-ळु ।
श्वास-भोजन-पान-शयनवि-लास-मैथुन-गमन-हरुष-
क्लेश-स्वप्नसु-षुप्ति-जाग्रति-यहवु-चेतन-के ॥ १९-(५४३)

लेश स्वातन्त्र्य गुणवनु प्र-
वेशगैसिद कारणदि गुण
दोषगळु तोरुवुवु सत्वासत्व जीवरोळु ।
श्वास भोजन पान शयन वि-
लास मैथुन गमन हरुष
क्लेश स्वप्न सुषुप्ति जाग्रतियहवु चेतनके ॥

अर्ध-तन्नोळ-गिरिसि-उळिदो-न्दर्ध-वविभा-गगयि-सिवृजि-
नार्द-ननुपू-र्वदलि-स्वात-न्त्र्यवनु-कोट्ट-न्ते ।
स्वर्दु-नीपित-कोडुव-वरसुख-वृद्धि-गोसुग-ब्रह्म-वायुक-
पर्दि-मोदला-दवरो-ळिद्दव-र्योग्य-तेयनरि-तु ॥ २०-(५४४)

अर्ध तन्नोळगिरिसि उळिदो-
न्दर्धव विभागगयिसि वृजि-
नार्दननु पूर्वदलि स्वातन्त्र्यवनु कोट्टन्ते ।
स्वर्दुनीपित कोडुवबर सुख
वृद्धिगोसुग ब्रह्म वायु क-
पर्दि मोदलादवरोळिद्दवर्योग्यतेयनरितु ॥

हलध-रानुज-माळप-कृत्यव-तिळिय-देअह-ङ्कार-दिन्दे-
न्नुळिदु-सुविधिनि-षेध-पात्ररु-इल्ल-वेम्बुव-गे ।
फलग-ळद्वय-कोडुव-दैत्यर-कलुष-कर्मव-बिट्टु-पुण्यव-
सेळेदु-तन्नोळ-गिट्टु-क्रमदिं-कोडुव-भकुतरि-गे ॥ २१-(५४५)

हलधरानुज माळप कृत्यव
तिळियदे अहङ्कारदिन्दे-
न्नुळिदु सुविधिनिषेध पात्ररु इल्लवेम्बुवगे ।
फलगळ द्वय कोडुव दैत्यर
कलुषकर्मव बिट्टु पुण्यव
सेळेदु तन्नोळगिट्टु क्रमदिं कोडुव भकुतरिगे ॥

तोय-जाप्तन-किरण-वृक्ष-च्छाय-व्यक्तिसु-वन्ते-कमलद-
लाय-ताक्षनु-सर्व-रोळुव्या-पिसिद-कारण-दि ।
हेय-सद्गुण-कर्म-तोर्पुवु-न्याय-कोविद-रिगेनि-रन्तर-
श्रीय-रसस-र्वोत्त-मोत्तम-नेन्दु-पेळुव-रु ॥ २२-(५४६)

तोयजाप्तन किरण वृक्ष-
च्छाय व्यक्तिसुवन्ते कमलद-
लायताक्षनु सर्वरोळु व्यापिसिद कारणदि ।
हेय सद्गुण कर्म तोर्पुवु
न्यायकोविदरिगे निरन्तर
श्रीयरस सर्वोत्तमोत्तमनेन्दु पेळुवरु ॥

मूल-कारण-प्रकृति-एनिपम-हाल-कुमिए-ल्लरोळ-गिद्दुसु-
लीले-गैयुत-पुण्य-पापग-ळर्पि-पळुपति-गे ।
पाल-गडलोळु-बिद्द-जलकी-लाल-वेनिपुदे-जीव-कृतक-
र्माळि-तद्वतु-शुभवे-निसुवुदु-एल्ल-कालद-लि ॥ २३-(५४७)

मूल कारण प्रकृति एनिप म-
हालकुमि एल्लरोळगिद्दु सु-
लीलेगैयुत पुण्य पापगळर्पिपळु पतिगे ।
पालगडलोळु बिद्द जल की-
लालवेनिपुदे जीवकृत क-
र्माळि तद्वतु शुभवेनिसुवुदु एल्लकालदलि ॥

ज्ञान-सुखबल-पूर्ण-विष्णुवि-गेनु-माळपवु-त्रिगुण-कार्यकृ-
शानु-विनक्रिमि-कविदु-भक्षिपु-दुण्टे-लोकदो-ळु ।
ईन-लिनजा-ण्डवनु-ब्रह्मे-शान-मुख्यसु-रासु-ररका-
लान-लनवो-ल्नुङ्गु-वगेई-पाप-गळभय-वे ॥ २४-(५४८)

ज्ञान सुख बलपूर्ण विष्णुवि-
गेनु माळपवु त्रिगुणकार्य कृ-
शानुविन क्रिमि कविदु भक्षिपुदुण्टे लोकदोळु ।
ई नलिनजाण्डवनु ब्रह्मे-
शानमुख्य सुरासुरर का-
लानलन वोल्नुङ्गुवगे ई पापगळ भयवे ॥

मोद-शिरद-क्षिणसु-पक्षप्र-मोद-उत्तर-पक्ष-वेन्दुऋ-
गादि-श्रुतिगळु-पेळु-वुवुआ-नन्द-मयहरि-गे ।
मोद-विषयिक-सुखवि-शिष्टप्र-मोद-पार-त्रिकसु-खप्रद-
नाद-कारण-दिन्द-मोदप्र-मोद-नेनिसुव-नु ॥ २५-(५४९)

मोदशिर दक्षिणसुपक्ष प्र-
मोद उत्तरपक्षवेन्दु ऋ-
गादि श्रुतिगळु पेळुवुवु आनन्दमय हरिगे ।
मोद विषयिक सुखविशिष्ट प्र-
मोद पारत्रिक सुखप्रद-
नादकारणदिन्द मोद प्रमोदनेनिसुवनु ॥

एन्दि-गादरु-वृष्टि-यिन्दव-सुन्ध-रेयोळि-प्पखिल-जलदिं-
सिन्धु-वृद्धिय-नैदु-वदेबा-रदिरे-बरिदहु-दे ।
कुन्दु-कोरतेग-ळिल्ल-दिहस्वा-नन्द-सम्पू-र्णस्व-भावगे-
बन्दु-माडुवु-देनु-कर्मा-कर्म-जन्यफ-ल ॥ २६-(५५०)

एन्दिगादरु वृष्टियिन्द व-
सुन्धरेयोळिप्पखिल जलदिं
सिन्धु वृद्धियनैदुवदे बारदिरे बरिदहुदे ।
कुन्दु कोरतेगळिल्लदिह स्वा-
नन्दसम्पूर्णस्वभावगे
बन्दुमाडुवुदेनु कर्माकर्मजन्य फल ॥

देह-वृक्षदो-ळेरडु-पक्षिग-ळिहवु-एन्दिगु-बिडदे-परम-
स्नेह-दिन्दलि-कर्म-जफलग-ळुम्ब-जीवख-ग ।
श्रीह-रियुता-सार-भोक्तनु-द्रोहि-सुवक-ल्यादि-दैत्यस-
मूह-कीवनि-शिष्ट-पापव-लेश-वेल्लरि-गे ॥ २७-(५५१)

देहवृक्षदोळेरडु पक्षिग-
ळिहवु एन्दिगु बिडदे परम
स्नेहदिन्दलि कर्मज फलगळुम्ब जीवखग ।
श्रीहरियु ता सारभोक्तनु
द्रोहिसुव कल्यादि दैत्य स-
मूहकीव विशिष्टपापव लेशवेल्लरिगे ॥

द्युमणि-किरणव-कण्ड-मात्रदि-तिमिर-ओडुव-तेरदि-लक्ष्मी-
रमण-नोडिद-मात्र-दिन्दघ-नाश-वैदुव-दु ।
कमल-सम्भव-मुख्य-रेल्ला-सुमन-सरोळिह-पाप-राशिय-
नमर-मुखन-न्ददलि-भस्मव-माळप-हरिता-नु ॥ २८-(५५२)

द्युमणिकिरणव कण्ड मात्रदि
तिमिर ओडुव तेरदि लक्ष्मी
रमण नोडिद मात्रदिन्दघनाशवैदुवदु ।
कमलसम्भवमुख्यरेल्ला
सुमनसरोळिह पापराशिय-
नमरमुखनन्ददलि भस्मव माळप हरि तानु ॥

चतुर-शतभा-गदिद-शांशदो-ळितर-जीवरि-गीव-लेशव-
दितिज-देव-र्कळिगे-कोडुवनि-शिष्ट-दुःखसु-ख ।
मतिवि-हीन-प्राणि-गळिगा-हुतिय-सुखमृति-दुःख-वरयो-
ग्यतेय-नरितुपि-पील-मशका-दिगळि-गीवह-रि ॥ २९-(५५३)

चतुरशत भागदि दशांशदो-
ळितर जीवरिगीव लेशव
दितिज देवर्कळिगे कोडुव विशिष्ट दुःख सुख ।
मतिविहीन प्राणिगळिगा-
हुतिय सुख मृति दुःखवरयो-
ग्यतेयनरितु पिपील मशकादिगळिगीव हरि ॥

नित्य-निरय-न्धाख्य-कूपदि-भृत्य-रिन्दोड-गूडि-पुनरा-
वर्ति-वर्जित-लोक-वैदुव-कलियु-द्वेषद-लि ।
सत्य-लोका-धिपच-तुर्मुख-तत्त्व-देव-र्कळस-हितनिज-
मुक्ति-यैदुव-हरिप-दाब्जव-भजिसि-भकुतिय-लि ॥३०-(५५४)

नित्यनिरयन्धाख्य कूपदि
भृत्यरिन्दोडगूडि पुनरा-
वर्तिवर्जित लोकवैदुव कलियु द्वेषदलि ।
सत्यलोकाधिप चतुर्मुख
तत्त्वदेवर्कळ सहित निज
मुक्तियैदुव हरिपदाब्जव भजिसि भकुतियलि ॥

विधिनि-षेधग-ळेरडु-मरेयदे-मधुवि-रोधिय-पाद-कर्पिस-
लदिति-मक्कळि-गीव-पुण्यव-पाप-दैत्यरि-गे ।
सुदरु-शनधर-गीय-दिरेब-न्दोदगि-ओय्वरु-पुण्य-दैत्यरु-
अधिप-रिल्लद-वृक्ष-गळफल-दन्ते-नित्यद-लि ॥ ३१-(५५५)

विधि निषेधगळेरडु मरेयदे
मधुविरोधिय पादकर्पिस-
लदिति मक्कळिगीव पुण्यव पाप दैत्यरिगे ।
सुदरुशनधरगीयदिरे ब-
न्दोदगि ओय्वरु पुण्य दैत्यरु
अधिपरिल्लद वृक्षगळ फलदन्ते नित्यदलि ॥

तिलज-कश्मल-त्यजिसि-दीपवु-तिळिय-तैलव-ग्रहिसि-मन्दिर-
दोळगे-व्यापिसि-यिप्प-कत्तल-भङ्गि-सुवतेर-दि ।
कलिमो-दलुगो-ण्डखिल-दानव-कुलज-रनुदिन-माळप-पुण्यज-
फलव-ब्रह्मा-द्यरिगे-कोट्ट-ल्लल्ले-रमिसुव-नु ॥ ३२-(५५६)

तिलज कश्मल त्यजिसि दीपवु
तिळियतैलव ग्रहिसि मन्दिर-
दोळगे व्यापिसियिप्प कत्तल भङ्गिसुव तेरदि ।
कलिमोदलुगोण्डखिल दानव
कुलजरनुदिन माळप पुण्यज
फलव ब्रह्माद्यरिगे कोट्टल्लल्ले रमिसुवनु ॥

इद्द-लेयुनि-त्यदलि-मेध्या-मेध्य-वस्तुग-ळुण्डु-लोकदि-
शुद्ध-शुचिए-न्देनिसि-कोम्बनु-वेद-स्मृतिगळो-ळु ।
बुद्धि-पूर्वक-वागि-विबुधरु-श्रद्धे-यिन्द-र्पिसिद-कर्मनि-
षिद्ध-वादरु-सरिये-कैगो-ण्डुद्ध-रिसुति-प्प ॥ ३३-(५५७)

इद्दलेयु नित्यदलि मेध्या-
मेध्य वस्तुगळुण्डु लोकदि
शुद्ध शुचि एन्देनिसिकोम्बनु वेदस्मृतिगळोळु ।
बुद्धिपूर्वकवागि विबुधरु
श्रद्धेयिन्दर्पिसिद कर्म नि-
षिद्धवादरु सरिये कैगोण्डुद्धरिसुतिप्प ॥

ओडेय-रिद्दव-नस्थ-फलगळ-बडिदु-तिम्बुव-रुण्टे-कण्डरे-
होडेदु-बिसुडुव-रेम्ब-भयदिं-नोड-लञ्जुव-रु ।
बिडदे-माडुव-कर्म-गळुमने-मडदि-मक्कळु-बन्धु-गळुका-
रोडल-नाळुग-ळेन्द-मात्रदि-ओडु-वुवुदुरि-त ॥ ३४-(५५८)

ओडेयरिद्द वनस्थ फलगळ
बडिदु तिम्बुवरुण्टे कण्डरे
होडेदु बिसुडुवरेम्ब भयदिं नोडलञ्जुवरु ।
बिडदे माडुव कर्मगळु मने
मडदि मक्कळु बन्धुगळु का-
रोडलनाळुगळेन्द मात्रदि ओडुवुवु दुरित ॥

ज्ञान-कर्मे-न्द्रियग-ळिन्दे-नेनु-माडुव-कर्म-गळल-
क्ष्मीनि-वासनि-गर्पि-सुतलिरु-काल-कालदलि-
प्राण-पतिकै-गोण्डु-नाना-योनि-यैदिस-नोम्मे-कोडदिरे-
दान-वरुसेळे-दोय्व-रेल्ला-पुण्य-राशिग-ळ ॥ ३५-(५५९)

ज्ञान कर्मेन्द्रियगळिन्दे-
नेनु माडुव कर्मगळ ल-
क्ष्मीनिवासनिगर्पिसुतलिरु कालकालदलि
प्राणपति कैगोण्डु नाना
योनियैदिसनोम्मे कोडदिरे
दानवरु सेळेदोय्वरेल्ला पुण्यराशिगळ ॥

श्रुति-स्मृत्य-र्थवति-ळिदह-म्मतिवि-शिष्टनु-कर्म-माडलु-
प्रतिग्र-हिसपा-पगळ-कोडुति-प्पहरि-नित्यद-लि ।
चतुर-दशभुव-नाधि-पक्रतु-कृत-कृत-ज्ञनिय-मकनेने-
मतिय-भ्रंशप्र-माद-सङ्कट-दोष-ववगि-ल्ल ॥ ३६-(५६०)

श्रुति स्मृत्यर्थव तिळिदह-
म्मतिविशिष्टनु कर्म माडलु
प्रतिग्रहिस पापगळ कोडुतिप्प हरि नित्यदलि ।
चतुरदश भुवनाधिप क्रतु
कृत कृतज्ञ नियमकनेने
मतिय भ्रंश प्रमाद सङ्कटदोषवबगिल्ल ॥

वारि-जासन-मुख्य-राज्ञा-धार-करुस-र्वस्व-तन्त्रर-
मार-मणने-न्दरितु-इष्टा-निष्ट-कर्मफ-ल-
सार-भोक्तनि-गर्पि-सलुस्वी-कार-माडुव-पाप-फलवकु-
बेर-नामक-दैत्य-रिगेको-ट्टवर-नोयिसु-व ॥ ३७-(५६१)

वारिजासनमुख्यराज्ञा-
धारकरु सर्वस्वतन्त्र र-
मारमणनेन्दरितु इष्टानिष्ट कर्मफल
सारभोक्तनिगर्पिसलु स्वी-
कार माडुव पापफलव कु-
बेरनामक दैत्यरिगे कोट्टवर नोयिसुव ॥

क्रूर-दैत्यरो-ळिद्दु-ताने-प्रेरि-सुवका-रणदि-हरिगेकु-
बेर-नेम्बरु-एल्ल-रोळुनि-र्गतर-तिगेनिर-ति ।
सूरि-गम्यगे-सूर्य-नेम्बरु-दूर-शोकगे-शुक्ल-लिङ्गश-
रीर-विल्लद-कार-णदलिअ-काय-नेनिसुव-नु ॥ ३८-(५६२)

क्रूरदैत्यरोळिद्दु ताने
प्रेरिसुवकारणदि हरिगे कु-
बेरनेम्बरु एल्लरोळु निर्गतरतिगे निरति ।
सूरिगम्यगे सूर्यनेम्बरु
दूरशोकगे शुक्ललिङ्ग श-
रीरविल्लद कारणदलि अकायनेनिसुवनु ॥

पेळ-लोशव-ल्लदम-हापा-पाळि-गळनो-न्देक्ष-णदिनि-
र्मूल-गैसलि-बेकु-एम्बुव-गोन्दे-हरिना-म ।
नालि-गेयोळु-ळळवगे-परमकृ-पालु-कृष्णनु-कैपि-डिदुत-
न्नाल-यदोळि-ट्टनुदि-नदिआ-नन्द-बडिसुव-नु ॥ ३९-(५६३)

पेळलोशवल्लद महा पा-
पाळिगळनोन्दे क्षणदि नि-
र्मूलगैसलिबेकु एम्बुवगोन्दे हरिनाम ।
नालिगेयोळुळळवगे परमकृ-
पालु कृष्णनु कैपिडिदु त-
न्नालयदोळिट्टनुदिनदि आनन्दबडिसुवनु ॥

रोगि-औषध-पथ्य-दिन्दनि-रोगि-येनिसुव-तेरदि-श्रीम-
द्भाग-वतसु-श्रवण-गैदुभ-वाख्य-रोगव-नु ।
नीगि-शब्दा-द्यखिल-विषयनि-योगि-सुदशे-न्द्रियव-निलनोळु-
श्रीगु-रुजग-न्नाथ-विट्ठल-प्रीत-नागुव-नु ॥ ४०-(५६४)

रोगि औषधपथ्यदिन्द नि-
रोगियेनिसुवतेरदि श्रीम-
द्भागवत सुश्रवणगैदु भवाख्य रोगवनु ।
नीगि शब्दाद्यखिल विषय नि-
योगिसु दशेन्द्रियवनिलनोळु
श्रीगुरु जगन्नाथविट्ठल प्रीतनागुवनु ॥

१८. सर्वस्वातन्त्र्यसन्धि मुगियितु ॥ (१८-५६४) ॥ श्रीमध्वेशार्पणमस्तु ॥

श्रीमद्धरिकथाऽमृतसार १९. कर्मविमोचनसन्धि (कानड त्रिपुटताळ)

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

मूल-नारा-यणनु-माया-लोल-नन्तव-तार-नामक-
व्याल-रूपज-यार-मणना-वेश-नेनिसुव-नु ।
लीले-गैवा-नन्त-चेतन-जाल-दोळुप्र-द्युम्न-ब्रह्मा-
ण्डाल-यदओळ-होरगु-नेलेसिह-शान्ति-अनिरु-द्ध ॥१-(५६५)

मूलनारायणनु माया-
लोलनन्तवतारनामक
व्यालरूप जयारमणनावेशनेनिसुवनु ।
लीलेगैवानन्त चेतन
जालदोळु प्रद्युम्न ब्रह्मा-
ण्डालयद ओळहोरगु नेलेसिह शान्तिअनिरुद्ध ॥

ऐदु-कारण-रूप-इप्प-त्तैदु-कार्यग-ळेनिसु-वुवुआ-
रैदु-रूपदि-रमिसु-तिप्पनु-ईच-राचर-दि ।
भेद-वर्जित-मूर्ज-गज्ञ-न्मादि-कारण-मुक्ति-दायक-
स्वोद-रदोळि-ट्टेल्ल-रनुस-न्तैप-सर्व-ज्ञ ॥ २-(५६६)

ऐदु कारणरूप इप्प-
त्तैदु कार्यगळेनिसुवुवु आ-
रैदु रूपदि रमिसुतिप्पनु ई चराचरदि ।
भेदवर्जित मूर्जगज्ञ-
न्मादि कारण मुक्तिदायक
स्वोदरदोळिट्टेल्लरनु सन्तैप सर्वज्ञ ॥

कार्य-कारण-कर्तृ-गळोळुस्व-भार्य-रिन्दोड-गूडि-कपिला-
चार्य-क्रीडिसु-तिप्प-तन्नोळु-ताने-स्वेच्छेय-लि ।
प्रेर्य-नल्लर-माब्ज-भवभव-रार्य-रक्षिसि-शिक्षि-सुवनुस्व-
वीर्य-दिन्दलि-दिविज-दानव-ततिय-ननुदिन-दि ॥ ३-(५६७)

कार्य कारण कर्तृगळोळु स्व-
भार्यरिन्दोडगूडि कपिला-
चार्य क्रीडिसुतिप्प तन्नोळु ताने स्वेच्छेयलि ।
प्रेर्य नल्ल रमाब्जभव भव-
रार्य रक्षिसि शिक्षिसुवनु स्व-
वीर्यदिन्दलि दिविज दानवततियननुदिनदि ॥

ईस-मस्तज-गत्ति-नोळगा-काश-दोलिरु-तिप्प-व्याप्ता-
वेश-अवता-रन्त-रात्मक-नागि-परमा-त्म ।
नाश-रहितज-गत्ति-नोळगव-काश-दनुता-नागि-योगी-
शाश-यस्थित-तन्नो-ळेल्लर-निट्ट-सलहुव-नु ॥ ४-(५६८)

ई समस्त जगत्तिनोळगा-
काशदोलिरुतिप्प व्याप्ता-
वेश अवतारन्तरात्मकनागि परमात्म ।
नाशरहित जगत्तिनोळगव-
काशदनु तानागि योगी-
शाशयस्थित तन्नोळेल्लरनिट्टु सलहुवनु ॥

दारु-पाषा-णगत-पावक-बेरे-बेरि-प्पन्ते-कारण-
कार्य-गळओळ-गिद्दु-कारण-कार्य-नेन्देनि-सि ।
तोरि-कोळ्ळदे-एल्ल-रोळुव्या-पार-माडुव-योग्य-तेगळनु-
सार-फलगळ-नुणिसि-सन्तै-सुवकृ-पासा-न्द्र ॥ ५-(५६९)

दारु पाषाणगत पावक
बेरेबेरिप्पन्ते कारण
कार्यगळ ओळगिद्दु कारण कार्यनेन्देनिसि ।
तोरिकोळ्ळदे एल्लरोळु व्या-
पार माडुव योग्यतेगळनु-
सार फलगळनुणिसि सन्तैसुव कृपासान्द्र ॥

ऊर्मि-गळवो-लिप्प-कर्मवि-कर्म-जन्यफ-लाफ-लङ्गळ-
निर्म-लात्मनु-माडि-माडिसि-उण्डु-णिसुति-प्प ।
निर्म-मनिरा-मयनि-राश्रय-धर्म-विद्ध-र्मात्म-धर्मग-
दुर्म-तीजन-रोल्ल-नप्रति-मल्ल-श्रीन-ल्ल ॥ ६-(५७०)

ऊर्मिगळवोलिप्प कर्म वि-
कर्मजन्य फलाफलङ्गळ
निर्मलात्मनु माडि माडिसि उण्डुणिसुतिप्प ।
निर्मम निरामय निराश्रय
धर्मविद्धर्मात्म धर्मग
दुर्मती जनरोल्लनप्रतिमल्ल श्रीनल्ल ॥

जलद-वडबा-नलग-ळम्बुधि-जलव-नुम्बुवु-दब्द-मळेगरे-
दिळेगे-शान्तिय-नीवु-दनलन-ताने-भुञ्जिपु-दु ।
तिळिवु-दीपरि-यल्लि-लकुमी-निलय-गुणकृत-कर्म-जफला-
फलग-ळुण्डुणि-सुवनु-सर्वग-सर्व-जीवरि-गे ॥ ७-(५७१)

जलद वडबानलगळम्बुधि
जलवनुम्बुवुदब्द मळेगरे-
दिळेगे शान्तियनीवुदनलन ताने भुञ्जिपुदु ।
तिळिवुदीपरियल्लि लकुमी-
निलय गुणकृत कर्मज फला-
फलगळुण्डुणिसुवनु सर्वग सर्वजीवरिगे ॥

पुस्त-कगळव-लोकि-सुतम-न्त्रस्तु-तिगळन-लेनु-रवियुद-
यस्त-मनपरि-यन्त-जपतप-माडि-फलवे-नु ।
हृत्स्थ-परमा-त्मनेस-मस्ता-वस्थे-गळोळि-देल्ल-रोळगेनि-
रस्त-कामनु-माडि-माडिप-नेन्दु-तिळियद-व ॥ ८-(५७२)

पुस्तकगळवलोकिसुत म-
न्त्रस्तुतिगळनलेनु रवियुद-
यस्तमन परियन्त जप तप माडि फलवेनु ।
हृत्स्थ परमात्मने समस्ता-
वस्थेगळोळिदेल्लरोळगे नि-
रस्तकामनु माडि माडिपनेन्दु तिळियदव ॥

मद्य-भाण्डव-देव-नदियोळ-गद्दि-तोळेयलु-नित्य-दलिपरि-
शुद्ध-वाहुदे-एन्दि-गादरु-हरिप-दाब्जग-ळ-
बुद्धि-पूर्वक-भजिस-दवगेवि-रुद्ध-वेनिसुवु-वेल्ल-कर्मस-
मृद्धि-गळुदुः-खवने-कोडुतिह-वधम-जीवरि-गे ॥ ९-(५७३)

मद्यभाण्डव देवनदियोळ-
गद्दि तोळेयलु नित्यदलि परि-
शुद्धवाहुदे एन्दिगादरु हरिपदाब्जगळ
बुद्धिपूर्वक भजिसदवगे वि-
रुद्धवेनिसुवुवेल्ल कर्म स-
मृद्धिगळु दुःखवने कोडुतिहवधम जीवरिगे ॥

भक्ति-पूर्वक-वागि-मुक्ता-मुक्त-निय्या-मकन-सर्वो-
द्रिक्त-महिमेग-ळनव-रतको-ण्डाडु-मरेयद-ले ।
सक्त-नागदे-लोक-वार्तेप्र-सक्ति-गळनी-डाडि-श्रुतिस्मृ-
त्युक्त-कर्मव-माडु-तिरुहरि-याज्ञे-एन्दरि-तु ॥ १०-(५७४)

भक्तिपूर्वकवागि मुक्ता-
मुक्त निय्यामकन सर्वो-
द्रिक्त महिमेगळनवरत कोण्डाडु मरेयदले ।
सक्तनागदे लोकवार्ते प्र-
सक्तिगळनीडाडि श्रुतिस्मृ-
त्युक्त कर्मव माडुतिरु हरियाज्ञे एन्दरितु ॥

लोप-वादरु-सरिये-कर्मज-पाप-पुण्यग-ळेरडु-निन्ननु-
लेपि-सवुनि-ष्काम-कनुनी-नागि-माडुति-रे ।
सौप-रणिवर-वहन-निन्नम-हाप-राधग-ळेणिस-दलेस्व-
र्गाप-वर्गदो-ळिट्टु-सलहुव-सतत-सुखसा-न्द्र ॥ ११-(५७५)

लोपवादरु सरिये कर्मज
पाप पुण्यगळेरडु निन्ननु
लेपिसवु निष्कामकनु नीनागि माडुतिरे ।
सौपरणिवरवहन निन्न म-
हापराधगळेणिसदले स्व-
र्गापवर्गदोळिट्टु सलहुव सतत सुखसान्द्र ॥

स्वरत-सुखमय-सुलभ-विश्व-म्भरवि-शोकसु-रासु-रार्चित-
चरण-युगचा-र्वङ्ग-शार्ङ्गश-रण्य-जितम-न्यु ।
परम-सुन्दर-तरप-रात्पर-शरण-जनसुर-धेनु-शाश्वत-
करुणि-कञ्जद-लाक्ष-कायेने-कङ्गो-ळिपशी-घ्र ॥ १२-(५७६)

स्वरत सुखमय सुलभ विश्व-
म्भर विशोक सुरासुरार्चित
चरणयुग चार्वङ्ग शार्ङ्ग शरण्य जितमन्यु ।
परम सुन्दरतर परात्पर
शरणजनसुरधेनु शाश्वत
करुणि कञ्जदलाक्ष कायेने कङ्गोळिप शीघ्र ॥

निर्म-मनुनी-नागि-कर्मवि-कर्म-गळनुनि-रन्त-रदलिसु-
धर्म-नामक-गर्पि-सुतनि-ष्कलुष-नीना-गु ।
भर्म-गर्भन-जनक-दयदलि-दुर्म-तिगळनु-कोडदे-तन्नय-
हर्म्य-दोळगि-ट्टेल्ल-कालदि-काव-कृपेयि-न्द ॥ १३-(५७७)

निर्ममनु नीनागि कर्म वि-
कर्मगळनु निरन्तरदलि सु-
धर्मनामकगर्पिसुत निष्कलुष नीनागु ।
भर्मगर्भन जनक दयदलि
दुर्मतिगळनु कोडदे तन्नय
हर्म्यदोळगिट्टेल्लकालदि काव कृपेयिन्द ॥

कल्प-कल्पदि-शरण-जनवर-कल्प-वृक्षनु-तन्न-निजस-
ङ्कल्प-दनुसा-रदलि-कोडुति-प्पनुफ-लाफल-व ।
अल्प-सुखदा-पेक्षे-यिन्दहि-तल्प-नारा-धिसदि-रेन्दिगु-
शिल्पि-गनकै-सिलुकि-दाशिले-यन्ते-सन्तै-प ॥ १४-(५७८)

कल्पकल्पदि शरणजनवर
कल्पवृक्षनु तन्न निज स-
ङ्कल्पदनुसारदलि कोडुतिप्पनु फलाफलव ।
अल्पसुखदापेक्षेयिन्दहि-
तल्पनाराधिसदिरेन्दिगु
शिल्पिगन कैसिलुकिदाशिलेयन्ते सन्तैप ॥

देश-भेदा-काश-दन्ददि-वासु-देवनु-सर्व-भूतनि-
वासि-एनिसिच-राच-रात्मक-नेन्दु-करेसुव-नु ।
द्वेष-स्नेहो-दासि-नगळि-ल्लीश-रीरिग-ळोळगे-अवरउ-
पास-नगळ-न्ददलि-फलगळ-नीव-परब्र-ह्म ॥ १५-(५७९)

देशभेदाकाशदन्ददि
वासुदेवनु सर्वभूत नि-
वासि एनिसि चराचरात्मकनेन्दु करेसुवनु ।
द्वेष स्नेहोदासिनगळि-
ल्लीशरीरिगळोळगे अवर उ-
पासनगळन्ददलि फलगळनीव परब्रह्म ॥

सञ्चि-तागा-मिगळ-कर्मवि-रिञ्चि-जनकन-भजिसे-केडुवुवु-
मिञ्चि-नन्ददि-पोळेव-पुरुषो-त्तमह्र-दम्बर-दि ।
वञ्चि-सुवजन-रोल्ल-श्रीव-त्साञ्चि-तसुस-द्वक्ष-तानि-
ष्किञ्च-नजन-प्रीय-सुरमुनि-गेय-शुभका-य ॥ १६-(५८०)

सञ्चितागामिगळ कर्म वि-
रिञ्चिजनकन भजिसे केडुवुवु
मिञ्चिनन्ददि पोळेव पुरुषोत्तम हृदम्बरदि ।
वञ्चिसुव जनरोल्ल श्रीव-
त्साञ्चितसुसद्वक्ष तानि-
ष्किञ्चनजनप्रीय सुरमुनिगेय शुभकाय ॥

काल-द्रव्यसु-कर्म-शुद्धिय-पेळु-वरुअ-ल्परिगे-इवुनि-
र्मूल-गैसवु-एल्ल-पापग-ळेल्ल-कालद-लि ।
तैल-धारे-यन्त-वनपद-ओल-यिसितुति-सदले-नित्यदि-
बालि-शरुक-र्मगळे-तारक-वेन्दु-पेळुव-रु ॥ १७-(५८१)

काल द्रव्य सुकर्म शुद्धिय
पेळुवरु अल्परिगे इवु नि-
र्मूलगैसवु एल्ल पापगळेल्ल कालदलि ।
तैलधारेयन्तवन पद
ओलयिसि तुतिसदले नित्यदि
बालिशरु कर्मगळे तारकवेन्दु पेळुवरु ॥

कमल-सम्भव-शर्व-शक्रादि-अमर-रेल्लरु-इवन-दुरति-
क्रमम-हिमेगळ-मनव-चनदिं-प्रान्त-गाणद-ले ।
श्रमित-रागिप-दाब्ज-कल्प-द्रुमद-नेळला-श्रयिसि-लक्ष्मी-
रमण-सन्तै-सेन्दु-प्रार्थिप-रतिभ-कुतियि-न्द ॥ १८-(५८२)

कमलसम्भव शर्व शक्रादि
अमररेल्लरु इवन दुरति-
क्रम महिमेगळ मन वचनदिं प्रान्तगाणदले ।
श्रमितरागि पदाब्जकल्प-
द्रुमद नेळलाश्रयिसि लक्ष्मी-
रमण सन्तैसेन्दु प्रार्थिपरतिभकुतियिन्द ॥

वारि-चरगळे-निसुव-दर्दुर-तार-कगळे-न्दरिदु-भेकव-
नेरि-जलधिय-दाटु-वेनुए-म्बुवन-तेरन-न्ते ।
तार-तम्य-ज्ञान-शून्यरु-सूरि-गम्यन-तिळिय-लरियदे-
सौर-शैवम-तानु-गरननु-सरिसि-केडुतिह-रु ॥ १९-(५८३)

वारिचरगळेनिसुव दर्दुर
तारकगळेन्दरिदु भेकव-
नेरि जलधिय दाटुवेनु एम्बुवन तेरनन्ते ।
तारतम्यज्ञान शून्यरु
सूरिगम्यन तिळियलरियदे
सौर शैव मतानुगरननुसरिसि केडुतिहरु ॥

क्षोणि-पतिसुत-नेनिसि-कैदु-ग्गाणि-गोड्डुव-तेरदि-सुमनस-
धेनु-मनेयोळ-गिरलु-गोमय-बयसु-वन्दद-लि ।
वेणु-गान-प्रियन-अहिकसु-खानु-भवबे-डदले-लकुमी-
प्राण-नाथन-पाद-भकुतिय-बेडु-कोण्डा-डु ॥ २०-(५८४)

क्षोणिपतिसुतनेनिसि कै दु-
ग्गाणिगोड्डुव तेरदि सुमनस-
धेनु मनेयोळगिरलु गोमय बयसुवन्ददलि ।
वेणुगानप्रियन अहिक सु-
खानुभव बेडदले लकुमी-
प्राणनाथन पादभकुतिय बेडु कोण्डाडु ॥

ज्ञान-ज्ञेय-ज्ञातृ-वेम्बभि-धान-दिम्बु-द्धचादि-गळधि-
ष्ठान-दलिनेले-सिदु-करेसुव-तत्त-दाह्वय-दि ।
भानु-मण्डल-गप्र-दर्शक-ताने-नलुवश-नागु-वनुशुक-
शौन-कादिमु-नीन्द्र-ह्रदया-काश-गतच-न्द्र ॥ २१-(५८५)

ज्ञान ज्ञेय ज्ञातृवेम्बभि-
धानदिम्बुद्धचादिगळधि-
ष्ठानदलि नेलेसिद्दु करेसुव तत्तदाह्वयदि ।
भानुमण्डलगप्रदर्शक
तानेनलु वशनागुवनु शुक
शौनकादि मुनीन्द्रहृदयाकाशगतचन्द्र ॥

उदय-व्यापिनि-दरुश-पौर्णिम-अधिक-याम-श्रवण-अभिजित्-
सदन-वैदिरे-माळप-तेरद-न्ददलि-हरिसे-वे ।
विधिनि-षेधग-ळेनु-नोडदे-विधिसु-तिरुनि-त्यदलि-तन्नय-
सदन-दोळगि-म्बिट्ट-सलहुव-भक्त-वत्सल-नु ॥ २२-(५८६)

उदय व्यापिनि दरुश पौर्णिम
अधिकयाम श्रवण अभिजित्
सदनवैदिरे माळप तेरदन्ददलि हरिसेवे ।
विधि निषेधगळेनु नोडदे
विधिसुतिरु नित्यदलि तन्नय
सदनदोळगिम्बिट्ट सलहुव भक्तवत्सलनु ॥

नन्दि-वाहन-रात्रि-साधने-बन्द-द्वादशि-दशमि-पैतृक-
सन्धि-सिदसम-यदलि-श्रवणव-त्यजिसु-वन्तेस-द ।
निन्द्य-रिन्दलि-बन्द-द्रव्यव-कण्दे-रेदुनो-डदले-श्रीमद-
नन्द-तीर्थ-न्तर्ग-तनस-र्वत्र-भजिसुति-रु ॥ २३-(५८७)

नन्दिवाहनरात्रि साधने
बन्द द्वादशि दशमि पैतृक
सन्धिसिद समयदलि श्रवणव त्यजिसुवन्ते सद ।
निन्द्यरिन्दलि बन्द द्रव्यव
कण्देरेदु नोडदले श्रीमद-
नन्दतीर्थन्तर्गतन सर्वत्र भजिसुतिरु ॥

श्रीम-नोरम-मेरु-त्रिककु-द्धाम-सत्क-ल्याण-गुणनि-
स्सीम-पावन-नाम-दिविजो-द्दाम-रघुरा-म ।
प्रेम-पूर्वक-नित्य-तन्नम-हाम-हिमेगळ-तुतिसु-वरिगेसु-
धाम-गोलिद-न्ददलि-अखिला-र्थगळ-कोडुति-प्प ॥२४-(५८८)

श्रीमनोरम मेरुत्रिककु-
द्धाम सत्कल्याणगुणनि-
स्सीम पावननाम दिविजोद्दाम रघुराम ।
प्रेमपूर्वक नित्य तन्न म-
हामहिमेगळ तुतिसुवरिगे सु-
धामगोलिदन्ददलि अखिलार्थगळ कोडुतिप्प ॥

तन्दे-ताय्गळ-कुरुह-नरियद-कन्द-देशा-न्तरदो-ळगेत-
न्नन्द-दलिइ-प्पवर-जननी-जनक-रनुक-ण्डु ।
हिन्दे-एन्ननु-पडेद-वरुइव-रन्द-दलिइ-प्परल-नानव-
रेन्दु-काणुवे-नेनुत-हुडुकुव-तेरदि-कोविद-रु- २५-(५८९)

तन्दे ताय्गळ कुरुहनरियद
कन्द देशान्तरदोळगे त-
न्नन्ददलि इप्पवर जननी जनकरनु कण्डु ।
हिन्दे एन्ननु पडेदवरु इव-
रन्ददलि इप्परल नानव-
रेन्दु काणुवेनेनुत हुडुकुव तेरदि कोविदरु

श्रुतिपु-राणस-मूह-दोळुभा-रतप्र-तिप्रति-पदग-ळोळुनि-
र्जितन-गुणरू-पगळ-हुडुकुत-परम-हरुषद-लि ।
मतिम-तरुप्रति-दिवस-सार-स्वतस-मुद्रदि-शफरि-यन्ददि-
सतत-सञ्चरि-सुवरु-काणुव-लवल-विकेयि-न्द ॥ २६-(५९०)

श्रुति पुराणसमूहदोळु भा-
रत प्रतिप्रति पदगळोळु नि-
र्जितन गुण रूपगळ हुडुकुत परमहरुषदलि ।
मतिमतरु प्रतिदिवस सार-
स्वत समुद्रदि शफरियन्ददि
सतत सञ्चरिसुवरु काणुव लवलविकेयिन्द ॥

मत्स्य-केतन-जनक-हरिश्री-वत्स-लाञ्छन-निजश-रणजन-
वत्स-लवरा-रोह-वैकु-ण्ठाल-यनिवा-सि ।
चित्सु-खप्रद-सलहे-नलुगो-वत्स-दनिगोद-गुवते-रदिपर-
मोत्स-हदिब-न्दोदगु-वनुनि-र्मत्स-ररबळि-गे ॥ २७-(५९१)

मत्स्यकेतनजनक हरि श्री-
वत्सलाञ्छन निजशरणजन
वत्सल वरारोह वैकुण्ठालयनिवासि ।
चित्सुखप्रद सलहेनलु गो
वत्सदनिगोदगुव तेरदि पर-
मोत्सहदि बन्दोदगुवनु निर्मत्सरर बळिगे ॥

सूरि-गळिगेस-मीप-गदुरा-चारि-गळिगे-न्देन्दु-दूरा-
दूर-तरदु-र्लभने-निसुवनु-दैत्य-सन्तति-गे ।
सारि-सारिगे-नेनेव-वरसं-सार-वेम्बम-होर-गकेस-
र्पारि-येनिसिस-दासु-सौख्यव-नीव-सुजनरि-गे ॥ २८-(५९२)

सूरिगळिगे समीपग दुरा-
चारिगळिगेन्देन्दु दूरा-
दूरतर दुर्लभनेनिसुवनु दैत्यसन्ततिगे ।
सारिसारिगे नेनेववर सं-
सारवेम्ब महोरगके स-
र्पारियेनिसि सदा सुसौख्यवनीव सुजनरिगे ॥

क्षुधेय-गोसुग-पोगि-कानन-बदरि-फलगळ-पेक्षे-यिन्दलि-
पोदेयो-ळगेसिग-बिदु-बाय्देरे-ववन-तेरन-न्ते ।
विधिपि-तनपू-जिसदे-निन्नय-उदर-गोसुग-साधु-लिङ्ग-
प्रदरु-शकरा-राधि-सुतबळ-लदिरु-भवदोळ-गे ॥ २९-(५९३)

क्षुधेयगोसुग पोगि कानन
बदरिफलगळपेक्षेयिन्दलि
पोदेयोळगे सिगबिदु बाय्देरेववन तेरनन्ते ।
विधिपितन पूजिसदे निन्नय
उदरगोसुग साधु लिङ्ग
प्रदरुशकराराधिसुत बळलदिरु भवदोळगे ॥

चक्र-शङ्ख-गदाब्ज-धरदुर-तिक्र-मदुरा-वास-विधिशिव-
शक्र-सूर्या-द्यमर-पूज्यप-दाब्ज-निर्ल-ज्ज ।
शुक्र-शिष्यन-अश्व-मेध-प्रक्रि-यवकेडि-स्यब्ज-जाण्डव-
तिक्र-मिसिजा-ह्वविय-पडेदत्रि-विक्र-माह्वय-नु ॥ ३०-(५९४)

चक्र शङ्ख गदाब्जधर दुर-
तिक्रम दुरावास विधि शिव
शक्र सूर्याद्यमरपूज्यपदाब्ज निर्लज्ज ।
शुक्रशिष्यन अश्वमेध
प्रक्रियव केडिस्यब्जजाण्डव-
तिक्रमिसि जाह्वविय पडेद त्रिविक्रमाह्वयनु ॥

शक्त-रेनिसुव-रिल्ल-हरिव्यति-रिक्त-सुरगण-दोळगे-सर्वो-
द्रिक्त-नेनिसुव-सर्व-रिन्दलि-सर्व-कालद-लि ।
भक्ति-पूर्वक-वागि-अन्यप्र-सक्ति-गळनी-डाडि-परमा-
सक्त-नागिरु-हरिक-थामृत-पान-विषयद-लि ॥ ३१-(५९५)

शक्तरेनिसुवरिल्ल हरिव्यति-
रिक्तसुरगणदोळगे सर्वो-
द्रिक्तनेनिसुव सर्वरिन्दलि सर्वकालदलि ।
भक्तिपूर्वकवागि अन्यप्र-
सक्तिगळनीडाडि परमा-
सक्तनागिरु हरिकथाऽमृतपान विषयदलि ॥

बल्ले-नेम्बुव-रिल्ल-ईतन-ओल्ले-नेम्बुव-रिल्ल-लोकदो-
ळिल्ल-दस्थल-विल्ल-वल्लै-ज्ञात-जनरि-ल्ल ।
बेल्ल-दच्चिन-बोम्बे-यन्ददि-एल्ल-रोळगिरु-तिप्प-श्रीभू-
नल्ल-इवगेणे-यिल्ल-अप्रति-मल्ल-जगके-ल्ल ॥ ३२-(५९६)

बल्लेनेम्बुवरिल्ल ईतन
ओल्लेनेम्बुवरिल्ल लोकदो-
ळिल्लद स्थलविल्लवल्लै ज्ञात जनरिल्ल ।
बेल्लदच्चिन बोम्बेयन्ददि
एल्लरोळगिरुतिप्प श्री भू
नल्ल इवगेणेयिल्ल अप्रतिमल्ल जगकेल्ल ॥

प्रणत-कामद-भक्त-चिन्ता-मणिम-णिमया-भरण-भूषित-
घृणिगु-णत्रय-दोष-वर्जित-गहन-सन्महि-म ।
एणिस-भक्तर-दोष-गळकु-म्भिनिजे-याण्मश-रण्य-रामा-
र्पणवे-नलुकै-गोण्ड-शबरिय-फलव-परमा-स ॥ ३३-(५९७)

प्रणतकामद भक्तचिन्ता-
मणि मणिमयाभरणभूषित
घृणि गुणत्रयदोषवर्जित गहन सन्महिम ।
एणिस भक्तर दोषगळ कु-
म्भिनिजेयाण्म शरण्य रामा-
र्पणवेनलु कैगोण्ड शबरिय फलव परमाप्त ॥

शब्द-गोचर-शार्व-रीकर-अब्द-वाहन-ननुज-यदुवं-
शब्धि-चन्द्रम-निरुप-मसुनि-स्सीम-समितस-म ।
लब्ध-नागुव-तन्न-वगेप्रा-रब्ध-कर्मग-ळुणिसि-तीव्रदि-
क्षुब्द-पावक-नन्ते-बिडदि-प्पनुद-यासा-न्द्र ॥ ३४-(५९८)

शब्दगोचर शार्वरीकर
अब्दवाहननुज यदुवं-
शब्धिचन्द्रम निरुपम सुनिस्सीम समितसम ।
लब्धनागुव तन्नवगे प्रा-
रब्धकर्मगळुणिसि तीव्रदि
क्षुब्दपावकनन्ते बिडदिप्पनु दयासान्द्र ॥

श्रीवि-रिञ्चा-द्यमर-वन्दित-ईव-सुन्धरे-योळगे-देवकि-
देवि-जठरदो-ळवत-रिसिदनु-अजनु-नरन-न्ते ।
रेव-तीरम-णननु-जनुस्वप-दाव-लम्बिग-ळनुस-लहिदै-
त्याव-ळियसं-हरिसि-दजग-न्नाथ-विट्ठल-नु ॥ ३५-(५९९)

श्रीविरिञ्चाद्यमरवन्दित
ई वसुन्धरेयोळगे देवकि-
देवि जठरदोळवतरिसिदनु अजनु नरनन्ते ।
रेवतीरमणननुजनु स्वप-
दावलम्बिगळनु सलहि दै-
त्यावळिय संहरिसिद जगन्नाथविट्ठलनु ॥

१९. कर्मविमोचन सन्धि मुगियितु ॥ (१९-५९९)
॥ श्रीमध्वेशार्पणमस्तु ॥

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

श्रीध-रादु-र्गाम-नोरम-वेध-मुखसुम-नसग-णसमा-
राधि-तपदा-म्भोज-जगद-न्तर्ब-हिर्व्या-प्त ।
गोध-रफणिव-रात-पत्रनि-षेध-दूरवि-चित्र-कर्मसु-
बोध-सुखमय-गात्र-परमप-वित्र-सुचरि-त्र ॥ १-(६००)

श्री धरा दुर्गामनोरम
वेधमुख सुमनसगणसमा-
राधित पदाम्भोज जगदन्तर्बहिर्व्याप्त ।
गोधर फणिवरातपत्र नि-
षेधदूर विचित्रकर्म सु-
बोध सुखमयगात्र परमपवित्र सुचरित्र ॥

नित्य-निर्मल-निगम-वेद्यो-त्पत्ति-स्थितिलय-दोष-वर्जित-
स्तुत्य-पूज्यप्र-सिद्ध-मुक्ता-मुक्त-गणसे-व्य ।
सत्य-कामश-रण्य-शाश्वत-भृत्य-वत्सल-भयनि-वारण-
अत्य-धिकस-म्प्रियत-मजग-न्नाथ-मांपा- हि ॥ २-(६०१)

नित्य निर्मल निगमवेद्यो-
त्पत्ति स्थिति लय दोषवर्जित
स्तुत्य पूज्य प्रसिद्ध मुक्तामुक्तगणसेव्य ।
सत्यकाम शरण्य शाश्वत
भृत्यवत्सल भयनिवारण
अत्यधिक सम्प्रियतम जगन्नाथ मांपा हि ॥

परम-पुरुषन-रूप-गुणवनु-सरिसि-काम्बळु-प्रवह-दन्ददि-
निरुप-मळुनि-र्दुष्ट-सुखस-म्पूर्ण-ळेनिसुव-ळु ।
हरिगे-धाम-त्रयवे-निसिआ-भरण-वसना-युधग-ळागि-
द्दरिग-ळनुसं-हरिसु-वळुअ-क्षरळे-निसिको-ण्डु ॥ ३-(६०२)

परमपुरुषन रूप गुणवनु-
सरिसि काम्बळु प्रवहदन्ददि
निरुपमळु निर्दुष्ट सुखसम्पूर्णळेनिसुवळु ।
हरिगे धामत्रयवेनिसि आ-
भरण वसनायुधगळागि-
द्दरिगळनु संहरिसुवळु अक्षरळेनिसिकोण्डु ॥

ईत-गिन्ता-नन्त-गुणदलि-श्रीत-रुणिता-कडिमे-एनिपळु-
नित्य-मुक्तळु-निर्वि-कारळु-त्रिगुण-वर्जित-ळु ।
धौत-पापवि-रिञ्चि-पवनर-माते-एनिपम-हाल-कुमिवि-
ख्यात-ळागिह-ळेल्ल-कालदि-श्रुतिपु-राणदो-ळु ॥ ४-(६०३)

ईतगिन्तानन्त गुणदलि
श्रीतरुणि ता कडिमे एनिपळु
नित्यमुक्तळु निर्विकारळु त्रिगुणवर्जितळु ।
धौतपापविरिञ्चि पवनर
माते एनिप महालकुमि वि-
ख्यातळागिहळेल्लकालदि श्रुति पुराणदोळु ॥

कमल-सम्भव-पवन-रीर्वरु-समरु-समव-र्तिगळु-रुद्रा-
द्यमर-गणसे-वितरु-अपर-ब्रह्म-नामक-रु ।
यमळ-रिगेमह-लकुमि-तानु-त्तमळु-कोटिस-जाति-गुणदि-
न्दमित-सुविजा-त्यधम-रेनिपरु-ब्रह्म-वायुग-ळु ॥ ५-(६०४)

कमलसम्भव पवनरीर्वरु
समरु समवर्तिगळु रुद्रा-
द्यमरगणसेवितरु अपरब्रह्मनामकरु ।
यमळरिगे महलकुमि तानु-
त्तमळु कोटि सजातिगुणदि-
न्दमित सुविजात्यधमरेनिपरु ब्रह्म वायुगळु ॥

पतिग-ळिन्दस-रस्व-तीभा-रतिग-ळधमरु-नूरु-गुणपरि-
मितवि-जात्यव-ररुब-लज्ञा-नादि-गुणदि-न्द ।
अतिश-यळुवा-ग्देवि-श्रीभा-रतिगे-पददप्र-युक्त-विधिमा-
रुतर-वोल्चि-न्तिपरु-सद्भ-क्तियलि-कोविद-रु ॥ ६-(६०५)

पतिगळिन्द सरस्वती भा-
रतिगळधमरु नूरुगुणपरि-
मित विजात्यवररु बल ज्ञानादि गुणदिन्द ।
अतिशयळु वाग्देवि श्रीभा-
रतिगे पदद प्रयुक्त विधिमा-
रुतरवोल्चिन्तिपरु सद्भक्तियलि कोविदरु ॥

खगप-फणिपति-मृडरु-समवा-णिगेश-तगुणा-वररु-मूवरु-
मिगिले-निसुवनु-शेष-पददि-न्दलित्रि-यम्बक-गे ।
नगध-रनष-ण्महिषि-यरुप-न्नगवि-भूषण-गैदु-मेनके-
मगळु-वारुणि-सौप-रणिगळि-गधिक-वेरडुगु-ण ॥ ७-(६०६)

खगप फणिपति मृडरु सम वा-
णिगे शतगुणावररु मूवरु
मिगिलेनिसुवनु शेष पददिन्दलि त्रियम्बकगे ।
नगधरन षण्महिषियरु प-
न्नगविभूषणगैदु मेनके
मगळु वारुणि सौपरणिगळिगधिकवेरडु गुण ॥

गरुड-शेषम-हेश-रिगेसौ-परणि-वारुणि-पार्व-तियुमू-
वरुद-शाधम-वारु-णिगेकडि-मेयेनि-पळुगौ-रि ।
हरन-मडदिगे-हत्तु-गुणदलि-सुरप-कामरु-कडिमे-इन्द्रगे-
कोरते-येनिसुव-मन्म-थनुपद-दिन्द-आवा-ग ॥ ८-(६०७)

गरुड शेष महेशरिगे सौ-
परणि वारुणि पार्वतियु मू-
वरु दशाधम वारुणिगे कडिमेयेनिपळु गौरि ।
हरनमडदिगे हत्तुगुणदलि
सुरप कामरु कडिमे इन्द्रगे
कोरतेयेनिसुव मन्मथनु पददिन्द आवाग ॥

ईर-यिदुगुण-कडिमे-याह-ङ्कारि-कप्रा-णनुम-नोजन-
गारि-गळिगनि-रुद्ध-रतिमनु-दक्ष-गुरुशचि-यु ।
आरु-जनसम-प्राण-निन्दलि-हौर-गेनिपरु-हत्तु-गुणदलि-
मार-जाद्यरि-गैदु-गुणदि-न्दधम-प्रवहा-ख्य ॥ ९-(६०८)

ईरयिदु गुण कडिमेयाह-
ङ्कारिकप्राणनु मनोज न-
गारिगळिगनिरुद्ध रति मनु दक्ष गुरु शचियु ।
आरु जन सम प्राणनिन्दलि
हौरगेनिपरु हत्तुगुणदलि
मारजाद्यरिगैदु गुणदिन्दधम प्रवहाख्य ॥

गुणग-ळिंद्वय-कडिमे-प्रवहगे-इनश-शाङ्क्य-मस्व-यम्भुव-
मनुम-डदिशत-रूप-नाल्वरु-पाद-पादा-र्ध ।
वनधि-नीचप-दार्ध-नारद-मुनिगे-भृग्व-ग्निप्र-सूतिग-
ळेनिसु-वरुपा-दार्ध-गुणदि-न्दधम-रहुदे-न्दु ॥ १०-(६०९)

गुणगळिं द्वय कडिमे प्रवहगे
इन शशाङ्क यम स्वयम्भुव
मनुमडदिशतरूप नाल्वरु पाद पादार्ध ।
वनधि नीच पदार्ध नारद
मुनिगे भृग्वग्नि प्रसूतिग-
ळेनिसुवरु पादार्ध गुणदिन्दधमरहुदेन्दु ॥

हुतव-हगेद्विगु-णाध-मरुविधि-सुतम-रीच्या-दिगळु-वैव-
स्वतनु-विश्वा-मित्र-निगेकि-श्विद्रु-णाधम-नु ।
व्रतिव-रजग-न्मित्र-वरनि-र्ऋतियु-प्रावहि-तार-रिगेकि-
श्वितुगु–णाधम-धनप-विष्व-क्सेन-रेनिसुव-रु ॥ ११-(६१०)

हुतवहगे द्वि गुणाधमरु विधि-
सुतमरीच्यादिगळु वैव-
स्वतनु विश्वामित्रनिगे किश्विद्गुणाधमनु ।
व्रतिवर जगन्मित्र वरनि-
र्ऋतियु प्रावहि तारिगे कि-
श्वितु गुणाधम धनप विष्वक्सेनरेनिसुवरु ॥

धनप-विष्व-क्सेन-गौरी-तनय-रिगेउ-क्तेत-ररुसम-
रेनिसु-वरुए-म्भत्त-यिदुजन-शेष-शतरे-न्दु ।
दिनप-रारे-ळधिक-नाल्व-त्तनिल-रेळवसु-रुद्र-रीरै-
दनितु-विश्वे-देव-द्यावा-श्विनिऋ-भुपृ-थ्वि ॥ १२-(६११)

धनप विष्वक्सेन गौरी-
तनयरिगे उक्तेतररु सम-
रेनिसुवरु एम्भत्तयिदु जन शेषशतरेन्दु ।
दिनपरारेळधिकनाल्व-
त्तनिलरेळवसु रुद्ररीरै-
दनितु विश्वेदेव द्यावाश्विनि ऋभु पृथ्वि ॥

इवरि-गिन्तलि-कोरते-एनिपरु-च्यवन-सनका-दिगळु-पावक-
कविउ-चथ्यज-यन्त-कश्यप-मनुग-ळेकद-श ।
ध्रुवन-हुषशश-बिन्दु-हैहय-दवुष्-षन्तिवि-रोच-ननिज-
कुवर-बलिमोद-लाद-सप्ते-न्द्ररुक-कुत्स्थग-य ॥ १३-(६१२)

इवरिगिन्तलि कोरते एनिपरु
च्यवन सनकादिगळु पावक
कवि उचथ्य जयन्त कश्यप मनुगळेकदश ।
ध्रुव नहुष शशबिन्दु हैहय
दवुष्षन्ति विरोचनन निज-
कुवर बलिमोदलाद सप्तेन्द्ररु ककुत्स्थ गय ॥

पृथुभ-रतमा-न्धात-प्रीया-व्रतम-रुतप्र-ह्लाद-सुपरी-
क्षितह-रिश्च-न्द्राम्ब-रीषो-त्तान-पादमु-ख ।
शतसु-पुण्य-श्लोक-रुगदा-भृतग-धिष्ठा-नरुसु-प्रीया-
व्रतगे-द्विगुणा-धमरु-कर्मज-रेन्दु-करेसुव-रु ॥ १४-(६१३)

पृथु भरत मान्धात प्रीया-
व्रत मरुत प्रह्लाद सुपरी-
क्षित हरिश्चन्द्राम्बरीषोत्तानपादमुख
शत सुपुण्यश्लोकरु गदा-
भृतगधिष्ठानरु सुप्रीया-
व्रतगे द्विगुणाधमरु कर्मजरेन्दु करेसुवरु ॥

नलिनि-सञ्ज्ञा-रोहि-णीश्या-मलवि-राट्प-र्जन्य-रधमरु-
एलर-मित्रन-मडदि-द्विगुणा-धमळु-बाम्बोळे-गे ।
जलम-यबुधा-धमनु-द्विगुणदि-केळगे-निसुवळु-षाश-नैश्चर-
रिळेयु-ईरुगु–णाध-मरुषा-देवि-देशेयि-न्द ॥ १५-(६१४)

नलिनि सञ्ज्ञा रोहिणी श्या-
मल विराट्पर्जन्यरधमरु
एलर मित्रनमडदि द्वि गुणाधमळु बाम्बोळेगे ।
जलमय बुधाधमनु द्वि गुणदि
केळगेनिसुवळुषा शनैश्चर-
रिळेयु ईरु गुणाधमरुषादेवि देशेयिन्द ॥

एरडु-गुणक-र्माधि-पतिपु-ष्करक-डिमेआ-जान-दिविजरु-
चिरपि-तृगळि-न्दुत्त-मरुकि-ङ्करु-पुष्कर-गे ।
सुरप-नालय-गाय-कोत्तम-रेरड-यिदुगुण-दिन्द-धमतु-
म्बुरगे-समशत-कोटि-ऋषिगळु-नूरु-जनरुळि-दु ॥१६-(६१५)

एरडु गुण कर्माधिपति पु-
ष्कर कडिमे आजानदिविजरु
चिरपितृगळिन्दुत्तमरु किङ्करु पुष्करगे ।
सुरपनालयगायकोत्तम-
रेरडयिदु गुणदिन्दधम तु-
म्बुरगे सम शतकोटि ऋषिगळु नूरुजनरुळिदु ॥

अवर-वरप-त्नियरु-अप्सर-युवति-यरुसम-उत्त-मरनुळि-
दवर-रेनिपरु-मनुज-गन्ध-र्वरुद्वि-षड्गुण-दि ।
कुवल-याधिप-रीर-यिदुगुण-अवनि-पत्नी-यरुद-शोत्तर-
नवति-गुणदि-न्दधम-रेनिपरु-मानु-षोत्तम-रु ॥ १७-(६१६)

अवरवर पत्नियरु अप्सर
युवतियरु सम उत्तमरनुळि-
दवररेनिपरु मनुजगन्धर्वरु द्वि षड्गुणदि ।
कुवलयाधिपरीरयिदु गुण
अवनिपत्नीयरु दशोत्तर-
नवति गुणदिन्दधमरेनिपरु मानुषोत्तमरु ॥

सत्व-सत्वरु-सत्व-राजस-सत्व-तामस-मूव-रुरज-
स्सत्व-अधिका-रिगळु-भगव-द्भक्त-रेनिसुव-रु ।
नित्य-बद्धरु-रजो-रजरु-त्पत्ति-भूस्व-र्गदोळु-नरकदि-
पृथ्वि-योळुस-श्चरिसु-तिप्परु-रजसु-तामस-रु ॥ १८-(६१७)

सत्वसत्वरु सत्वराजस
सत्वतामस मूवरु रज-
स्सत्व अधिकारिगळु भगवद्भक्तरेनिसुवरु ।
नित्यबद्धरु रजोरजरु-
त्पत्ति भू स्वर्गदोळु नरकदि
पृथ्वियोळु सञ्चरिसुतिप्परु रजसुतामसरु ॥

तमसु-सात्विक-रेनिसि-कोम्बरु-अमित-नाख्या-तसुर-गणविदु-
तमसु-राजस-रेनिसि-कोम्बरु-दैत्य-समुदा-य ।
तमसु-तामस-कलिपु-रन्धियु-अमित-दुर्गुण-पूर्ण-सर्वा-
धमरो-ळधमा-धमदु-रात्मनु-कलिए-निसिको-म्ब ॥१९-(६१८)

तमसुसात्विकरेनिसिकोम्बरु
अमितनाख्यातसुरगणविदु
तमसुराजसरेनिसिकोम्बरु दैत्यसमुदाय ।
तमसुतामस कलि पुरन्धियु
अमितदुर्गुणपूर्ण सर्वा-
धमरोळधमाधम दुरात्मनु कलि एनिसिकोम्ब ॥

इवन-पोलुव-पापि-जीवरु-भुवन-मूररो-ळिल्ल-नोडलु-
नवधि-धद्वे-षगळि-गागर-नेनिसि-कोळुति-प्प ।
बवर-दोळुब-ङ्गार-दोळुनट-युवति-द्यूता-पेय-मृषदलि-
कविसि-मोहिसि-केडिसु-वनुए-न्दरितु-त्यजिसुवु-दु ॥२०-(६१९)

इवन पोलुव पापिजीवरु
भुवन मूररोळिल्ल नोडलु
नवविध द्वेषगळिगागरनेनिसिकोळुतिप्प ।
बवरदोळु बङ्गारदोळु नट
युवति द्यूता पेय मृषदलि
कविसि मोहिसि केडिसुवनु एन्दरितु त्यजिसुवुदु ॥

त्रिविध-जीव-प्रतति-गळस-ग्गवोळे-याण्मा-लयनु-निर्मिसि-
युवति-यरोड-गूडि-क्रीडिसु-वनुकृ-पासा-न्द्र ।
दिविज-दानव-तार-तम्यद-विविर-तिळिवम-हात्म-रिगेबा-
न्नविर-सखता-नोलिदु-उद्धरि-सुवनु-भवदि-न्द ॥ २१-(६२०)

त्रिविध जीवप्रततिगळ स-
ग्गवोळेयाण्मालयनु निर्मिसि
युवतियरोडगूडि क्रीडिसुवनु कृपासान्द्र ।
दिविज दानव तारतम्यद
विविर तिळिव महात्मरिगे बा-
न्नविरसख तानोलिदु उद्धरिसुवनु भवदिन्द ॥

देव-दैत्यर-तार-तम्यवु-पाव-मानम-तानु-गरिगिदु-
केव-लाव-श्यकवु-तिळिवदु-सर्व-कालद-लि ।
दाव-शिखिपा-पाट-विगेनव-नावे-येनिपुदु-भवस-मुद्रके-
पाव-टिगेवै-कुण्ठ-लोककि-देन्दु-करेसुव-दु ॥ २२-(६२१)

देवदैत्यर तारतम्यवु
पावमानमतानुगरिगिदु
केवलावश्यकवु तिळिवदु सर्वकालदलि ।
दावशिखि पापाटविगे नव
नावेयेनिपुदु भवसमुद्रके
पावटिगे वैकुण्ठलोककिदेन्दु करेसुवदु ॥

तार-तम्य-ज्ञान-मुक्ति-द्वार-वेनिपुदु-भक्त-जनरिगे-
तोरि-पेळिसु-खाब्धि-योळुलो-लाडु-वुदुबुध-रु ।
क्रूर-मानव-रिगिदु-कर्णक-ठोर-वेनिपुदु-नित्य-दलिअधि-
कारि-गळिगिद-नरुपु-वुदुदु-स्तर्कि-गळबि-ट्टु ॥ २३-(६२२)

तारतम्यज्ञान मुक्ति-
द्वारवेनिपुदु भक्तजनरिगे
तोरि पेळि सुखाब्धियोळु लोलाडुवुदु बुधरु ।
क्रूरमानवरिगिदु कर्णक-
ठोरवेनिपुदु नित्यदलि अधि-
कारिगळिगिदनरुपुवुदु दुस्तर्किगळ बिट्टु ॥

हरिसि-रिविरि-श्वीर-भारति-गरुड-फणिपति-षण्म-हिषियरु-
गिरिजे-नाके-शस्म-रप्रा-णअनि-रुद्धश-चि ।
गुरुर-तीमनु-दक्ष-प्रवहा-मरुत-मानवि-यमश-शिदिवा-
करव-रुणना-रदसु-रास्य-प्रसुति-भृगुमुनि-प ॥ २४-(६२३)

हरि सिरि विरिञ्चीर भारति
गरुड फणिपति षण्महिषियरु
गिरिजे नाकेश स्मर प्राण अनिरुद्ध शचि ।
गुरु रती मनु दक्ष प्रवहा-
मरुत मानवि यम शशि दिवा-
कर वरुण नारद सुरास्य प्रसुति भृगुमुनिप ॥

व्रतति-जासन-पुत्र-रेनिसुव-व्रतिव-रत्रिम-रीचि-वैव-
स्वतनु-तारा-मित्र-निर्ऋति-प्रवह-मारुत-न-
सतिध-नेशा-श्विनिग-ळिगेगण-पतियु-विष्व-क्सेन-शेषसु-
शतरु-मनुगळु-चथ्य-च्यावन-मुनिग-ळिगेनमि-पे ॥२५-(६२४)

व्रततिजासनपुत्ररेनिसुव
व्रतिवरत्रि मरीचि वैव-
स्वतनु तारा मित्र निर्ऋति प्रवहमारुतन
सति धनेशाश्विनिगळिगे गण-
पतियु विष्वक्सेन शेष सु-
शतरु मनुगळुचथ्य च्यावनमुनिगळिगे नमिपे ॥

शतसु-पुण्य-श्लोक-रेनिसुव-क्षितिप-रिगेनमि-सुवेनु-भागी-
रथिवि-राट्प-र्जन्य-रोहिणि-श्याम-लास-ञ्ज्ञ ।
हुतव-हनमहि-ळाबु-धोषा-क्षितिश-नैश्वर-पुष्क-ररिगा-
नतिसि-बिन्नै-सुवेनु-भक्ति-ज्ञान-कोडले-न्दु ॥ २६-(६२५)

शत सुपुण्यश्लोकरेनिसुव
क्षितिपरिगे नमिसुवेनु भागी-
रथि विराट्पर्जन्य रोहिणि श्यामला सञ्ज्ञ ।
हुतवहनमहिळा बुधोषा
क्षिति शनैश्चर पुष्कररिगा-
नतिसि बिन्नैसुवेनु भक्ति ज्ञान कोडलेन्दु ॥

नूर-धिकवा-गिप्प-मत्हदि-नारु-साविर-नन्द-गोपकु-
मार-नर्धा-ङ्गियर-गस्त्या-दीमु-नीश्वर-रु ।
ऊरु-वशिमोद-लाद-अप्सर-नारि-यरुशत-तुम्बु-ररुकं-
सारि-गुणगळ-कीर्त-नेयमा-डिसलि-एन्नि-न्द ॥ २७-(६२६)

नूरधिकवागिप्प मत्हदि-
नारुसाविर नन्दगोपकु-
मारनर्धाङ्गियरगस्त्यादीमुनीश्वररु ।
ऊरुवशिमोदलाद अप्सर
नारियरु शत तुम्बुररु कं-
सारिगुणगळ कीर्तनेय माडिसलि एन्निन्द ॥

पाव-करुशुचि-शुद्ध-नामक-देव-तेगळा-जान-चिरपितृ-
देव-नरग-न्धर्व-रवनिप-मानु-षोत्तम-रु ।
ईव-सुमतियो-ळुळळ-वैष्णव-राव-ळियोळिह-रेन्दु-नित्यदि-
सेवि-पुदुस-न्तोष-दिंस-र्वप्र-कारद-लि ॥ २८-(६२७)

पावकरु शुचि शुद्धनामक
देवतेगळाजान चिरपितृ
देवनरगन्धर्वरवनिप मानुषोत्तमरु ।
ई वसुमतियोळुळळ वैष्णव
रावळियोळिहरेन्दु नित्यदि
सेविपुदु सन्तोषदिं सर्वप्रकारदलि ॥

मानु-षोत्तम-रनुपि-डिदुचतु-रान-नान्तश-तोत्त-मत्वक्र-
मेण-चिन्तिप-भकुत-रिगेचतु-रविध-पुरुषा-र्थ ।
श्रीनि-धिजग-न्नाथ-विट्ठल-ताने-ओलिदी-वनुनि-रन्तर-
सानु-रागदि-पठिसु-वुदुप्रा-ज्ञरिद-मरेयद-ले ॥ २९-(६२८)

मानुषोत्तमरनु पिडिदु चतु-
राननान्त शतोत्तमत्व क्र-
मेण चिन्तिप भकुतरिगे चतुरविध पुरुषार्थ ।
श्रीनिधि जगन्नाथविट्ठल
ताने ओलिदीवनु निरन्तर
सानुरागदि पठिसुवुदु प्राज्ञरिद मरेयदले ॥

२०. गुणतारतम्यसन्धि मुगियितु (२०-६२८)

॥ श्री मध्वेशार्पणमस्तु ॥

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

मीन-कूर्म-क्रोड-नरहरि-माण-वकभृगु-राम-दशरथ-
सूनु-यादव-बुद्ध-कल्की-कपिल-वैकु-ण्ठ ।
श्रीनि-वास-व्यास- ऋषभह-यान-नाना-राय-णीहं-
सानि-रुद्धत्रि-विक्र-मश्री-धरह्र-षीके-श ॥ १-(६२९)

मीन कूर्म क्रोड नरहरि
माणवक भृगुराम दशरथ-
सूनु यादव बुद्ध कल्की कपिल वैकुण्ठ ।
श्रीनिवास व्यास ऋषभ ह-
याननना नारायणी हं-
सानिरुद्ध त्रिविक्रम श्रीधर हृषीकेश ॥

हरियु-नारा-यणनु-कृष्णा-सुरकु-लान्तक-सूर्य-सप्रभ-
करेसु-वनुनि-र्दुष्ट-सुखपरि-पूर्ण-ताने-न्दु ।
सरुव-देवो-त्तमनु-सर्वग-परम-पुरुषपु-रात-नजरा-
मरण-वर्जित-वासु-देवा-द्यमित-रूपा-त्म ॥ २-(६३०)

हरियु नारायणनु कृष्णा-
सुरकुलान्तक सूर्यसप्रभ
करेसुवनु निर्दुष्ट सुखपरिपूर्ण तानेन्दु ।
सरुवदेवोत्तमनु सर्वग
परमपुरुष पुरातन जरा-
मरणवर्जित वासुदेवाद्यमित रूपात्म ॥

ई-लिनभव-जननि-लकुमी-ज्ञान-बलभ-क्त्यादि-गुणस-
म्पूर्ण-ळेनिपळु-सर्व-कालदि-हरिकृ-पाबल-दि ।
हीन-ळेनिपळ-नन्त-गुणदिपु-राण-पुरुषगे-प्रकृति-गिन्नुस-
मान-रेनिसुव-रिल्ल-मुक्ता-मुक्त-सुररोळ-गे ॥ ३-(६३१)

ई नलिनभवजननि लकुमी-
ज्ञान बल भक्त्यादि गुणस-
म्पूर्णळेनिपळु सर्वकालदि हरिकृपाबलदि ।
हीनळेनिपळनन्तगुणदि पु-
राणपुरुषगे प्रकृतिगिन्नु स-
मानरेनिसुवरिल्ल मुक्तामुक्त सुररोळगे ॥

गुणग-ळत्रय-मानि-श्रीकु-म्भिनिम-हादु-र्गाम्भ्रि-णीरु-
क्मिणिसु-सत्या-शान्ति-कृतिजय-माय-महलकु-मि ।
जनक-जाकम-लाल-याद-क्षिणेसु-पद्मा-त्रिलो-केश्वरि-
अणुम-हत्तिनो-ळिद्दु-उपमा-रहित-ळेनिसुव-ळु ॥ ४-(६३२)

गुणगळत्रयमानि श्री कु-
म्भिनि महादुर्गाम्भ्रिणी रु-
क्मिणि सुसत्या शान्ति कृति जय माय महलकुमि।
जनकजा कमलालया द-
क्षिणे सुपद्मा त्रिलोकेश्वरि
अणु महत्तिनोळिद्दु उपमारहितळेनिसुवळु ॥

घोट-कास्यन-मडदि-गिन्तलि-हाट-कोदर-पवन-रीर्वरु-
कोटि-गुणदि-न्दधम-रेनिपरु-आव-कालद-लि ।
खेट-पतिशे-षाम-रेन्द्रर-साटि-माडदे-श्रीश-नकृपा-
नोट-दिन्दलि-सर्व-रोळुव्या-पार-माडुव-रु ॥ ५-(६३३)

घोटकास्यन मडदिगिन्तलि
हाटकोदर पवनरीर्वरु
कोटि गुणदिन्दधमरेनिपरु आवकालदलि ।
खेटपति शेषामरेन्द्रर
साटिमाडदे श्रीशन कृपा-
नोटदिन्दलि सर्वरोळु व्यापार माडुवरु ॥

पुरुष-ब्रह्मवि-रिञ्चि-माह-न्मरुत-मुख्य-प्राण-धृतिस्मृति-
गुरुव-रमहा-ध्यात-बलवि-ज्ञात-विख्या-त ।
गरळ-भुग्भव-रोग-भेषज-स्वरव-रणवे-दस्थ-जीवे-
श्वरवि-भीषण-विश्व-चेष्टक-वीत-भयभी-म ॥ ६-(६३४)

पुरुष ब्रह्म विरिञ्चि माह-
न्मरुत मुख्यप्राण धृति स्मृति
गुरुवर महाध्यात बल विज्ञात विख्यात ।
गरळभुग्भवरोगभेषज
स्वर वरण वेदस्थ जीवे-
श्वर विभीषण विश्वचेष्टक वीतभय भीम ॥

अनिल-स्थितिवै-राग्य-निधिरो-चनवि-मुक्तिग-नन्द-दशमति-
अनिमे-षेशा-निद्र-शुचिस-त्वात्म-कशरी-र ।
अणुम-हद्रू-पात्म-कामृत-हनुम-दाद्यव-तार-पद्मा-
सनप-दविस-म्प्राप्त-परिसर-आख-णाश्मस-म ॥ ७-(६३५)

अनिल स्थिति वैराग्यनिधि रो-
चन विमुक्तिगनन्द दशमति
अनिमेषेशानिद्र शुचि सत्वात्मकशरीर ।
अणु महद्रूपात्मकामृत
हनुमदाद्यवतार पद्मा-
सनपदवि सम्प्राप्त परिसर आखणाश्मसम ॥

मात-रिश्व-ब्रह्म-रुजग-न्माते-गधमा-धीन-रेनिपरु-
श्रीत-रुणिव-ल्लभनु-ईर्वरो-ळाव-कालद-लि ।
नीत-भक्ति-ज्ञान-बलरू-पाति-शयदि-न्दिद्दु-चेतन-
चेत-नगळोळु-व्याप्त-नेनिसुव-तत्त-दाह्वय-दि ॥ ८-(६३६)

मातरिश्वब्रह्मरु जग-
न्मातेगधमाधीनरेनिपरु
श्रीतरुणिवल्लभनु ईर्वरोळावकालदलि ।
नीतभक्ति ज्ञान बल रू-
पातिशयदिन्दिद्दु चेतन-
चेतनगळोळु व्याप्तनेनिसुव तत्तदाह्वयदि ॥

सरस-वतिवे-दात्मि-काभुजि-नरह-रीगुरु-भक्ति-ब्राह्मी-
परम-सुखबल-पूर्णे-श्रद्धा-प्रीति-गाय-त्रि ।
गरुड-शेषर-जननि-श्रीस-ङ्करुष-णजया-तनुजे-वाणी-
करण-निय्या-मिकेच-तुर्दश-भुवन-सन्मा-न्ये ॥ ९-(६३७)

सरसवति वेदात्मिका भुजि
नरहरी गुरुभक्ति ब्राह्मी
परमसुखबलपूर्णे श्रद्धा प्रीति गायत्रि ।
गरुड शेषर जननि श्रीस-
ङ्करुषणजयातनुजे वाणी
करण निय्यामिके चतुर्दशभुवनसन्मान्ये ॥

काळि-काशिजे-विप्र-जापा-श्चालि-शिवक-न्येन्द्र-सेना-
काल-मानी-चन्द्र-द्युसभा-नाम-भारति-गे ।
गाळि-ब्रह्मर-युवति-यरुए-ळेळु-ऐव-त्तोन्दु-गुणदिं-
कीळ-रेनिपरु-तम्म-पतिगळि-गिन्त-आवा-ग ॥ १०-(६३८)

काळि काशिजे विप्रजा पा-
श्चालि शिवकन्येन्द्रसेना
कालमानी चन्द्र द्युसभा नाम भारतिगे ।
गाळि ब्रह्मर युवतियरु ए-
ळेळु ऐवत्तोन्दु गुणदिं
कीळरेनिपरु तम्म पतिगळिगिन्त आवाग ॥

हरिस-मीरा-वेश-नरस-ङ्करुष-णावे-शयुत-लक्ष्मण-
परम-पुरुषन-शुक्ल-केशा-वेश-बलरा-म ।
हरस-दाशिव-तपअ-हङ्कृतु-मरुत-युक्तशु-कोर्ध्व-पटत-
त्पुरुष-जयगी-षौर्व-द्रौणी-व्याध-दूर्वा-स ॥ ११-(६३९)

हरिसमीरावेशनर स-
ङ्करुषणावेशयुत लक्ष्मण
परमपुरुषन शुक्ल केशावेश बलराम ।
हर सदाशिव तप अहङ्कृतु
मरुतयुक्त शुकोर्ध्वपट त-
त्पुरुष जयगीषौर्व द्रौणी व्याध दूर्वास ॥

गरुड-शेषश-शाङ्क-दलशे-खररु-तम्मोळु-समरु-भारति-
सरसि-जासन-पत्नि-गधमरु-नूरु-गुणदि-न्द ।
हरिम-डदिजा-म्बवति-योळुश्री-तरुणि-यावे-शविहु-देन्दिगु-
कोरते-एनिपरु-गरुड-शेषरि-गैव-रैदुगु-ण ॥ १२-(६४०)

गरुड शेष शशाङ्कदलशे-
खररु तम्मोळु समरु भारति
सरसिजासनपत्निगधमरु नूरु गुणदिन्द ।
हरिमडदि जाम्बवतियोळु श्री-
तरुणियावेशविहुदेन्दिगु
कोरते एनिपरु गरुड शेषरिगैवरैदु गुण ॥

नील-भद्रा-मित्र-विन्दा-मेले-निपका-ळिन्दि-लक्षणे-
बाले-यरिगि-न्तधम-वारुणि-सौप-रणिगिरि-ज ।
श्रील-कुमियुत-रेव-तीसिरि-मूल-रूपदि-पेय-ळेनिपळु-
शैल-जाद्यरु-दशगु-णाधम-तम्म-पतिगळि-गे ॥ १३-(६४१)

नील भद्रा मित्रविन्दा
मेलेनिप काळिन्दि लक्षणे
बालेयरिगिन्तधम वारुणि सौपरणि गिरिज ।
श्रीलकुमियुतरेवती सिरि
मूलरूपदि पेयळेनिपळु
शैलजाद्यरु दशगुणाधम तम्म पतिगळिगे ॥

नरह-रीरा-वेश-संयुत-नरपु-रन्दर-गाधि-कुशम-
न्दरद्यु-मननुवि-कुक्षि-वाली-इन्द्र-नवता-र ।
भरत-ब्रह्मा-विष्ट-साम्बसु-दरुश-नप्र-द्युम्न-सनका-
द्यरोळ-गिप्पस-नत्कु-मारनु-षण्मु-खनुका-म ॥ १४-(६४२)

नरहरीरावेशसंयुत
नर पुरन्दर गाधि कुश म-
न्दरद्युमननु विकुक्षि वाली इन्द्रनवतार ।
भरत ब्रह्माविष्टसाम्ब सु-
दरुशन प्रद्युम्न सनका-
द्यरोळगिप्प सनत्कुमारनु षण्मुखनु काम ॥

ईर-यिदुगुण-कडिमे-पार्वति-वारु-णीयरि-गिन्द्र-कामश-
रीर-मानि-प्राण-दशगुण-अवर-शक्रनि-गे ।
मार-जारति-दक्ष-गुरुवृ-त्रारि-जाया-शचिस्व-यम्भुव-
आरु-जनसम-प्राण-गवररु-हत्तु-गुणदि-न्द ॥ १५-(६४३)

ईरयिदु गुण कडिमे पार्वति
वारुणीयरिगिन्द्र काम श-
रीरमानिप्राण दशगुण अवर शक्रनिगे ।
मारजा रति दक्ष गुरु वृ-
त्रारिजायाशचि स्वयम्भुव
आरु जन सम प्राणगवररु हत्तु गुणदिन्द ॥

काम-पुत्त्रनि-रुद्ध-सीता-राम-नानुज-शतृ-हनबल-
राम-नानुज-पौत्त्र-ननिरु-द्धनोळ-गनिरु-द्ध ।
काम-भार्या-रुग्म-वतिस-न्नाम-लक्षणे-एनिसु-वळुपौ-
लोमि-चित्रा-ङ्गदेयु-तारा-एरडु-पेसरुग-ळु ॥ १६-(६४४)

कामपुत्त्रनिरुद्ध सीता-
रामनानुज शतृहन बल-
रामनानुज पौत्त्रननिरुद्धनोळगनिरुद्ध ।
कामभार्या रुग्मवति स-
न्नामलक्षणे एनिसुवळु पौ-
लोमि चित्राङ्गदेयु तारा एरडु पेसरुगळु ॥

तार-नामक-त्रेते-योळुसी-तार-मणना-राधि-सिदनुस-
मीर-युक्तो-द्धवनु-कृष्णगे-प्रीय-नेनिसिद-नु ।
वारि-जासन-युक्त-द्रोणनु-मूरि-ळेयोळुबृ-हस्प-तिगेअव-
तार-वेम्बरु-भार-तमहा-तात्प-रियदोळ-गे ॥ १७-(६४५)

तारनामक त्रेतेयोळु सी-
तारमणनाराधिसिदनु स-
मीरयुक्तोद्धवनु कृष्णगे प्रीयनेनिसिदनु ।
वारिजासनयुक्त द्रोणनु
मूरिळेयोळु बृहस्पतिगे अव-
तारवेम्बरु भारतमहातात्परियदोळगे ॥

मनुमु-खाद्यरि-गिन्त-लिप्रवह-गुणदि-पञ्चक-नीच-नेनिसुव-
इनश-शाङ्करु-धर्म-मानवि-एरडु-गुणदि-न्द-
कनिय-रेनिपरु-प्रवह-गिन्तलि-दिनप-शशियम-धर्म-रूपग-
ळनुदि-नदिचि-न्तिपरु-सन्तरु-सर्व-कालद-लि ॥ १८-(६४६)

मनुमुखाद्यरिगिन्तलि प्रवह
गुणदि पञ्चक नीचनेनिसुव
इन शशाङ्करु धर्म मानवि एरडु गुणदिन्द
कनियरेनिपरु प्रवहगिन्तलि
दिनप शशि यमधर्म रूपग-
ळनुदिनदि चिन्तिपरु सन्तरु सर्वकालदलि ॥

मरुत-नावे-शयुत-धर्मज-करडि-विदुरनु-सत्य-जितुई-
रेरडु-धर्मन-रूप-ब्रह्मा-विष्ट-सुग्री-व ।
हरिय-रूपा-विष्ट-कर्णनु-तरणि-गेरडव-तार-चन्द्रम-
सुरप-नावेश-युत-अङ्गद-नेनिसि-कोळुति-प्प ॥ १९-(६४७)

मरुतनावेशयुत धर्मज
करडि विदुरनु सत्यजितु ई-
रेरडु धर्मनरूप ब्रह्माविष्टसुग्रीव ।
हरिय रूपाविष्टकर्णनु
तरणिगेरडवतार चन्द्रम
सुरपनावेशयुत अङ्गदनेनिसिकोळुतिप्प ॥

तरणि-गिन्तलि-पाद-पादरे-वरुण-नीचनु-महभि-षक्द-
र्दुरसु-षेणनु-शन्तु-नुवुना-ल्वरुव-रुणरू-प ।
सुरमु-नीना-रदनु-किश्वि-त्कोरते-वरुणगे-अग्नि-भृगुअज-
गोरळ-पत्निप्र-सूति-मूवरु-नार-दनिगध-म ॥ २०-(६४८)

तरणिगिन्तलि पाद पादरे
वरुणनीचनु महभिषक् द-
र्दुर सुषेणनु शन्तुनुवु नाल्वरु वरुणरूप ।
सुरमुनीनारदनु किश्वि-
त्कोरते वरुणगे अग्नि भृगु अज-
गोरळपत्निप्रसूति मूवरु नारदनिगधम ॥

नील-धृष्ट-द्युम्न-लवइवु-लेलि-हानन-रूप-गळुभृगु-
काल-लोद्दुद-रिन्द-हरियनु-व्याध-नेनिसिद-रु ।
एळु-ऋषिगळि-गुत्त-मरुमुनि-मौळि-नारद-गधम-मूवरु-
गाळि-युतप्र-ह्लाद-बाह्लिक-राय-नेनिसिद-नु ॥ २१-(६४९)

नील धृष्टद्युम्न लव इवु
लेलिहानन रूपगळु भृगु
काललोद्दुदरिन्द हरियनु व्याधनेनिसिदरु ।
एळु ऋषिगळिगुत्तमरु मुनि-
मौळिनारदगधम मूवरु
गाळियुत प्रह्लाद बाह्लिकरायनेनिसिदनु ॥

जनप-कर्मज-रोळगे-नारद-मुनिय-नुग्रह-बलदि-प्रह्ला-
दनल-भृगुमुनि-दक्ष-पत्निगे-समने-निसिको-म्ब ।
मनुवि-वस्वा-न्गाधि-जेर्वरु-अनल-गिन्तलि-किश्रि-ताधम-
रेणेए-निसुवरु-सप्त-ऋषिगळि-गेल्ल-कालद-लि ॥ २२-(६५०)

जनप कर्मजरोळगे नारद-
मुनियनुग्रहबलदि प्रह्ला-
दनल भृगुमुनि दक्षपत्निगे समनेनिसिकोम्ब ।
मनु विवस्वान्गाधिजेर्वरु
अनलगिन्तलि किश्चिताधम-
रेणे एनिसुवरु सप्तऋषिगळिगेल्लकालदलि ॥

कमल-सम्भव-भवरे-निपसं-यमिम-रीचियु-अत्रि-अङ्गिर-
सुमति-पुलहा-क्रतुव-सिष्ठपु-लस्त्य-मुनिस्वा-ह-
रमण-गधमरु-मित्र-नामक-द्युमणि-राहू-युक्त-भीष्मक-
यमळ-रूपनु-तार-नामक-नेनिप-त्रेतेयो-ळु ॥ २३-(६५१)

कमलसम्भवभवरेनिप सं-
यमि मरीचियु अत्रि अङ्गिर
सुमतिपुलहा क्रतु वसिष्ठ पुलस्त्यमुनि स्वाहा-
रमणगधमरु मित्रनामक
द्युमणि राहूयुक्तभीष्मक
यमळरूपनु तारनामकनेनिप त्रेतेयोळु ॥

निऋति-गेरडव-तार-दुर्मुख-हरयु-तघटो-त्कचनु-प्रावहि-
गुरुम-डदिता-रास-मरुप-र्जन्य-गुत्तम-रु ।
करिगो-रळसं-युक्त-भगद-त्तरसु-कत्थन-धनप-रूपग-
ळेरडु-विघ्नप-चारु-धेष्णनु-अश्वि-निगळुस-म ॥ २४-(६५२)

निऋतिगेरडवतार दुर्मुख
हरयुतघटोत्कचनुप्रावहि
गुरुमडदितारा समरु पर्जन्यगुत्तमरु ।
करिगोरळसंयुक्तभगद-
त्तरसु कत्थन धनपरूपग-
ळेरडु विघ्नप चारुधेष्णनु अश्विनिगळु सम ॥

द्रोण-ध्रुवदो-षार्क-अग्नि-प्राण-द्युविभा-वसुग-ळेण्टुकृ-
शानु-श्रेष्ठद्यु-नाम-वसुभी-ष्मार्य-ब्रह्मयु-त ।
द्रोण-नामक-नन्द-गोपप्र-धान-अग्निय-नुळिदु-एळुस-
मान-रेनिपरु-तम्मो-ळगेज्ञा-नादि-गुणदि-न्द ॥ २५-(६५३)

द्रोण ध्रुव दोषार्क अग्नि
प्राण द्यु विभा वसुगळेण्टु कृ-
शानु श्रेष्ठ द्युनामवसुभीष्मार्यब्रह्मयुत ।
द्रोणनामकनन्दगोप प्र-
धान अग्नियनुळिदु एळु स-
मानरेनिपरु तम्मोळगे ज्ञानादि गुणदिन्द ॥

भीम-रैवत-ओज-जैकप-दाम-हन्बहु-रूप-कनुभव-
वाम-उग्रवृ-षाक-पिअहि-र्बुध्नि-एनुति-प्प ।
ईम-हात्मर-मध्य-दोळगेउ-माम-नोहर-नुत्त-मनुदश-
नाम-करुसम-रेनिसि-कोम्बरु-तम्मो-ळेन्दे-न्दु ॥ २६-(६५४)

भीम रैवत ओजजैकप-
दामहन् बहुरूपकनु भव
वाम उग्र वृषाकपि अहिर्बुध्नि एनुतिप्प ।
ई महात्मर मध्यदोळगे उ-
मामनोहरनुत्तमनु दश-
नामकरु समरेनिसिकोम्बरु तम्मोळेन्देन्दु ॥

भूर्यजैकपदाह्नहिर्बु-
ध्नीरयिदु रुद्रगणसंयुत
भूरिश्रवनेन्देनिप शल विरुपाक्षनामकनु ।
सूरिकृप विष्कम्भ सहदे-
वारणाग्रणिसोमदत्तनु
ता रचिसिद द्विरूप धरेयोळु पत्रतापकनु ॥

भूर्य-जैकप-दाह्न-हिर्बु-ध्नीर-यिदुरु-द्रगण-संयुत-
भूरि-श्रवने-न्देनिप-शलविरु-पाक्ष-नामक-नु ।
सूरि-कृपवि-ष्कम्भ-सहदे-वार-णाग्रणि-सोम-दत्तनु-
तार-चिसिदद्वि-रूप-धरेयोळु-पत्र-तापक-नु ॥ २७-(६५५)

देव-शक्र-उरुक्र-मनुमि-त्राव-रुणप-र्जन्य-भगपू-
षावि-वस्व-न्सवितृ-धाता-आर्य-मत्व-ष्ट ।
देव-कीसुत-नलिस-वितृवि-भाव-सूसुत-भानु-एनिसुव-
ज्याव-नपयुत-वीर-सेननु-त्वष्ट-नामक-नु ॥ २८-(६५६)

देवशक्र उरुक्रमनु मि-
त्रा वरुण पर्जन्य भग पू-
षा विवस्वन्सवितृ धाता आर्यम त्वष्ट ।
देवकीसुतनलि सवितृ वि-
भावसूसुत भानु एनिसुव
ज्यावनपयुत वीरसेननु त्वष्टनामकनु ॥

एरड-धिकदश-सूर्य-रोळुमू-रेरडु-जनरु-त्तमवि-वस्वा-
न्वरुण-शक्रउ-रुक्र-मनुप-र्जन्य-मित्रा-ख्य ।
मरुत-नावे-शयुत-पाण्डुअ-वरप-रावह-नेन्दे-निपके-
सरिमृ-गपस-म्पाति-श्वेत-त्रयरु-मरुदं-श ॥ २९-(६५७)

एरडधिकदश सूर्यरोळु मू-
रेरडु जनरुत्तम विवस्वा-
न्वरुण शक्र उरुक्रमनु पर्जन्य मित्राख्य ।
मरुतनावेशयुतपाण्डु अ-
वर परावहनेन्देनिप के-
सरिमृगप सम्पाति श्वेतत्रयरु मरुदंश ॥

प्रतिभ-वातनु-चेकि-तनुवि-पृथुए-निसुवनु-सौम्य-मारुत-
वितत-शर्वो-त्तुङ्ग-गजना-मकनु-प्राणां-श ।
द्वितिय-पानग-वाक्ष-गवयनु-तृतिय-व्यानउ-दान-वृषप-
र्वतुल-शर्व-त्रात-गन्धसु-माद-नसमा-न ॥ ३०-(६५८)

प्रतिभवातनु चेकितनु वि-
पृथु एनिसुवनु सौम्यमारुत
वितत शर्वोत्तुङ्ग गजनामकनु प्राणांश ।
द्वितियपान गवाक्ष गवयनु
तृतियव्यान उदान वृषप-
र्वतुल शर्वत्रात गन्धसुमादन समान ॥

ऐव-रोळगी-कुन्ति-भोजनु-आवि-नामक-नाग-क्रकळनु-
देव-दत्तध-नञ्ज-यरुअव-तार-वर्जित-रु ।
आव-होद्वह-विवह-संवह-प्राव-हीपति-मरुत-प्रवहनि-
गाव-कालकु-किञ्चि-तधमरु-मरुत-गणवे-ल्ल ॥ ३१-(६५९)

ऐवरोळगीकुन्तिभोजनु
आविनामक नाग क्रकळनु
देवदत्त धनञ्जयरु अवतार वर्जितरु ।
आवहोद्वह विवह संवह
प्रावहीपतिमरुतप्रवहनि-
गावकालकु किञ्चितधमरु मरुतगणवेल्ल ॥

प्राण-पान-व्यानु-दानस-मान-रैवरु-उळिद-मरुतरु-
ऊन-रेनिपरु-हत्तु-विश्वे-देव-रवरि-न्द-
सूनु-गळुएनि-सुवरु-ऐवरु-मानि-नीद्रौ-पतिगे-केलवरु-
क्षोणि-योळुकै-केय-रेनिसुव-रेल्ल-कालद-लि ॥ ३२-(६६०)

प्राणपान व्यानुदान स-
मानरैवरु उळिद मरुतरु
ऊनरेनिपरु हत्तु विश्वेदेवरवरिन्द
सूनुगळु एनिसुवरु ऐवरु
मानिनी द्रौपतिगे केलवरु
क्षोणियोळु कैकेयरेनिसुवरेल्लकालदलि ॥

प्रतिवि-न्ध्यसुत-सोम-श्रुतकी-रुतिश-तानिक-श्रुतक-र्मद्रौ-
पतिकु-वररिव-रोळगे-अभिता-म्रप्र-मुखचि-त्र-
रथनु-गोपकि-शोर-बलरे-म्बतुल-रैग-न्धर्व-रिन्दलि-
युतरु-धर्मवृ-कोद-रादिज-रेन्दु-करेसुव-रु ॥ ३३-(६६१)

प्रतिविन्ध्य सुतसोम श्रुतकी-
रुति शतानिक श्रुतकर्म द्रौ-
पतिकुवररिवरोळगे अभिताम्र प्रमुख चित्र-
रथनु गोप किशोर बलरे-
म्बतुलरैगन्धर्वरिन्दलि-
युतरु धर्म वृकोदरादिजरेन्दु करेसुवरु ॥

विविद-मैन्दरु-नकुल-सहदे-वविभु-त्रिशिखा-श्विनिग-ळिवरोळु-
दिविप-नावे-शविहु-देन्दिगु-द्याव-पृथ्विक्र-भु ।
पवन-सुतवि-ष्वक्से-नउमा-कुवर-विघ्नप-धनप-मोदला-
दवरु-मित्रगे-किश्रि-ताध-मरेनिसि-कोळुतिह-रु ॥ ३४-(६६२)

विविद मैन्दरु नकुल सहदे-
व विभु त्रिशिखाश्विनिगळिवरोळु
दिविपनावेशविहुदेन्दिगु द्याव पृथ्वि ऋभु ।
पवनसुत विष्वक्सेन उमा-
कुवर विघ्नप धनपमोदला-
दवरु मित्रगे किञ्चिताधमरेनिसिकोळुतिहरु ॥

पाव-कग्निकु-मार-नेनिसुव-च्याव-नरुच-थ्यमुनि-चाक्षुष-
रैव-तस्वा-रोचि-षोत्तम-ब्रह्म-रुद्रे-न्द्र ।
देव-धर्मनु-दक्ष-नामक-साव-रणिशश-बिन्दु-पृथुप्री-
याव्र-तनुमा-न्धात-गयनुक-कुत्स्थ-दौष्ष-न्ति ॥ ३५-(६६३)

पावकग्निकुमारनेनिसुव
च्यावनरुचथ्यमुनि चाक्षुष
रैवत स्वारोचिषोत्तम ब्रह्म रुद्रेन्द्र ।
देवधर्मनु दक्षनामक
सावरणि शशबिन्दु पृथु प्री-
याव्रतनु मान्धात गयनु ककुत्स्थ दौष्षन्ति ॥

भरत-ऋषभज-हरिणि-जद्विज-भरत-मोदला-दखिल-रायरो-
ळिरुति-हुदुश्री-विष्णु-प्राणा-वेश-प्रतिदिन-दि ।
वरदि-वस्पति-शम्भु-अद्भुत-करेसु-वनुबलि-श्रुत-विधृत-
नेरेशु-चीऋत-धाम-सप्ते-न्द्रष्ट-गन्ध-र्व ॥ ३६-(६६४)

भरत ऋषभज हरिणिज द्विज
भरतमोदलादखिल रायरो-
ळिरुतिहुदु श्रीविष्णुप्राणावेश प्रतिदिनदि ।
वरदिवस्पति शम्भु अद्भुत
करेसुवनु बलि श्रुत विधृत
नेरेशुची ऋतधाम सप्तेन्द्रष्टगन्धर्व ॥

अरसु-गळुक-र्मजरु-वैश्वा-नरग-धमशत-गुणदि-विघ्ने-
श्वरगे-किश्रि-द्रुणक-डिमेबलि-मुख्य-पावक-रु ।
शरभ-पर्ज-न्याख्य-मेघप-तरणि-भार्या-सञ्ज्ञे-शार्वरि-
करन-पत्नियु-रोहि-णीश्या-मलेये-देवकि-यु- ३७-(६६५)

अरसुगळु कर्मजरु वैश्वा-
नरगधम शतगुणदि विघ्ने-
श्वरगे किञ्चिद्रुण कडिमे बलिमुख्यपावकरु ।
शरभपर्जन्याख्यमेघप
तरणिभार्यासञ्ज्ञे शार्वरि
करन पत्नियु रोहिणी श्यामलेये देवकियु

अरसि-येनिपळु-धर्म-राजगे-वरुण-भार्यो-षादि-षट्करु-
कोरते-एनिपरु-पाव-काद्यरि-गेरडु-गुणदि-न्द ।
एरडु-मूर्जन-कधम-स्वाहा-करेसु-वळुषा-देवि-वैश्वा-
नरम-डदिगेद-शगुण-अवरळु-अश्वि-नीभा-र्य ॥ ३८-(६६६)

अरसियेनिपळु धर्मराजगे
वरुणभार्योषादि षट्करु
कोरते एनिपरु पावकाद्यरिगेरडु गुणदिन्द ।
एरडु मूर्जनकधम स्वाहा
करेसुवळुषादेवि वैश्वा-
नरमडदिगे दशगुण अवरळु अश्विनीभार्य ॥

सुदरु-शनश-क्रादि-सुरयुत-बुधनु-तानभि-मन्यु-वेनिसुव-
बुधनि-गिन्त-श्विनिय-भार्या-शल्य-मागध-र
उदर-जेउषा-देवि-गिन्तलि-अधम-नेनिपश-नैश्च-रनुशनि-
गधम-पुष्कर-कर्म-पनुएनि-सुवनु-बुधरि-न्द ॥ ३९-(६६७)

सुदरुशन शक्रादि सुरयुत
बुधनु तानभिमन्युवेनिसुव
बुधनिगिन्तश्विनियभार्या शल्यमागधर
उदरजे उषादेविगिन्तलि
अधमनेनिप शनैश्चरनु शनि-
गधम पुष्कर कर्मपनु एनिसुवनु बुधरिन्द ॥

उद्ध-हामरु-तान्वि-तविरा-धद्वि-तियस-ञ्जयनु-तुम्बुरु-
विद्ध-दुत्तम-जनमे-जयत्व-ष्टृयुत-चित्रर-थ ।
सद्धि-नुतदम-घोष-ककब-न्धद्ध-यरुग-न्धर्व-दनुमनु-
पद्म-सम्भव-युतकि-शोर-क्रूर-नेनिसुव-नु ॥ ४०-(६६८)

उद्धहामरुतान्वितविरा-
ध द्वितिय सञ्जयनु तुम्बुरु
विद्वदुत्तम जनमेजय त्वष्टृयुतचित्ररथ ।
सद्विनुत दमघोषक कब-
न्धद्वयरु गन्धर्वदनु मनु
पद्मसम्भवयुतकिशोरक्रूरनेनिसुवनु ॥

वायु-युतधृत-राष्ट्र-दिविजर-गाय-कनुधृत-राष्ट्र-नक्रनु-
राय-द्रुपदा-वहवि-शिष्टनु-हूहु-गन्ध-र्व ।
नाय-कविरा-ड्विवह-युतहह-ज्ञेय-विद्या-धरने-अजगर-
ताये-निसुवनु-उग्र-सेनने-उग्र-सेना-ख्य ॥ ४१-(६६९)

वायुयुतधृतराष्ट्र दिविजर
गायकनु धृतराष्ट्र नक्रनु
रायद्रुपदावहविशिष्टनु हूहुगन्धर्व ।
नायक विराड्विवहयुत हह
ज्ञेय विद्याधरने अजगर
तायेनिसुवनु उग्रसेनने उग्रसेनाख्य ॥

बिसज-सम्भव-युक्त-विश्वा-वसुयु-धाम-न्युत्त-मौजस-
बिसज-मित्रा-र्यमयु-तपरा-वसुए-निसुति-प्प ।
असम-मित्रा-न्वितनु-सत्यजितु-वसुधे-योळुचि-त्रसेन-मृता-
न्धसर-गायक-रेन्दु-करेसुव-राव-कालद-लि ॥ ४२-(६७०)

बिसजसम्भवयुक्तविश्वा-
वसु युधामन्युत्तमौजस
बिसजमित्रार्यमयुत परावसु एनिसुतिप्प ।
असम मित्रान्वितनु सत्यजितु
वसुधेयोळु चित्रसेनमृता-
न्धसर गायकरेन्दु करेसुवरावकालदलि ॥

उळिद-गन्ध-र्वरुग-ळेल्लरु-बलिमो-दलुगो-पाल-रेनिपरु-
इळेयो-ळगेसै-रेन्द्रि-पिङ्गले-अप्स-रस्त्री-यु ।
तिलोत-मेयुपू-र्वदलि-नकुलन-ललने-पार्वति-एनिसु-वळुगो-
कुलद-गोपिय-रेल्ल-शबरी-मुख्य-अप्सर-रु ॥ ४३-(६७१)

उळिद गन्धर्वरुगळेल्लरु
बलिमोदलु गोपालरेनिपरु
इळेयोळगे सैरेन्द्रि पिङ्गले अप्सरस्त्रीयु ।
तिलोतमेयु पूर्वदलि नकुलन
ललनेपार्वति एनिसुवळु गो-
कुलद गोपियरेल्ल शबरीमुख्य अप्सररु ॥

कृष्ण-वर्त्मन-सुतरो-ळगेशत-द्व्यष्ट-साविर-स्त्रीय-रल्लिप्र-
विष्ट-ळागिर-माम्ब-तत्त-न्नाम-रूपद-लि ।
कृष्ण-महिषिय-रोळगे-इप्पळु-त्वष्ट्र-पुत्रिक-शेरु-इवरोळु-
श्रेष्ठ-ळेनिपळु-उळिद-ऋषिगण-गोपि-कासम-रु ॥ ४४-(६७२)

कृष्णवर्त्मन सुतरोळगे शत-
द्व्यष्ट साविर स्त्रीयरल्लि प्र-
विष्टळागि रमाम्ब तत्तन्नाम रूपदलि ।
कृष्णमहिषियरोळगे इप्पळु
त्वष्टृपुत्रिकशेरु इवरोळु
श्रेष्ठळेनिपळु उळिद ऋषिगण गोपिकासमरु ॥

सूनु-गळुएनि-सुवरु-देवकृ-शानु-विगेक्रतु-सिन्धु-शुचिपव-
मान-कौशिक-रैदु-तुम्बुरु-ऊर्व-शीशत-रु ।
मेन-काऋषि-राय-रुगळा-जान-सुररिगे-समरे-निपरुसु-
राण-करना-ख्यात-दिविजर-जनक-रेनिसुव-रु ॥ ४५-(६७३)

सूनुगळु एनिसुवरु देवकृ-
शानुविगे क्रतु सिन्धु शुचि पव-
मान कौशिकरैदु तुम्बुरु ऊर्वशीशतरु ।
मेनका ऋषिरायरुगळा-
जान सुररिगे समरेनिपरु सु-
राणकरनाख्यातदिविजर जनकरेनिसुवरु ॥

पाव-करिगि-न्तधम-रेनिसुव-देव-कुलजा-नाख्य-सुरगण-
कोवि-दरुना-नासु-विद्यदि-स्वोत्त-मरनि-त्य-
सेवि-परुस-द्भक्ति-पूर्वक-स्वाव-रिरिगुप-देशि-सुवरुनि-
राव-लम्बन-विमल-गुणगळ-प्रतिदि-वसद-ल्लि ॥ ४६-(६७४)

पावकरिगिन्तधमरेनिसुव
देवकुलजानाख्यसुरगण
कोविदरु नाना सुविद्यदि स्वोत्तमर नित्य
सेविपरु सद्भक्तिपूर्वक
स्वावररिगुपदेशिसुवरु नि-
रावलम्बन विमलगुणगळ प्रतिदिवसदल्लि ॥

सुररो-ळगेव-र्णाश्र-मगळे-म्बेरडु-धर्मग-ळिल्ल-तम्मोळु-
निरुप-मरुए-न्देनिसि-कोम्बरु-तार-तम्यद-लि ।
गुरुसु-शिष्य-त्ववुक्र-षिगळोळ-गिरुति-हुदुआ-जान-सुररिगे-
चिरपि-तृशता-धमरे-निसुवरु-एळु-जनरुळि-दु ॥ ४७-(६७५)

सुररोळगे वर्णाश्रमगळे-
म्बेरडु धर्मगळिल्ल तम्मोळु
निरुपमरु एन्देनिसिकोम्बरु तारतम्यदलि ।
गुरु सुशिष्यत्ववु ऋषिगळोळ-
गिरुतिहुदु आजानसुररिगे
चिरपितृ शताधमरेनिसुवरु एळु जनरुळिदु ॥

चिरपि-तरुगळि-गधम-गन्ध-र्वरुग-ळेनिपरु-देव-नामक-
कोरते-एनिसुव-चक्र-वर्तिग-ळिन्द-गन्ध-र्व-
नररु-उत्तम-रेनिसु-वरुह-न्नेरडु-एम्भ-त्तेण्टु-गुणदलि-
हिरिय-रेनिपरु-क्रमदि-देवा-वेश-बलदि-न्द ॥ ४८-(६७६)

चिरपितरुगळिगधम गन्ध-
र्वरुगळेनिपरु देवनामक
कोरते एनिसुव चक्रवर्तिगळिन्द गन्धर्व
नररु उत्तमरेनिसुवरु ह-
न्नेरडु एम्भत्तेण्टु गुणदलि
हिरियरेनिपरु क्रमदि देवावेश बलदिन्द ॥

देव-तेगळिं-प्रेष्य-रेनिपरु-देव-गन्ध-र्वरुग-ळवरि-
न्दाव-कालकु-शिक्षि-तरुनर-नाम-गन्ध-र्व ।
केव-लतिस-द्भक्ति-पूर्वक-याव-दिन्द्रिय-गळनि-यामक-
श्रीव-रनेए-न्दरिदु-भजिपरु-मानु-षोत्तम-रु ॥ ४९-(६७७)

देवतेगळिं प्रेष्यरेनिपरु
देवगन्धर्वरुगळवरि-
न्दावकालकु शिक्षितरु नरनामगन्धर्व ।
केवलतिसद्भक्तिपूर्वक
यावदिन्द्रियगळ नियामक
श्रीवरने एन्दरिदु भजिपरु मानुषोत्तमरु ॥

बाद-रायण-भाग-वतमोद-लाद-शास्त्रग-ळल्लि-बहुविध-
द्वाद-शदशसु-पञ्च-विंशति-शतस-हस्रयु-त ।
भेद-गळपे-ळिदरु-स्वोत्तम-रादि-तेया-वेश-बलदिवि-
रोध-चिन्तिस-बार-दिदुसा-धुजन-सम्मत-वु ॥ ५०-(६७८)

बादरायण भागवतमोद-
लाद शास्त्रगळल्लि बहुविध
द्वादश दश सुपञ्चविंशति शत सहस्रयुत ।
भेदगळ पेळिदरु स्वोत्तम-
रादितेयावेश बलदि वि-
रोध चिन्तिसबारदिदु साधुजन सम्मतवु ॥

इवरु-मुक्ती-योग्य-रेनिपरु-श्रवण-मनना-दिगळ-परमो-
त्सवदि-माडुत-केळि-नलियुत-धर्म-कामा-र्थ ।
त्रिविध-फलगळ-पेक्षि-सदेश्री-पवन-मुखदे-वान्त-रात्मक-
प्रवर-तमशि-ष्टेष्ट-दायक-नेन्दु-स्मरिसुव-रु ॥ ५१-(६७९)

इवरु मुक्तीयोग्यरेनिपरु
श्रवण मननादिगळ परमो-
त्सवदि माडुत केळि नलियुत धर्म कामार्थ ।
त्रिविध फलगळपेक्षिसदे श्री-
पवनमुख देवान्तरात्मक
प्रवरतम शिष्टेष्टदायकनेन्दु स्मरिसुवरु ॥

नित्य-संसा-रिगळु-गुणदो-पात्म-करुब्र-ह्मादि-जीवर-
भृत्य-रेम्बरु-राज-नोपा-दियलि-हरिए-न्दु ।
कृत्ति-वासनु-ब्रह्म-श्रीवि-ष्णुत्र-यरुसम-दुःख-सुखउ-
त्पत्ति-मृतिभय-पेळु-वरुअव-तार-गळिगेस-द ॥ ५२-(६८०)

नित्यसंसारिगळु गुणदो-
पात्मकरु ब्रह्मादि जीवर
भृत्यरेम्बरु राजनोपादियलि हरि एन्दु ।
कृत्तिवासनु ब्रह्म श्रीवि-
ष्णुत्रयरु सम दुःख सुख उ-
त्पत्ति मृति भय पेळुवरु अवतारगळिगे सद ॥

तार-तम्य-ज्ञान-विल्लदे-सूरि-गळनि-न्दिसुत-नित्यदि-
तोरु-तिप्परु-सुजन-रोपा-दियलि-नररोळ-गे ।
क्रूर-कर्मा-सक्त-रागिश-रीर-पोषणे-गोसु-गदिस-
श्चार-माळपरु-अन्य-देवते-नीच-रालय-दि ॥ ५३-(६८१)

तारतम्यज्ञानविल्लदे
सूरिगळ निन्दिसुत नित्यदि
तोरुतिप्परु सुजनरोपादियलि नररोळगे ।
क्रूरकर्मासक्तरागि श-
रीर पोषणेगोसुगदि स-
श्चार माळपरु अन्यदेवते नीचरालयदि ॥

दशप्र-मतियम-ताब्धि-योळुसुम-नसरे-निपर-त्नगळ-अवलो-
किसिते-गेदुप्रा-कृतसु-भाषा-तन्तु-गळरचि-सि ।
असुप-तिश्री-रमण-गेसम-र्पिसिदे-सज्जन-रिदनु-सन्तो-
षिसलि-दोषग-ळेणिस-दले-कारुण्य-दलिनि-त्य ॥ ५४-(६८२)

दशप्रमतिय मताब्धियोळु सुम-
नसरेनिप रत्नगळ अवलो-
किसि तेगेदु प्राकृत सुभाषातन्तुगळ रचिसि ।
असुपति श्रीरमणगे सम-
र्पिसिदे सज्जनरिदनु सन्तो-
षिसलि दोषगळेणिसदले कारुण्यदलि नित्य ॥

निरुप-मश्री-विष्णु-लकुमी-सरसि-जोद्भव-वायु-वाणी-
गरुड-षण्महि-षियरु-पार्वति-शक्र-स्मरप्रा-ण ।
गुरुबृ-हस्पति-प्रवह-सूर्यनु-वरुण-नारद-वह्नि-सप्ता-
ङ्गिररु-मित्रग-णेश-पृथुग-ङ्गास्व-हाबुध-नु ॥ ५५-(६८३)

निरुपमश्रीविष्णु लकुमी
सरसिजोद्भव वायु वाणी
गरुड षण्महिषियरु पार्वति शक्र स्मर प्राण ।
गुरुबृहस्पति प्रवह सूर्यनु
वरुण नारद वह्नि सप्ता-
ङ्गिररु मित्र गणेश पृथु गङ्गा स्वहा बुधनु ॥

तरणि-तनय-शनैश्च-रनुपु-ष्करन-जानज-चिरपि-तरुग-
न्धरुव-रीर्वरु-देव-मानुष-चक्र-वर्तिग-ळु ।
नररो-ळुत्तम-मध्य-माधम-करेसु-वरुम-ध्योत्त-मरुई-
रेरडु-जनकै-वल्य-मार्ग-स्थरे-न्दानमि-पे ॥ ५६-(६८४)

तरणितनयशनैश्चरनु पु-
ष्करनजानज चिरपितरु ग-
न्धरुवरीर्वरु देवमानुष चक्रवर्तिगळु ।
नररोळुत्तम मध्यमाधम
करेसुवरु मध्योत्तमरु ई-
रेरडु जन कैवल्यमार्गस्थरेन्दानमिपे ॥

सार-भक्ति-ज्ञान-दिबृह-त्तार-तम्यव-नरितु-पठिसुव-
सूरि-गळिगनु-दिनदि-पुरुषा-र्थगळ-पूरै-सि ।
कारु-णिकमरु-तन्त-रात्मक-प्रेर-कजग-न्नाथ-विट्ठल-
तोरि-कोम्बनु-हृत्क-मलदोळु-योग्य-तेगळरि-तु ॥ ५७-(६८५)

सारभक्तिज्ञानदि बृह-
त्तारतम्यवनरितु पठिसुव
सूरिगळिगनुदिनदि पुरुषार्थगळ पूरैसि ।
कारुणिक मरुतन्तरात्मक
प्रेरक जगन्नाथविट्ठल
तोरिकोम्बनु हृत्कमलदोळु योग्यतेगळरितु ॥

॥ २१. बृहत्तारतम्यसन्धि मुगियितु ॥ (२१-६८५)
॥ श्रीमध्वेशार्पणमस्तु ॥

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

श्रील-कुमिव-ल्लभगे-समकरु-णाळु-गळना-काणे-नेल्लुकु-
चेल-नवलिगे-मेच्चि-कोट्टनु-सकल-सम्पद-व ।
केळि-दाक्षण-वस्त्र-गळपा-श्चालि-गित्तनु-दैत्य-नुदरव-
सीळि-सन्तै-सिदनु-प्रह्ला-दनकृ-पासान्द्र ॥ १-(६८६)

श्रीलकुमिवल्लभगे सम करु-
णाळुगळ ना काणेनेल्लु कु-
चेलनवलिगे मेच्चि कोट्टनु सकलसम्पदव ।
केळिदाक्षण वस्त्रगळ पा-
श्चालिगित्तनु दैत्यनुदरव
सीळि सन्तैसिदनु प्रह्लादन कृपासान्द्र ॥

देव-शर्मा-ह्वयकु-टुम्बके-जीव-नोपा-यवनु-काणदे-
देव-देवश-रण्य-रक्षिसु-रक्षि-सेनेके-ळि ।
ताओ-लिदुपा-लिसिद-सौख्यकृ-पाव-लोकन-दिन्द-ईतन-
सेवि-सदेसौ-ख्यगळ-बयसुव-रल्प-मानव-रु ॥ २-(६८७)

देवशर्माह्वय कुटुम्बके
जीवनोपायवनु काणदे
देवदेव शरण्य रक्षिसु रक्षिसेने केळि ।
ता ओलिदु पालिसिद सौख्य कृ-
पावलोकनदिन्द ईतन
सेविसदे सौख्यगळ बयसुवरल्प मानवरु ॥

श्रीनि-वासन-पोल्व-करुणिग-ळीन-लिनजा-ण्डदोळु-काणेप्र-
वीण-रादव-ररसि-नोळ्पुदु-श्रुतिपु-राणदो-ळु ।
द्रोण-भीष्मकृ-पादि-गळुकुरु-सेने-योळगिरे-अवर-वगुणग-
ळेनु-नोडदे-पालि-सिदपर-मात्म-परगति-य ॥ ३-(६८८)

श्रीनिवासन पोल्व करुणिग-
ळीनलिनजाण्डदोळु काणे प्र-
वीणरादवररसि नोळ्पुदु श्रुति पुराणदोळु ।
द्रोण भीष्म कृपादिगळु कुरु-
सेनेयोळगिरे अवरवगुणग-
ळेनु नोडदे पालिसिद परमात्म परगतिय ॥

चण्ड-विक्रम-चक्र-शङ्खव-तोण्ड-माननृ-पाल-गित्तनु-
भाण्ड-कारक-भीम-नमृदा-भरण-गळिगोलि-द ।
मण्डे-ओडेदा-काश-राजन-हेण्ड-तियनुडि-केळि-मगळिगे-
गण्ड-नेनिसिद-गहन-महिमग-दाब्ज-धरपा-णि ॥ ४-(६८९)

चण्डविक्रम चक्र शङ्खव
तोण्डमान नृपालगित्तनु
भाण्डकारकभीमन मृदाभरणगळिगोलिद ।
मण्डे ओडेदाकाशराजन
हेण्डतिय नुडि केळि मगळिगे
गण्डनेनिसिद गहनमहिम गदाब्जधरपाणि ॥

गौत-मरनिज-पत्नि-यनुपुरु-हूत-नैदिरे-काय्द-वृत्रन-
घाति-सिदपा-पवनु-नाल्कुवि-भाग-माडिद-नु ।
शात-कुम्भा-त्मककि-रीटव-कैत-वदिक-द्दोय्द-इन्द्रा-
राति-बागिल-काय्व-भक्त-त्वेन-स्वीकरि-सि ॥ ५-(६९०)

गौतमर निजपत्नियनु पुरु-
हूतनैदिरे काय्द वृत्रन
घातिसिद पापवनु नाल्कु विभाग माडिदनु ।
शातकुम्भात्मक किरीटव
कैतवदि कद्दोय्द इन्द्रा-
रातिबागिल काय्व भक्तत्वेन स्वीकरिसि ॥

नार-नन्द-व्रजद-स्त्रीयर-जार-कर्मके-ओलिद-अजसुकु-
मार-नेनिसिद-नन्द-गोपगे-नलिन-भवजन-क ।
वैर-वर्जित-दैत्य-रनुसं-हार-माडिद-विपग-मनपेग-
लेरि-दनुगो-पाल-करवृ-न्दाव-नदोळि-द्दु ॥ ६-(६९१)

नार नन्दव्रजद स्त्रीयर
जारकर्मके ओलिद अज सुकु-
मारनेनिसिद नन्दगोपगे नलिनभवजनक ।
वैरवर्जित दैत्यरनु सं-
हारमाडिद विपगमन पेग-
लेरिदनु गोपालकर वृन्दावनदोळिद्दु ॥

श्रीक-रार्चि-तपाद-पल्लव-गोकु-लदगो-ल्लतिय-रोलिसिद-
पाक-शासन-पूज्य-गोगो-वत्स-गळका-य्द ।
ओक-रिसिकुरु-पतिय-भोजन-स्वीक-रिसिदनु-विदुर-नौतण-
बाकु-लिकन-न्ददलि-तोरिद-भक्त-वत्सल-नु ॥ ७-(६९२)

श्रीकरार्चितपादपल्लव
गोकुलद गोल्लतियरोलिसिद
पाकशासनपूज्य गो गोवत्सगळ काय्द ।
ओकरिसि कुरुपतिय भोजन
स्वीकरिसिदनु विदुरनौतण
बाकुलिकनन्ददलि तोरिद भक्तवत्सलनु ॥

पुत्र-नेनिसिद-गोपि-देविगे-भर्तृ-वेनिसिद-व्रजद-नारिय-
उत्र-लालिसि-पर्व-तवनेग-हिदकृ-पासा-न्द्र ।
शतृ-तापनु-यज्ञ-पुरुषन-पुत्रि-यरत-न्दाळ्द-त्रिजग-
द्धात्र-मङ्गल-गात्र-परमप-वित्र-सुरमि-त्र ॥ ८-(६९३)

पुत्रनेनिसिद गोपिदेविगे
भर्तृवेनिसिद व्रजदनारिय-
उत्रलालिसि पर्वतव नेगहिद कृपासान्द्र ।
शतृतापनु यज्ञपुरुषन
पुत्रियर तन्दाळ्द त्रिजग-
द्धात्र मङ्गलगात्र परमपवित्र सुरमित्र ॥

रूप-नामवि-हीन-गर्गा-रोपि-तसुना-मदलि-करेसिद-
व्याप-कपरि-च्छिन्न-रूपदि-तोर्द-लोगरि-गे ।
द्वाप-रान्त्यदि-दैत्य-रनुस-न्ताप-गोळिसुवे-नेन्दु-श्वेत-
द्वीप-मन्दिर-नवत-रिसिसल-हिदनु-तन्नव-र ॥ ९-(६९४)

रूप नामविहीन गर्गा-
रोपित सुनामदलि करेसिद
व्यापक परिच्छिन्नरूपदि तोर्द लोगरिगे ।
द्वापरान्त्यदि दैत्यरनु स-
न्तापगोळिसुवेनेन्दु श्वेत-
द्वीपमन्दिरनवतरिसि सलहिदनु तन्नवर ॥

श्रीवि-रिञ्च्या-द्यमर-नुतना-नाव-तारव-माडि-सलहिद-
देव-तेगळनु-ऋषिग-ळनुक्षिति-परनु-मानव-र-
सेवे-गळकै-गोण्डु-फलगळ-नीव-नित्या-नन्द-मयसु-
ग्रीव-ध्रुवमोद-लाद-भकुतरि-गित्त-पुरुषा-र्थ ॥ १०-(६९५)

श्रीविरिञ्च्याद्यमरनुत ना-
नावतारव माडि सलहिद
देवतेगळनु ऋषिगळनु क्षितिपरनु मानवर
सेवेगळ कैगोण्डु फलगळ-
नीव नित्यानन्दमय सु-
ग्रीव ध्रुवमोदलाद भकुतरिगित्त पुरुषार्थ ॥

दुष्ट-दानव-हरण-सर्वो-त्कृष्ट-सद्गुण-भरित-भक्ता-
भीष्ट-दायक-भववि-नाशक-विगत-भयशो-क ।
नष्ट-तुष्टिग-ळिल्ल-सृष्ट्या-द्यष्ट-कर्तनि-गाव-कालदि-
ह्रष्ट-नागुव-स्मरणे-मात्रदि-ह्रद्गु-हावा-सि ॥ ११-(६९६)

दुष्टदानव हरण सर्वो-
त्कृष्ट सद्गुणभरित भक्ता-
भीष्टदायक भवविनाशक विगतभयशोक ।
नष्टतुष्टिगळिल्ल सृष्ट्या-
द्यष्टकर्तनिगावकालदि
ह्रष्टनागुव स्मरणे मात्रदि ह्रद्गुहावासि ॥

हिन्दे-प्रलयो-दकदि-तावरे-कन्द-नञ्सिसि-काय्द-तलेयोळु-
बान्दो-रेयपो-त्तवगो-लिदुपरि-यङ्क-पदवि-त्त ।
वन्दि-सिदवृ-न्दार-करस-द्वृन्द-कुणिसिद-सुधेय-करुणा-
सिन्धु-कमला-कान्त-बहुनि-श्चिन्त-जयव-न्त ॥ १२-(६९७)

हिन्दे प्रलयोदकदि तावरे
कन्दनञ्सिसि काय्द तलेयोळु
बान्दोरेय पोत्तवगोलिदु परियङ्कपदवित्त ।
वन्दिसिद वृन्दारकर स-
द्वृन्दकुणिसिद सुधेय करुणा-
सिन्धु कमलाकान्त बहुनिश्चिन्त जयवन्त ॥

सत्य-सङ्क-ल्पानु-सारप्र-वर्ति-सुवप्रभु-तनगे-ताने-
भृत्य-नेनिसुव-भोक्तृ-भोग्यप-दार्थ-दोळगि-द्दु ।
तत्त-दाह्वय-नागि-तर्पक-तृप्ति-बडिसुव-तत्त्व-पतिगळ-
मत्त-रादसु-र्गे-असमी-चीन-फलवी-व ॥ १३-(६९८)

सत्यसङ्कल्पानुसार प्र-
वर्तिसुव प्रभु तनगे ताने
भृत्यनेनिसुव भोक्तृ भोग्य पदार्थदोळगिद्दु ।
तत्तदाह्वयनागि तर्पक
तृप्तिबडिसुव तत्त्वपतिगळ
मत्तरादसुरर्गे असमीचीन फलवीव ॥

बिट्टि-गळनेव-दिन्द-लागलि-होट्टे-गोसुग-वाद-रागलि-
केट्ट-रोगप्र-युक्त-वागलि-अणक-दिन्दो-म्मे ।
निट्टु-सिरिनि-म्बाय्दे-रेदुहरि-विट्ट-लासल-हेन्दे-नलुकै-
गोट्टु-कावकृ-पालु-सन्तत-तन्न-भकुतर-नु ॥ १४-(६९९)

बिट्टिगळ नेवदिन्दलागलि
होट्टेगोसुगवादरागलि
केट्टरोगप्रयुक्तवागलि अणकदिन्दोम्मे ।
निट्टुसिरिनिम्बाय्देरेदु हरि-
विट्टला सलहेन्देनलु कै-
गोट्टु काव कृपालु सन्तत तन्न भकुतरनु ॥

ई-व-सुन्धरे-योळगे-श्रीभू-देवि-यरसन-सुगुण-कर्मग-
ळाव-बगेयि-न्दाद-रागलि-कीर्ति-सुवनर-र-
काव-कमलद-लाय-ताक्षकृ-पाव-लोकन-दिन्द-कपिसु-
ग्रीव-गोलिद-न्ददलि-ओलिदभि-लाषे-पूरै-प ॥ १५-(७००)

ई वसुन्धरेयोळगे श्री भू-
देवियरसन सुगुण कर्मग-
ळाव बगेयिन्दादरागलि कीर्तिसुव नरर
काव कमलदलायताक्ष कृ-
पावलोकनदिन्द कपिसु-
ग्रीवगोलिदन्ददलि ओलिदभिलाषे पूरैप ॥

चेत-नान्त-र्यामि-लकुमी-नाथ-कर्मग-ळनुस-रिसिजनि-
तोथ-विष्णो-एम्ब-श्रुतिप्रति-पाद्य-एम्मोड-ने ।
जात-नागुव-जन्म-रहितअ-कूति-नन्दन-भक्त-रिन्दा-
हूत-नागिम-नोर-थवबे-डिसिको-ळदली-व ॥ १६-(७०१)

चेतनान्तर्यामि लकुमी-
नाथ कर्मगळनुसरिसि 'जनि-
तोथविष्णो' एम्ब श्रुतिप्रतिपाद्य एम्मोडने ।
जातनागुव जन्मरहित अ-
कूतिनन्दन भक्तरिन्दा-
हूतनागि मनोरथव बेडिसिकोळदलीव ॥

नृषतु-एनिसुव-मनुज-रोळुसुर-ऋषभ-निन्द्रि-यदोळु-तत्त-
द्विषय-गळभु-ञ्जिसुव-होता-ह्वयनु-ताना-गि ।
मृषर-हितवे-ददोळु-ऋतुसतु-पेसरि-निन्दलि-करेसु-तजग-
त्प्रसवि-तनिर-न्तरदि-सन्तै-सुवनु-भकुतर-नु ॥ १७-(७०२)

नृषतु एनिसुव मनुजरोळु सुर-
ऋषभनिन्द्रियदोळु तत्त-
द्विषयगळ भुञ्जिसुव होताह्वयनु तानागि ।
मृषरहित वेददोळु ऋतुसतु
पेसरिनिन्दलि करेसुत जग-
त्प्रसवित निरन्तरदि सन्तैसुवनु भकुतरनु ॥

अब्ज-भवपित-जलध-रद्रियो-ळब्ज-गोजा-द्रिजने-निसिजल-
दुब्ब-ळेपी-यूष-दावरे-श्रीश-शाङ्करो-ळु ।
कब्बु-कदळिल-तातृ-णद्रुम-हेब्बु-गेयमा-डुतिह-गोजनु-
इब्ब-गेप्रती-कमणि-मृगगळ-सृजिप-नद्रिज-नु ॥ १८-(७०३)

अब्जभवपित जलधरद्रियो-
ळब्ज गोजाद्रिजनेनिसि जल-
दुब्बळे पीयूषदावरे श्री शशाङ्करोळु ।
कब्बु कदळि लता तृण द्रुम
हेब्बुगेय माडुतिह गोजनु
इब्बगेप्रतीक मणि मृगगळ सृजिपनद्रिजनु ॥

श्रुति-विनुतस-र्वत्र-दलिभा-रतिर-मणनोळ-गिद्दु-ताशुचि-
षतुवे-निसिजड-चेत-नरनुप-वित्र-माडुति-ह ।
अतुल-महिमा-नन्त-रूपा-च्युतने-निसिचि-द्देह-दोळुप्रा-
कृतपु-रुषन-न्ददलि-नाना-चेष्टे-गळमा-ळप ॥ १९-(७०४)

श्रुतिविनुत सर्वत्रदलि भा-
रतिरमणनोळगिद्दु ता शुचि-
षतुवेनिसि जड चेतनरनु पवित्रमाडुतिह ।
अतुल महिमानन्तरूपा-
च्युतनेनिसि चिद्देहदोळु प्रा-
कृत पुरुषनन्ददलि नानाचेष्टेगळ माळप ॥

अतिथि-एनिसुव-नन्न-मयभा-रतिर-मणनोळु-प्राण-मयप्रा-
कृतवि-षयचि-न्तनेय-माडिसु-वनुम-नोमय-नु ।
यतन-विज्ञा-नमय-बरलद-जतन-माडिसि-आत्म-जाया-
सुतर-सङ्गदि-सुखव-नीवा-नन्द-मयनेनि-सि ॥ २०-(७०५)

अतिथि एनिसुवनन्नमय भा-
रतिरमणनोळु प्राणमय प्रा-
कृत विषय चिन्तनेय माडिसुवनु मनोमयनु ।
यतन विज्ञानमय बरलद
जतनमाडिसि आत्मजाया
सुतर सङ्गदि सुखवनीवानन्दमयनेनिसि ॥

इनितु-रूपा-त्मनिगे-दोषग-ळेनितु-बप्पवु-पेळि-रैब्रा-
ह्मणकु-लोत्तम-राद-वरुनि-ष्कपट-बुद्धिय-लि ।
गुणनि-यामक-तत्त-दाह्वय-नेनिसि-कार्यव-माळप-देवन-
नेनेद-मात्रदि-दोष-राशिग-ळेल्ल-केडुतिह-वु ॥ २१-(७०६)

इनितु रूपात्मनिगे दोषग-
ळेनितु बप्पवु पेळिरै ब्रा-
ह्मण कुलोत्तमरादवरु निष्कपट बुद्धियलि ।
गुणनियामक तत्तदाह्वय-
नेनिसि कार्यव माळप देवन
नेनेदमात्रदि दोषराशिगळेल्ल केडुतिहवु ॥

कुस्थ-नेनिसुव-भूमि-योळुआ-शस्थ-नेनिसुव-दिग्व-लयदोळु-
खस्थ-नेनिपा-काशा-दोळुओ-ब्बोब्ब-रोळगि-द्दु-
व्यस्त-नेनिसुव-सर्व-रोळगेस-मस्त-नेनिसुव-बळिय-लिद्दुउ-
पस्थ-नेनिपवि-शोध-नविशु-द्धात्म-लोकदो-ळु ॥ २२-(७०७)

कुस्थनेनिसुव भूमियोळु आ-
शस्थनेनिसुव दिग्वलयदोळु
खस्थनेनिपाकाशादोळु ओब्बोब्बरोळगिद्दु
व्यस्तनेनिसुव सर्वरोळगे स-
मस्तनेनिसुव बळियलिद्दु उ-
पस्थनेनिप विशोधन विशुद्धात्म लोकदोळु ॥

ज्ञान-दनुए-न्देनिप-शास्त्रदि-मान-दनुए-न्देनिप-वसनदि-
दान-शीलसु-बुद्धि-योळगेव-दान्य-नेनिसुव-नु ।
वैन-तेयव-रूथ-तत्त-त्स्थान-दलित-त्तत्स्व-भावग-
ळानु-सारच-रित्रे-माडुत-नित्य-नेलेसि-प्प ॥ २३-(७०८)

ज्ञानदनु एन्देनिप शास्त्रदि
मानदनु एन्देनिप वसनदि
दानशील सुबुद्धियोळगे वदान्यनेनिसुवनु ।
वैनतेयवरूथ तत्त-
त्स्थानदलि तत्तत्स्वभावग-
ळानुसार चरित्रे माडुत नित्य नेलेसिप्प ॥

ग्राम-पनोळ-ग्रणिए-निसुवनु-ग्रामि-णीएनि-सुवनु-जनरोळु-
ग्रामु-पग्रा-मगळो-ळगेश्री-मान्य-नेनिसुव-नु ।
श्रीम-नोरम-ताने-योग-क्षेम-नामक-नागि-सलहुव-
ईम-हिमेमि-क्कद-देवरि-गुण्टे-लोकदो-ळु ॥ २४-(७०९)

ग्रामपनोळग्रणि एनिसुवनु
ग्रामिणी एनिसुवनु जनरोळु
ग्रामुपग्रामगळोळगे श्रीमान्यनेनिसुवनु ।
श्रीमनोरम ताने योग
क्षेमनामकनागि सलहुव
ई महिमे मिक्काद देवरिगुण्टे लोकदोळु ॥

विजय-सारथि-एन्दु-गरुड-ध्वजन-मूर्तिय-भक्ति-पूर्वक-
भजिसु-तिप्पम-हात्म-रिगेस-र्वत्र-दलिओलि-दु ।
विजय-दनुता-नागि-सलहुव-भुजग-भूषण-पूज्य-चरणा-
म्बुजवि-भूतिद-भुवन-मोहन-रूप-निर्ले-प ॥ २५-(७१०)

विजयसारथि एन्दु गरुड-
ध्वजन मूर्तिय भक्तिपूर्वक
भजिसुतिप्प महात्मरिगे सर्वत्रदलि ओलिदु ।
विजयदनु तानागि सलहुव
भुजगभूषणपूज्यचरणा-
म्बुज विभूतिद भुवनमोहनरूप निर्लेप ॥

अनभि-मतक-र्मप्रव-हदोळगे-अनिमे-षादिस-मस्त-चेतन-
गणवि-हुदुत-त्फलग-ळुण्णदे-सृष्टि-सुवमु-न्न ।
वनिते-यिन्दोड-गूडि-करुणा-वनधि-निर्मिसे-तम्म-तम्मय-
अनुचि-तोचित-कर्म-फलगळ-उणुत-चरिसुव-रु ॥ २६-(७११)

अनभिमत कर्मप्रवहदोळगे
अनिमेषादि समस्तचेतन-
गणविहुदु तत्फलगळुण्णदे सृष्टिसुव मुन्न ।
वनितेयिन्दोडगूडि करुणा-
वनधि निर्मिसे तम्म तम्मय
अनुचितोचित कर्मफलगळ उणुत चरिसुवरु ॥

झल्ल-डियनेळ-लन्ते-तोर्पुदु-एल्ल-कालदि-भवद-सौख्यवु-
एल्लि-पोक्करु-बिडदे-बेम्ब-त्तिहुदु-जीवरि-गे ।
ओल्ले-नेन्दरे-बिडदु-हरिनि-र्माल्य-नैवे-द्यवनु-भुञ्जिसु-
बल्ल-वरकू-डाडु-भवदुः-खगळ-नीडा-डु ॥ २७-(७१२)

झल्लडिय नेळलन्ते तोर्पुदु
एल्लकालदि भवदसौख्यवु
एल्लि पोक्करु बिडदे बेम्बत्तिहुदु जीवरिगे ।
ओल्लेनेन्दरे बिडदु हरि नि-
र्माल्य नैवेद्यवनु भुञ्जिसु
बल्लवरकूडाडु भवदुःखगळनीडाडु ॥

कुट्टि-कोयिदुद-नट्ट-इट्टुद-सुट्ट-कोट्टुद-मुट्ट-लघहि-
ट्टिट्ट-माळ्पुदु-विट्ट-लुण्डु-च्छिष्ट-सज्जन-र-
बिट्ट-तन्नय-होट्टे-गोसुग-थट्ट-नुणुतिह-केट्ट-मनुजर-
कट्टि-ओय्देम-पट्ट-णदोळो-त्तट्ट-लिडुतिह-रु ॥ २८-(७१३)

कुट्टि कोयिदुदनट्ट इट्टुद
सुट्ट कोट्टुद मुट्टलघ हि-
ट्टिट्ट माळ्पुदु विट्ठलुण्डुच्छिष्ट, सज्जनर-
बिट्ट तन्नय होट्टेगोसुग
थट्टनुणुतिह केट्ट मनुजर
कट्टि ओय्देमपट्टणदोळोत्तट्टलिडुतिहरु ॥

झल्ल-डियनेळ-लन्ते-भवसुख-तल्ल-णवगोळि-सुवुदु-निश्चय-
वल्ल-सालव-माडि-सक्करे-मेद्द-तेरन-न्ते ।
क्षुल्ल-करकू-डाड-दलेश्री-वल्ल-भनस-द्गुणग-णङ्गळ-
बल्ल-वरकू-डाडि-सम्पा-दिसुप-रंपद-व ॥ २९-(७१४)

झल्लडिय नेळलन्ते भवसुख
तल्लणवगोळिसुवुदु निश्चय-
वल्ल सालवमाडि सक्करे मेद्द तेरनन्ते ।
क्षुल्लकर कूडाडदले श्री-
वल्लभन सद्गुणगणङ्गळ
बल्लवर कूडाडि सम्पादिसु परंपदव ॥

जागु-माडदे-भोग-दाशेय-नीगि-परमनु-राग-दलिवर-
भोगि-शयनन-आग-रदहे-ब्बागि-ललिनि-न्तु ।
कूगु-तलिशिर-बागि-करुणा-साग-रनेभव-रोग-भेषज-
कैगो-डेन्देने-बेग-नोदगुव-भाग-वतरर-स ॥ ३०-(७१५)

जागुमाडदे भोगदाशेय
नीगि परमनुरागदलि वर
भोगिशयनन आगरद हेब्बागिगलालि निन्तु ।
कूगुतलि शिरबागि करुणा-
सागरने भवरोगभेषज
कैगोडेन्देने बेगनोदगुव भागवतररस ॥

एनु-करुणवो-तन्न-वरलिद-यानि-धिगेस-द्भक्त-जनरति-
हीन-कर्मव-माडि-दरुसरि-स्वीक-रिसिपोरे-व ।
प्राण-हिंसक-लुब्ध-कगेसु-ज्ञान-भक्तिग-ळित्तु-दशरथ-
सूनु-वाल्मिकि-ऋषिय-माडिद-परम-करुणा-ळु ॥ ३१-(७१६)

एनु करुणवो तन्नवरलि द-
यानिधिगे सद्भक्तजनरति-
हीनकर्मव माडिदरु सरि स्वीकरिसि पोरेव ।
प्राणहिंसक लुब्धकगे सु-
ज्ञान भक्तिगळित्तु दशरथ-
सूनु वाल्मिकिऋषिय माडिद परमकरुणाळु ॥

मूढ-मानव-एल्ल-कालदि-बेडि-कोम्बिनि-तेन्दु-दैन्यदि-
बेड-दन्ददि-माडु-पुरुषा-र्थगळ-स्वप्नद-लु ।
नीडु-वडेनि-न्नमल-गुणको-ण्डाडि-हिग्गुव-भाग-वतरोड-
नाडि-सेन्ननु-जनुम-जनुमग-ळल्लि-दयदि-न्द ॥ ३२-(७१७)

मूढमानव एल्लकालदि
बेडिकोम्बिनितेन्दु दैन्यदि
बेडदन्ददि माडु पुरुषार्थगळ स्वप्नदलु ।
नीडुवडे निन्नमलगुण को-
ण्डाडि हिग्गुव भागवतरोड-
नाडिसेन्ननु जनुम जनुमगळल्लि दयदिन्द ॥

चतुर-विधपुरु-षार्थ-रूपनु-चतुर-मूर्त्या-त्मकनि-रलुम-
त्तितर-पुरुषा-र्थगळ-बयसुव-रेनु-बल्लव-रु ।
मतिवि-हीनरु-अहिक-सुखशा-श्वतवि-देन्दरि-तनुदि-नदिगण-
पतिये-मोदला-दन्य-देवते-गळने-भजिसुव-रु ॥ ३३-(७१८)

चतुरविध पुरुषार्थरूपनु
चतुर मूर्त्यात्मकनिरलु म-
त्तितर पुरुषार्थगळ बयसुवरेनु बल्लवरु ।
मतिविहीनरु अहिकसुख शा-
श्वतविदेन्दरितनुदिनदि गण-
पतिये मोदलादन्यदेवतेगळने भजिसुवरु ॥

द्रुहिण-मोदला-दमर-गणस-न्महित-सर्व-प्राणि-गळह्-
द्रुहनि-वासिग-भीर-सकले-ष्टप्र-दायक-नु ।
अहिक-पार-त्रदलि-विहिता-विहित-कर्मग-ळरितु-फलस-
न्निहित-नागि-देल्ल-रिगेकोडु-तिप्प-सर्व-ज्ञ ॥ ३४-(७१९)

द्रुहिणमोदलादमरगणस-
न्महित सर्वप्राणिगळ ह्-
द्रुह निवासि गभीर सकलेष्टप्रदायकनु ।
अहिक पारत्रदलि विहिता-
विहित कर्मगळरितु फल स-
न्निहितनागिदेल्लरिगे कोडुतिप्प सर्वज्ञ ॥

ओम्मे-गादरु-जीव-रोळुवै-षम्य-द्वेषा-सूये-इल्लसु-
धर्म-नामक-सन्त-यिसुवनु-सर्व-रनुनि-त्य ।
ब्रह्म-कल्पा-न्तदलि-वेदा-गम्य-त्रिजग-न्नाथ-विट्ठल-
सुम्म-नीवनु-त्रिविध-रिगेअव-रवर-निजगति-य ॥ ३५-(७२०)

ओम्मेगादरु जीवरोळु वै-
षम्य द्वेषासूये इल्ल सु-
धर्मनामक सन्तयिसुवनु सर्वरनु नित्य ।
ब्रह्मकल्पान्तदलि वेदा-
गम्य त्रिजगन्नाथविट्ठल
सुम्मनीवनु त्रिविधरिगे अवरवर निजगतिय ॥

॥ सकलदुरितनिवारणसन्धि मुगियितु ॥ (२२-७२०)

॥श्री मध्वेशार्पणमस्तु ॥

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

एक-विंशति-मतप्र-वर्तक-काकु-माग्गळ-कुहक-युक्तिनि-
राक-रिसिस-र्वोत्त-मनुहरि-येन्दु-स्थापिसि-द ।
श्रीक-लत्रन-सदन-द्विजपपि-नाकि-सन्नुत-महिम-परमकृ-
पाक-टाक्षदि-नोडु-मध्वा-चार्य-गुरुव-र्य ॥ १-(७२१)

एकविंशति मतप्रवर्तक का-
कुमाग्गळ कुहकयुक्ति नि-
राकरिसि सर्वोत्तमनु हरियेन्दु स्थापिसिद ।
श्रीकलत्रनसदन द्विजप पि-
नाकिसन्नुत महिम परमकृ-
पाकटाक्षदि नोडु मध्वाचार्य गुरुवर्य ॥

वेध-मोदला-गिप्प-मलमो-क्षाधि-कारिग-ळाद-जीवर-
साध-नगळप-रोक्ष-नन्तर-लिङ्ग-भङ्गव-नु ।
साधु-गळुचि-त्तैपु-देन्नप-राध-गळनो-डदले-चक्रग-
दाध-रनुपे-ळिसिद-तेरद-न्ददलि-पेळुवे-नु ॥ २-(७२२)

वेधमोदलागिप्पमल मो-
क्षाधिकारिगळाद जीवर
साधनगळपरोक्षनन्तर लिङ्गभङ्गवनु ।
साधुगळु चित्तैपुदेन्नप-
राधगळ नोडदले चक्र ग-
दाधरनु पेळिसिद तेरदन्ददलि पेळुवेनु ॥

तृणक्रि-मिद्विज-पशुन-रोत्तम-जनप-नरग-न्धर्व-गणरिव-
रेनिप-रंशवि-हीन-कर्मसु-योगि-गळुए-न्दु ।
तनुप्र-तीकदि-बिम्ब-नउपा-सनव-गैयुत-इन्द्रि-यजक-
र्मनव-रतहरि-गर्पि-सुतनि-र्ममरु-एनिसुव-रु ॥ ३-(७२३)

तृण क्रिमि द्विज पशु नरोत्तम
जनप नरगन्धर्वगणरिव-
रेनिपरंशविहीन कर्मसुयोगिगळु एन्दु ।
तनुप्रतीकदि बिम्बन उपा-
सनवगैयुत इन्द्रियज क-
र्मनवरत हरिगर्पिसुत निर्ममरु एनिसुवरु ॥

एळु-विधजी-वगण-बहळसु-राळि-सङ्ख्या-नेम-वुळ्ळुदु-
ताळि-नरदे-हवनु-ब्राह्मण-कुलदो-ळुद्भवि-सि ।
स्थूल-कर्मव-तोरेदु-गुरुगळु-पेळि-दर्थव-तिळिदु-तत्त-
त्काल-धर्मस-मर्पि-सुववरु-कर्म-योगिग-ळु ॥ ४-(७२४)

एळु विध जीवगण बहळ सु-
राळि सङ्ख्यानेमवुळ्ळुदु
ताळि नरदेहवनु ब्राह्मणकुलदोळुद्भविसि ।
स्थूलकर्मव तोरेदु गुरुगळु
पेळिदर्थव तिळिदु तत्त-
त्काल धर्म समर्पिसुववरु कर्मयोगिगळु ॥

हीन-कर्मग-ळिन्द-बहुविध-योनि-यलिस-ञ्चरिसि-प्रान्तके-
मानु-षत्वव-नैदि-सर्वो-त्तमनु-हरिए-म्ब ।
ज्ञान-भक्तिग-ळिन्द-वेदो-क्तानु-सारस-हस्र-जनुमदि-
न्यून-कर्मव-माडि-हरिग-र्पिसिद-नन्तर-दि- ॥ ५-(७२५)

हीनकर्मगळिन्द बहुविध
योनियलि सञ्चरिसि प्रान्तके
मानुषत्ववनैदि सर्वोत्तमनु हरि एम्ब ।
ज्ञान भक्तिगळिन्द वेदो-
क्तानुसार सहस्रजनुमदि
न्यूनकर्मव माडि हरिगर्पिसिद नन्तरदि ॥

हत्तु-जनुमग-ळल्लि-हरिस-र्वोत्त-मसुरा-सुरग-णार्चित-
चित्र-कर्मवि-शोक-नन्ता-नन्त-रूपा-त्म ।
सत्य-सत्स-ङ्कल्प-जगदु-त्पत्ति-स्थितिलय-कार-णजरा-
मृत्यु-वर्जित-नेन्दु-पासने-गैद-तरुवा-य- ॥ ६-(७२६)

हत्तुजनुमगळल्लि हरिस-
र्वोत्तम सुरासुरगणार्चित
चित्रकर्म विशोकनन्तानन्त रूपात्म ।
सत्यसत्सङ्कल्प जगदु-
त्पत्ति स्थिति लय कारण जरा-
मृत्युवर्जितनेन्दुपासनेगैद तरुवाय ॥

मूरु-जनुमग-ळल्लि-देहा-गार-पशुधन-पत्नि-मित्रकु-
मार-माता-पितृग-ळल्लिह-स्नेह-किन्तधि-क ।
मार-मणनलि-बिडदे-माडुव-सूरि-गळुई-उक्त-जनुमव-
मीरि-परमा-त्मनस्व-देहदि-नोडि-सुखिसुव-रु ॥ ७-(७२७)

मूरु जनुमगळल्लि देहा-
गार पशुधन पत्निमित्र कु-
मार मातापितृगळल्लिह स्नेहकिन्तधिक ।
मारमणनलि बिडदे माडुव
सूरिगळु ई उक्त जनुमव
मीरि परमात्मन स्वदेहदि नोडि सुखिसुवरु ॥

देव-गायक-जान-चिरपितृ-देव-रेल्लरु-ज्ञान-योगिग-
ळाव-कालकु-पुष्क-रशनै-श्चरउ-षास्वा-ह-
देवि-बुधसन-कादि-गळुमे-घाव-ळिपप-र्जन्य-सांशरु-
ईउ-भयगण-दोळगि-वरुवि-ज्ञान-योगिग-ळु ॥ ८-(७२८)

देवगायकजान चिरपितृ-
देवरेल्लरु ज्ञानयोगिग-
ळावकालकु पुष्कर शनैश्चर उषा स्वाह-
देवि बुध सनकादिगळु मे-
घावळिप पर्जन्य सांशरु
ई उभय गणदोळगिवरु विज्ञानयोगिगळु ॥

भरत-खण्डदि-नूरु-जनुमव-धरिसि-निष्का-मकसु-कर्मा-
चरिसि-दान-न्तरदि-दशसा-हस्र-जनुमद-लि ।
उरुत-रज्ञा-नवनु-पडेदो-न्देरडु-दशदे-हदलि-भकुतिय-
निरव-धिकनलि-माडि-काम्बरु-बिम्ब-रूपव-नु ॥ ९-(७२९)

भरतखण्डदि नूरु जनुमव
धरिसि निष्कामक सुकर्मा-
चरिसिदानन्तरदि दशसाहस्र जनुमदलि ।
उरुतर ज्ञानवनु पडेदो-
न्देरडु दश देहदलि भकुतिय
निरवधिकनलि माडि काम्बरु बिम्बरूपवनु ॥

साध-नात्पू-र्वदलि-इवरिग-नादि-कालप-रोक्ष-विल्लनि-
षेध-कर्मग-ळिल्ल-नरक-प्राप्ति-मोदलि-ल्ल ।
वेद-शास्त्रग-ळल्लि-इप्पवि-रोध-वाक्यव-परिह-रिसिमधु-
सूद-ननेस-र्वोत्त-मोत्तम-नेन्दु-तुतिसुव-रु ॥ १०-(७३०)

साधनात्पूर्वदलि इवरिग-
नादिकालपरोक्षविल्ल नि-
षेधकर्मगळिल्ल नरकप्राप्ति मोदलिल्ल ।
वेदशास्त्रगळल्लि इप्प वि-
रोधवाक्यव परिहरिसि मधु-
सूदनने सर्वोत्तमोत्तमनेन्दु तुतिसुवरु ॥

सत्य-लोका-धिपन-पिडिदुश-तस्थ-देवग–णान्त-रेल्लरु-
भक्ति-योगिग-ळेन्दु-करेसुव-राव-कालद-लि ।
भक्ति-योग्यर-मध्य-दलिस-द्भक्ति-विज्ञा-नादि-गुणदि-
न्दुत्त-मोत्तम-ब्रह्म-वायू-वाणि-वाग्दे-वि ॥ ११-(७३१)

सत्यलोकाधिपन पिडिदु श-
तस्थदेवगणान्तरेल्लरु
भक्तियोगिगळेन्दु करेसुवरावकालदलि ।
भक्तियोग्यर मध्यदलि स-
द्भक्ति विज्ञानादि गुणदि-
न्दुत्तमोत्तम ब्रह्म वायू वाणि वाग्देवि ॥

ऋजुग–णकेभ-क्त्यादि-गुणसा-हजवे-निसुवुदु-क्रमदि-वृद्धिअ-
ब्जजप-दविपरि-यन्त-बिम्बो-पास-नवुअधि-क ।
वृजिन-वर्जित-रिवरो-ळगेत्रिगु-णजवि-कारग-ळिल्ल-वेन्दिगु-
द्विजफ-णिपमृड-शक्र-मोदला-दवरो-ळिरुतिहु-दु ॥ १२-(७३२)

ऋजुगणके भक्त्यादि गुण सा-
हजवेनिसुवुदु क्रमदि वृद्धि अ-
ब्जजपदवि परियन्त बिम्बोपासनवु अधिक ।
वृजिनवर्जितरिवरोळगे त्रिगु-
णज विकारगळिल्लवेन्दिगु
द्विज फणिप मृड शक्रमोदलादवरोळिरुतिहुदु ॥

साध-नात्पू-र्वदलि-ईक्ऋ-ज्वादि-तात्त्विक-रेनिप-सुरगण-
नादि-सामा-न्याप-रोक्षिग-ळेन्दु-करेसुव-रु ।
साध-नोत्तर-स्वस्व-बिम्बउ-पाधि-रहिता-दित्य-नन्ददि-
सादरदिनो-डुवरु-अधिका-रानु-सारद-लि ॥ १३-(७३३)

साधनात्पूर्वदलि ई ऋ-
ज्वादि तात्त्विकरेनिप सुरगण-
नादि सामान्यापरोक्षिगळेन्दु करेसुवरु ।
साधनोत्तर स्वस्वबिम्ब उ-
पाधिरहितादित्यनन्ददि
सादरदि नोडुवरु अधिकारानुसारदलि ॥

छिन्न-भक्तरु-एनिसु-तिहरुसु-पर्ण-शेषा-द्यमर-रेल्ल-
च्छिन्न-भक्तरु-नाल्व-रेनिपरु-भार-तीप्रा-ण-
सोन्नो-डलवा-ग्देवि-यरुपणे-गण्ण-मोदला-दवरो-ळगेत-
त्तन्नि-यामक-रागि-व्यापा-रगळ-माडुव-रु ॥ १४-(७३४)

छिन्नभक्तरु एनिसुतिहरु सु-
पर्ण शेषाद्यमररेल्ल-
च्छिन्नभक्तरु नाल्वरेनिपरु भारती प्राण
सोन्नोडल वाग्देवियरु पणे-
गण्णमोदलादवरोळगे त-
त्तन्नियामकरागि व्यापारगळ माडुवरु ॥

हीन-सत्क-र्मगळे-रडुपव-मान-देवनु-माळप-निदकनु-
मान-विनिति-ल्लेनुत-दृढभ-क्तियलि-भजिपरि-गे ।
प्राण-पतिस-म्प्रीत-नागिकु-योनि-गळकोड-नेल्ल-कर्मग-
ळाने-माडुवे-नेम्ब-मनुजन-नरक-कैदिसु-व ॥ १५-(७३५)

हीनसत्कर्मगळेरडु पव-
मानदेवनु माळपनिदकनु-
मानविनितिल्लेनुत दृढभक्तियलि भजिपरिगे ।
प्राणपति सम्प्रीतनागि कु-
योनिगळ कोडनेल्लकर्मग-
ळाने माडुवेनेम्ब मनुजन नरककैदिसुव ॥

देव-ऋषिपि-तृनृ-परुनर-रैव-रोळुनेले-सिद्दु-अवरस्व-
भाव-कर्मव-माडि-माडिप-नोन्दु-रूपद-लि ।
भावि-ब्रह्मनु-कूर्म-रूपद-लीवि-रिञ्च्या-ण्डवनु-बेन्नलि-
ताव-हिसिलो-कगळ-पोरेवनु-द्वितिय-रूपद-लि ॥ १६-(७३६)

देव ऋषि पितृ नृपरु नर-
रैवरोळु नेलेसिद्दु अवर स्व-
भावकर्मव माडि माडिपनोन्दु रूपदलि ।
भाविब्रह्मनु कूर्मरूपद-
ली विरिञ्च्याण्डवनु बेन्नलि
ता वहिसि लोकगळ पोरेवनु द्वितिय रूपदलि ॥

गुप्त-नागि-द्दनिल-देवद्वि-सप्त-लोकद-जीव-रोळगेत्रि-
सप्त-साविर-दारु-नूरु-श्वास-जपगळ-नु ।
सुप्ति-स्वप्नसु-जाग्र-तिगळलि-आप्त-नन्ददि-माडि-माडिसि-
क्लृप्त-भोगग-ळीव-प्रान्तके-तृतिय-रूपद-लि ॥ १७-(७३७)

गुप्तनागिद्दनिलदेव द्वि-
सप्तलोकद जीवरोळगे त्रि-
सप्तसाविरदारुनूरु श्वासजपगळनु ।
सुप्ति स्वप्न सुजाग्रतिगळलि
आप्तनन्ददि माडि माडिसि
क्लृप्तभोगगळीव प्रान्तके तृतिय रूपदलि ॥

शुद्ध-सत्वा-त्मकश-रीरदो-ळिद्द-कालकु-लिङ्ग-देहवु-
बद्ध-वागदु-दग्ध-पटदो-पादि-इरुतिहु-दु ।
सिद्ध-साधन-सर्व-रोळगन-वद्य-नेनिसुव-गरुड-शेषक-
पर्दि-मोदला-दमर-रेल्लरु-दास-रेनिसुव-रु ॥ १८-(७३८)

शुद्धसत्वात्मक शरीरदो-
ळिद्दकालकु लिङ्गदेहवु
बद्धवागदु दग्धपटदोपादि इरुतिहुदु ।
सिद्ध साधन सर्वरोळगन-
वद्यनेनिसुव गरुड शेष क-
पर्दिमोदलादमररेल्लरु दासरेनिसुवरु ॥

गणदो-ळगेता-निद्दु-ऋजुए-न्देनिसि-कोम्बनु-कल्प-शतसा-
धनव-गैदा-नन्त-रदिता-कल्कि-एनिसुव-नु ।
द्विनव-शीतिय-प्रान्त-भागदि-अनिल-हनुम-द्भीम-रूपदि-
दनुज-रेल्लर-सदेदु-मध्वा-चार्य-नेनिसुव-नु ॥ १९-(७३९)

गणदोळगे तानिद्दु ऋजु एन्दे-
निसिकोम्बनु कल्पशत सा-
धनव गैदानन्तरदि ता कल्कि एनिसुवनु ।
द्विनवशीतिय प्रान्तभागदि
अनिल हनुमद्भीम रूपदि
दनुजरेल्लर सदेदु मध्वाचार्यनेनिसुवनु ॥

विश्व-व्यापक-हरिगे-तासा-दृश्य-रूपव-धरिसि-ब्रह्मस-
रस्व-तीभा-रतिग-ळिन्दोड-गूडि-पवमा-न ।
शाश्व-तसुभ-क्तियलि-सुज्ञा-नस्व-रूपन-रूप-गुणगळ-
नश्वर-वुए-न्देनुत-पेळुव-श्रुतिग-ळोळगि-द्दु- २०-(७४०)

विश्वव्यापकहरिगे ता सा-
दृश्यरूपव धरिसि ब्रह्म स-
रस्वती भारतिगळिन्दोडगूडि पवमान ।
शाश्वत सुभक्तियलि सुज्ञा-
नस्वरूपन रूप गुणगळ-
नश्वरवु एन्देनुत पेळुव श्रुतिगळोळगिद्दु-

खेट-कुक्कुट-जलट-वेम्बत्रि-कोटि-रूपव-धरिसि-सततनि-
शाट-रनुसं-हरिसि-सलहुव-सर्व-सज्जन-र ।
कैट-भारिय-पुरद-प्रथमक-वाट-नेनिसुव-गरुड-शेषल-
लाट-लोचन-मुख्य-सुररिगे-आव-कालद-लि ॥ २१-(७४१)

खेट कुक्कुट जलटवेम्ब त्रि-
कोटि रूपव धरिसि सतत नि-
शाटरनु संहरिसि सलहुव सर्वसज्जनर ।
कैटभारियपुरद प्रथम क-
वाटनेनिसुव गरुड शेष ल-
लाटलोचनमुख्य सुररिगे आवकालदलि ॥

ईऋ-जुगळोळ-गोब्ब-साधन-नूरु-कल्पदि-माडि-करेसुव-
चारु-तरम-ङ्गलसु-नामदि-कल्प-कल्पद-लि ।
सूरि-गळुस-न्तुतिसि-वन्दिसे-घोर-दुरितग-ळळिदु-पोपुवु-
मार-मणस-म्प्रीत-नागुव-सर्व-कालद-लि ॥ २२-(७४२)

ई ऋजुगळोळगोब्ब साधन
नूरुकल्पदि माडि करेसुव
चारुतर मङ्गल सुनामदि कल्पकल्पदलि ।
सूरिगळु सन्तुतिसि वन्दिसे
घोर दुरितगळळिदु पोपुवु
मारमण सम्प्रीतनागुव सर्वकालदलि ॥

पाहि-कल्किसु-तेज-दासने-पाहि-धर्मा-धर्म-खण्डने-
पाहि-वर्च-स्वीख-षणनमो-साधु-महिपति-ये ।
पाहि-सद्ध-र्मज्ञ-धर्मज-पाहि-सम्पू-र्णशुचि-वैकृत-
पाहि-अज्ञन-सर्ष-पनेख-र्पटने-श्रद्धा-ह्व ॥ २३-(७४३)

पाहि कल्कि सुतेज दासने
पाहि धर्माधर्मखण्डने
पाहि वर्चस्वी खषण नमो साधु महिपतिये ।
पाहि सद्धर्मज्ञ धर्मज
पाहि सम्पूर्ण शुचि वैकृत
पाहि अज्ञन सर्षपने खर्पटने श्रद्धाह्व ॥

पाहि-सन्ध्या-नमह-ज्ञानने-पाहि-महवि-ज्ञान-कीर्तन-
पाहि-सङ्की-र्णाख्य-कत्थन-माह-बुद्धिज-य ।
पाहि-माह-त्तरसु-वीर्यने-पाहि-मेधा-विविज-याजेय-
पाहि-मांर-न्तिम्न-मनुमां-पाहि-मांपा-हि ॥ २४-(७४४)

पाहि सन्ध्यान महज्ञानने
पाहि महविज्ञान कीर्तन
पाहि सङ्कीर्णाख्य कत्थन माहबुद्धि जय ।
पाहि माहत्तर सुवीर्यने
पाहि मेधावि विजयाजेय
पाहि मां रन्तिम्न मनु मां पाहि मां पाहि ॥

पाहि-मोदप्र-मोद-सन्तने-पाहि-आन-न्दनमो-तुष्टने-
पाहि-मांचा-र्वङ्ग-चारुसु-बाहु-चारुप-द ।
पाहि-पाहिसु-लोच-नने-मां-पाहि-सार-स्वतसु-वीरने-
पाहि-प्राज्ञने-कपिअ-लम्पट-पाहि-सर्व-ज्ञ ॥ २५-(७४५)

पाहि मोद प्रमोद सन्तने
पाहि आनन्द नमो तुष्टने
पाहि मां चार्वङ्ग चारुसुबाहु चारुपद ।
पाहि पाहि सुलोचनने मां
पाहि सारस्वत सुवीरने
पाहि प्राज्ञने कपि अलम्पट पाहि सर्वज्ञ ॥

पाहि-मांस-र्वजित्-मित्रने-पाहि-पापवि-नाश-कनेमां-
पाहि-धर्मवि-नेत-शारद-ओज-सुतप-स्वि ।
पाहि-मांते-जस्वि-नमोमां-पाहि-दानसु-शील-नमोमां-
पाहि-यज्ञसु-कर्त-यज्वी-याग-वर्तक-ने ॥ २६-(७४६)

पाहि मां सर्वजित् मित्रने
पाहि पापविनाशकने मां
पाहि धर्मविनेत शारद ओज सुतपस्वि ।
पाहि मां तेजस्वि नमो मां
पाहि दानसुशील नमो मां
पाहि यज्ञ सुकर्त यज्वी यागवर्तकने ॥

पाहि-प्राण-त्राण-अमरुषि-पाहि-मांउप-देष्ट-तारक-
पाहि-काल-क्रीड-नेसुक-र्मासु-काल-ज्ञ ।
पाहि-कालसु-सूच-कनेमां-पाहि-कलिसं-हर्तृ-कलिमां-
पाहि-काल-स्वाम-रेतस-दार-तसुबल-ने ॥ २७-(७४७)

पाहि प्राण त्राण अमरुषि
पाहि मां उपदेष्ट तारक
पाहि काल क्रीडने सुकर्मा सुकालज्ञ ।
पाहि कालसुसूचकने मां
पाहि कलिसंहर्तृ कलि मां
पाहि काल स्वामरेत सदारत सुबलने ॥

पाहि-पाहिस-होस-दाकपि-पाहि-गम्य-ज्ञान-दशकल-
पाहि-मांश्रो-तव्य-नमोस-ङ्कीर्ति-तव्यन-मो ।
पाहि-मांम-न्तव्य-कव्यने-पाहि-द्रष्ट-व्यनमो-सख्यने-
पाहि-गन्त-व्यनमो-क्रव्यने-पाहि-स्मर्त-व्य ॥ २८-(७४८)

पाहि पाहि सहो सदाकपि
पाहि गम्य ज्ञान दशकल
पाहि मां श्रोतव्य नमो सङ्कीर्तितव्य नमो ।
पाहि मां मन्तव्य कव्यने
पाहि द्रष्टव्य नमो सख्यने
पाहि गन्तव्य नमो क्रव्यने पाहि स्मर्तव्य ॥

पाहि-सेव्यसु-भव्य-नमोमां-पाहि-स्वर्ग-व्यनमो-भाव्यने-
पाहि-मांज्ञा-तव्य-नमोव-क्तव्य-गव्यन-मो ।
पाहि-मांला-तव्य-वायुवे-पाहि-ब्रह्मने-ब्राह्म-णप्रिय-
पाहि-पाहिस-रस्व-तीपते-जगद-गुरुव-र्य ॥ २९-(७४९)

पाहि सेव्य सुभव्य नमो मां
पाहि स्वर्गव्य नमो भाव्यने
पाहि मां ज्ञातव्य नमो वक्तव्य गव्य नमो ।
पाहि मां लातव्य वायुवे
पाहि ब्रह्मने ब्राह्मणप्रिय
पाहि पाहि सरस्वतीपते जगदगुरुवर्य ॥

वाम-नपुरा-णदलि-पेळिद-ईम-हात्मर-परम-मङ्गल-
नाम-गळस-म्प्रीति-पूर्वक-नित्य-स्मरिसुव-र ।
श्रीम-नोरम-नवरु-बेडिद-कामि-तार्थग-ळित्तु-तन्नत्रि-
धाम-दोळगनु-दिनद-लिट्टा-नन्द-पडिसुव-नु ॥ ३०-(७५०)

वामनपुराणदलि पेळिद
ई महात्मर परममङ्गल
नामगळ सम्प्रीतिपूर्वक नित्य स्मरिसुवर ।
श्रीमनोरमनवरु बेडिद
कामितार्थगळित्तु तन्न त्रि-
धामदोळगनुदिनदलिट्टानन्द पडिसुवनु ॥

ईस-मीरगे-नूरु-जन्मम-हासु-खप्रा-रब्ध-भोगप्र-
यास-विल्लदे-ऐदु-वनुलो-काधि-पत्यव-नु ।
भूसु-रनओ-प्पिडिय-वलिगेवि-शेष-सौख्यव-नित्त-दातन-
दास-वर्यनु-लोक-पतिएनि-सुवुदु-अच्चर-वे ॥ ३१-(७५१)

ई समीरगे नूरुजन्म म-
हासुखप्रारब्धभोग प्र-
यासविल्लदे ऐदुवनु लोकाधिपत्यवनु ।
भूसुरन ओप्पिडियवलिगे वि-
शेष सौख्यवनित्तदातन
दासवर्यनु लोकपति एनिसुवुदु अच्चरवे ॥

द्विशत-कल्पग-गळल्लि-बिडदी-पेसरि-निन्दलि-करेसु-वनुत-
न्वशद-अमररो-ळिद्दु-माडुव-नवर-साधन-व ।
असदु-पासने-गैव-कल्या-द्यसुर-रनुसं-हरिसि-तापो-
म्बसुर-पदवै-दुवनु-गुरुपव-मान-सतियोड-ने ॥ ३२-(७५२)

द्विशत कल्पगगळल्लि बिडदी-
पेसरिनिन्दलि करेसुवनु त-
न्वशद अमररोळिद्दु माडुवनवर साधनव ।
असदुपासनेगैव कल्या-
द्यसुररनु संहरिसि ता पो-
म्बसुरपदवैदुवनु गुरुपवमान सतियोडने ॥

अनिमे-षरना-मदलि-करेसुव-अनिल-देवनु-ओन्दु-कल्पदि-
वनज-सम्भव-नेनिप-नेम्भ-त्तेळु-वरेवरु-ष ।
गुणत्र-यविव-र्जितन-मङ्गल-गुणसु-रूप-क्रियेय-सदुपा-
सनेयु-अव्य-क्तादि-पृथ्व्य-न्तरदि-इरुतिहु-दु ॥ ३३-(७५३)

अनिमेषर नामदलि करेसुव
अनिलदेवनु ओन्दु कल्पदि
वनजसम्भवनेनिपनेम्भत्तेळुवरेवरुष ।
गुणत्रयविवर्जितन मङ्गल
गुण सुरूप क्रियेय सदुपा-
सनेयु अव्यक्तादि पृथ्व्यन्तरदि इरुतिहुदु ॥

महित-ऋजुगण-कोन्दे-परमो-त्सहवि-वर्जित-वेम्ब-दोषवु-
विहित-वेसरि-इदनु-पेळिदरे-मुक्त-ब्रह्मरि-गे-
बहुदु-साम्यवु-ज्ञान-भकुतियु-द्रुहिण-पदपरि-यन्त-वृद्धियु-
बहिरु-पासने-युण्टु-नन्तर-बिम्ब-दर्शन-वु ॥ ३४-(७५४)

महितऋजुगणकोन्दे परमो-
त्सहविवर्जितवेम्ब दोषवु
विहितवे सरि इदनु पेळिदरे मुक्तब्रह्मरिगे
बहुदु साम्यवु ज्ञानभकुतियु
द्रुहिणपदपरियन्त वृद्धियु
बहिरुपासनेयुण्टु नन्तर बिम्बदर्शनवु ॥

ज्ञान-रहितभ-यत्व-पेळ्वपु-राण-दैत्यर-मोह-कवुचतु-
रान-नगेकूडु-वुदे-मोहा-ज्ञान-भयशो-क ।
भानु-मण्डल-चलिसि-दन्ददि-काणु-वुदुट-ग्दोष-दिन्दलि-
श्रीनि-वासन-प्रीति-गोसुग-तोर्द-नल्लद-ले ॥ ३५-(७५५)

ज्ञानरहित भयत्व पेळ्व पु-
राण दैत्यर मोहकवु चतु-
राननगे कूडुवुदे मोहाज्ञान भय शोक ।
भानुमण्डल चलिसिदन्ददि
काणुवुदु दृग्दोषदिन्दलि
श्रीनिवासन प्रीतिगोसुग तोर्दनल्लदले ॥

कमल-सम्भव-सर्व-रोळगु-त्तमने-निसुवनु-एल्ल-कालदि-
विमल-भक्ति-ज्ञान-वैरा-ग्यादि-गुणदि-न्द ।
समभि-अधिकवि-वर्जि-तनगुण-रमेय-मुखदि-न्दरितु-नित्यदि-
द्युमणि-कोटिग-ळन्ते-काम्बनु-बिम्ब-रूपव-नु ॥ ३६-(७५६)

कमलसम्भव सर्वरोळगु-
त्तमनेनिसुवनु एल्लकालदि
विमल भक्ति ज्ञान वैराग्यादि गुणदिन्द ।
समभि अधिकविवर्जितन गुण
रमेय मुखदिन्दरितु नित्यदि
द्युमणिकोटिगळन्ते काम्बनु बिम्बरूपवनु ॥

ज्ञान-भक्त्या-द्यखिल-गुणचतु-रान-ननोळि-प्पन्ते-मुख्य-
प्राण-नलिचि-न्तिपुदु-यत्कि-श्चित्को-रतेया-गि ।
न्यून-ऋजुगण-जीव-रल्लिक्र-मेण-वृद्धि-ज्ञान-भकुतिस-
मान-भारति-वाणि-गळलिप-दप्र-युक्तधि-क ॥ ३७-(७५७)

ज्ञान भक्त्याद्यखिलगुण चतु-
रानननोळिप्पन्ते मुख्य
प्राणनलि चिन्तिपुदु यत्किञ्चित्कोरतेयागि ।
न्यून ऋजुगणजीवरल्लि क्र-
मेणवृद्धि ज्ञान भकुति स-
मान भारति वाणिगळलि पदप्रयुक्तधिक ॥

सौरि-सूर्यन-तेरदि-ब्रह्मस-मीर-गाय-त्रीगि-रगळोळु-
तोरु-वुदुअ-स्पष्ट-रूपदि-मुक्ति-परिय-न्त ।
वारि-जासन-वायु-वाणी-भार-तीर्गेम-हाप्र-लयदलि-
बार-दज्ञा-नादि-दोषवु-हरिकृ-पाबल-दि ॥ ३८-(७५८)

सौरि सूर्यनतेरदि ब्रह्म स-
मीर गायत्री गिरगळोळु
तोरुवुदु अस्पष्टरूपदि मुक्तिपरियन्त ।
वारिजासन वायु वाणी
भारतीर्गे महाप्रलयदलि
बारदज्ञानादि दोषवु हरिकृपाबलदि ॥

नूरु-वरुषा-नन्त-रदलिस-रोरु-हासन-तन्न-कल्पदि-
आरु-मुक्तिय-नैदु-वरोअव-रवर-करेदो-य्दु ।
शौरि-पुरदोळ-गिप्प-नदियलि-कारु-णिकसु-स्नान-निजपरि-
वार-सहितदि-माडि-हरियुद-रप्र-वेशिसु-व ॥ ३९-(७५९)

नूरुवरुषानन्तरदलि स-
रोरुहासन तन्न कल्पदि
आरु मुक्तियनैदुवरो अवरवरकरेदोय्दु ।
शौरिपुरदोळगिप्प नदियलि
कारुणिक सुस्नान निजपरि-
वारसहितदि माडि हरियुदर प्रवेशिसुव ॥

वासु-देवन-उदर-दोळगेप्र-वेश-गैदा-नन्त-रदिनि-
र्दोष-मुक्तरु-उदर-दिंपोर-मोट्ट-हरुषद-लि ।
ईश-निन्दा-ज्ञवप-डेदन-न्तास-नसित-द्वीप-मोक्षदि-
वास-वागिवि-मुक्त-दुःखरु-सश्च-रिसुतिह-रु ॥ ४०-(७६०)

वासुदेवन उदरदोळगे प्र-
वेशगैदानन्तरदि नि-
र्दोषमुक्तरु उदरदिं पोरमोट्टु हरुषदलि ।
ईशनिन्दाज्ञव पडेदन-
न्तासन सितद्वीप मोक्षदि
वासवागि विमुक्तदुःखरु सञ्चरिसुतिहरु ॥

सत्व-सत्वम-हासु-सूक्ष्मवु-सत्व-सत्वा-त्मकक-लेवर-
सत्य-लोका-धिपने-निपग-त्यल्प-वेरडुगु-ण ।
मुक्ति-भोग्यवि-दल्ल-जाण्डो-त्पत्ति-कारण-वल्ल-हरिप्री-
त्यर्थ-वागी-जगद-व्यापा-रगळ-माडुव-नु ॥ ४१-(७६१)

सत्व सत्व महा सुसूक्ष्मवु
सत्व सत्वात्मक कलेवर
सत्यलोकाधिपनेनिपगत्यल्पवेरडु गुण ।
मुक्तिभोग्यविदल्लजाण्डो-
त्पत्तिकारणवल्ल हरिप्री-
त्यर्थवागीजगद व्यापारगळ माडुवनु ॥

पाद-न्यूनश-ताब्द-परिय-न्तोदि-उग्रत-पाह्व-यदिलव-
णोद-धियोळगे-कल्प-दशतप-विद्द-नन्तर-दि ।
साधि-सिदमह-देव-पदवा-रैदु-नवक-ल्पाव-सानके-
ऐदु-वनुशे-षनप-दवपा-र्वतिस-हितना-गि ॥ ४२-(७६२)

पादन्यून शताब्द परिय-
न्तोदि उग्रतपाह्वयदि लव-
णोदधियोळगे कल्पदश तपविद्दनन्तरदि ।
साधिसिद महदेवपदवा-
रैदु नव कल्पावसानके
ऐदुवनु शेषन पदव पार्वतिसहितनागि ॥

इन्द्र-मनुदश-कल्प-गळलिसु-नन्द-नामदि-श्रवण-गैदुमु-
कुन्द-नपरो-क्षार्थ-नाल्कुसु-कल्प-तपवि-द्दु ।
नोन्दु-पोगेयोळु-कोटि-वरुषपु-रन्द-रनुअद-नुण्ड-नन्तर-
पोन्दु-वनुनिज-लोक-सुरपति-काम-निदर-न्ते ॥ ४३-(७६३)

इन्द्र मनुदशकल्पगळलि सु-
नन्दनामदि श्रवणगैद् मु-
कुन्दनपरोक्षार्थ नाल्कु सुकल्प तपविद्दु ।
नोन्दु पोगेयोळु कोटि वरुष पु-
रन्दरनु अदनुण्डनन्तर
पोन्दुवनु निजलोक सुरपति कामनिदरन्ते ॥

करेसु-वरुपू-र्वदलि-चन्द्रा-र्करति-शान्तसु-रूप-नामदि-
एरडे-रडुमनु-कल्प-श्रवणव-गैदु-मनुक-ल्प-
वरत-पोबल-दिन्द-अर्वा-क्शिरग-ळागी-रैदु-साविर-
वरुष-दुःखव-नीगि-काम्बरु-बिम्ब-रूपव-नु ॥ ४४-(७६४)

करेसुवरु पूर्वदलि चन्द्रा-
र्करतिशान्त सुरूपनामदि
एरडेरडु मनुकल्प श्रवणवगैदु मनुकल्प-
वरतपोबलदिन्द अर्वा-
क्शिरगळागीरैदु साविर
वरुष दुःखव नीगि काम्बरु बिम्बरूपवनु ॥

साध-नगळप-रोक्ष-नन्तर-ऐदु-वरुमो-क्षवनु-शिवश-
क्रादि-दिविजरु-उक्त-क्रमदिं-कल्प-सङ्ख्येय-लि ।
ऐद-लेयगै-वत्तु-पेन्द्रस-होद-रनिगि-प्पत्तु-द्विनवत्व-
गाधि-पतिप्रा-णनिगे-गुरुमनु-गळिगे-षोडश-वु ॥ ४५-(७६५)

साधनगळपरोक्षनन्तर
ऐदुवरु मोक्षवनु शिव श-
क्रादि दिविजरु उक्तक्रमदिं कल्पसङ्ख्येयलि ।
ऐदलेयगैवत्तुपेन्द्र स-
होदरनिगिप्पत्तु द्विनव त्व-
गाधिपतिप्राणनिगे गुरु मनुगळिगे षोडशवु ॥

प्रवह-मरुतगे-हन्ने-रडुसै-न्धवदि-वाकर-धर्म-रिगेदश-
नवसु-कल्पवु-मित्र-रिगेशे-षशत-जनके-ण्टु ।
कविस-नकसुस-नन्द-नसन-त्कुवर-मुनिगळि-गेळु-वरुणन-
युवति-पर्ज-न्यादि-पुष्कर-गारु-कल्पद-लि ॥ ४६-(७६६)

प्रवहमरुतगे हन्नेरडु सै-
न्धव दिवाकर धर्मरिगे दश-
नवसुकल्पवु मित्ररिगे शेषशतजनकेण्टु ।
कवि सनक सुसनन्दन सन-
त्कुवरमुनिगळिगेळु वरुणन
युवति पर्जन्यादि पुष्करगारु कल्पदलि ॥

ऐदु-कर्मज-सुररि-गाजा-नादि-गळिगी-रेरडु-कल्पा-
र्धाधि-कत्रय-गोपि-कास्त्री-यरिगे-पितृत्रय-वु ।
ईदि-वौकस-मनुज-गायक-रैदु-वरुएर-डोन्दु-कल्पन-
राधि-परिगरे-कल्प-दोळगप-रोक्ष-विरुतिहु-दु ॥ ४७-(७६७)

ऐदु कर्मजसुररिगाजा-
नादिगळिगीरेरडु कल्पा-
र्धाधिकत्रय गोपिकास्त्रीयरिगे पितृ त्रयवु ।
ई दिवौकस मनुजगायक-
रैदुवरु एरडोन्दु कल्प न-
राधिपरिगरेकल्पदोळगपरोक्षविरुतिहुदु ॥

दीप-गळननु-सरिसि-दीप्तियु-व्यापि-सिमहति-मिरव-कळेदुप-
रोप-कारव-माळप-तेरद-न्ददलि-परमा-त्म ।
आप-योजा-सननो-ळिद्दुस्व-रूप-शक्तिय-व्यक्त-गैसुत-
तापो-ळेवनव-नन्ते-चेष्टेय-माडि-माडिसु-त ॥ ४८-(७६८)

दीपगळननुसरिसि दीप्तियु
व्यापिसि महतिमिरव कळेदु प-
रोपकारव माळप तेरदन्ददलि परमात्म ।
आ पयोजासननोळिद्दु स्व-
रूपशक्तिय व्यक्तगैसुत
ता पोळेवनवनन्ते चेष्टेय माडि माडिसुत ॥

स्वोद-रस्थित-प्राण-रुद्रे-न्द्रादि-सुररिगे-देह-गळको-
ट्टाद-रदिअव-रवर-सेवेय-कोम्ब-ननवर-त ।
मोद-बोधद-याब्धि-तन्नव-राधि-रोगव-कळेदु-महदप-
राध-गळनो-डदले-सलहुव-सतत-स्मरिसुव-र ॥ ४९-(७६९)

स्वोदरस्थित प्राण रुद्रे-
न्द्रादिसुररिगे देहगळ को-
ट्टादरदि अवरवर सेवेयकोम्बननवरत ।
मोद बोध दयाब्धि तन्नव-
राधिरोगव कळेदु महदप-
राधगळ नोडदले सलहुव सतत स्मरिसुवर ॥

प्रतिप्र-तीक-ल्पदलि-सृष्टि-स्थितिल-यवमा-डुतलि-मोदिप-
चतुर-मुखपव-मान-रन्नव-माडि-भुञ्जिसु-व ।
घृतवे-मृत्यु-ञ्जयने-निपदे-वतेग-ळेउप-सेच-नरुश्री-
पतिगे-मूर्जग-वेल्ल-ओदन-तिथिए-निसिको-म्ब ॥ ५०-(७७०)

प्रतिप्रती कल्पदलि सृष्टि
स्थिति लयव माडुतलि मोदिप
चतुरमुख पवमानरन्नव माडि भुञ्जिसुव ।
घृतवे मृत्युञ्जयनेनिप दे-
वतेगळे उपसेचनरु श्री-
पतिगे मूर्जगवेल्ल ओदनतिथि एनिसिकोम्ब ॥

गर्भि-णिस्त्री-उण्ड-भोजन-गर्भ-गतशिशु-उम्ब-तेरदलि-
निर्भ-यनुता-नुण्डु-णिसुवनु-सर्व-जीवरि-गे ।
निर्ब-लतिपर-मअणु-जीवगे-अब्बु-वुदेस्थू-लान्न-भोजन-
अर्भ-करुपे-ळुवरु-कोविद-रिदनो-डम्बड-रु ॥ ५१-(७७१)

गर्भिणिस्त्री उण्डभोजन
गर्भगत शिशु उम्ब तेरदलि
निर्भयनु तानुण्डुणिसुवनु सर्वजीवरिगे ।
निर्बलतिपरम अणुजीवगे
अब्बुवुदे स्थूलान्न भोजन
अर्भकरु पेळुवरु कोविदरिदनोडम्बडरु ॥

अपच-यगळि-ल्लुण्डु-दुदरि-न्दुपच-यगळि-ल्लमर-गणदोळ-
गुपम-रेनिसुव-रिल्ल-जनुमा-दिगळु-मोदलि-ल्ल ।
अपरि-मितस-न्महिम-नरहरि-अपुन-राव-र्तरनु-माडुव-
कृपण-वत्सल-स्वपद-सौख्यव-नित्तु-शरणरि-गे ॥ ५२-(७७२)

अपचयगळिल्लुण्डुदुदरि-
न्दुपचयगळिल्लमरगणदोळ-
गुपमरेनिसुवरिल्ल जनुमादिगळु मोदलिल्ल ।
अपरिमित सन्महिम नरहरि
अपुनरावर्तरनु माडुव
कृपणवत्सल स्वपद सौख्यवनित्तु शरणरिगे ॥

बित्ति-बीजव-भूमि-योळुनी-रेत्ति-बेळेसिद-बेळसु-प्रान्तके-
कित्ति-मेलुव-न्ददलि-लकुमी-रमण-लोकग-ळ ।
मत्ते-जीवर-कर्म-कालो-त्पत्ति-स्थितिलय-माडु-तलिसम-
वर्ति-एनिसुव-खेद-मोदग-ळिल्ल-दनवर-त ॥ ५३-(७७३)

बित्तिबीजव भूमियोळु नी-
रेत्ति बेळेसिद बेळसु प्रान्तके
कित्ति मेलुवन्ददलि लकुमीरमण लोकगळ ।
मत्ते जीवर कर्म कालो-
त्पत्ति स्थिति लय माडुतलि सम-
वर्ति एनिसुव खेद मोदगळिल्लदनवरत ॥

श्वसन-रुद्रे-न्द्रप्र-मुखसुम-नसरो-ळिद्दरु-क्षुत्पि-पासवु-
वशदो-ळिप्पुवु-सकल-भोगके-साध-नगळा-गि ।
असुर-प्रेतपि-शाचि-गळबा-धिसुत-लिप्पुवु-दिनदि-नदिमा-
निसरो-ळगेमृग-पक्षि-जीवरो-ळिद्दु-पोगुवु-वु ॥ ५४-(७७४)

श्वसन रुद्रेन्द्रप्रमुख सुम-
नसरोळिद्दरु क्षुत्पिपासवु
वशदोळिप्पुवु सकलभोगके साधनगळागि ।
असुर प्रेत पिशाचिगळ बा-
धिसुतलिप्पुवु दिनदिनदि मा-
निसरोळगे मृग पक्षिजीवरोळिद्दु पोगुवुवु ॥

वासु-देवनु-स्वप्न-सुप्तिपि-पासे-क्षुद्भय-शोक-मोहा-
यास-विस्मृति-माात्स-रियमद-पुण्य-पापा-दि
दोष-वर्जित-नेन्दु-ब्रह्मस-दाशि-वादिस-मस्त-दिविजरु-
पास-नेयगै-देल्ल-कालदि-मुक्त-रागिह-रु ॥ ५५-(७७५)

वासुदेवनु स्वप्न सुप्ति पि-
पासे क्षुद्भय शोक मोहा-
यास विस्मृति माात्सरिय मद पुण्य पापादि
दोषवर्जितनेन्दु ब्रह्म स-
दाशिवादि समस्तदिविजरु-
पासनेयगैदेल्लकालदि मुक्तरागिहरु ॥

परम-सूक्ष्म-क्षणअ-यिदुत्रुटि-करेसु-वुदुऐ-वत्तु-त्रुटिलव-
एरडु-लवगळु-निमेष-निमेषग-ळेण्टु-मात्रयु-ग ।
गुरुद-शप्रा-णारु-पळह-न्नेरडु-बाणवु-घळिगे-त्रिंशति-
इरुळु-हगलर-वत्तु-घळिगेग-ळुअहो-रात्रिग-ळु ॥ ५६-(७७६)

परमसूक्ष्म क्षण अयिदु त्रुटि
करेसुवुदु ऐवत्तु त्रुटि लव
एरडु लवगळु निमेष निमेषगळेण्टु मात्र युग ।
गुरुदश प्राणारु पळ ह-
न्नेरडु बाणवु घळिगे त्रिंशति
इरुळु हगलरवत्तु घळिगेगळु अहोरात्रिगळु ॥

ईदि-वारा-त्रिगळे-रडुहदि-नैदु-पक्षग-ळेरडु-मासग-
ळाद-पवुमा-सद्व-यऋतुऋ-तुत्र-यगळय-न ।
ऐदु-ववुअय-नद्व-याब्दकृ-तादि-युगगळु-देव-मानदि-
द्वाद-शसह-स्रवरु-षगळह-वदनु-पेळुवे-नु ॥ ५७-(७७७)

ई दिवारात्रिगळेरडु हदि-
नैदु पक्षगळेरडु मासग-
ळादपवु मासद्वय ऋतु ऋतुत्रयगळयन ।
ऐदुवबु अयनद्वयाब्द कृ-
तादि युगगळु देवमानदि
द्वादशसहस्रवरुषगळहवदनु पेळुवेनु ॥

चतुर-साविर-देण्टु-नूरिवु-कृतयु-गकेत्रिस-हस्र-सलेषट्-
शतवु-त्रेतेगे-द्वाप-रकेद्वि-सहस्र-नानू-रु ।
दितिज-पतिकलि-युगके-साविर-शतग-ळद्वय-कूडि-ईदे-
वतेग-ळिगेह-न्नेरडु-साविर-वहवु-वरुषग-ळु ॥ ५८-(७७८)

चतुर साविरदेण्टुनूरिवु
कृतयुगके त्रिसहस्र सले षट्-
शतवु त्रेतेगे द्वापरके द्विसहस्रनानूरु ।
दितिजपति कलियुगके साविर
शतगळद्वय कूडि ई दे-
वतेगळिगे हन्नेरडुसाविरवहवु वरुषगळु ॥

प्रथम-युगके-ळधिक-अरेविं-शतिसु-लक्षा-ष्टोत्त-रदविं-
शतिस-हस्रम-नुष्य-माना-ब्दगळु-षण्णव-ति-
मितस-हस्रद-लक्ष-द्वादश-द्वितिय-तृतियके-एण्टु-लक्षद-
चतुः-षष्टिस-हस्र-कलिगिद-रर्ध-चिन्तिपु-दु ॥ ५९-(७७९)

प्रथमयुगकेळधिकअरेविं-
शति सुलक्षाष्टोत्तरद विं-
शतिसहस्र मनुष्यमानाब्दगळु षण्णवति-
मितसहस्रद लक्षद्वादश
द्वितिय तृतियके एण्टुलक्षद
चतुःषष्टिसहस्र कलिगिदरर्ध चिन्तिपुदु ॥

मूर-धिकना-ल्वत्तु-लक्षद-आरु-मूरेर-डधिक-साविर-
ईरे-रडुयुग-वरुष-सङ्ख्येय-गैय-लिनितिहु-दु ।
सारि-पेच्चिसे-सावि-रदना-न्नूरु-मूव-त्तेरडु-कोटिस-
रोरु-हासन-गिदुदि-वसवे-म्बरुवि-पश्चित-रु ॥ ६०-(७८०)

मूरधिकनाल्वत्तुलक्षद
आरुमूरेरडधिकसाविर
ईरेरडुयुग वरुष सङ्ख्येय गैयलिनितिहुदु ।
सारि पेच्चिसे साविरद ना-
न्नूरुमूवत्तेरडुकोटि स-
रोरुहासनगिदु दिवसवेम्बरु विपश्चितरु ॥

शतधृ-तियई-दिवस-गळत्रिं-शतियु-मास-द्वाद-शाब्दवु-
शतवे-रडरोळु-सर्व-जीवो-त्पत्ति-स्थितिलय-वु ।
श्रुतियु-स्मृतियु-पेळु-तिहव-च्युतगे-निमेषवि-देन्दु-सुखशा-
श्वतगे-पासटि-एम्ब-रेब्र-ह्मादि-दिविजर-न ॥ ६१-(७८१)

शतधृतिय ई दिवसगळ त्रिं-
शतियु मास द्वादशाब्दवु
शतवेरडरोळु सर्वजीवोत्पत्ति स्थिति लयवु ।
श्रुतियुस्मृतियु पेळुतिहव-
च्युतगे निमेषविदेन्दु सुखशा-
श्वतगे पासटि एम्बरे ब्रह्मादि दिविजरन ॥

आदि-मध्या-न्तगळु-इल्लद-माध-वगिदुप-चार-वेन्दुऋ-
गादि-वेदपु-राण-गळुपे-ळुवुवु-नित्यद-लि ।
मोद-मयनअ-नुग्र-हवस-म्पादि-सिरमा-ब्रह्म-रुद्रे-
न्द्रादि-गळुतम-तम्म-पदविय-नैदि-सुखिसुव-रु ॥ ६२-(७८२)

आदिमध्यान्तगळु इल्लद
माधवगिदुपचारवेन्दु ऋ-
गादि वेदपुराणगळु पेळुवुवु नित्यदलि ।
मोदमयनअनुग्रहव स-
म्पादिसि रमा ब्रह्म रुद्रे-
न्द्रादिगळु तमतम्म पदवियनैदि सुखिसुवरु ॥

ईक-थामृत-पान-सुखसुवि-वेकि-गळिग-ल्लदले-विषयिक-
व्याकु-लकुचि-त्तरिगे-दोरेवुदे-आव-कालद-लि ।
लोक-वार्तेय-बिट्टु-इदनव-लोकि-सुतमो-दिपरि-गोलिदुकृ-
पाक-र**जग-न्नाथ-विट्ठल**-काय्व-करुणद-लि ॥ ६३-(७८३)

ई कथाऽमृतपानसुख सुवि-
वेकिगळिगल्लदले विषयिक-
व्याकुल कुचित्तरिगे दोरेवुदे आवकालदलि ।
लोकवार्तेय बिट्टु इदनव-
लोकिसुत मोदिपरिगोलिदु कृ-
पाकर जगन्नाथविट्ठल काय्व करुणदलि ॥

॥ २३.अपरोक्षतारतम्य/कल्पसाधनसन्धि मुगियितु ॥(२३-७८३)
श्रीमध्वेशार्पणमस्तु

श्रीमद्धरिकथाऽमृतसार २४. बिम्बोपासनसन्धि (पूर्वि रूपकताळ)

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

मुक्त-बिम्बनु-तुरिय-जीव-न्मुक्त-बिम्बनु-विश्व-भवसं-
सक्त-बिम्बनु-तैज-सनुअ-सृज्य-रिगेप्रा-ज्ञ ।
शक्त-नादरु-सरिये-सर्वो-द्रिक्त-महिमनु-दुःख-सुखगळ-
व्यक्त-माडुत-लिप्प-कल्पा-न्त्यदलि-बप्परि-गे ॥ १-(७८४)

मुक्तबिम्बनु तुरिय जीव-
न्मुक्तबिम्बनु विश्व भवसं-
सक्तबिम्बनु तैजसनु असृज्यरिगे प्राज्ञ ।
शक्तनादरु सरिये सर्वो-
द्रिक्तमहिमनु दुःख सुखगळ
व्यक्तमाडुतलिप्प कल्पान्त्यदलि बप्परिगे ॥

अन्न-नामक-प्रकृति-योळग-च्छिन्न-वागिह-प्राज्ञ-नामदि-
सोन्नो-डलमोद-लाद-वरोळ-न्नाद-तैजस-नु ।
अन्न-दम्बुज-नाभ-विश्वनु-भिन्न-नाम-क्रियेग-ळिन्दलि-
तन्नो-ळगेता-रमिप-पूर्णा-नन्द-ज्ञानघ-न ॥ २-(७८५)

अन्ननामक प्रकृतियोळग-
च्छिन्नवागिह प्राज्ञनामदि
सोन्नोडलमोदलादवरोळन्नाद तैजसनु ।
अन्नदम्बुजनाभ विश्वनु
भिन्ननाम क्रियेगळिन्दलि
तन्नोळगे ता रमिप पूर्णानन्द ज्ञानघन ॥

बूदि-योळगड-गिप्प-नलनो-पादि-चेतन-प्रकृति-योळुअ-
न्नाद-अन्ना-ह्वयदि-करेसुव-ब्रह्म-शिवरू-पि ।
ओद-नप्रद-विष्णु-परमा-ह्लाद-नीवुत-तृप्ति-पडिसुव-
गाध-महिमन-चित्र-कर्मव-नाव-बण्णिसु-व ॥ ३-(७८६)

बूदियोळगडगिप्पनलनो-
पादि चेतन प्रकृतियोळु अ-
न्नाद अन्नाह्वयदि करेसुव ब्रह्म शिव रूपि ।
ओदनप्रद विष्णु परमा-
ह्लाद नीवुत तृप्तिपडिसुव-
गाध महिमन चित्रकर्मवनाव बण्णिसुव ॥

नाद-भोजन-शब्द-दोळुबि-न्दोद-नोदक-दोळगे-घोषनु-
वाद-दोळुशा-न्ताख्य-जठरा-ग्नियोळु-इरुति-प्प ।
वैदि-कसुश-ब्ददोळु-पुत्त्रस-होद-रानुग-रोळति-शान्तन-
पाद-कमलन-वरत-चिन्तिसु-ईप-रियलि-न्द ॥ ४-(७८७)

नाद भोजनशब्ददोळु बि-
न्दोदनोदकदोळगे घोषनु-
वाददोळु शान्ताख्य जठराग्नियोळु इरुतिप्प ।
वैदिक सुशब्ददोळु पुत्त्र स-
होदरानुगरोळतिशान्तन
पादकमलनवरत चिन्तिसु ई परियलिन्द ॥

वेद-मानिर-मानु-पास्यगु-णोद-धिगुण-त्रयवि-वर्जित-
स्वोद-रस्थित-निखिल-ब्रह्मा-ण्डाद्वि-लक्षण-नु ।
साधु-सम्मत-वेनिसु-तिहनिषु-सीद-गणपते-एम्ब-श्रुतिप्रति-
पादि-सुवुदनव-रत-वनगुण-प्रान्त-काणद-ले ॥ ५-(७८८)

वेदमानि रमानुपास्यगु-
णोदधि गुणत्रय विवर्जित
स्वोदरस्थित निखिलब्रह्माण्डाद्विलक्षणनु ।
साधुसम्मतवेनिसुतिह 'निषु-
सीदगणपते' एम्ब श्रुति प्रति-
पादिसुवुदनवरतवन गुण प्रान्तकाणदले ॥

करेसु-वनुमा-यार-मणता-पुरुष-रूपदि-त्रिस्थ-लगळोळु-
परम-सत्पुरु-षार्थ-दमह-त्तत्त्व-दोळगि-द्दु ।
सरसि-जभवा-ण्डस्थि-तस्त्री-पुरुष-तन्मा-त्रगळ-एको-
त्तरद-शेन्द्रिय-गळम-हाभू-तगळ-निर्मिसि-द ॥ ६-(७८९)

करेसुवनु मायारमण ता-
पुरुषरूपदि त्रिस्थलगळोळु
परम सत्पुरुषार्थद महत्तत्त्वदोळगिद्दु ।
सरसिजभवाण्डस्थित स्त्री
पुरुष तन्मात्रगळ एको-
त्तर दशेन्द्रियगळ महाभूतगळ निर्मिसिद ॥

ईश-रीरग-पुरुष-त्रिगुणदि-श्रीस-हितता-निद्दु-जीवरि-
गाशे-लोभा-ज्ञान-मदम-त्सरकु-मोहक्षु-ध ।
हास-हरुषसु-षुप्ति-स्वप्नपि-पास-जागृति-जन्म-स्थितिमृति-
दोष-पुण्यज-याप-जयद्व-न्द्वगळ-कल्पिसि-द ॥ ७-(७९०)

ई शरीरग पुरुष त्रिगुणदि
श्रीसहित तानिद्दु जीवरि-
गाशे लोभाज्ञान मद मत्सर कुमोह क्षुध ।
हास हरुष सुषुप्ति स्वप्न पि-
पास जागृति जन्म स्थिति मृति
दोष पुण्य जयापजय द्वन्द्वगळ कल्पिसिद ॥

त्रिविध-गुणमय-देह-जीवके-कवच-दन्ददि-तोडिसि-कर्म-
प्रवह-दोळुस-श्चार-माडिसु-तिप्प-जीवर-न ।
कविसि-माया-रमण-मोहव-भवके-कारण-नागु-वनुसं-
श्रवण-मननव-माळप-रिगेमो-चकने-निसुति-प्प ॥ ८-(७९१)

त्रिविध गुणमयदेह जीवके
कवचदन्ददि तोडिसि कर्म-
प्रवहदोळु सञ्चार माडिसुतिप्प जीवरन ।
कविसि मायारमण मोहव
भवके कारणनागुवनु सं-
श्रवण मननव माळपरिगे मोचकनेनिसुतिप्प ॥

साशनाह्वय-स्त्रीपु-रुषरोळु-वास-वागिह-नेन्द-रिदुवि-
श्वास-पूर्वक-भजिसि-तोषिसु-स्वाव-रोत्तम-र ।
क्लेश-नाशन-अचल-गळोळुप्र-काशि-सुतलिह-नशन-रूपो-
पास-नवमा-ळपरिगे-तोर्पनु-तन्न-निजरू-प ॥ ९-(७९२)

साशनाह्वय स्त्री पुरुषरोळु
वासवागिहनेन्दरिदु वि-
श्वासपूर्वक भजिसि तोषिसु स्वावरोत्तमर ।
क्लेशनाशन अचलगळोळु प्र-
काशिसुतलिहनशन रूपो-
पासनव माळपरिगे तोर्पनु तन्न निजरूप ॥

प्रकर-अन्तर-चिन्ति-सुवुदी-प्रकृति-योळुवि-श्वादि-रूपव-
प्रकट-माळपेय-थाम-तियोळुगु-रुकृ-पाबल-दि ।
मुकुर-निर्मित-सदन-दोळुपोगे-स्वकिय-रूपव-काम्ब-तेरदलि-
अकुटि-लात्मच-राच-रदिस-र्वत्र-तोरुव-नु ॥ १०-(७९३)

प्रकरअन्तर चिन्तिसुवुदी-
प्रकृतियोळु विश्वादि रूपव
प्रकटमाळपे यथामतियोळु गुरुकृपाबलदि ।
मुकुरनिर्मित सदनदोळु पोगे
स्वकियरूपव काम्ब तेरदलि
अकुटिलात्म चराचरदि सर्वत्र तोरुवनु ॥

परिच्छि-दत्रय-प्रकृ-तिगळोळ-गिरुति-हनुवि-श्वादि-रूपव-
धरिसि-आत्मा-दित्रि-रूपदि-ईष-णत्रय-दि ।
सुरुचि-ज्ञाना-त्मस्व-रूपदि-तुरिय-नामक-वासु-देवन-
स्मरिसु-मुक्तिसु-खप्र-दायक-नीत-नहुदे-न्दु ॥ ११-(७९४)

परिछिदत्रय प्रकृतिगळोळ-
गिरुतिहनु विश्वादि रूपव
धरिसि आत्मादि त्रिरूपदि ईषणत्रयदि ।
सुरुचि ज्ञानात्म स्वरूपदि
तुरियनामक वासुदेवन
स्मरिसु मुक्तिसुखप्रदायकनीतनहुदेन्दु ॥

कमल-सम्भव-जनक-जडज-ङ्गमरो-ळगेनेले-सिदु-क्रमव्यु-
त्क्रमदि-कर्मव-माडि-माडिसु-तिप्प-बेसर-दे ।
क्षमः-क्षामस-मीह-नाह्वय-सुमन-सासुर-रओळ-गेनमम-
ममअ-हंए-न्दीउ-पासने-ईव-प्रान्तद-लि ॥ १२-(७९५)

कमलसम्भवजनक जड ज-
ङ्गमरोळगे नेलेसिदु क्रम व्यु-
त्क्रमदि कर्मव माडि माडिसुतिप्प बेसरदे ।
क्षमःक्षाम समीहनाह्वय
सुमनसासुरर ओळगे नमम
मम अहं एन्दी उपासने ईव प्रान्तदलि ॥

ईस-मस्तज-गत्तु-ईशा-वास्य-वेनिपुदु-कार्य-रूपवु-
नाश-वादरु-नित्य-वेसरि-कार-णप्रकृ-ति
श्रीश-गेजड-प्रतिमे-येनिपुदु-मास-दोम्मेगु-सन्नि-धानवु-
वास-वागिह-नित्य-शाल-ग्राम-दोपा-दि ॥ १३-(७९६)

ई समस्तजगत्तु ईशा-
वास्यवेनिपुदु कार्यरूपवु
नाशवादरु नित्यवे सरि कारण प्रकृति
श्रीशगे जडप्रतिमेयेनिपुदु
मासदोम्मेगु सन्निधानवु
वासवागिह नित्य शालग्रामदोपादि ॥

एक-मेवा-द्वितिय-रूपअ-नेक-जीवरो-ळिदु-ताप्र-
त्येक-कर्मव-माडि-मोहिसु-तिप्प-तिळिसद-ले ।
मूक-बधिरा-न्धादि-नामदि-ईक-ळेवर-दोळगे-करेसुव
माक-लत्रन-लौकि-कमहा-महिमे-गेने-म्बे ॥ १४-(७९७)

एकमेवाद्वितिय रूप अ-
नेक जीवरोळिदु ता प्र-
त्येक कर्मव माडि मोहिसुतिप्प तिळिसदले ।
मूक बधिरान्धादि नामदि
ई कळेवरदोळगे करेसुव
माकलत्रन लौकिक महामहिमेगेनेम्बे ॥

लोक-बन्धु-र्लोक-नाथवि-शोक-भक्तर-शोक-नाशन-
श्रीक-रार्चित-सोक-दन्दद-लिप्प-सर्वरो-ळु ।
साकु-वनुस-ज्जनर-परमकृ-पाक-रेशपि-नाकि-सन्नुत-
स्वीक-रिपआ-नतरु-कोट्टस-मस्त-कर्मग-ळ ॥ १५-(७९८)

लोकबन्धुर्लोकनाथ वि-
शोक भक्तर शोकनाशन
श्रीकरार्चित सोकदन्ददलिप्प सर्वरोळु ।
साकुवनु सज्जनर परमकृ-
पाकरेश पिनाकिसन्नुत
स्वीकरिप आनतरु कोट्ट समस्तकर्मगळ ॥

आहि-तप्रति-मेगळे-निसुववु-देह-गेहा-पत्य-सतिधन-
लोह-काष्टशि-लामृ-दात्मक-वाद-द्रव्यग-ळु ।
नेह-दलिपर-मात्म-एनगि-त्तीह-नेन्दरि-दनुदि-नदिस-
म्मोह-कोळगा-गदले-पूजिसु-सर्व-नामक-न ॥ १६-(७९९)

आहित प्रतिमेगळेनिसुववु
देह गेहापत्य सति धन
लोह काष्ट शिला मृदात्मकवाद द्रव्यगळु ।
नेहदलि परमात्म एनगि-
त्तीहनेन्दरिदनुदिनदि स-
म्मोहकोळगागदले पूजिसु सर्वनामकन ॥

श्रीत-रुणिव-ल्लभगे-जीवरु-चेत-नप्रति-मेगळु-ओत-
प्रोत-नागि-देल्ल-रोळुव्या-पार-माडुति-ह ।
होत-सर्वे-न्द्रियग-ळोळुस-म्प्रीति-यिन्दु-ण्डुणिसि-विषयनि-
र्वात-देशद-दीप-दन्दद-लिप्प-निर्भय-दि ॥ १७-(८००)

श्रीतरुणिवल्लभगे जीवरु
चेतनप्रतिमेगळु ओत-
प्रोतनागिद्देल्लरोळु व्यापार माडुतिह ।
होत सर्वेन्द्रियगळोळु स-
म्प्रीतियिन्दुण्डुणिसि विषय नि-
र्वातदेशद दीपदन्ददलिप्प निर्भयदि ॥

भूत-सोकिद-मान-वनुबहु-मात-नाडुव-तेरदि-महद-
द्भूत-विष्ण्वा-वेश-दिन्दलि-वर्ति-पुदुजग-वु ।
कैत-वोक्तिग-ळल्ल-शेषफ-णात-पत्रगे-जीव-पञ्च-
व्रात-वेन्दिगु-भिन्न-पादा-ह्वयदि-करेसुवु-दु ॥ १८-(८०१)

भूतसोकिद मानवनु बहु
मातनाडुव तेरदि महद-
द्भूत विष्ण्वावेशदिन्दलि वर्तिपुदु जगवु ।
कैतवोक्तिगळल्ल शेषफ-
णातपत्रगे जीवपञ्च-
व्रातवेन्दिगु भिन्नपादाह्वयदि करेसुवुदु ॥

दिवियो-ळिप्पवु-मूरु-पादग-ळवनि-योळगिहु-दोन्दु-ईविध-
कविभि-रीडित-करेसु-वचतु-ष्पातु-ताने-न्दु ।
इवन-पादच-तुष्ट-यगळनु-भवके-तन्दुनि-रन्त-रदिउ-
द्भवन-सखस-र्वान्त-रात्मक-नेन्दु-स्मरिसुति-रु ॥ १९-(८०२)

दिवियोळिप्पवु मूरु पादग-
ळवनियोळगिहुदोन्दु ई विध
कविभिरीडित करेसुव चतुष्पातु तानेन्दु ।
इवन पादचतुष्टयगळनु-
भवके तन्दु निरन्तरदि उ-
द्भवन सख सर्वान्तरात्मकनेन्दु स्मरिसुतिरु ॥

वंश-बागलु-बेलेय-कण्डुन-रंस-दलिशो-भिपुदु-बागद-
वंश-पाशदि-कट्टि-एरुव-डोम्ब-मस्तक-के ।
कंस-मर्दन-दास-रिगेनि-स्संश-यदिव-न्दिसदे-नावि-
द्वंस-नेन्दुअ-हङ्क-रिसेभव-गुणदि-बन्धिसु-व ॥ २०-(८०३)

वंशबागलु बेलेय कण्डु न-
रंसदलि शोभिपुदु बागद
वंश पाशदि कट्टि एरुव डोम्ब मस्तकके ।
कंसमर्दनदासरिगे नि-
स्संशयदि वन्दिसदे ना वि-
द्वंसनेन्दु अहङ्करिसे भवगुणदि बन्धिसुव ॥

ज्योति-रूपगे-प्रतिमे-गळुसा-ङ्केति-कारो-पितसु-पौरुष-
धातु-सप्तक-धैर्य-शौर्यौ-दार्य-चातु-र्य ।
मातु-मानम-हत्व-सहनसु-नीति-निर्मल-देश-ब्राह्मण-
भूत-पञ्चक-बुद्धि-मोदला-दिन्द्रि-यस्था-न ॥ २१-(८०४)

ज्योतिरूपगे प्रतिमेगळु सा-
ङ्केतिकारोपित सुपौरुष
धातुसप्तक धैर्य शौर्यौदार्य चातुर्य ।
मातु मान महत्व सहन सु-
नीति निर्मल देश ब्राह्मण
भूतपञ्चक बुद्धि मोदलादिन्द्रियस्थान ॥

जीव-राशियो-ळमृत-शाश्वत-स्थाव-रगळोळु-स्थाणु-नामक-
आव-कालद-लिप्प-अजितअ-नन्त-नेन्देनि-सि ।
गोवि-दाम्पति-गाय-नप्रिय-साव-यवसा-हस्र-नामप-
राव-रेशप-वित्र-कर्मवि-पश्चि-तसुधा-म ॥ २२-(८०५)

जीवराशियोळमृत शाश्वत
स्थावरगळोलु स्थाणुनामक
आवकालदलिप्प अजित अनन्तनेन्देनिसि ।
गोविदाम्पति गायनप्रिय
सावयवसाहस्रनाम प-
रावरेश पवित्रकर्म विपश्चित सुधाम ॥

माध-वनपू-जार्थ-वागिनि-षेध-कर्मव-माडि-धनस-
म्पादि-सलुस-त्पुण्य-कर्मग-ळेनिसि-कोळुतिह-वु ।
स्वोद-रम्भर-णार्थ-नित्यदि-साधु-कर्मव-माडि-दरुसरि-
ऐदु-वनुदे-हान्त-रवस-न्देह-विनिति-ल्ल ॥ २३-(८०६)

माधवन पूजार्थवागि नि-
षेधकर्मव माडि धनस-
म्पादिसलु सत्पुण्यकर्मगळेनिसिकोळुतिहवु ।
स्वोदरम्भरणार्थ नित्यदि
साधुकर्मव माडिदरु सरि
ऐदुवनु देहान्तरव सन्देहविनितिल्ल ॥

अपग-ताश्रय-एल्ल-रोळगि-द्दुपम-नेनिपअ-नुपम-रूपनु-
शफर-केतन-जनक-मोहिप-मोह-कनतेर-दि ।
तपन-कोटिस-मप्र-भासित-वपुवे-निपकृ-ष्णादि-रूपक-
द्विपग-ळन्तु-ण्डुणिप-सर्व-त्रदलि-नेलेसि-द्दु ॥ २४-(८०७)

अपगताश्रय एल्लरोळगि-
द्दुपमनेनिप अनुपमरूपनु
शफरकेतनजनक मोहिप मोहकन तेरदि ।
तपनकोटिसमप्रभासित
वपुवेनिप कृष्णादि रूपक
द्विपगळन्तुण्डुणिप सर्वत्रदलि नेलेसिद्दु ॥

अडवि-योळुबि-त्तदले-बेळेदिह-गिडद-मूलिके-सकल-जीवर-
ओडलो-ळिप्पा-मयव-परिहर-गैसु-वन्दद-लि ।
जडज-सम्भव-जनक-त्रिजग-द्वोडेय-सन्तै-सेनलु-अवरि-
द्देडेगे-बन्दोद-गुवनु-भक्तर-भिडेय-मीरदे-ले ॥ २५-(८०८)

अडवियोळु बित्तदले बेळेदिह
गिडद मूलिके सकलजीवर
ओडलोळिप्पामयव परिहर गैसुवन्ददलि ।
जडजसम्भवजनक त्रिजग-
द्वोडेय सन्तैसेनलु अवरि-
द्देडेगे बन्दोदगुवनु भक्तर भिडेय मीरदेले ॥

श्रीनि-केतन-तन्न-वरदे-हानु-बन्धिग-ळन्ते-अव्यव-
धान-दलिनेले-सिप्प-सर्वद-सकल-कामद-नु ।
एनु-कोट्टुद-भुञ्जि-सुतम-द्दाने-यन्ददि-सञ्च-रिसुम-
त्तेनु-बेडदे-भजिसु-तिरुअव-नङ्घ्रि-कमलग-ळ ॥ २६-(८०९)

श्रीनिकेतन तन्नवर दे-
हानुबन्धिगळन्ते अव्यव-
धानदलि नेलेसिप्प सर्वद सकलकामदनु ।
एनु कोट्टुद भुञ्जिसुत म-
द्दानेयन्ददि सञ्चरिसु म-
त्तेनु बेडदे भजिसुतिरु अवनङ्घ्रिकमलगळ ॥

बेड-देलेकोडु-तिप्प-सुररिगे-बेडि-दरेकोडु-तिह्नु-नररिगे-
बेडि-बळलुव-दैत्य-रिगेकोड-नोम्मे-पुरुषा-र्थ ।
मूढ-रनुदिन-धर्म-कर्मव-माडि-दरुसरि-अहिक-फलगळ-
नीडि-उन्म-त्तरनु-माडिम-हानि-रयवी-व ॥ २७-(८१०)

बेडदेले कोडुतिप्प सुररिगे
बेडिदरे कोडुतिहनु नररिगे
बेडिबळलुव दैत्यरिगे कोडनोम्मे पुरुषार्थ ।
मूढरनुदिन धर्म कर्मव
माडिदरु सरि अहिक फलगळ
नीडि उन्मत्तरनु माडि महानिरयवीव ॥

तरणि-सर्व-त्रदलि-किरणव-हरहि-तत्त-द्धस्तु-गळननु-
सरिसि-अदरद-रन्ते-छायव-कङ्गो-ळिपतेर-दि ।
अरिध-रेजा-नेज-जगदोळ-गिरुव-छाया-तपने-निसिस-
ङ्करुष-णाह्वय-अवर-वरयो-ग्यतेग-ळन्ति-प्प ॥ २८-(८११)

तरणि सर्वत्रदलि किरणव
हरहि तत्तद्धस्तुगळननु-
सरिसि अदरदरन्ते छायव कङ्गोळिप तेरदि ।
अरिधरेजानेज जगदोळ-
गिरुव छायातपनेनिसि स-
ङ्करुषणाह्वय अवरवर योग्यतेगळन्तिप्प ॥

ई-वि-धदिस-र्वत्र-लकुमी-भूव-नितेयर-कूडि-तन्नक-
लावि-शेषग-ळेल्ल-कडेयलि-तुम्बि-सेव्यत-म ।
सेव-कनुता-नेनिसि-माया-देवि-रमणप्र-विष्ट-रूपक-
सेवे-माळपश-रण्य-शाश्वत-करुणि-कमला-क्ष ॥ २९-(८१२)

ई विधदि सर्वत्र लकुमी
भू वनितेयर कूडि तन्न क-
लाविशेषगळेल्लकडेयलि तुम्बि सेव्यतम ।
सेवकनु तानेनिसि माया-
देविरमण प्रविष्टरूपक
सेवेमाळप शरण्य शाश्वत करुणि कमलाक्ष ॥

प्रणव-कारण-कार्य-प्रतिपा-द्यनुप-रात्पर-चेत-नाचे-
तनवि-लक्षण-नन्त-सत्क-ल्याण-गुणपू-र्ण ।
अनुप-मनुपा-सितगु-णोदधि-अनघ-नजितन-नन्त-निष्कि-
ञ्चनज-नप्रिय-निर्वि-कारनि-राश्र-याव्य-क्त ॥ ३०-(८१३)

प्रणव कारण कार्य प्रतिपा-
द्यनु परात्पर चेतनाचे-
तनविलक्षणनन्त सत्कल्याण गुणपूर्ण ।
अनुपमनुपासित गुणोदधि
अनघनजितननन्त निष्कि-
ञ्चनजनप्रिय निर्विकार निराश्रयाव्यक्त ॥

गोप-भीयभ-वान्ध-कारके-दीप-ओदगलु-सकल-सुखसद-
नोप-रिगृहवे-निसुत-लिप्पदु-हरिक-थामृत-वु ।
गोप-तिजग-न्नाथ-विठलस-मीप-दलिनेले-सिद्दु-भक्तर-
नाप-वर्गर-माडु-वनुमह-दुःख-भवदि-न्द ॥ ३१-(८१४)

गोपभीय भवान्धकारके
दीप ओदगलु सकलसुखसद-
नोपरिगृहवेनिसुतलिप्पदु हरिकथाऽमृतवु ।
गोपति जगन्नाथविठल स-
मीपदलि नेलेसिद्दु भक्तर-
नापवर्गर माडुवनु महद्दुःख भवदिन्द ॥

॥ २४. बिम्बोपासनसन्धि मुगियितु ॥ (२४-८१४)

॥ श्रीमध्वेशार्पणमस्तु ॥

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

स्थाव-ररनो-डल्के-तृणक्रिमि-जीव-रुत्तम-क्रिमिग-ळिन्दअ-
जावि-गोगज-व्याघ्र-सिंहग-ळिन्द-शूद्रा-दि ।
मूव-रुत्तम-कर्मि-करुभू-देव-रुत्तम-कर्मि-नोडलु-
कोवि-दोत्तम-कविग-ळिन्दलि-क्षितिप-रुत्तम-रु ॥ १-(८१५)

स्थावरर नोडल्के तृण क्रिमि
जीवरुत्तम क्रिमिगळिन्द अ-
जावि गो गज व्याघ्र सिंहगळिन्द शूद्रादि ।
मूवरुत्तम कर्मिकरु भू-
देवरुत्तम कर्मि नोडलु
कोविदोत्तम कविगळिन्दलि क्षितिपरुत्तमरु॥

धरणि-परनो-डल्के-नरग-न्धरुव-रुत्तम-देव-गन्ध-
र्वरग-णोत्तम-रिवरि-गेचिरपि-तरुग-ळुत्तम-रु ।
एरड-यिदुतो-म्भत्तु-चिरपित-ररिगे-शतऊ-नशत-कोटिज-
नऋषि-वररु-त्तमरि-वरसम-रप्स-रस्त्रिय-रि- २(८१६)

धरणिपर नोडल्के नरग-
न्धरुवरुत्तम देवगन्ध-
र्वर गणोत्तमरिवरिगे चिरपितरुगळुत्तमरु ।
एरडयिदुतोम्भत्तु चिरपित-
ररिगे शतऊनशतकोटि ज-
न ऋषिवररुत्तमरिवरसमरप्सरस्त्रियरि-

वरिगे-उत्तम-नेनिप-तुम्बुरु-उरुव-शीया-द्यप्स-रस्त्री-
यरुश-ताजा-नजरु-उत्तम-ऋषिव-ररिगि-न्त
वररु-ऊर्वशि-गिन्त-वैश्वा-नरन-सुतरी-रेण्टु-साविर-
हरदे-यरोळु-त्तमक-शेर्ये-प्पत्तु-नाल्कुज-न ॥ ॥ ३-(८१७)

वरिगे उत्तमनेनिपतुम्बुरु-
उरुवशीयाद्यप्सरस्त्री-
यरु शताजानजरु उत्तम ऋषिवररिगिन्त
वररु ऊर्वशिगिन्त वैश्वा-
नरन सुतरीरेण्टुसाविर
हरदेयरोळुत्तम कशेर्येप्पत्तुनाल्कु जन ॥ ॥

सरिये-निपरुव्र-जौक-सस्त्री-यरुसु-रास्या-त्मजरि-गिम्पु-
ष्करनु-कर्मप-पुष्क-रनिगेश-नैश्च-रुत्तम-नु ।
तरणि-जनिगु-त्तमळु-षाश्विनि-सुरर-रसिगु-त्तमज-लपबुध-
शरधि-जात्मज-गुत्त-मस्वह-देवि-एनिसुव-ळु ॥ ४-(८१८)

सरियेनिपरु व्रजौकसस्त्री-
यरु सुरास्यात्मजरिगिम्पु-
ष्करनु कर्मपपुष्करनिगे शनैश्चरुत्तमनु ।
तरणिजनिगुत्तमळुषाश्विनि
सुररसिगुत्तम जलपबुध
शरधिजात्मजगुत्तम स्वहदेवि एनिसुवळु ॥

अनल-भार्यळि-गिन्त-नाख्या-तनिमे-षोत्तम-रिवरि-गिन्तलि-
घनप-पर्ज-न्यानि-रुद्धन-स्त्रीउ-षादे-वि ।
द्युनदि-सञ्ज्ञा-श्याम-लारो-हिणिग-ळार्वरु-समर-नाख्या-
तनिमे-षोत्तम-रिवरि-गिन्तलि-नूरु-कर्मज-रु ॥ ५-(८१९)

अनलभार्यळिगिन्तनाख्या-
तनिमेषोत्तमरिवरिगिन्तलि
घनप पर्जन्यानिरुद्धन स्त्री उषादेवि ।
द्युनदि सञ्ज्ञा श्यामला रो-
हिणिगळार्वरु समरनाख्या-
तनिमेषोत्तमरिवरिगिन्तलि नूरु कर्मजरु ॥

पृथुन-हुषशश-बिन्दु-प्रीय-व्रतप-रीक्षित-नृपरु-भागी-
रथिय-नोड-ल्कधिक-बलिया-दिन्द्र-सप्तक-रु ।
पितृग-ळेळे-ण्टधिक-वप्सर-सतिय-रीरै-दोन्दु-मनुगळु-
दितिज-गुरुच्या-वनउ-चथ्यरु-कर्म-जरुसम-रु ॥ ६-(८२०)

पृथु नहुष शशबिन्दु प्रीय-
व्रत परीक्षित नृपरु भागी-
रथिय नोडल्कधिक बलियादिन्द्र सप्तकरु ।
पितृगळेळेण्टधिकवप्सर
सतियरीरैदोन्दु मनुगळु
दितिजगुरु च्यावन उचथ्यरु कर्मजरु समरु ॥

धनप-विष्व-क्सेन-गणपा-श्विनिग-ळेम्भ-त्तैदु-शेषरि-
गेणेए-निसुवरु-मित्र-तारा-निक्रति-प्रावा-हि ।
गुणग-ळिन्दै-दधिक-एम्भ-त्तेनिप-शेषरि-गुत्त-मरुस-
न्मुनिम-रीचिपु-लस्त्य-पुलह-क्रतुव-सिष्ठमु-ख - ७-(८२१)

धनप विष्वक्सेन गणपा-
श्विनिगळेम्भत्तैदु शेषरि-
गेणे एनिसुवरु मित्र तारा निक्रति प्रावाहि ।
गुणगळिन्दैदधिक एम्भ-
त्तेनिप शेषरिगुत्तमरु स-
न्मुनि मरीचि पुलस्त्य पुलह क्रतु वसिष्ठमुख

अत्रि-अङ्गिर-रेळु-ब्रह्मन-पुत्र-रिवरिगे-समरु-विश्वा-
मित्र-वैव-स्वतरु-ईशा-वेश-बलदि-न्द ।
मित्र-गिन्तु-त्तमरु-स्वाहा-भर्तृ-भृगुवुप्र-सूति-विश्वा-
मित्र-मोदला-दवरि-गिन्तलि-मूव-रुत्तम-रु ॥ ८-(८२२)

अत्रि अङ्गिररेळु ब्रह्मन
पुत्ररिवरिगे समरु विश्वा-
मित्र वैवस्वतरु ईशावेश बलदिन्द ।
मित्रगिन्तुत्तमरु स्वाहा
भर्तृ भृगुवु प्रसूति विश्वा-
मित्रमोदलादवरिगिन्तलि मूवरुत्तमरु ॥

नार-दोत्तम-नग्नि-गिन्तलि-वारि-निधिपा-दोत्त-मनुयम-
तार-केशदि-वाक-ररुशत-रूप-रुत्तम-रु ।
वारि-जासनि-गिन्त-लिप्रवह-मारु-तोत्तम-प्रवह-गिन्तलि-
मार-पुत्रनि-रुद्ध-गुरुमनु-दक्ष-शचिरति-यु ॥ ९-(८२३)

नारदोत्तमनग्निगिन्तलि
वारिनिधि पादोत्तमनु यम
तारकेश दिवाकररु शतरूपरुत्तमरु ।
वारिजासनिगिन्तलि प्रवह
मारुतोत्तम प्रवहगिन्तलि
मारपुत्रनिरुद्ध गुरु मनु दक्ष शचि रतियु ॥

आरु-जनगळि-गिन्त-लिअह-ङ्कारि-कप्रा-णोत्त-मखिलश-
रीर-मानि-प्राण-गिन्तलि-काम-इन्द्ररि-गे ।
गौरि-वारुणि-खगप-राणिगे-शौरि-महिषिय-रोळगे-जाम्बव-
तीर-मायुत-ळाद-कारण-अधिक-ळेनिसुव-ळु ॥ १०-(८२४)

आरुजनगळिगिन्तलि अह-
ङ्कारिक प्राणोत्तमखिलश-
रीरमानि प्राणगिन्तलि काम इन्द्ररिगे ।
गौरि वारुणि खगपराणिगे
शौरिमहिषियरोळगे जाम्बव-
ती रमायुतळादकारण अधिकळेनिसुवळु ॥

हरफ-णिपविह-गेन्द्र-मूवरु-हरिम-डदियरि-गुत्त-मरुसौ-
परणि-पतिगु-त्तमरु-भारति-वाणि-ईर्वरि-गे ।
मरुत-ब्रह्मरु-उत्त-मरुइ-न्दिरेयु-परमो-त्तमळु-लक्ष्मिगे-
सरिये-निसुवव-रिल्ल-वेन्दिगु-देश-कालदो-ळु ॥ ११-(८२५)

हर फणिप विहगेन्द्र मूवरु
हरिमडदियरिगुत्तमरु सौ-
परणिपतिगुत्तमरु भारति वाणि ईर्वरिगे ।
मरुत ब्रह्मरु उत्तमरु इन्दिरेयु
परमोत्तमळु लक्ष्मिगे
सरियेनिसुववरिल्लवेन्दिगु देशकालदोळु ॥

श्रीमु-कुन्दन-महिळे-लकुमिम-हाम-हिमेगे-नेम्बे-ब्रह्मे-
शाम-रेन्द्रर-सृष्टि-स्थितिलय-गैसि-अवरव-र ।
धाम-गळक-ल्पिसिको-ड्डुवळज-राम-रणळा-गिद्दु-सर्व-
स्वामि-ममगुरु-वेन्दु-पासने-माळप-ळच्युत-न ॥ १२-(८२६)

श्रीमुकुन्दन महिळे लकुमि म-
हामहिमेगेनेम्बे ब्रह्मे-
शामरेन्द्रर सृष्टि स्थिति लयगैसि अवरवर ।
धामगळ कल्पिसिकोड्डुवळज-
रामरणळागिद्दु सर्व
स्वामि मम गुरुवेन्दुपासनेमाळपळच्युतन ॥

ईसु-महिमेग-ळुळ्ळ-लकुमिप-रेश-नान-न्तांश-गुणदोळु-
लेश-लेशके-सरिये-निसळा-वाव-कालद-लि ।
देश-काला-तीत-लकुमिगे-केश-वनव-क्षस्थ-लवेअव-
काश-वायितु-इवन-महिमेगे-व्याप्ति-गेणेयु-ण्टे ॥ १३-(८२७)

ईसु महिमेगळुळ्ळ लकुमि प-
रेशनानन्तांश गुणदोळु
लेशलेशके सरियेनिसळावावकालदलि ।
देशकालातीत लकुमिगे
केशवन वक्षस्थलवे अव-
काशवायितु इवन महिमेगे व्याप्तिगेणेयुण्टे ॥

ओन्दु-रूपदो-ळोन्द-वयवदो-ळोन्दु-रोमदो-ळोन्दु-देशदि-
होन्दि-कोण्डिह-वजभ-वादिस-मस्त-जीवग-ण ।
सिन्धु-सप्त-द्वीप-मेरुसु-मन्द-राद्य-द्रिगळु-ब्रह्मपु-
रन्द-रादिस-मस्त-लोकप-राल-यगळे-ल्ल ॥ १४-(८२८)

ओन्दु रूपदोळोन्दवयवदो-
ळोन्दु रोमदोळोन्दु देशदि
होन्दिकोण्डिहवज भवादि समस्तजीवगण ।
सिन्धु सप्तद्वीप मेरु सु-
मन्दराद्यद्रिगळु ब्रह्मपु-
रन्दरादि समस्तलोकपरालयगळेल्ल ॥

सर्व-देवो-त्तमनु-सर्वग-सर्व-गुणस-म्पूर्ण-सर्वद-
सर्व-तन्त्रस्व-तन्त्र-सर्वा-धार-सर्वा-त्म ।
सर्व-तोमुख-सर्व-नामक-सर्व-जनस-म्पूज्य-शाश्वत-
सर्व-कामद-सर्व-साक्षिग-सर्व-जित्स-र्व ॥ १५-(८२९)

सर्वदेवोत्तमनु सर्वग
सर्वगुणसम्पूर्ण सर्वद
सर्वतन्त्रस्वतन्त्र सर्वाधार सर्वात्म ।
सर्वतोमुख सर्वनामक
सर्वजनसम्पूज्य शाश्वत
सर्वकामद सर्वसाक्षिग सर्वजित्सर्व ॥

तार-तम्या-रोह-णवबरे-दारु-पठिसुव-रवर-लक्ष्मी-
नार-सिंहस-मस्त-देवग-णान्त-रात्मक-नु ।
पूर-यिसुवम-नोर-थङ्गळ-कारु-णिककै-वल्य-दायक-
दूर-गैवस-मस्त-दुरितव-वीत-भयशो-क ॥ १६-(८३०)

तारतम्यारोहणव बरे-
दारु पठिसुवरवर लक्ष्मी-
नारसिंह समस्तदेवगणान्तरात्मकनु ।
पूरयिसुव मनोरथङ्गळ
कारुणिक कैवल्यदायक
दूरगैव समस्तदुरितव वीतभय शोक ॥

प्रणत-कामद-नङ्घ्रि-सन्दरु-शनद-पेक्षेग-ळुळ्ळ-वगेनि-
ञ्चणिके-येनिपुदु-जडमो-दलुब्र-ह्मान्त-तरतम-वु ।
मनव-चनदिं-स्मरिसु-वरभव-वनधि-शोषिसि-पोगु-वुदुका-
रणवे-निसुवुदु-ज्ञान-भक्तिवि-रक्ति-सम्पद-के ॥ १७-(८३१)

प्रणतकामदनङ्घ्रिसन्दरु-
शनदपेक्षेगळुळ्ळवगे नि-
ञ्चणिकेयेनिपुदु जडमोदलु ब्रह्मान्ततरतमवु ।
मन वचनदिं स्मरिसुवर भव
वनधि शोषिसि पोगुवुदु का-
रणवेनिसुवुदु ज्ञान भक्ति विरक्ति सम्पदके ॥

अनल-नोळुहो-मिसुव-हरिच-न्दनवे-मोदला-दुदर-सूवा-
सनेयु-प्रत्प्र-त्येक-तोर्पुदु-एल्ल-कालद-लि ।
दनुज-मानव-दिविज-रवरव-रनुचि-तोचित-कर्म-वृजिना-
र्दननु-व्यक्तिय-माळप-त्रिगुणा-तीत-विख्या-त ॥ १८-(८३२)

अनलनोळु होमिसुव हरिच-
न्दनवे मोदलादुदर सूवा-
सनेयु प्रत्प्रत्येक तोर्पुदु एल्लकालदलि ।
दनुज मानव दिविजरवरव
रनुचितोचितकर्म वृजिना-
र्दननु व्यक्तिय माळप त्रिगुणातीत विख्यात ॥

भक्त-वत्सल-भाग्य-पुरुषवि-वित्त-विश्वा-धार-सर्वो-
द्रिक्त-दृष्टा-दृष्ट-दुर्गम-दुर्वि-भाव्यस्व-हि ।
शक्त-शाश्वत-सकल-वेदै-कोक्त-मानद-मान्य-माधव-
सूक्त-सूक्ष्म-स्थूल-त्रिजग-न्नाथ-विट्ठल-नु ॥ १९-(८३३)

भक्तवत्सल भाग्यपुरुष वि-
वित्त विश्वाधार सर्वो-
द्रिक्त दृष्टादृष्ट दुर्गम दुर्विभाव्य स्वहि ।
शक्त शाश्वत सकलवेदै-
कोक्त मानद मान्य माधव
सूक्त सूक्ष्म स्थूल त्रिजगन्नाथविट्ठलनु ॥

॥ २५. आरोहणतारतम्यसन्धि मुगियितु ॥ (२५-८३३)

॥ श्रीमध्वेशार्पणमस्तु ॥

श्रीमद्धरिकथाऽमृतस २६.अनुक्रमणिकावरोहणतारतम्यसन्धि (मुखारि अटताळ)

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

केश-वगेना-राय-णिगेकम-लास-नसमी-ररिगे-वाणिगे-
वीश-फणिपम-हेश-रिगेष-ण्महिषि-यरपद-के ।
शेष-रुद्रर-पत्नि-यरिगेसु-वास-वप्र-द्युम्न-रिगेस-
न्तोष-दलिव-न्दिसुवे-भक्ति-ज्ञान-कोडले-न्दु ॥ १-(८३४)

केशवगे नारायणिगे कम-
लासन समीररिगे वाणिगे
वीश फणिप महेशरिगे षण्महिषियर पदके ।
शेष रुद्रर पत्नियरिगे सु-
वासव प्रद्युम्नरिगे स-
न्तोषदलि वन्दिसुवे भक्तिज्ञान कोडलेन्दु ॥

प्राण-देवगे-नमिपे-कामन-सूनु-मनुगुरु-दक्ष-शचिरति-
मानि-नियरिगे-प्रवह-देवगे-सूर्य-सोमय-म ।
मान-विगेवरु-णनिगे-वीणा-पाणि-नारद-मुनिगे-नमिसुवे-
ज्ञान-भक्तिवि-रक्ति-मार्गव-तिळिस-लेनगे-न्दु ॥ २-(८३५)

प्राणदेवगे नमिपे कामन
सूनु मनु गुरु दक्ष शचि रति
मानिनियरिगे प्रवहदेवगे सूर्य सोम यम ।
मानविगे वरुणनिगे वीणा-
पाणिनारदमुनिगे नमिसुवे
ज्ञान भक्ति विरक्ति मार्गव तिळिसलेनगेन्दु ॥

अनल-भृगुदा-क्षाय-णियरिगे-कनक-गर्भज-सप्त-ऋषिगळि-
गेणेये-निपवै-वस्व-तमनु-गाधि-सम्भव-गे ।
दनुज-निर्ऋति-तार-प्रावहि-वनज-मित्रगे-अश्वि-निगणप-
धनप-विष्व-क्सेन-रिगेव-न्दिसुवे-ननवर-त ॥ ३-(८३६)

अनल भृगु दाक्षायणियरिगे
कनकगर्भज सप्तऋषिगळि-
गेणेयेनिप वैवस्वतमनु गाधिसम्भवगे ।
दनुज निर्ऋति तार प्रावहि
वनजमित्रगे अश्विनि गणप
धनप विष्वक्सेनरिगे वन्दिसुवेननवरत ॥

उक्त-देव-र्कळनु-ळिदुए-म्भत्त-यिदुजन-रुगळु-मनुगळु-
चथ्य-च्यावन-यमळ-रिगेक-र्मजरे-निसुति-प्प ।
कार्त-वीर्या-र्जुनने-प्रमुखश-तस्थ-रिगेप-र्जन्य-गङ्गा-
दित्य-यमसो-मानि-रुद्धन-पत्नि-यरपद-के- ४-(८३७)

उक्त देवर्कळनुळिदु ए-
म्भत्तयिदु जनरुगळु मनुगळु-
चथ्य च्यावन यमळरिगे कर्मजरेनिसुतिप्प ।
कार्तवीर्यार्जुनने प्रमुख श-
तस्थरिगे पर्जन्य गङ्गा-
दित्य यम सोमानिरुद्धन पत्नियर पदके

हुतव-हर्धा-ङ्गिनिगे-चन्द्रन-सुतबु-धगेना-मात्मि-कउषा-
सतिगे-छाया-त्मजश-नैश्चर-गान-मिपेसत-त ।
प्रतिदि-वसदलि-बिडदे-जीव-प्रतति-माडुव-कर्म-गळिगधि-
पतिए-निपपु-ष्करन-पादा-म्बुजग-ळिगेनमि-पे ॥ ५-(८३८)

हुतवहर्धाङ्गिनिगे चन्द्रन
सुतबुधगे नामात्मिकउषा-
सतिगे छायात्मजशनैश्चरगानमिपे सतत ।
प्रतिदिवसदलि बिडदे जीव-
प्रतति माडुव कर्मगळिगधि-
पति एनिप पुष्करन पादाम्बुजगळिगे नमिपे ॥

आन-मिपेआ-जान-जरिगेक्रु-शानु-सुतरिगे-गोव्र-जदोळिह-
मानि-नियरिगे-मौनि-जनशत-न्यून-शतको-टि ।
मानि-पितरिगे-देव-मानव-गान-प्रौढरि-गवनि-परिगेर-
मानि-वासन-दास-वर्गके-नमिपे-ननवर-त ॥ ६-(८३९)

आनमिपे आजानजरिगे कृ-
शानुसुतरिगे गोव्रजदोळिह
मानिनियरिगे मौनिजनशतन्यूनशतकोटि ।
मानिपितरिगे देव मानव
गानप्रौढरिगवनिपरिगे र-
मानिवासन दासवर्गके नमिपेननवरत ॥

अनुदि-नवनु-क्रमदो-ळवरो-हणत-रतमव-भक्ति-पूर्वक-
नेनेव-रिगेध-र्मार्थ-कामा-दिगळु-फलिसुवु-वु ।
वनज-सम्भव-मुख्य-रवयव-रेनिसु-वजग-न्नाथ-विठलगे-
विनय-दिन्दलि-नमिसि-कोण्डा-डुतिरु-मरेयद-ले ॥ ७-(८४०)

अनुदिनवनुक्रमदोळवरो-
हणतरतमव भक्तिपूर्वक
नेनेवरिगे धर्मार्थ कामादिगळु फलिसुवुवु ।
वनजसम्भवमुख्यरवयव-
रेनिसुव जगन्नाथविठलगे
विनयदिन्दलि नमिसि कोण्डाडुतिरु मरेयदले ॥

॥ २६. अनुक्रमणिकावरोहणतारतम्यसन्धि मुगियितु ॥(२६-८४०)

॥ श्री मध्वेशार्पणमस्तु ॥

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

श्रीम-दाचा-र्यरम-तानुग-धीम-तांवर-रङ्घ्रि-कमलके-
सोम-पाना-र्हीरिगे-तात्विक-देव-तागण-के ।
हैम-वतिष-ण्महिषि-यरपद-व्योम-केशगे-वाणि-वायू-
ताम-रसभव-लकुमि-नारा-यणरि-गानमि-पे ॥ १-(८४१)

श्रीमदाचार्यर मतानुग-
धीमतांवररङ्घ्रिकमलके
सोमपानार्हरिगे तात्विक देवतागणके ।
हैमवति षण्महिषियर पद
व्योमकेशगे वाणि वायू
तामरसभव लकुमि नारायणरिगानमिपे ॥

श्रीम-तांवर-श्रीप-तेस-त्कामि-तप्रद-सौम्य-त्रिककु-
द्धाम-त्रिचतु-ष्पाद-पावन-चरित-चार्व-ङ्ग ।
गोम-तीप्रिय-गौण-गुरुतम-साम-गायन-लोल-सर्व-
स्वामि-ममकुल-दैव-सन्तै-सुवुदु-सज्जन-र ॥ २-(८४२)

श्रीमतांवर श्रीपते स-
त्कामितप्रद सौम्य त्रिककु-
द्धाम त्रिचतुष्पाद पावनचरित चार्वङ्ग ।
गोमतीप्रिय गौण गुरुतम
सामगायनलोल सर्व
स्वामि ममकुलदैव सन्तैसुवुदु सज्जनर ॥

राम-राक्षस-कुलभ-यङ्कर-साम-जेन्द्र-प्रियम-नोवा-
चाम-गोचर-चित्सु-खप्रद-चारु-तरचरि-त ।
भूम-भूस्व-र्गाप-वर्गद-काम-धेनुसु-कल्प-तरुचि-
न्ताम-णियुए-न्देनिप-निजभ-क्तरिगे-सर्व-त्र ॥ ३-(८४३)

राम राक्षसकुलभयङ्कर
सामजेन्द्रप्रिय मनोवा-
चामगोचर चित्सुखप्रद चारुतरचरित ।
भूम भू स्वर्गापवर्गद
कामधेनु सुकल्पतरु चि-
न्तामणियु एन्देनिप निजभक्तरिगे सर्वत्र ॥

स्वर्ण-वर्णस्व-तन्त्र-सर्वग-कर्ण-हीनसु-शय्य-शाश्वत-
वर्ण-चतुरा-श्रमवि-वर्जित-चारु-तरस्वर-त ।
अर्ण-सम्प्रति-पाद्य-वायुसु-पर्ण-वरवह-नप्र-तिमवट-
पर्ण-शयना-श्चर्य-तमस-च्चरित-गुणभरि-त ॥ ४-(८४४)

स्वर्णवर्ण स्वतन्त्र सर्वग
कर्णहीनसुशय्य शाश्वत
वर्णचतुराश्रमविवर्जित चारुतर स्वरत ।
अर्णसम्प्रतिपाद्य वायु सु-
पर्णवरवहनप्रतिम वट-
पर्णशयनाश्चर्यतम सच्चरित गुणभरित ॥

अगणि-तसुगुण-धाम-निश्चल-स्वगत-भेदवि-शून्य-शाश्वत-
जगद-जीवा-त्यन्त-भिन्ना-पन्न-परिपा-ल ।
त्रिगुण-वर्जित-त्रिभुव-नेश्वर-हगलि-रुळुस्मरि-सुतलि-हरबि-
ट्टगल-त्रिजग-न्नाथ-विट्ठल-विश्व-व्यापक-नु ॥ ५-(८४५)

अगणित सुगुणधाम निश्चल
स्वगतभेदविशून्य शाश्वत
जगद जीवात्यन्तभिन्नापन्नपरिपाल ।
त्रिगुणवर्जित त्रिभुवनेश्वर
हगलिरुळु स्मरिसुतलिहर बि-
ट्टगल त्रिजगन्नाथविट्ठल विश्वव्यापकनु ॥

॥२७. अणुतारतम्यसन्धि मुगियितु ॥ (२७-८४५)
॥ श्रीमध्वेशार्पणमस्तु ॥

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

श्रीश-नङ्घ्रिस-रोज-भृङ्गम-हेश-सम्भव-मन्म-नदोळुप्र-
काशि-सनुदिन-प्रार्थि-सुवेप्रे-माति-शयदि-न्द
नीस-लहुस-ज्ञनर-वेद-व्यास-करुणा-पात्र-महदा-
काश-पतिकरु-णाळु-कैपिडि-देम्म-नुद्धरि-सु ॥ १-(८४६)

श्रीशनङ्घ्रिसरोजभृङ्ग म-
हेशसम्भव मन्मनदोळु प्र-
काशिसनुदिन प्रार्थिसुवे, प्रेमातिशयदिन्द ।
नी सलहु सज्जनर वेद-
व्यासकरुणापात्र महदा-
काशपति करुणाळु कैपिडिदेम्मनुद्धरिसु ॥

एक-दन्तइ-भेन्द्र-मुखचा-मीक-रकृत-भूष-णाङ्गकृ-
पाक-टाक्षदि-नोडु-विज्ञा-पिसुवे-निनिते-न्दु ।
नोक-नीयन-तुतिसु-तिप्पवि-वेकि-गळसह-वास-सुखगळ-
नीक-रीणसुवु-देमगे-सन्तत-परम-करुणा-ळु ॥ २-(८४७)

एकदन्त इभेन्द्रमुख चा-
मीकरकृतभूषणाङ्ग कृ-
पाकटाक्षदि नोडु विज्ञापिसुवेनिनितेन्दु ।
नोकनीयन तुतिसुतिप्प वि-
वेकिगळ सहवास सुखगळ
नी करीणसुवुदेमगे सन्तत परमकरुणाळु ॥

विघ्न-राजने-दुर्वि-षयदोळु-मग्न-वागिह-मनवु-महदो-
षघ्न-नङ्घ्रिस-रोज-युगळदि-भक्ति-पूर्वक-दि-
लग्न-वागलि-नित्य-नरकभ-यग्नि-गळिगा-नञ्ञे-गुरुवर-
भग्न-गैसे-न्नवगु-णगळनु-प्रतिदि-वसद-ल्लि ॥ ३-(८४८)

विघ्नराजने दुर्विषयदोळु
मग्नवागिह मनवु महदो-
षघ्ननङ्घ्रिसरोजयुगळदि भक्तिपूर्वकदि
लग्नवागलि नित्य, नरकभ-
यग्निगळिगानञ्ञे गुरुवर
भग्नगैसेन्नवगुणगळनु प्रतिदिवसदल्लि ॥

धनप-विष्व-क्सेन-वैद्या-श्विनिग-ळिगेसरि-एनिपे-षण्मुख-
ननुज-शेषश-तस्थ-देवो-त्तमवि-यद्र-ङ्गा-
विनुत-विश्वो-पास-कनेस-न्मनदि-विज्ञा-पिसुवे-लकुमी-
वनिते-यरसन-भक्ति-ज्ञानव-कोट्ट-सलहुव-दु ॥ ४-(८४९)

धनप विष्वक्सेन वैद्या-
श्विनिगळिगे सरि एनिपे षण्मुख-
ननुज शेषशतस्थदेवोत्तम वियद्रङ्गा-
विनुत, विश्वोपासकने स-
न्मनदि विज्ञापिसुवे लकुमी-
वनितेयरसन भक्ति ज्ञानव कोट्टु सलहुवदु ॥

चारु-धेष्णा-ह्वयने-निसिअव-तार-माडिदे-रुक्मि-णीयलि-
गौरि-यरसन-वरदि-उद्धट-राद-राक्षस-र ।
शौरि-याज्ञदि-संह-रिसिभू-भार-इळुहिद-करुणि-त्वत्पा-
दार-विन्दके-नमिपे-करुणिपु-देमगे-सन्मति-य ॥ ५-(८५०)

चारुधेष्णाह्वयनेनिसि अव-
तारमाडिदे रुक्मिणीयलि
गौरियरसनवरदि उद्धटराद राक्षसर ।
शौरियाज्ञदि संहरिसि भू-
भार इळुहिद करुणि त्वत्पा-
दारविन्दके नमिपे करुणिपुदेमगे सन्मतिय ॥

शूर्प-कर्ण-द्वयवि-जितक-न्दर्प-शरउदि-तार्क-सन्निभ-
सर्प-वरकटि-सूत्र-वैकृत-गात्र-सुचरि-त्र ।
स्वर्पि-ताङ्कुश-पाश-करखळ-दर्प-भञ्जन-कर्म-साक्षिग-
तर्प-कनुनी-नागि-तृप्तिय-पडिसु-सज्जन-र ॥ ६-(८५१)

शूर्पकर्णद्वय विजितक-
न्दर्पशर उदितार्कसन्निभ
सर्पवरकटिसूत्र वैकृतगात्र सुचरित्र ।
स्वर्पिताङ्कुश पाशकर खळ-
दर्पभञ्जन कर्मसाक्षिग
तर्पकनु नीनागि तृप्तिय पडिसु सज्जनर ॥

ख्वेश-परमसु-भक्ति-पूर्वक-व्यास-कृतग्र-न्थगळ-नरतिप्र-
यास-विल्लदे-बरेदु-विस्तरि-सिदेयो-लोकदो-ळु ।
पाश-पाणिये-प्रार्थि-सुवेउप-देशि-सेनगद-रर्थ-गळकरु-
णास-मुद्रकृ-पाक-टाक्षदि-नोडु-प्रतिदिन-दि ॥ ७-(८५२)

ख्वेश परमसुभक्ति पूर्वक
व्यासकृतग्रन्थगळनरतु प्र-
यासविल्लदे बरेदु विस्तरिसिदेयो लोकदोळु ।
पाशपाणिये प्रार्थिसुवे उप-
देशिसेनगदरर्थगळ करु-
णासमुद्र कृपाकटाक्षदि नोडु प्रतिदिनदि ॥

श्रीश-नतिनि-र्मलसु-नाभी-देश-संस्थित-रक्त-श्रीग-
न्धासु-शोभित-गात्र-लोकप-वित्र-सुरमि-त्र ।
मूष-कसुवर-वहन-प्राणा-वेश-युतप्र-ख्यात-प्रभुपू-
रैसु-भक्तरु-बेडि-दिष्टा-र्थगळ-प्रतिदिन-दि ॥ ८-(८५३)

श्रीशनतिनिर्मलसुनाभी-
देशसंस्थित रक्तश्रीग-
न्धासुशोभितगात्र लोकपवित्र सुरमित्र ।
मूषकसुवरवहन प्राणा-
वेशयुत प्रख्यात प्रभु पू-
रैसु भक्तरु बेडिदिष्टार्थगळ प्रतिदिनदि ॥

शङ्क-रात्मज-दैत्य-रिगतिभ-यङ्क-रगतिग-ळीय-लोसुग-
सङ्क-टचतु-र्थिगने-निसिअहि-तार्थ-गळको-ट्ट ।
मङ्कु-गळमो-हिसुवे-चक्रद-रङ्कि-तनेदिन-दिनदि-त्वत्पद-
पङ्क-जकेरगि-बिन्न-यिसुवेनु-पालि-पुदुए-म्म ॥ ९-(८५४)

शङ्करात्मज दैत्यरिगतिभ-
यङ्कर गतिगळीयलोसुग
सङ्कटचतुर्थिगनेनिसि अहितार्थगळ कोट्टु ।
मङ्कुगळ मोहिसुवे चक्रद-
रङ्कितने दिनदिनदि त्वत्पद-
पङ्कजकेरगि बिन्नयिसुबेनु पालिपुदु एम्म ॥

सिद्ध-विद्या-धरग-णसमा-रध्य-चरणस-रोज-सर्वसु-
सिद्धि-दायक-शीघ्र-दिंपा-लिपुदु-बिन्नप-व ।
बुद्धि-विद्या-ज्ञान-बलपरि-शुद्ध-भक्तिवि-रक्ति-निरुतन-
वद्य-नस्मृति-लीले-गळसु-स्तवन-वदनद-लि ॥ १०-(८५५)

सिद्धविद्याधरगणसमा-
रध्यचरणसरोज सर्वसु-
सिद्धिदायक शीघ्रदिं पालिपुदु बिन्नपव ।
बुद्धि विद्या ज्ञान बल परि-
शुद्धभक्ति विरक्ति निरुतन-
वद्यन स्मृतिलीलेगळ सुस्तवन वदनदलि ॥

रक्त-वास-द्वयवि-भूषण-उक्ति-लालिसु-परम-भगव-
द्भक्त-वरभ-व्यात्म-भागव-तादि-शास्त्रद-लि
सक्त-वागलि-मनवु-विषयवि-रक्ति-पालिसु-विद्व-दाद्यवि-
मुक्त-नेन्देनि-सेन्न-भवभय-दिन्द-अनुदिन-दि ॥ ११-(८५६)

रक्तवासद्वयविभूषण
उक्ति लालिसु परमभगव-
द्भक्तवर भव्यात्म भागवतादि शास्त्रदलि
सक्तवागलि मनवु विषयवि-
रक्तिपालिसु विद्वदाद्य वि-
मुक्तनेन्देनिसेन्न भवभयदिन्द अनुदिनदि ॥

शुक्र-शिष्यर-संह-रिपुदके-शक्र-निन्ननु-पूजि-सिदनुउ-
रुक्र-मश्री-राम-चन्द्रनु-सेतु-मुखद-ल्लि ।
चक्र-वर्ती-धर्म-राजनु-चक्र-पाणिय-नुडिगे-भजिसिद-
वक्र-तुण्डने-निन्नो-ळेन्तुटो-ईश-नुग्रह-वु ॥ १२-(८५७)

शुक्रशिष्यर संहरिपुदके
शक्र निन्ननु पूजिसिदनु उ-
रुक्रम श्रीरामचन्द्रनु सेतुमुखदल्लि ।
चक्रवर्तीधर्मराजनु
चक्रपाणिय नुडिगे भजिसिद
वक्रतुण्डने निन्नोळेन्तुटो ईशनुग्रहवु ॥

कौर-वेन्द्रनु-निन्न-भजिसद-कार-णदिनिज-कुलस-हितसं-
हार-वैदिद-गुरुव-रवृको-दरन-गदेयि-न्द ।
तार-कान्तक-ननुज-एन्नश-रीर-दोळुनी-निन्तु-धर्म-
प्रेर-कनुनी-नागि-सन्तै-सेन्न-करुणद-लि ॥ १३-(८५८)

कौरवेन्द्रनु निन्न भजिसद
कारणदि निजकुलसहित सं-
हारवैदिद गुरुवर वृकोदरन गदेयिन्द ।
तारकान्तकननुज एन्न श-
रीरदोळु नीनिन्तु धर्म
प्रेरकनु नीनागि सन्तैसेन्न करुणदलि ॥

एक-विंशति-मोद-कप्रिय-मूक-रनुवा-ङ्घिगळ-माळपेकृ-
पाक-रेशकृ-तज्ञ-कामद-कायो-कैपिडि-दु ।
लेख-काग्रणि-मन्म-नददु-र्व्याकु-लवपरि-हरिसु-दयदिपि-
नाकि-भार्या-तनुज-मृद्भव-प्रार्थि-सुवेनि-न्न ॥ १४-(८५९)

एकविंशतिमोदकप्रिय
मूकरनु वाङ्घिगळ माळपे कृ-
पाकरेश कृतज्ञ कामद कायो कैपिडिदु ।
लेखकाग्रणि मन्मनद दु-
र्व्याकुलव परिहरिसु दयदि पि-
नाकिभार्यातनुज मृद्भव प्रार्थिसुवे निन्न ॥

नित्य-मङ्गल-चरित-जगदु-त्पत्ति-स्थितिल-यनिय-मनज्ञा-
नत्र-यप्रद-बन्ध-मोचक-सुमन-सासुर-र-
चित्त-वृत्तिग-ळन्ते-नडेवप्र-मत्त-नल्लसु-हृज्ज-नाप्तन-
नित्य-दलिनेने-नेनेदु-सुखिसुव-भाग्य-करुणिपु-दु ॥१५-(८६०)

नित्यमङ्गलचरित जगदु-
त्पत्ति स्थिति लय नियमन ज्ञा-
नत्रयप्रद बन्धमोचक सुमनसासुरर
चित्तवृत्तिगळन्ते नडेव प्र-
मत्तनल्ल सुहृज्जनाप्तन
नित्यदलि नेनेनेनेदु सुखिसुव भाग्य करुणिपुदु ॥

पञ्च-भेद-ज्ञान-वरुपुवि-रिञ्चि-जनकन-तोरु-मनदलि-
वाञ्छि-तप्रद-ओलुमे-यिन्दलि-दास-नेन्दरि-तु ।
पञ्च-वक्त्रन-तनय-भवदोळु-वञ्चि-सदेस-न्तैसु-विषयदि-
सञ्च-रिसद-न्ददलि-माडुम-नादि-करणग-ळ ॥ १६-(८६१)

पञ्चभेदज्ञानवरुपु वि-
रिञ्चिजनकन तोरु मनदलि
वाञ्छितप्रद ओलुमेयिन्दलि दासनेन्दरितु ।
पञ्चवक्त्रन तनय भवदोळु
वञ्चिसदे सन्तैसु, विषयदि
सञ्चरिसदन्ददलि माडु मनादि करणगळ ॥

एनु-बेडुवु-दिल्ल-निन्नकु-योनि-गळुबर-लञ्जे-लकुमी-
प्राण-पतित-त्त्वेश-रिन्दोड-गूडि-गुणका-र्य ।
ताने-माडुव-नेम्ब-ईसु-ज्ञान-वनेकरु-णिसुवु-देनगेम-
हानु-भावमु-हुर्मु-हुःप्रा-र्थिसुवे-निनिते-न्दु ॥ १७-(८६२)

एनुबेडुवुदिल्ल निन्न कु-
योनिगळु बरलञ्जे लकुमी-
प्राणपति तत्त्वेशरिन्दोडगूडि गुणकार्य ।
ताने माडुवनेम्ब ई सु-
ज्ञानवने करुणिसुवुदेनगे म-
हानुभाव मुहुर्मुहुः प्रार्थिसुवेनिनितेन्दु ॥

नमोन-मोगुरु-वर्य-विबुधो-त्तमवि-वर्जित-निद्र-कल्प-
द्रुमने-निपेभज-करिगे-बहुगुण-भरित-शुभचरि-त ।
उमेय-नन्दन-परिह-रिसह-म्ममते-बुद्ध्या-दिन्द्रि-यगळा-
क्रमिसि-दणिसुत-लिहवु-भवदोळ-गाव-कालद-लि ॥१८(८६३)

नमो नमो गुरुवर्य विबुधो-
त्तम विवर्जितनिद्र कल्प-
द्रुमनेनिपे भजकरिगे बहुगुणभरित शुभचरित ।
उमेयनन्दन परिहरिसह-
म्ममते बुद्ध्चादिन्द्रियगळा-
क्रमिसि दणिसुतलिहवु भवदोळगावकालदलि ॥

जयज-यतुवि-घ्नेश-ताप-त्रयवि-नाशन-विश्व-मङ्गल-
जयज-यतुवि-द्यप्र-दायक-वीत-भयशो-क ।
जयज-यतुचा-र्वङ्ग-करुणा-नयन-दिन्दलि-नोडि-जनुमा-
मयमृ-तिगळनु-परिह-रिसुभ-क्तरिगे-भवदोळ-गे ॥ १९-(८६४)

जय जयतु विघ्नेश ताप-
त्रयविनाशन विश्वमङ्गल
जय जयतु विद्यप्रदायक वीतभयशोक ।
जय जयतु चार्वङ्ग करुणा-
नयनदिन्दलि नोडि जनुमा-
मय मृतिगळनु परिहरिसु भक्तरिगे भवदोळगे ॥

कडुक-रुणिनी-नेन्द-रिदुहे-रोडल-नमिसुवे-निन्न-डिगेबे-
म्बिडदे-पालिसु-परम-करुणा-सिन्धु-एन्दे-न्दु ।
नडुन-डुवेबरु-तिप्प-विघ्नव-तडेदु-भगव-न्नाम-कीर्तने-
नुडिदु-नुडिसे-न्निन्द-प्रतिदिव-सदलि-मरेयद-ले ॥ २०-(८६५)

कडुकरुणि नीनेन्दरिदु हे-
रोडल नमिसुवे निन्नडिगे बे-
म्बिडदे पालिसु परमकरुणासिन्धु एन्देन्दु ।
नडुनडुवे बरुतिप्प विघ्नव
तडेदु भगवन्नाम कीर्तने
नुडिदु नुडिसेन्निन्द प्रतिदिवसदलि मरेयदले ॥

एक-विंशति-पदग-ळेनिसुव-कोक-नदनव-मालि-केयमै-
नाकि-तनया-न्तर्ग-तश्री-प्राण-पतिएनि-प ।
श्रीक-रजग-न्नाथ-विट्टल-स्वीक-रिसिस्व-र्गाप-वर्गादि-
ताको-डुवसौ-ख्यगळ-भक्तरि-गाव-कालद-लि ॥ २१-(८६६)

एकविंशति पदगळेनिसुव
कोकनद नवमालिकेय मै-
नाकितनयान्तर्गत श्रीप्राणपति एनिप ।
श्रीकरजगन्नाथविट्टल
स्वीकरिसि स्वर्गापवर्गादि
ता कोडुव सौख्यगळ भक्तरिगावकालदलि ॥

॥ २८. श्रीविघ्नेश्वरस्तोत्रसन्धि मुगियितु ॥ (२८-८६६)
॥श्री मध्वेशार्पणमस्तु ॥

श्रीमद्धरिकथाऽमृतसार २९. देव-दैत्यतारतम्यसन्धि (आरभि- मठच्चताळ)

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

विष्णु-सर्वो-त्तमनु-प्रकृतिक-निष्ट-ळेनिपळ-नन्त-गुणपर-
मेष्ठि-पवनरु-कडिमे-वाणी-भार-तिगळध-म ।
विष्णु-वहनफ-णीन्द्र-मृडरिगे-कृष्ण-महिषिय-रधम-रिवरोळु-
श्रेष्ठ-ळेनिपळु-जाम्ब-वतिया-वेश-बलदि-न्द ॥ १-(८६७)

विष्णु सर्वोत्तमनु प्रकृति क-
निष्टळेनिपळनन्तगुण पर-
मेष्ठि पवनरु कडिमे वाणी भारतिगळधम ।
विष्णुवहन फणीन्द्र मृडरिगे
कृष्णमहिषियरधमरिवरोळु
श्रेष्ठळेनिपळु जाम्बवतियावेश बलदिन्द ॥

प्लवग-पन्नग-पअहि-भूषण-युवति-यरुसम-तम्मो-ळगेजा-
म्बवति-गिन्तलि-कडिमे-इवरि-न्दिन्द्र-कामरि-गे-
अवर-प्राणनु-कडिमे-कामन-कुवर-शचिरति-दक्ष-गुरुमनु-
प्रवह-मारुत-कोरते-एनिसुव-नारु-जनरि-न्द ॥ २-(८६८)

प्लवग पन्नगप अहिभूषण
युवतियरु सम तम्मोळगे जा-
म्बवतिगिन्तलि कडिमे इवरिन्दिन्द्र कामरिगे
अवर प्राणनु कडिमे कामन
कुवर शचि रति दक्ष गुरु मनु
प्रवहमारुत कोरते एनिसुवनारु जनरिन्द ॥

यमदि-वाकर-चन्द्र-मानवि-समरु-कोणप-प्रवह-गधमरु-
द्युमणि-गिन्तलि-वरुण-नीचनु-नार-दाधम-नु ।
सुमन-सास्य-प्रसूति-भृगुमुनि-समरु-नारद-गधम-रत्रि-
प्रमुख-विश्वा-मित्र-वैव-स्वतर-नलगध-म ॥ ३-(८६९)

यम दिवाकर चन्द्र मानवि
समरु कोणपप्रवहगधमरु
द्युमणिगिन्तलि वरुणनीचनु नारदाधमनु ।
सुमनसास्य प्रसूति भृगुमुनि
समरु नारदगधमरत्रि-
प्रमुख विश्वामित्र वैवस्वतरनलगधम ॥

मित्र-तारा-निर्ऋ-तिप्रवह-पत्नि-प्रावहि-समरु-विश्वा-
मित्र-गिन्तलि-कोरते-विष्व-क्सेन-गणना-थ
वित्त-पतिअ-श्विनिग-ळधमरु-मित्र-मोदला-दवरि-गिन्तलि-
बित्त-रिपेनुश-तस्थ-दिविजर-व्यूह-नामग-ळ ॥ ४-(८७०)

मित्र तारा निर्ऋति प्रवह
पत्निप्रावहि समरु विश्वा-
मित्रगिन्तलि कोरते, विष्वक्सेन गणनाथ
वित्तपति अश्विनिगळधमरु
मित्रमोदलादवरिगिन्तलि
बित्तरिपेनु शतस्थदिविजर व्यूहनामगळ ॥

मरुत-रोम्भ-त्तधिक-नाल्व-त्तेरडु-अश्विनि-विश्वे-देवरु-
एरड-यिदुह-न्नोन्दु-रुद्ररु-द्वाद-शादि-त्य ।
गुरुपि-तृत्रय-रष्ट-वसुगळु-भरत-द्यावा-पृथ्वि-ऋभुवे-
न्दरिवु-दिवरनु-सोम-रसपा-नार्ह-रहुदे-न्दु ॥ ५-(८७१)

मरुतरोम्भत्तधिकनाल्व-
त्तेरडु अश्विनि विश्वेदेवरु
एरडयिदु हन्नोन्दु रुद्ररु द्वादशादित्य ।
गुरु पितृत्रयरष्टवसुगळु
भरत द्यावा पृथ्वि ऋभुवे-
न्दरिवुदिवरनु सोमरसपानार्हरहुदेन्दु ॥

ईदि-वौकस-रोळगे-उक्तरु-ऐद-धिकदश-उळिद-एम्भ-
त्तैदु-शेषरि-गेणेये-निसुवरु-धनप-विघ्ने-श ।
साधु-वैव-स्वतस्व-यम्भुव-श्रीद-तापस-रुळिदु-मनुए-
काद-शरुवि-घ्नेश-गिन्तलि-नीच-रेनिसुव-रु ॥ ६-(८७२)

ई दिवौकसरोळगे उक्तरु
ऐदधिकदश उळिद एम्भ-
त्तैदु शेषरिगेणेयेनिसुवरु धनप विघ्नेश ।
साधुवैवस्वत स्वयम्भुव
श्रीदतापसरुळिदु मनुए-
कादशरु विघ्नेशगिन्तलि नीचरेनिसुवरु ॥

च्यवन-नन्दन-कविबृ-हस्प-त्यवर-जउच-थ्यमुनि-पावक-
ध्रुवन-हुषशश-बिन्दु-प्रीय-व्रतनु-प्रह्ला-द ।
कुवल-यपरु-क्तेत-रिन्दलि-अवर-रोहिणि-शाम-लाजा-
ह्लविवि-राट्प-र्जन्य-सञ्ज्ञा-देवि-यरुअध-म ॥ ७-(८७३)

च्यवननन्दन कवि बृहस्प-
त्यवरजउचथ्यमुनि पावक
ध्रुव नहुष शशबिन्दु प्रीयव्रतनु प्रह्लाद ।
कुवलयपरुक्तेतरिन्दलि
अवर रोहिणि शामला जा-
ह्लवि विराट्पर्जन्य सञ्ज्ञादेवियरु अधम ॥

द्युनदि-गिन्तलि-नीच-रेनिपरु-अनभि-मानिदि-वौक-सरुके-
चनमु-निगळिगे-कडिमे-स्वाहा-देवि-गधमबु-ध ।
एनिसु-वळुषा-देवि-नीचळु-शनिक-डिमेक-र्माधि-पतिस-
द्विनुत-पुष्कर-नीच-नेनिसुव-सूर्य-नन्दन-गे ॥ ८-(८७४)

द्युनदिगिन्तलि नीचरेनिपरु
अनभिमानि दिवौकसरु के-
चनमुनिगळिगे कडिमे स्वाहादेविगधम बुध ।
एनिसुवळुषादेवि नीचळु
शनि कडिमे कर्माधिपति स-
द्विनुत पुष्कर नीचनेनिसुव सूर्यनन्दनगे ॥

कोरते-एनिपरु-शेष-ऋषिपु-ष्करगे-ऊर्वशि-मुख्य-शतव-
प्सररु-तुम्बुर-मुखरु-आजा-नजरे-निसुतिह-रु ।
करेसु-वदुअन-लगण-नाल्व-त्तरेच-तुरदश-द्व्यष्ट-साविर-
हरिम-डदियरु-समरे-निसुवरु-पिन्ते-पेळदरि-गे ॥ ९-(८७५)

कोरते एनिपरु शेषऋषि पु-
ष्करगे ऊर्वशिमुख्य शतव-
प्सररु तुम्बुरमुखरु आजानजरेनिसुतिहरु ।
करेसुवदु अनलगण नाल्व-
त्तरेचतुरदशद्वचष्टसाविर
हरिमडदियरु समरेनिसुवरु पिन्ते पेळदरिगे ॥

तदव-ररना-ख्यात-अप्सर-सुदति-यरुकृ-ष्णाङ्ग-सङ्गिग-
ळदर-तरुवा-यदलि-चिरपित-रुगळु-इवरि-न्द ।
त्रिदश-गन्ध-र्वगण-इवरि-न्दधम-नरग-न्धर्व-रिवरि-
न्दुदधि-मेखल-पतिग–ळधमरु-नूरु-गुणदि-न्द ॥ १०-(८७६)

तदवररनाख्यात अप्सर
सुदतियरु कृष्णाङ्गसङ्गिग-
ळदर तरुवायदलि चिरपितरुगळु इवरिन्द ।
त्रिदशगन्धर्वगण इवरि-
न्दधम नरगन्धर्वरिवरि-
न्दुदधि मेखलपतिगळधमरु नूरु गुणदिन्द ॥

पृथ्वि-पतिगळि-गिन्त-शतमनु-जोत्त-मरुकडि-मेनिप-रिवरि-
न्दुत्त-रोत्तर-नूरु-गुणदि-न्दधिक-रादव-र ।
नित्य-दलिचि-न्तिसुत-नमिसुत-भृत्य-नानहु-देम्ब-भक्तर-
चित्त-दलिनेले-गोण्डु-करुणिप-रखिल-सौख्यग-ळ ॥ ११-(८७७)

पृथ्विपतिगळिगिन्त शत मनु-
जोत्तमरु कडिमेनिपरिवरि-
न्दुत्तरोत्तर नूरु गुणदिन्दधिकरादवर ।
नित्यदलि चिन्तिसुत नमिसुत
भृत्यनानहुदेम्ब भक्तर
चित्तदलि नेलेगोण्डु करुणिपरखिल सौख्यगळ ॥

द्रुमल-तातृण-गुल्म-जीवरु-क्रमदि-नीचरु-इवरि-गिन्ता-
धमरे-निसुवरु-नित्य-बद्धरि-गिन्त-अज्ञा-नि ।
तमसि-ग्योग्यर-भृत्य-रधमरु-अमरु-षाद्यभि-मानि-दैत्यरु-
नमुचि-मोदला-दवरि-गिन्तलि-विप्र-चितिनी-च ॥ १२-(८७८)

द्रुम लता तृण गुल्मजीवरु
क्रमदि नीचरु इवरिगिन्ता-
धमरेनिसुवरु नित्यबद्धरिगिन्त अज्ञानि ।
तमसिग्योग्यर भृत्यरधमरु
अमरुषाद्यभिमानि दैत्यरु
नमुचिमोदलादवरिगिन्तलि विप्रचिति नीच ॥

अलकु-मियुता-नीच-ळेनिपळु-कलिप-रमनी-चतम-निवनि-
न्दुळिद-पापिग-ळिल्ल-नोडलु-ईज-गत्त्रय-दि ।
मलवि-सर्जन-काल-दलिक-त्तलेयो-ळगेक-ऽमलकु-मार्ग-
स्थलग-ळलिचि-न्तनेय-माळपरु-बल्ल-वरुनि-त्य ॥ १३-(८७९)

अलकुमियु ता नीचळेनिपळु
कलि परम नीचतमनिवनि-
न्दुळिद पापिगळिल्ल नोडलु ई जगत्त्रयदि ।
मलविसर्जनकालदलि क-
त्तलेयोळगे कऽमल कुमार्ग
स्थलगळलि चिन्तनेय माळपरु बल्लवरु नित्य ॥

सत्व-जीवर-मानि-ब्रह्मनु-नित्य-बद्धरो-ळगेपु-रञ्जन-
दैत्य-समुदा-याधि-पतिकलि-एनिप-पवमा-न
नित्य-दलिअव-रोळगे-कर्मप्र-वर्त-कनुता-नागि-श्रीपुरु-
षोत्त-मनस-म्प्रीति-गोसुग-माडि-माडिसु-व ॥ १४-(८८०)

सत्वजीवरमानि ब्रह्मनु
नित्यबद्धरोळगे पुरञ्जन
दैत्यसमुदायाधिपति कलि एनिप पवमान
नित्यदलि अवरोळगे कर्मप्र-
वर्तकनु तानागि श्रीपुरु-
षोत्तमन सम्प्रीतिगोसुग माडि माडिसुव ॥

प्राण-देवनु-त्रिविध-रोळगेप्र-वीण-ताने-न्देनिसि-अधिका-
रानु-सारदि-कर्म-गळता-माडि-माडिसु-व ।
ज्ञान-भक्तिसु-ररिगे-मिश्र-ज्ञान-मध्यम-जीव-रिगेअ-
ज्ञान-मोह-द्वेष-गळदै-त्यरिगे-कोडुति-प्प ॥ १५-(८८१)

प्राणदेवनु त्रिविधरोळगे प्र-
वीण तानेन्देनिसि अधिका-
रानुसारदि कर्मगळ ता माडि माडिसुव ।
ज्ञान भक्ति सुररिगे मिश्र-
ज्ञान मध्यमजीवरिगे अ-
ज्ञान मोह द्वेषगळ दैत्यरिगे कोडुतिप्प ॥

देव-दैत्यर-तार-तम्यव-नीवि-धदितिळि-देल्ल-रोळुल-
क्ष्मीव-रनेस-र्वोत्त-मनुए-न्दरिदु-नित्यद-लि ।
सेवि-सुवभ-क्तरिगो-लिदुसुख-वीव-सर्व-त्रदलि-सुखमय-
श्रीवि-रिञ्च्या-दिविनु-तजग-न्नाथ-विट्ठल-नु ॥ १६-(८८२)

देवदैत्यर तारतम्यव-
नीविधदि तिळिदेल्लरोळु ल-
क्ष्मीवरने सर्वोत्तमनु एन्दरिदु नित्यदलि ।
सेविसुव भक्तरिगोलिदु सुख-
वीव सर्वत्रदलि सुखमय
श्रीविरिञ्च्यादिविनुत जगन्नाथविट्ठलनु ॥

॥ २९. देव-दैत्यतारतम्यसन्धि मुगियितु ॥ (२९-८८२) ॥ श्रीमध्वेशार्पणमस्तु ॥

नीने बेकु
नीने साकु

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

एनगे-निन्नलि-भकुति-ज्ञानग-ळेनिति-हवोप्रा-णनलु-तिळियदे-
हनुम-दाद्यव-तार-गळभे-दगळ-पेळुव-व ।
दनुज-घोरा-न्धन्त-मसिग्यो-ग्यनुन-संशय-निन्न-बैवर-
कोनेय-नालिगे-पिडिदु-छेदिपे-नेन्द-नब्जभ-व ॥ १(८८३)

एनगे निन्नलि भकुति ज्ञानग-
ळेनितिहवो प्राणनलु तिळियदे
हनुमदाद्यवतारगळ भेदगळ पेळुवव ।
दनुज, घोरान्धन्तमसिग्यो
ग्यनु नसंशय निन्न बैवर
कोनेय नालिगे पिडिदु छेदिपेनेन्दनब्जभव ॥

ज्ञान-बलसुख-पूर्ण-व्याप्तगे-हीन-गुणवे-म्बुवनु-ईश्वर-
नाने-एम्बुव-सच्चि-दान-न्दात्म-गुत्प-त्ति ।
श्रीनि-तम्बिनि-गीश-गेवियो-गानु-चिन्तने-छेद-भेदवि-
हीन-देहगे-शस्त्र-गळभय-पेळु-ववदै-त्य ॥ २-(८८४)

ज्ञानबल सुख पूर्णव्याप्तगे
हीनगुणवेम्बुवनु ईश्वर
नाने एम्बुव सच्चिदानन्दात्मगुत्पत्ति ।
श्रीनितम्बिनिगीशगे वियो-
गानुचिन्तने छेद भेद वि-
हीनदेहगे शस्त्रगळ भय पेळुवव दैत्य ॥

लेश-भयशो-कादि-शून्यगे-क्लेश-गळपे-ळुवव-राम-
व्यास-रूप-ङ्गळिगे-ऋषि-विप्रत्व-पेळुव-व ।
दाश-रथिकृ-ष्णादि-रूपके-केश-खण्डने-पेळव-मक्कळि-
गोसु-गशिवा-र्चनेय-माडिद-नेम्बु-वनेदै-त्य ॥ ३-(८८५)

लेशभयशोकादि शून्यगे
क्लेशगळ पेळुवव राम
व्यास रूपङ्गळिगे ऋषि विप्रत्व पेळुवव ।
दाशरथि कृष्णादि रूपके
केशखण्डने पेळव मक्कळि-
गोसुग शिवार्चनेय माडिदनेम्बुवने दैत्य ॥

पाप-परिहा-रार्थ-रामनु-माप-तियनि-र्मिसिद-भगव-
द्रूप-रूपके-भेद-चिन्तने-माळप-मानव-नु ।
आप-गळुस-त्तीर्थ-गुरुमा-तापि-तृप्रभु-प्रतिमे-भूतद-
याप-ररक-ण्डवरे-देवरु-एम्बु-वनेदै-त्य ॥ ४-(८८६)

पापपरिहारार्थ रामनु-
मापतिय निर्मिसिद भगव-
द्रूपरूपके भेदचिन्तने माळप मानवनु ।
आपगळु सत्तीर्थ गुरु मा-
तापितृ प्रभु प्रतिमे भूतद-
यापररकण्डवरे देवरु एम्बुवने दैत्य ॥

सुन्द-रस्वयं-व्यक्त-वेचिदा-नन्द-रूपग-ळेम्बु-वनुनर-
निन्द-निर्मित-ईश्व-रगेअभि-नमिसु-तिहनर-नु ।
कन्दु-गोरळदि-वाक-रनुहरि-योन्दे-सूर्यसु-रोत्त-मजग-
द्वन्द्य-नेम्बुव-विष्णु-दूषणे-माडु-ववदै-त्य ॥ ५-(८८७)

सुन्दर स्वयंव्यक्तवे चिदा-
नन्दरूपगळेम्बुवनु नर-
निन्द निर्मित ईश्वरगे अभिनमिसुतिह नरनु ।
कन्दुगोरळ दिवाकरनु हरि-
योन्दे सूर्यसुरोत्तम जग-
द्वन्द्यनेम्बुव विष्णुदूषणे माडुवव दैत्य ॥

नेम-दिन्द-श्वत्थ-तुलशी-सोम-धरनलि-विमल-शाल-
ग्राम-गळनि-ट्टभिन-मिपनर-मुक्ति-योग्यस-द ।
भूमि-योळुध-र्मार्थ-मुक्तिसु-काम-पेक्षेग-ळिन्द-शाल-
ग्राम-गळव्यति-रिक्त-वन्दिसे-दुःख-वैदुव-नु ॥ ६-(८८८)

नेमदिन्दश्वत्थ तुलशी
सोमधरनलि विमलशाल-
ग्रामगळनिट्टभिनमिप नर मुक्तियोग्य सद ।
भूमियोळु धर्मार्थ मुक्ति सु-
कामपेक्षेगळिन्द शाल-
ग्रामगळ व्यतिरिक्तवन्दिसे दुःखवैदुवनु ॥

वितत-महिमन-बिट्टु-सुररिगे-पृथकु-वन्दने-माळप-मानव-
दितिज-नेसरि-हरियु-तासं-स्थितने-निसन-ल्लि ।
चतुर-मुखमोद-लाद-खिलदे-वतेग-ळोळगिह-नेन्दु-लक्ष्मी-
पतिगे-वन्दिसे-ओन्द-रेक्षण-बिट्ट-गलनव-र ॥ ७-(८८९)

विततमहिमन बिट्टु सुररिगे
पृथकुवन्दने माळप मानव
दितिजने सरि हरियु ता संस्थितनेनिसनल्लि ।
चतुरमुखमोदलादखिल दे-
वतेगळोळगिहनेन्दु लक्ष्मी-
पतिगे वन्दिसे ओन्दरेक्षण बिट्टगलनवर ॥

शैव-शूद्रक-रार्चि-तमहा-देव-वायुह-रिप्र-तिमेवृ-
न्दाव-नदिमा-सद्व-यदोळिह-तुलशि-अप्रस-व-
गोवि-वाहवि-वर्जि-ताश्व-त्थावि-टपिगळ-भक्ति-पूर्वक-
सेवि-सुवनर-दैत्य-शाश्वत-दुःख-वैदुव-नु ॥ ८-(८९०)

शैव शूद्र करार्चित महा-
देव वायु हरिप्रतिमे वृ-
न्दावनदि मासद्वयदोळिह तुलशि, अप्रसव-
गो विवाहविवर्जिताश्व-
त्थाविटपिगळ भक्तिपूर्वक
सेविसुव नर दैत्य शाश्वतदुःखवैदुवनु ॥

कमल-सम्भव-मुख्य-मनुजो-त्तमर-परिय-न्तरदि-मुक्तर-
समश-तायु-ष्युळ्ळ-वनुकलि-ब्रह्म-नोपा-दि ।
क्रमदि-नीचरु-दैत्य-रुनरा-धमर-पिडिदुकु-लक्ष्मि-कलिअनु-
पमरे-निसुवरु-असुर-रोळुद्वे-षादि-गुणदि-न्द ॥ ९-(८९१)

कमलसम्भवमुख्य मनुजो-
त्तमर परियन्तरदि मुक्तर
सम शतायुष्युळ्ळवनु कलि ब्रह्मनोपादि ।
क्रमदि नीचरु दैत्यरु नरा-
धमर पिडिदु कुलक्ष्मि कलि अनु-
पमरेनिसुवरु असुररोळु द्वेषादि गुणदिन्द ॥

वनज-सम्भव-नब्द-शतओ-ब्बनेम-हाकलि-शब्द-वाच्यनु-
दिनदि-नगळलि-बीळ्व-रन्ध-न्तमदि-कलिमा-र्ग-
दनुज-रेल्ल्प्र-तीक्षि-सुतब्र-ह्मनश-ताब्दा-न्तदलि-लिङ्गवु–
अनिल-नगदा-प्रहर-दिन्दलि-भङ्ग-वैदुव-दु ॥ १०-(८९२)

वनजसम्भवनब्दशत ओ-
ब्बने महाकलिशब्दवाच्यनु
दिनदिनगळलि बीळ्वरन्धन्तमदि कलिमार्ग
दनुजरेल्ल प्रतीक्षिसुत, ब्र-
ह्मन शताब्दान्तदलि लिङ्गवु
अनिलन गदाप्रहरदिन्दलि भङ्गवैदुवदु ॥

मारु-तनगदे-यिन्द-लिङ्गश-रीर-पोदा-नन्त-रतमो-
द्वार-वैदिस्व-रूप-दुःखग-ळनुभ-विसलिह-रु ।
वैर-हरिभ-क्तरलि-हरियलि-तार-तम्यद-लिरुति-हुदुसं-
सार-दल्लित-मस्सि-नल्लच-त्यधिक-कलिय-ल्लि ॥ ११-(८९३)

मारुतन गदेयिन्द लिङ्गश-
रीर पोदानन्तर तमो-
द्वारवैदि स्वरूपदुःखगळनुभविसलिहरु ।
वैर हरिभक्तरलि हरियलि
तारतम्यदलिरुतिहुदु सं-
सारदल्लि तमस्सिनल्लचत्यधिक कलियल्लि ॥

ज्ञान-वेम्बुदु-मिथ्य-असमी-चीन-दुःखत-रङ्ग-वेसमी-
चीन-बुद्धिनि-रन्त-रदिकलि-गिहुदु-दैत्यरो-ळु ।
हीन-ळेनिपळु-शतगु-णदिकलि-मानि-निगेशत-विप्र-चित्तिगे-
ऊन-शतगुण-काल-नेमिये-कंस-नेनिसिद-नु ॥ १२-(८९४)

ज्ञानवेम्बुदु मिथ्य असमी-
चीनदुःखतरङ्गवे समी-
चीन बुद्धि निरन्तरदि कलिगिहुदु दैत्यरोळु ।
हीनळेनिपळु शतगुणदि कलि-
मानिनिगे शत विप्रचित्तिगे
ऊन शतगुण कालनेमिये कंसनेनिसिदनु ॥

काल-नेमिगे-पञ्च-गुणदिं-कीळु-मधुकै-टभरु-जन्मव-
ताळि-इळेयोळु-हंस-डिभका-ह्वयदि-करेसिद-रु ।
ऐळ-नामक-विप्र-चित्तिस-माळु-वेनिपहि-रण्य-कश्यपु-
शूल-पाणिय-भक्त-नरकगे-शतगु-णाधम-नु ॥ १३-(८९५)

कालनेमिगे पञ्चगुणदिं
कीळु मधुकैटभरु जन्मव
ताळि इळेयोळु हंस डिभकाह्वयदि करेसिदरु ।
ऐळनामकविप्रचित्ति स-
माळुवेनिप हिरण्यकश्यपु
शूलपाणिय भक्त नरकगे शत गुणाधमनु ॥

गुणग-ळत्रय-नीच-नेनिसुव-कनक-कशिपुगे-हाट-काम्बक-
गेणेए-निपमणि-मन्त-गिन्तलि-किञ्चि-द्दूनब-क ।
दनुज-वरता-रकनु-विंशति-गुणदि-नीचनु-लोक-कण्टक-
नेनिप-शम्बर-तार-कासुर-गधम-षड्गुण-दि ॥ १४-(८९६)

गुणगळत्रय नीचनेनिसुव
कनककशिपुगे हाटकाम्बक-
गेणे एनिप मणिमन्तगिन्तलि किञ्चिद्दून बक ।
दनुजवरतारकनु विंशति
गुणदि नीचनु लोककण्टक-
नेनिप शम्बर तारकासुरगधम षड्गुणदि ॥

सरिये-निसुवनु-साल्व-निगेस-ङ्करनु-अधमनु-दशगु-णदिश-
म्बरगे-षड्गुण-नीच-रेनिपहि-डिम्ब-काबा-णा-
सुरनु-द्वापर-कीच-कनुना-ल्वरुस-मरुद्वा-परने-शकुनियु-
करेसि-दनुकौ-रवगे-सोदर-माव-नहुदे-न्दु ॥ १५-(८९७)

सरियेनिसुवनु साल्वनिगे स-
ङ्करनु अधमनु दश गुणदि श-
म्बरगे षड्गुण नीचरेनिप हिडिम्बका बाणा-
सुरनु द्वापर कीचकनु ना-
ल्वरु समरु द्वापरने शकुनियु
करेसिदनु कौरवगे सोदरमावनहुदेन्दु ॥

नुमुचि-इल्वल-पाक-नामक-समरु-बाणा-द्यरिगे-दशगुण-
नमुचि-नीचनु-मूरु-गुणदि-न्दधम-वाता-पि ।
कुमति-धेनुक-नूरु-गुणदि-न्दमर-रिपुवा-तापि-गधमनु-
वमन-धेनुक-निन्द-अर्धगु-णाध-मनुके-शि ॥ १६-(८९८)

नुमुचि इल्वल पाकनामक
समरु बाणाद्यरिगे दश गुण
नमुचि नीचनु मूरु गुणदिन्दधम वातापि ।
कुमतिधेनुक नूरु गुणदि-
न्दमररिपु वातापिगधमनु
वमनधेनुकनिन्द अर्ध गुणाधमनु केशि ॥

मत्ते-केशी-नामक-तृणा-वर्त-समलव-णासु-रनुओ-
म्भत्तु-नीचा-रिष्ट-नामक-पञ्च-गुणदि-न्द ।
दैत्य-सत्तम-हंस-डिभकप्र-मत्त-वेननु-पौण्ड्र-कनुओ-
म्भत्तु-गुणदि-न्दधम-मूवरु-लवण-नामक-गे ॥ १७-(८९९)

मत्ते केशीनामक तृणा-
वर्त सम लवणासुरनु ओ-
म्भत्तु नीचारिष्टनामक पञ्च गुणदिन्द ।
दैत्यसत्तमहंस डिभक प्र-
मत्तवेननु पौण्ड्रकनु ओ-
म्भत्तु गुणदिन्दधम मूवरु लवणनामकगे ॥

ईश-नेना-नेम्ब-खळदु-श्शास-नावृ-षसेन-दैत्या-
ग्रेस-रजरा-सन्ध-समपा-पिगळो-ळत्यधि-क ।
कंस-कूपवि-कर्ण-सरिरु-ग्मीश-ताधम-रुग्मि-गिन्तम-
हासु-रनुशत-धन्व-किर्मी-ररुश-ताधम-रु ॥ १८-(९००)

ईशने नानेम्ब खळदु-
श्शासनावृषसेन दैत्या-
ग्रेसरजरासन्ध सम पापिगळोळत्यधिक ।
कंस कूपविकर्ण सरि रु-
ग्मी शताधम रुग्मिगिन्त म-
हासुरनु शतधन्वकिर्मीररु शताधमरु ॥

मदिर-पानी-दैत्य-गणदोळ-गधम-रेनिपरु-कालि-केयरु-
अधिक-रिगेसम-रहरु-देवा-वेश-बलदि-न्द ।
वदन-पाणी-पाद-श्रोत्रिय-गुदउ-पस्थ-घ्राण-त्वग्रस-
गधिप-दैत्यरु-नीच-रेनिपरु-कालि-केयरि-गे ॥ १९-(९०१)

मदिरपानीदैत्यगणदोळ-
गधमरेनिपरु कालिकेयरु
अधिकरिगे समरहरु देवावेश बलदिन्द ।
वदन पाणी पाद श्रोत्रिय
गुद उपस्थ घ्राण त्वग्रस-
गधिपदैत्यरु नीचरेनिपरु कालिकेयरिगे ॥

ज्ञान-कर्मे-न्द्रियग-ळिगेअभि-मानि-कल्या-द्यखिल-दितिजरु-
हीन-कर्मव-माडि-माडिसु-तिहरु-सर्वरो-ळु ।
वाणि-भारति-कमल-भवपव-मान-रिवर-च्छिन्न-भक्तरु-
प्राण-असुरा-वेश-रहितरु-आख-णाश्मस-म ॥ २०-(९०२)

ज्ञान कर्मेन्द्रियगळिगे अभि-
मानि कल्याद्यखिल दितिजरु
हीनकर्मव माडि माडिसुतिहरु सर्वरोळु ।
वाणि भारति कमलभव पव-
मानरिवरच्छिन्न भक्तरु,
प्राण असुरावेशरहितरु आखणाश्मसम ॥

हुतव-हाक्षा-द्यमर-रेल्लरु-युतरु-कल्या-वेश-विधिमा-
रुतस-रस्वति-भार-तियरव-तार-दोळगि-ल्ल ।
कृतपु-टाञ्जलि-यिन्द-तन्नय-पितन-सम्मुख-दल्लि-निल्लुत-
नुतिसि-बिन्नै-सिदनु-तन्नोळु-कृपेय-माडे-न्दु ॥ २१-(९०३)

हुतवहाक्षाद्यमररेल्लरु
युतरु कल्यावेश, विधि मा-
रुत सरस्वति भारतियरवतारदोळगिल्ल ।
कृतपुटाञ्जलियिन्द तन्नय
पितन सम्मुखदल्लि निल्लुत
नुतिसि बिन्नैसिदनु तन्नोळु कृपेय माडेन्दु ॥

द्वेषि-दैत्यर-तारत-म्यद-दूष-णेयुभू-षणग-ळेन्नदे-
दोष-वेम्बुव-द्वेषि-निश्चय-इवर-नोड-ल्के ।
क्लेश-गळनै-दुवनु-बहुविध-संश-यवुपड-सल्ल-वेद-
व्यास-गरुडपु-राण-दलिपे-ळिदरु-ऋषिगळि-गे ॥ २२-(९०४)

द्वेषिदैत्यर तारतम्यद
दूषणेयु भूषणगळेन्नदे
दोषवेम्बुव द्वेषि निश्चय इवर नोडल्के ।
क्लेशगळनैदुवनु बहुविध
संशयवु पडसल्ल वेद-
व्यास गरुडपुराणदलि पेळिदरु ऋषिगळिगे ॥

जालि-नेग्गिलु-क्षुद्र-शिलेबरि-गाल-पुरुषन-बाधि-पवुच-
म्मोळ-गेयमे-ट्टिदव-गुण्टे-कण्ट-कगळभ-य ।
चेळु-सर्पव-कोन्द-वार्तेय-केळि-मोदिप-गिल्ल-अघयम-
नाळु-गळभय-विल्ल-दैत्यर-निन्दि-सुवनर-गे ॥ २३-(९०५)

जालि नेग्गिलु क्षुद्रशिले बरि-
गालपुरुषन बाधिपवु च-
म्मोळगेय मेट्टिदवगुण्टे कण्टकगळ भय ।
चेळु सर्पव कोन्दवार्तेय
केळि मोदिपगिल्ल अघ, यम-
नाळुगळ भयविल्ल दैत्यर निन्दिसुव नरगे ॥

पुण्य-कर्मव-पुष्क-रादिहि-रण्य-गर्भा-न्तर्ग-तब्र-
ह्मण्य-देवनि-गर्पि-सुतलिरु-पाप-कर्मग-ळ - ।
जन्य-दुःखव-कलिमु–खाद्यरि-गुण्ण-लीवनु-सकल-लोकश-
रण्य-शाश्वत-मिश्र-जनरिगे-मिश्र-फलवी-व ॥ २४-(९०६)

पुण्यकर्मव पुष्करादि हि-
रण्यगर्भान्तर्गत ब्र-
ह्मण्यदेवनिगर्पिसुतलिरु पापकर्मगळ ।
जन्यदुःखव कलिमुखाद्यरि-
गुण्णलीवनु सकललोकश-
रण्य शाश्वत मिश्रजनरिगे मिश्रफलवीव ॥

त्रिविध-गुणगळ-मानि-श्रीभा-र्गविर-मणगुणि-गुणग-ळोळगव-
रवर-योग्यते-कर्म-गळननु-सरिसि-कर्मफ-ल ।
स्ववश-रादम-रासु-ररगण-कवधि-इल्लदे-कोडुव-देव-
प्रवर-त्रिजग-न्नाथ-विट्टल-विश्व-व्यापक-नु ॥ २५-(९०७)

त्रिविधगुणगळमानि श्रीभा-
र्गविरमण गुणि गुणगळोळगव-
रवर योग्यते कर्मगळननुसरिसि कर्मफल ।
स्ववशरादमरासुरर गण-
कवधि इल्लदे कोडुव देव-
प्रवर त्रिजगन्नाथविट्टल विश्वव्यापकनु ॥

॥ ३०. दैत्यतारतम्यसन्धि मुगियितु ॥ (३०-९०७) ॥ श्रीमध्वेशार्पणमस्तु ॥

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

लेक्कि-सदेलकु-मियनु-बोम्मन-पोक्कु-ळिन्दलि-पडेद-पोसपो-
म्बक्कि-देरनु-पडेद-वयवग-ळिन्द-दिविजर-न ।
मक्क-ळन्ददि-पोरेव-सर्वद-रक्क-सान्तक-रणदो-ळगेनि-
र्दुःख-सुखमय-काय्द-पार्थन-सूत-नेन्देनि-सि ॥ १-(९०८)

लेक्किसदे लकुमियनु बोम्मन
पोक्कुळिन्दलि पडेद पोसपो-
म्बक्किदेरनु पडेदवयवगळिन्द दिविजरन ।
मक्कळन्ददि पोरेव सर्वद
रक्कसान्तक रणदोळगे नि-
र्दुःख सुखमय काय्द पार्थन सूतनेन्देनिसि ॥

दोष-गन्धवि-दूर-नाना-वेष-धारिवि-चित्र-कर्मम-
नीषि-माया-रमण-मध्वा-न्तःक-रणरू-ढ ।
शेष-शायिश-रण्य-कौस्तुभ-भूष-णसुक-न्धरस-दास-
न्तोष-बलसौ-न्दर्य-सारन-महिमे-गेने-म्बे ॥ २-(९०९)

दोषगन्धविदूर नाना-
वेषधारि विचित्रकर्म म-
नीषि मायारमण मध्वान्तःकरणरूढ ।
शेषशायि शरण्य कौस्तुभ-
भूषणसुकन्धर सदा स-
न्तोष बल सौन्दर्यसारन महिमेगेनेम्बे ॥

साश-नानश-नेअ-भीए-म्बीशृ-तिप्रति-पाद्य-नेनिसुव-
केश-वनरू-पद्म-यवचि-देह-दोळहोर-गे ।
बेस-रदेस-द्भक्ति-यिन्दउ-पास-नेयगै-युत्त-बुधरुहु-
ताश-ननवो-लिप्प-नेन्दन-वरत-तुतिसुव-रु ॥ ३-(९१०)

''साशनानशने अभी'' ए-
म्बी शृतिप्रतिपाद्यनेनिसुव
केशवन रूपद्वयव चिद्देहदोळहोरगे ।
बेसरदे सद्भक्तियिन्द उ-
पासनेय गैयुत्त बुधरु हु-
ताशनन वोलिप्पनेन्दनवरत तुतिसुवरु ॥

सकल-सद्गुण-पूर्ण-जन्मा-द्यखिल-दोषवि-दूर-प्रकटा-
प्रकट-सद्ध्या-पारि-गतसं-सारि-कंसा-रि ।
नकुल-नाना-रूप-निय्या-मकनि-यम्यनि-राम-यरवि-
प्रखर-सन्निभ-प्रभुस-दामां-पाहि-परमा-स ॥ ४-(९११)

सकलसद्गुणपूर्ण जन्मा-
द्यखिल दोषविदूर प्रकटा-
प्रकट सद्ध्चापारि गतसंसारि कंसारि ।
नकुल नानारूप निय्या-
मक नियम्य निरामय रवि-
प्रखरसन्निभ प्रभु सदा मांपाहि परमास ॥

चेत-नाचे-तनज-गत्तिनो-ळात-तनुता-नागि-लकुमी-
नाथ-सर्वरो-ळिप्प-तत्त-द्रूप-गळधरि-सि ।
जाति-गारन-तेरदि-एल्लर-माति-नोळगि-द्दखिल-कर्मव-
ताति-ळिसिको-ळ्ळदले-माडिसि-नोडि-नगुति-प्प ॥५-(९१२)

चेतनाचेतन जगत्तिनो-
ळाततनु तानागि लकुमी-
नाथ सर्वरोळिप्प तत्तद्रूपगळ धरिसि ।
जातिगारन तेरदि एल्लर
मातिनोळगिद्दखिल कर्मव
ता तिळिसिकोळ्ळदले माडिसि नोडि नगुतिप्प ॥

वीत-भयवि-ज्ञान-दायक-भूत-भव्यभ-वत्प्र-भुखळा-
राति-खगवर-वहन-कमला-कान्त-निश्चि-न्त ।
मात-रिश्व-प्रियपु-रातन-पूत-नाप्रा-णाप-हारिवि-
धातृ-जनकवि-पश्चि-तजन-प्रीय-कविगे-य ॥ ६-(९१३)

वीतभय विज्ञानदायक
भूत भव्य भवत्प्रभु खळा-
राति खगवरवहन कमलाकान्त निश्चिन्त ।
मातरिश्वप्रिय पुरातन
पूतनाप्राणापहारि वि-
धातृजनक विपश्चितजनप्रीय कविगेय ॥

दुष्ट-जनसं-हारि-सर्वो-त्कृष्ट-महिमस-मीर-नुतसक-
लेष्ट-दायक-स्वरत-सुखमय-ममकु-लस्वा-मि ।
हृष्ट-पुष्टक-निष्ट-सृष्ट्या-द्यष्ट-कर्तृक-रीन्द्र-वरदय-
थेष्ट-तनुउ-न्नतसु-कर्मा-नमिपे-ननवर-त ॥ ७-(९१४)

दुष्टजनसंहारि सर्वो-
त्कृष्टमहिम समीरनुत सक-
लेष्टदायक स्वरत सुखमय ममकुलस्वामि ।
हृष्ट पुष्ट कनिष्ट सृष्टच्या-
द्यष्टकर्तृ करीन्द्रवरद य-
थेष्टतनु उन्नतसुकर्मानमिपेननवरत ॥

पाक-शासन-पूज्य-चरणपि-नाकि-सन्नुत-महिम-सीता-
शोक-नाशन-सुलभ-सुमुखसु-वर्ण-वर्णसु-खि ।
माक-लत्रम-नीषि-मधुरिपु-एक-मेवा-द्वतिय-रूपप्र-
तीक-देवग-णान्त-रात्मक-पालि-सुवुदे-म्म ॥ ८-(९१५)

पाकशासनपूज्यचरण पि-
नाकिसन्नुतमहिम सीता-
शोकनाशन सुलभ सुमुख सुवर्ण वर्ण सुखि ।
माकलत्र मनीषि मधुरिपु
एकमेवाद्वतियरूपप्र-
तीक देवगणान्तरात्मक पालिसुवुदेम्म ॥

अप्र-मेया-नन्त-रूपस-दाप्र-सन्नमु-खाब्ज-मुक्तिसु-
खप्र-दायक-सुमन-सारा-धितप-दाम्भो-ज ।
स्वप्र-काशस्व-तन्त्र-सर्वग-क्षिप्र-फलदा-यकक्षि-तीशय-
दुप्र-वीरवि-तर्क्य-विश्वसु-तैज-सप्रा-ज्ञ ॥ ९-(९१६)

अप्रमेयानन्तरूप स-
दाप्रसन्नमुखाब्ज मुक्तिसु-
खप्रदायक सुमनसाराधितपदाम्भोज ।
स्वप्रकाश स्वतन्त्र सर्वग
क्षिप्रफलदायक क्षितीश य-
दुप्रवीर वितर्क्य विश्व सुतैजस प्राज्ञ ॥

गाळि-नडेव-न्ददलि-नीलघ-नाळि-वर्तिसु-वन्ते-ब्रह्मत्रि-
शूल-धरश-क्रार्क-मोदला-दखिल-देवग-ण ।
काल-कर्मगु–णाभि-मानिम-हाल-कुमियनु-सरिसि-नडेवुदु-
मूल-कारण–मुक्ति-दायक-हरिये-निसिको-म्ब ॥ १०-(९१७)

गाळिनडेवन्ददलि नीलघ-
नाळि वर्तिसुवन्ते ब्रह्म त्रि-
शूलधर शक्रार्कमोदलादखिल देवगण ।
काल कर्म गुणाभिमानि म-
हालकुमियनुसरिसि नडेवुदु
मूल कारणमुक्तिदायक हरियेनिसिकोम्ब ॥

मोड-कैबी-सणिके-यिन्दलि-ओडि-सुवेने-म्बुवन-यत्नवु-
कूडु-वदेक-ल्पान्त-कादरु-लकुमि-वल्लभ-नु-
जोडु-कर्मव-जीव-रोळुता-माडि-माडिसि-फलग-ळुणिसुव-
प्रौढ-रादव-रिवन-भजिसिभ-वाब्धि-दाटुव-रु ॥ ११-(९१८)

मोड कैबीसणिकेयिन्दलि
ओडिसुवेनेम्बुवन यत्नवु
कूडुवदे कल्पान्तकादरु, लकुमिवल्लभनु
जोडुकर्मव जीवरोळु ता
माडि माडिसि फलगळुणिसुव
प्रौढरादवरिवन भजिसि भवाब्धि दाटुवरु ॥

क्लेश-मोहा-ज्ञान-दोषवि-नाश-कविरि-ञ्चाण्ड-दोळगा-
काश-दोपा-दियलि-तुम्बिह-नेल्ल-कालद-लि ।
घासि-गोळिसदे-तन्न-वरना-यास-संर-क्षिसुव-महकरु-
णास-मुद्रप्र-सन्न-वदना-म्भोज-वैरा-ज ॥ १२-(९१९)

क्लेश मोहाज्ञान दोषवि-
नाशक विरिञ्चाण्डदोळगा-
काशदोपादियलि तुम्बिहनेल्ल कालदलि ।
घासिगोळिसदे तन्नवरना-
यास संरक्षिसुव महकरु-
णासमुद्र प्रसन्नवदनाम्भोज वैराज ॥

कन्न-डियकै-पिडिदु-नोळपन-कण्णु-गळुक-ण्डल्लि-एरगदे-
तन्न-प्रतिबि-म्बवने-काम्बुव-दर्प-णवबि-ट्टु ।
धन्य-रिळेयोळ-गेल्ल-कडेयलि-निन्न-रूपव-नोडि-सुखिसुत-
सन्नु-तिसुता-नन्द-वारिधि-योळगे-मुळुगिह-रु ॥ १३-(९२०)

कन्नडिय कैपिडिदु नोळपन
कण्णुगळु कण्डल्लि एरगदे
तन्न प्रतिबिम्बवने काम्बुव दर्पणव बिट्टु ।
धन्यरिळेयोळगेल्ल कडेयलि
निन्न रूपव नोडि सुखिसुत
सन्नुतिसुतानन्द वारिधियोळगे मुळुगिहरु ॥

अन्न-मानिश-शाङ्क-नोळुका-रुण्य-सागर-केश-वनुपर-
मन्न-दोळुभा-रतियु-नारा-यणनु-भक्ष्यदो-ळु- ।
सोन्न-गदिरनु-माध-वनुश्रुति-सन्नु-तळुश्री-लक्ष्मि-घृतदोळु-
मन्य-गोवि-न्दाभि-धनुइरु-तिप्प-रेन्दे-न्दु ॥ १४-(९२१)

अन्नमानिशशाङ्कनोळु का-
रुण्यसागर केशवनु पर-
मन्नदोळु भारतियु नारायणनु भक्ष्यदोळु-
सोन्नगदिरनु माधवनु श्रुति-
सन्नुतळु श्रीलक्ष्मि घृतदोळु
मन्यगोविन्दाभिधनु इरुतिप्परेन्देन्दु ॥

क्षीर-मानिस-रस्व-तिजग-त्सार-विष्णुव-चिन्ति-सुवदुस-
रोरु-हासन-मण्डि-गेयोळिरु-तिप्प-मधुवै-रि ।
मारु-तनुनव-नीत-दोळुस-म्प्रेर-कत्रिवि-क्रमनु-दधियोळु-
वारि-निधिच-न्द्रमरो-ळगेइरु-तिप्प-वामन-नु ॥ १५-(९२२)

क्षीरमानिसरस्वति जग-
त्सारविष्णुव चिन्तिसुवदु स-
रोरुहासन मण्डिगेयोळिरुतिप्प मधुवैरि ।
मारुतनु नवनीतदोळु स-
म्प्रेरक त्रिविक्रमनु दधियोळु
वारिनिधि चन्द्रमरोळगे इरुतिप्प वामननु ॥

गरुड-सूपके-मानि-श्रीश्री-धरनु-देवनु-पत्र-शाकके-
वरवे-निपमि-त्राख्य-सूर्यह्व-षीक-पनमू-र्ति ।
उरग-राजनु-फलसु-शाकके-वरवे-निसुवनु-पदुम-नाभन-
स्मरिसि-भुञ्जिसु-तिहरु-बल्लव-रेल्ल-कालद-लि ॥ १६-(९२३)

गरुड सूपकेमानि श्रीश्री-
धरनु देवनु पत्रशाकके
वरवेनिप मित्राख्यसूर्य ह्रषीकपनमूर्ति ।
उरगराजनु फलसुशाकके
वरवेनिसुवनु पदुमनाभन
स्मरिसि भुञ्जिसुतिहरु बल्लवरेल्लकालदलि ॥

गौरि-सर्वा-म्लस्थ-ळेनिपळु-शौरि-दामो-दरन-तिळिवुदु-
गौरि-पअना-म्लस्थ-सङ्करु-षणन-चिन्तिपु-दु ।
सार-शर्कर-गुडदो-ळगेवृ-त्रारि-इरुतिह-वासु-देवन-
सूरि-गळुधे-निपरु-परमा-दरदि-सर्व-त्र ॥ १७-(९२४)

गौरि सर्वाम्लस्थळेनिपळु
शौरि दामोदरन तिळिवुदु
गौरिप अनाम्लस्थ सङ्करुषणन चिन्तिपुदु ।
सार शर्करगुडदोळगे वृ-
त्रारि इरुतिह वासुदेवन
सूरिगळु धेनिपरु परमादरदि सर्वत्र ॥

स्मरिसु-वाच-स्पतिय-सोप-स्करदो-ळगेप्र-द्युम्न-निप्पनु-
निरय-पतियम-धर्म-कटुद्र-व्यदोळ-गनिरु-द्ध ।
सरष-पदिश्री-राम-ठेलदि-स्मरन-श्रीपुरु-षोत्त-मनक-
र्पुरदि-चिन्तिसि-पूजि-सुतलिरु-परम-भकुतिय-लि ॥ १८-(९२५)

स्मरिसु वाचस्पतिय सोप-
स्करदोळगे प्रद्युम्ननिप्पनु
निरयपति यमधर्म कटुद्रव्यदोळगनिरुद्ध ।
सरषपदि श्रीरामठेलदि
स्मरन श्रीपुरुषोत्तमन क-
र्पुरदि चिन्तिसि पूजिसुतलिरु परमभकुतियलि ॥

नालि-गिन्दलि-स्वीक-रिपरस-पालु-मोदला-दुदरो-ळगेघृत-
तैल-पक्कप-दार्थ-दोळगिह-चन्द्र-नन्दन-न- ।
पालि-सुवधो-क्षजन-चिन्तिसु-स्थूल-कूष्मा-ण्डतिल-माषज
ईल-लितभ-क्ष्यदोळु-दक्षनु-लक्ष्मि-नरसिं-ह ॥ १९-(९२६)

नालिगिन्दलि स्वीकरिप रस-
पालुमोदलादुदरोळगे घृत-
तैलपक्क पदार्थदोळगिह चन्द्रनन्दनन ।
पालिसुवधोक्षजन चिन्तिसु
स्थूलकूष्माण्ड तिल माषज
ई ललितभक्ष्यदोळु दक्षनु लक्ष्मिनरसिंह ॥

मनुव-माषसु-भक्ष्य-दोळुचि-न्तनेय-माड-च्युतन-निर्ऋति-
मनेए-निपलव-णदोळु-मरेयदे-श्रीज-नार्दन-न ।
नेनेयु-तिरुफल-रसग-ळोळुप्रा-णनउ-पेन्द्रन-वीळ्य-देलेयोळु-
द्युनदि-हरिरू-पवने-कोण्डा-डुतलि-सुखिसुति-रु ॥२०-(९२७)

मनुव माषसुभक्ष्यदोळु चि-
न्तनेय माडच्युतन निर्ऋति-
मनेएनिप लवणदोळु मरेयदे श्रीजनार्दनन ।
नेनेयुतिरु फलरसगळोळु प्रा-
णन उपेन्द्रन वीळ्यदेलेयोळु
द्युनदि हरिरूपवने कोण्डाडुतलि सुखिसुतिरु ॥

वेद-विनुतगे-बुधनु-सुस्वा-दोद-काधिप-नेनिसि-कोम्बनु-
श्रीद-कृष्णन-तिळिदु-पूजिसु-तिरुनि-रन्तर-दि ।
साधु-कर्मप-पुष्क-रनुसुनि-वेदि-तपदा-र्थगळ-शुद्धिय-
गैद-गोसुग-हंस-नामक-गर्पि-सुतलि-प्प ॥ २१-(९२८)

वेदविनुतगे बुधनु सुस्वा-
दोदकाधिपनेनिसिकोम्बनु
श्रीद कृष्णन तिळिदु पूजिसुतिरु निरन्तरदि ।
साधुकर्मप पुष्करनु सुनि-
वेदित पदार्थगळ शुद्धिय
गैदगोसुग हंसनामकगर्पिसुतलिप्प ॥

रतिस-कलसु-स्वाद-रसगळ-पतिये-निसुवळु-अल्लि-विश्वनु-
हुतव-हनचु-ल्लिगळो-ळगेभा-र्गवन-चिन्तिपु-दु ।
क्षितिज-गोमय-जादि-योळुसं-स्थितव-सन्तन-ऋषभ-देवन-
तुतिसु-तिरुस-न्ततस-दास-द्भक्ति-पूर्वक-दि ॥ २२-(९२९)

रति सकलसुस्वादरसगळ
पतियेनिसुवळु अल्लि विश्वनु
हुतवहन चुल्लिगळोळगे भार्गवन चिन्तिपुदु ।
क्षितिज गोमयजादियोळु सं-
स्थित वसन्तन ऋषभदेवन
तुतिसुतिरु सन्तत सदा सद्भक्तिपूर्वकदि ॥

पाक-कर्तृग-ळोळुच-तुर्दश-लोक-मातेम-हाल-कुमिगत-
शोक-विश्व-म्भरन-तिळिवदु-एल्ल-कालद-लि ।
चौक-शुद्धसु-मण्ड-लदिभू-सूक-राह्वय-उपरि-चैलप-
एक-दन्तस-नत्कु-मारन-धेनि-परुबुध-रु ॥ २३-(९३०)

पाककर्तृगळोळु चतुर्दश
लोकमाते महालकुमि गत-
शोक बिश्वम्भरन तिळिवदु एल्लकालदलि ।
चौकशुद्धसुमण्डलदि भू-
सूकराह्वय उपरिचैलप
एकदन्त सनत्कुमारन धेनिपरुबु धरु ॥

श्रीनि-वासन-भोग्य-वस्तुव-काण-गोडद-न्ददलि-विष्व-
क्सेन-परिखा-रूप-नागिह-नल्लि-पुरुषा-ख्य ।
ताने-पूजक-पूज्य-नेनिसिनि-जानु-गरस-न्तैप-गुरुपव-
मान-वन्दित-सर्व-कालग-ळल्लि-सर्वे-श ॥ २४-(९३१)

श्रीनिवासन भोग्यवस्तुव
काणगोडदन्ददलि विष्व-
क्सेन परिखारूपनागिहनल्लि पुरुषाख्य ।
ताने पूजक पूज्यनेनिसि नि-
जानुगर सन्तैप गुरुपव-
मानवन्दित सर्वकालगळल्लि सर्वेश ॥

नूत-नसमी-चीन-सुरसो-पेत-हृद्यप-दार्थ-दोळुविधि-
माते-तत्त-द्रसग-ळोळुरस-रूप-ताना-गि ।
प्रीति-पडिसुत-नित्य-दिजग-न्नाथ-विठलन-कूडि-तानि-
र्भीत-ळागिह-ळेन्द-रितुनी-भजिसि-सुखिसुति-रु ॥ २५-(९३२)

नूतन समीचीन सुरसो-
पेत हृद्यपदार्थदोळु विधि-
माते तत्तद्रसगळोळु रसरूप तानागि ।
प्रीतिपडिसुत नित्यदि जग-
न्नाथविठलन कूडि ता नि-
र्भीतळागिहळेन्दरितु नी भजिसि सुखिसुतिरु ॥

॥ ३१. नैवेद्यप्रकरणसन्धि मुगियितु ॥ (३१-९३२)
॥ श्री मध्वेशार्पणमस्तु ॥

श्रीमद्धरिकथाऽमृतसार ३२. कक्षातारतम्यसन्धि (तोडि रूपकताळ)

हरिकथाऽमृतसार गुरुगळ करुणदिन्दापनितु पेळुवे परमभगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु

श्रीर-मणस-र्वेश-सर्वग-सार-भोक्तस्व-तन्त्र-दोषवि-
दूर-ज्ञाना-नन्द-बलवै-श्वर्य-गुणपू-र्ण ।
मूरु-गुणव-र्जितस-गुणसा-कार-विश्व-स्थितिल-योदय-
कार-णकृपा-सान्द्र-नरहरि-सलहो-सज्जन-र ॥ १-(९३३)

श्रीरमण सर्वेश सर्वग
सारभोक्त स्वतन्त्र दोषवि-
दूर ज्ञानानन्द बलवैश्वर्य गुणपूर्ण ।
मूरु गुणवर्जित सगुण सा-
कार विश्व स्थिति लयोदय
कारण कृपासान्द्र नरहरि सलहो सज्जनर ॥

नित्य-मुक्तळे-निर्वि-कारळे-नित्य-सुखस-म्पूर्णे-नित्या-
नित्य-जगदा-धारे-मुक्ता-मुक्त-गणविनु-ते ।
चित्त-यिसुबि-न्नपव-श्रीपुरु-षोत्त-मनव-क्षोनि-वासिनि-
भृत्य-वर्गव-काये-त्रिजग-न्माते-विख्या-ते ॥ २-(९३४)

नित्यमुक्तळे निर्विकारळे
नित्यसुखसम्पूर्णे नित्या-
नित्यजगदाधारे मुक्तामुक्तगणविनुते ।
चित्तयिसु बिन्नपव श्रीपुरु-
षोत्तमन वक्षोनिवासिनि
भृत्यवर्गव काये त्रिजगन्माते विख्याते ॥

रोम-कूपग-ळोळुपृ-थक्पृथ-गाम-हापुरु-षनस्व-मूर्तिय-
ताम-रसजा-ण्डगळु-तद्गत-विश्व-रूपग-ळु ।
श्रीम-हिळेई-रूप-गुणगळ-सीमे-गाणदे-योचि-सुतमम-
स्वामि-महिमेय-देन्तु-टेन्दडि-गडिगे-बेरगा-द ॥ ३-(९३५)

रोमकूपगळोळु पृथक्पृथ-
गामहापुरुषन स्वमूर्तिय
तामरसजाण्डगळु तद्गतविश्वरूपगळु ।
श्रीमहिळे ई रूप गुणगळ
सीमेगाणदे योचिसुत मम-
स्वामि महिमेयदेन्तुटेन्दडिगडिगे बेरगाद ॥

ओन्द-जाण्डदो-ळोन्दु-रूपदो-ळोन्द-वयवदो-ळोन्दु-नखदोळ-
गोन्दु-गुणगळ-पारु-गाणदे-कृतपु-टाञ्जलि-यिं ।
मन्द-जासन-पुलक-पुलका-नन्द-बाष्पतो-दलुनु-डिगळि-
न्दिन्दि-राव-ल्लभन-महिमेग-भीर-तमवे-न्द ॥ ४-(९३६)

ओन्दजाण्डदोळोन्दु रूपदो-
ळोन्दवयवदोळोन्दु नखदोळ-
गोन्दु गुणगळ पारुगाणदे कृतपुटाञ्जलियिं ।
मन्दजासन पुलक पुलका-
नन्दबाष्प तोदलुनुडिगळि-
न्दिन्दिरावल्लभन महिमे गभीरतमवेन्द ॥

एनु-धन्यरो-ब्रह्म-गुरुपव-मान-रीर्वरु-ईप-रियलिर-
मानि-वासन-विमल-लाव-ण्याति-शयगळ-नु ।
सानु-रागदि-नोडि-सुखिपम-हानु-भावर-भाग्य-वेन्तोभ-
वानि-धवनिग-साध्य-वेनिसलु-नरर-पाडे-नु ॥ ५-(९३७)

एनु धन्यरो ब्रह्म गुरुपव-
मानरीर्वरु ई परियलि र-
मानिवासन विमल लावण्यातिशयगळनु ।
सानुरागदि नोडि सुखिप म-
हानुभावर भाग्यवेन्तो भ-
वानिधवनिगसाध्यवेनिसलु नररपाडेनु ॥

आपि-तामह-नूरु-कल्पर-माप-तियगुण-जपिसि-ओलिसिम-
हाप-राक्रम-हनुम-भीमा-नन्द-मुनियेनि-सि ।
आप-रब्र-ह्मनसु-नाभी-कूप-सम्भव-नाम-दलिमेरे-
वाप-योजा-सनस-मीररि-गभिन-मिपेनि-त्य ॥ ६-(९३८)

आ पितामह नूरु कल्प र-
मापतिय गुण जपिसि ओलिसि म-
हापराक्रम हनुम भीमानन्दमुनियेनिसि ।
आ परब्रह्मन सुनाभी-
कूपसम्भवनामदलि मेरे-
वापयोजासन समीररिगभिनमिपे नित्य ॥

वासु-देवन-मूर्ति-हृदया-काश-मण्डल-मध्य-दलिता-
रेश-नन्ददि-काणु-ततिस-न्तोष-दलितुति-प ।
आस-रस्वति-भार-तियरिगे-नास-ततव-न्दिसुवे-परमो-
ल्लास-दलिसु-ज्ञान-भकुतिय-सलिस-लेनगे-न्दु ॥ ७-(९३९)

वासुदेवनमूर्ति हृदया-
काशमण्डलमध्यदलि ता
रेशनन्ददि काणुततिसन्तोषदलि तुतिप ।
आ सरस्वति भारतियरिगे
ना सतत वन्दिसुवे परमो-
ल्लासदलि सुज्ञान भकुतिय सलिसलेनगेन्दु ॥

जगदु-दरनसु-रोत्त-मननिज-पेगलो-ळान्तुक-राब्ज-दोळुपद-
युगध-रिसिनख-पङ्कि-योळुरम-णीय-तरवा-द ।
नगध-रनप्रति-बिम्ब-काणुत-मिगेह-रुषदिं-पोगळि-हिग्गुव-
खगकु-लाधिप-कोडलि-मङ्गल-सकल-सुजनरि-गे ॥ ८-(९४०)

जगदुदरन सुरोत्तमन निज-
पेगलोळान्तु कराब्जदोळु पद-
युगधरिसि नखपङ्कियोळु रमणीयतरवाद ।
नगधरन प्रतिबिम्ब काणुत
मिगेहरुषदिं पोगळि हिग्गुव
खगकुलाधिप कोडलि मङ्गल सकलसुजनरिगे ॥

योगि-गळहृद-यकेनि-लुकनिग-माग-मैकवि-नुतन-परमनु-
राग-दलिद्विस-हस्र-जिह्वेग-ळिन्द-वर्णिसु-व ।
भूग-गनपा-ताळ-व्याप्तन-योग-निद्रा-स्पदने-निपगुरु-
नाग-राजन-पदके-नमिसुवे-मनदो-ळनवर-त ॥ ९-(९४१)

योगिगळ हृदयके निलुक निग-
मागमैकविनुतन परमनु-
रागदलि द्विसहस्र जिह्वेगळिन्द वर्णिसुव ।
भू गगन पाताळव्याप्तन
योगनिद्रास्पदनेनिप गुरु
नागराजन पदके नमिसुवे मनदोळनवरत ॥

नन्दि-वाहन-नलिनि-धरमौ-ळिन्दु-शेखर-शिवत्रि-यम्बक-
अन्ध-कासुर-मथन-गजशा-र्दूल-चर्मध-र ।
मन्द-जासन-तनय-त्रिजग-द्वन्द्य-शुद्ध-स्फटिक-सन्निभ-
वन्दि-सुवेनन-वरत-पालिसो-पार्व-तीरम-ण ॥ १०-(९४२)

नन्दिवाहन नलिनिधर मौ-
ळिन्दुशेखर शिव त्रियम्बक
अन्धकासुरमथन गज शार्दूलचर्मधर ।
मन्दजासनतनय त्रिजग-
द्वन्द्य शुद्धस्फटिकसन्निभ-
वन्दिसुवेननवरत पालिसो पार्वती रमण ॥

फणिफ-णाञ्चित-मुकुट-रञ्जित-क्वणित-डमरुत्रि-शूल-शिखिदिन-
मणिनि-शाकर-नेत्र-परमप-वित्र-सुचरि-त्र ।
प्रणत-कामद-प्रमथ-सुरमुनि-गणसु-पूजित-चरण-युगरा-
वणम-दविभ-ञ्जनस-ततमां-पाहि-महदे-व ॥ ११-(९४३)

फणिफणाञ्चितमुकुटरञ्जित
क्वणितडमरु त्रिशूल शिखि दिन-
मणि निशाकरनेत्र परमपवित्र सुचरित्र ।
प्रणतकामद प्रमथसुरमुनि-
गणसुपूजितचरणयुग रा-
वणमदविभञ्जन सतत मांपाहि महदेव ॥

दक्ष-यज्ञवि-भञ्ज-नविरू-पक्ष-वैरा-ग्याधि-पतिसं-
रक्षि-सेम्मनु-सर्व-कालदि-सन्मु-दवनि-त्तु ।
यक्ष-पतिसख-यजप-रिगेसुर-वृक्ष-वृकदनु-जारि-लोका-
ध्यक्ष-शुकदू-र्वास-जैगी-षौर्व-सन्तै-सु ॥ १२-(९४४)

दक्षयज्ञविभञ्जन विरू-
पक्ष वैराग्याधिपति सं-
रक्षिसेम्मनु सर्वकालदि सन्मुदवनित्तु ।
यक्षपतिसख यजपरिगे सुर-
वृक्ष वृकदनुजारि लोका-
ध्यक्ष शुक दूर्वास जैगीषौर्व सन्तैसु ॥

हत्तु-कल्पदि-लवण-जलधियो-ळुत्त-मश्लो-कनओ-लिसिकृत-
कृत्य-नागिज-गत्प-तियने-मदिकु-शास्त्रग-ळ ।
बित्त-रिसिमो-हिसि-दुरात्मर-नित्य-निरयनि-वास-रेनिसिद-
कृत्ति-वासगे-नमिपे-शेषप-दार्हन-हुदे-न्दु ॥ १३-(९४५)

हत्तु कल्पदि लवणजलधियो-
ळुत्तमश्लोकन ओलिसि कृत-
कृत्यनागि जगत्पतिय नेमदि कुशास्त्रगळ ।
बित्तरिसि मोहिसि दुरात्मर
नित्यनिरयनिवासरेनिसिद
कृत्तिवासगे नमिपे शेषपदार्हनहुदेन्दु ॥

कम्बु-पाणिय-परम-प्रेमनि-तम्बि-नियरे-न्देनिप-लक्षणे-
जाम्ब-वतिका-ळिन्दि-नीला-भद्र-सखवि-न्दे ।
एम्ब-षण्महि-षियर-दिव्यप-दम्बु-जगळिगे-नमिपे-ममहृद-
यम्ब-रदिनेले-सलिबि-डदेत-म्मरस-नोडगू-डि ॥ १४-(९४६)

कम्बुपाणिय परमप्रेमनि-
तम्बिनियरेन्देनिप लक्षणे
जाम्बवति काळिन्दि नीला भद्र सखविन्दे ।
एम्ब षण्महिषियर दिव्यप-
दम्बुजगळिगे नमिपे ममहृद-
यम्बरदि नेलेसलि बिडदे तम्मरसनोडगूडि ॥

आप-रन्तप-नोलुमे-यिन्दस-दाप-रोक्षिग-ळेनिसि-भगव-
द्रूप-गुणगळ-महिमे-स्वपतिग-ळान-नदितिळि-व ।
सौप-रणिवा-रुणिन-गात्मजे-राप-नितुब-ण्णिसुवे-एन्नम-
हाप-राधग-ळेणिस-दीयलि-परम-मङ्गल-व ॥ १५-(९४७)

आ परन्तपनोलुमेयिन्द स-
दापरोक्षिगळेनिसि भगव-
द्रूप गुणगळ महिमे स्वपतिगळाननदि तिळिव ।
सौपरणि वारुणि नगात्मजे-
रापनितु बण्णिसुवे एन्न म-
हापराधगळेणिसदीयलि परममङ्गलव ॥

त्रिदिव-तरुमणि-धेनु-गळिगा-स्पदवे-निपत्रिद-शाल-याब्धिगे-
बदर-नन्दद-लोप्पु-तिप्पउ-पेन्द्र-चन्द्रम-न ।
मृदुम-धुरसु-स्तवन-दिन्दलि-मधुसमय-पिक-नन्ते-पाडुव-
मुदिर-वाहन-नङ्घ्रि-युग्म-ङ्गळिगे-नमिसुवे-नु ॥ १६-(९४८)

त्रिदिवतरु मणि धेनुगळिगा-
स्पदवेनिप त्रिदशालयाब्धिगे
बदरनन्ददलोप्पुतिप्प उपेन्द्र चन्द्रमन ।
मृदुमधुर सुस्तवनदिन्दलि
मधुसमय पिकनन्ते पाडुव
मुदिरवाहननङ्घ्रियुग्मङ्गळिगे नमिसुवेनु ॥

कृति-रमणप्र-द्युम्न-देवन-अतुल-बलला-वण्य-गुणस-
न्ततउ-पासन-केतु-माला-खण्ड-दलिरचि-प ।
रतिम-नोहर-नङ्घ्रि-कमलके-नतिसु-वेनुभकु-तियलि-ममदु-
र्मतिक-ळेदुस-न्मतिय-नीवुद-जस्र-वेमगोलि-दु ॥ १७-(९४९)

कृतिरमण प्रद्युम्नदेवन
अतुल बल लावण्यगुण स-
न्तत उपासन केतुमालाखण्डदलि रचिप ।
रतिमनोहरनङ्घ्रिकमलके
नतिसुवेनु भकुतियलि मम दु-
र्मति कळेदु सन्मतियनीवुदजस्रवेमगोलिदु ॥

चारु-तरनव-विधभ-कुतिग-म्भीर-वारा-शियोळु-परमो-
दार-महिमन-हृदय-फणिपति-पीठ-दलिभजि-प ।
भूरि-कर्मा-कररे-निसुवश-रीर-मानि-प्राण-पतिपद-
वारि-रुहका-नमिपे-मद्गुरु-राय-रहुदे-न्दु ॥ १८-(९५०)

चारुतर नवविधभकुति ग-
म्भीरवाराशियोळु परमो-
दारमहिमन हृदयफणिपतिपीठदलि भजिप ।
भूरिकर्माकररेनिसुव श-
रीरमानि प्राणपतिपद-
वारिरुहकानमिपे मद्गुरुरायरहुदेन्दु ॥

विटत-महिमन-विश्व-तोमुख-नतुल-भुजबल-कल्प-तरुवा-
श्रितरे-निसिसक-लेष्ट-पडेदनु-दिनदि-मोदिसु-व ।
रतिस्व-यम्भुव-दक्ष-वाच-स्पतिबि-डौजन-मडदि-शचिम-
न्मथकु-मारनि-रुद्ध-रेमगी-यलिसु-मङ्गल-व ॥ १९-(९५१)

विततमहिमन विश्वतोमुख-
नतुलभुजबलकल्पतरुवा-
श्रितरेनिसि सकलेष्टपडेदनुदिनदि मोदिसुव ।
रति स्वयम्भुव दक्ष वाच-
स्पति बिडौजनमडदिशचि म-
न्मथकुमारनिरुद्धरेमगीयलि सुमङ्गलव ॥

भववनधि नवपोत पुण्य-
श्रवण कीर्तन पादवनरुह-
भुवननाविकनागि भजकर तारिसुव बिडदे ।
प्रवहमारुतदेव परमो-
त्सव विशेष निरन्तर महा-
प्रवहदन्ददि कोडलि भगवद्भक्तसन्ततिगे ॥

जनरनुद्धरिसुवेनेनुत निज-
जनकननुमतदलि स्वयम्भुव
मनुविनिन्दलि पडेदे सुकुमाररनु ओलुमेयलि ।
जननिशतरूपा नितम्बिनि
मन वचन कायदलि बिडदनु-
दिन नमिसुवेनु कोडु एमगे सन्मङ्गलवनोलिदु ॥

जनर-नुद्धरि-सुवेने-नुतनिज-जनक-ननुमत-दलिस्व-यम्भुव-
मनुवि-निन्दलि-पडेदे-सुकुमा-ररनु-ओलुमेय-लि ।
जननि-शतरू-पानि-तम्बिनि-मनव-चनका-यदलि-बिडदनु-
दिनन-मिसुवेनु-कोडुए-मगेस-न्मङ्ग-लवनोलि-दु ॥ २१-(९५३)

नरन-नारा-यणन-हरिकृ-ष्णरप-डेदेपुरु-षार्थ-तेरदलि-
तरणि-शशिशात-रूप-रिगेसम-नेनिसि-पापिग-ळ-
निरय-दोळुनेले-गोळिसि-सज्जन-नेरवि-यनुपा-लिसुव-औदु-
म्बरस-लहुसल-हेम्म-बिडदले-परम-करुणद-लि ॥२२-(९५४)

नरन नारायणन हरि कृ-
ष्णर पडेदे पुरुषार्थ तेरदलि
तरणि शशि शतरूपरिगे समनेनिसि पापिगळ
निरयदोळु नेलेगोळिसि सज्जन
नेरवियनु पालिसुव औदु-
म्बर सलहु सलहेम्म बिडदले परमकरुणदलि ॥

मधुवि-रोधिम-नोज-क्षीरो-दधिम-थनसम-यदिउ-दिसिनेरे-
कुधर-जाव-ल्लभन-मस्तक-मन्दि-रदिमेरे-व ।
विधुत-वाङ्घ्रिप-योज-युगळके-मधुप-नन्ददि-एरगि-एन्मन-
दधिप-वन्दिपे-ननुदि-नन्त-स्ताप-परिहरि-सु ॥ २३-(९५५)

मधुविरोधिमनोज क्षीरो-
दधि मथनसमयदि उदिसि नेरे-
कुधरजावल्लभन मस्तकमन्दिरदि मेरेव ।
विधु तवाङ्घ्रिपयोजयुगळके
मधुपनन्ददि एरगि एन्मन-
दधिप वन्दिपेननुदिनन्तस्ताप परिहरिसु ॥

श्रीव-नरुहा-म्बकन-नेत्रग-ळेवे-मनेयेनि-सिसुज-नरिगेक-
राव-लम्बन-वीव-तेरदिम-यूख-विस्तरि-प ।
आवि-वस्वा-न्नेनिसि-कोम्बवि-भाव-सुअह-र्निशिग-ळलिकोड-
लीव-सुन्धरे-योळुवि-पश्चित-रोडने-सुज्ञा-न ॥ २४-(९५६)

श्रीवनरुहाम्बकन नेत्रग-
ळेवे मनेयेनिसि सुजनरिगे क-
रावलम्बनवीव तेरदि मयूख विस्तरिप ।
आ विवस्वान्नेनिसिकोम्ब वि-
भावसु अहर्निशिगळलि कोड-
ली वसुन्धरेयोळु विपश्चितरोडने सुज्ञान ॥

लोक-मातेय-पडेदु-नीजग-देक-पात्रनि-गित्त-कारण-
श्रीकु-मारिस-मेत-नेलेसिद-निन्न-मन्दिर-दि ।
आक-मलभव-मुखरु-बिडदेप-राके-नुतनि-न्दिहरो-गुणर-
त्नाक-रनेब-ण्णिसल-ळवेकोडु-एमगे-सन्मन-व ॥ २५-(९५७)

लोकमातेयपडेदु नी जग-
देकपात्रनिगित्तकारण
श्रीकुमारिसमेत नेलेसिद निन्न मन्दिरदि ।
आ कमलभवमुखरु बिडदे प-
राकेनुत निन्दिहरो गुणर-
त्नाकरने बण्णिसलळवे कोडु एमगे सन्मनव ॥

पणेय-लोप्पुव-तिलक-तुलशी-मणिग-णाश्रित-कण्ठ-करदलि-
क्वणित-वीणा-सुस्व-रदिबहु-ताळ-गतिगळ-लि ।
प्रणव-प्रतिपा-द्यनगु-णङ्गळ-कुणिकु-णिदुअति-सम्भ्र-मदिगा-
यनव-माडुव-देव-ऋषिना-रदरि-गभिनमि-पे ॥ २६-(९५८)

पणेयलोप्पुवतिलक तुलशी-
मणिगणाश्रितकण्ठ करदलि
क्वणितवीणा सुस्वरदि बहुताळ गतिगळलि ।
प्रणवप्रतिपाद्यन गुणङ्गळ
कुणिकुणिदु अतिसम्भ्रमदि गा-
यनव माडुव देवऋषिनारदरिगभिनमिपे ॥

आस-रस्वति-तीर-दलिबि-न्नैस-लामुनि-गळनु-डिगेजड-
जास-नमहे-शाच्यु-तरलो-कङ्ग-ळिगेपो-गि ।
तास-कलगुण-गळवि-चारिसि-केश-वनेपर-दैव-वेन्दुप-
देशि-सिदभृगु-मुनिप-कोडलेम-गखिल-पुरुषा-र्थ ॥ २७-(९५९)

आ सरस्वति तीरदलि बि-
न्नैसलामुनिगळ नुडिगे जड-
जासन महेशाच्युतर लोकङ्गळिगे पोगि ।
ता सकलगुणगळ विचारिसि
केशवने परदैववेन्दुप-
देशिसिद भृगुमुनिप कोडलेमगखिल पुरुषार्थ ॥

बिसरु-हाम्बक-नाज्ञे-यलिसुम-नसमु-खनुता-नेनिसि-नाना-
रसग-ळुळ्ळह-विस्सु-गळनव-रवरि-गोय्दी-व ।
वसुकु-लाधिप-यज्ञ-पुरुषन-असम-बलरू-पङ्ग-ळिगेव-
न्दिसुवे-ज्ञानय-शस्सु-विद्येसु-बुद्धि-कोडलेम-गे ॥ २८-(९६०)

बिसरुहाम्बकनाज्ञेयलि सुम-
नसमुखनु तानेनिसि नाना-
रसगळुळ हविस्सुगळनवरवरिगोय्दीव ।
वसुकुलाधिप यज्ञपुरुषन
असम बल रूपङ्गळिगे व-
न्दिसुवे ज्ञान यशस्सु विद्ये सुबुद्धि कोडलेमगे ॥

तात-नप्पणे-यिन्द-नीप्र-ख्याति-युळ्ळर-वत्तु-मक्कळ-
प्रीति-यिन्दलि-पडेद-वरवरि-गित्तु-मन्निसि-दे ।
वीति-होत्रन-समळे-निसुवप्र-सूति-जननित्व-दङ्घ्रि-कमलके-
नातु-तिसितले-बाग्वे-नेम्मकु-टुम्ब-सलहुवु-दु ॥ २९-(९६१)

तातनप्पणेयिन्द नी प्र-
ख्यातियुळ्ळरवत्तु मक्कळ
प्रीतियिन्दलि पडेदवरवरिगित्तु मन्निसिदे ।
वीतिहोत्रन समळेनिसुव प्र-
सूतिजननि त्वदङ्घ्रिकमलके
ना तुतिसि तलेबाग्वेनेम्म कुटुम्ब सलहुवुदु ॥

शतधृ-तियसुत-रीर्व-रुळिद-प्रतिम-सुतपो-निधिग-ळपरा-
जितन-सुसमा-धियोळो-लिसिमू-र्लोक-दोळुमेरे-व ।
व्रतिव-रमरी-चिअत्रि-पुलहा-क्रतुव-सिष्ठपु-लस्त्य-वैव-
स्वतनु-विश्वा-मित्र-रङ्गिर-रङ्गि-गेरगुवे-नु ॥ ३०-(९६२)

शतधृतिय सुतरीर्वरुळिद-
प्रतिम सुतपोनिधिगळपरा-
जितन सुसमाधियोळोलिसि मूर्लोकदोळु मेरेव ।
व्रतिवरमरीचि अत्रि पुलहा
क्रतु वसिष्ठ पुलस्त्य वैव-
स्वतनु विश्वामित्ररङ्गिररङ्गिगेरगुवेनु ॥

द्वाद-शादि-त्यरोळु-मोदलिग-नाद-मित्र-प्रवह-मानिनि-
याद-प्रावहि-निक्रति-निर्जर-गुरुम-हिळेता-रा ।
ईदि-वौकस-रनुदि-नाधि-व्याधि-उपटळ-वळिदु-विबुधरि-
गाद-रदिपा-लिसलि-मङ्गल-वाव-कालद-लि ॥ ३१-(९६३)

द्वादशादित्यरोळु मोदलिग-
नाद मित्र प्रवहमानिनि-
याद प्रावहि निक्रति निर्जरगुरुमहिळेतारा ।
ई दिवौकसरनुदिनाधि-
व्याधि उपटळवळिदु विबुधरि-
गादरदि पालिसलि मङ्गलवावकालदलि ॥

मान-निधिगळे-निसुव-विष्व-क्सेन-धनपग-जान-नरिगेस-
मान-रेम्भ-त्तैदु-शेषश-तस्थ-देवग-ण-
कान-मिसुवेनु-बिडदे-मिथ्या-ज्ञान-कळेदु-सुबोध-वित्तुस-
दानु-रागदि-एमगे-परिपा-लिसलि-सम्पद-व ॥ ३२-(९६४)

माननिधिगळेनिसुव विष्व-
क्सेन धनप गजाननरिगे स-
मानरेम्भत्तैदु शेषशतस्थदेवगण-
कानमिसुवेनु बिडदे मिथ्या-
ज्ञान कळेदु सुबोधवित्तु स-
दानुरागदि एमगे परिपालिसलि सम्पदव ॥

वनधि-वसनेव-राद्रि-निचय-स्तनवि-राजिते-चेत-नाचे-
तनवि-धारके-गन्ध-रसरू-पादि-गुणवपु-षे ।
मुनिकु-लोत्तम-कश्य-पननिज-तनुजे-निनगा-नमिपे-एन्नव-
गुणग-ळेणिसदे-पालि-पुदुपर-मात्म-नर्धा-ङ्गि ॥ ३३-(९६५)

वनधिवसने वराद्रिनिचय-
स्तनविराजिते चेतनाचे-
तनविधारके गन्ध रस रूपादि गुणवपुषे ।
मुनिकुलोत्तम कश्यपन निज-
तनुजे निनगानमिपे एन्नव-
गुणगळेणिसदे पालिपुदु परमात्मनर्धाङ्गि ॥

पुरट-लोचन-निन्न-कद्दोयि-दिरलु-प्रार्थिसे-देव-तेगळु-
त्तरव-लालिसि-तन्द-वरहा-रूप-ताना-गि ।
धरणि-जननिये-त्वत्प-दाब्जके-एरगि-बिन्नै-सुवेनु-पाद-
स्परुश-मोदला-दखिल-दोषग-ळेणिस-दिरुए-न्दु ॥ ३४-(९६६)

पुरटलोचन निन्न कद्दोयि-
दिरलु प्रार्थिसे देवतेगळु-
त्तरवलालिसि तन्द वरहारूप तानागि ।
धरणिजननिये त्वत्पदाब्जके
एरगि बिन्नैसुवेनु पाद-
स्परुशमोदलादखिल दोषगळेणिसदिरु एन्दु ॥

भूत-मारुत-वान्त-रभिमा-नीत-पस्विम-रीचि-मुनिपुरु-
हूत-नन्दन-पाद-मानिज-यन्त-रेमगोलि-दु ।
कात-रवपु-ट्टिसदे-विषयदि-वीत-भयनप-दाब्ज-दलिविप-
रीत-बुद्धिय-नीय-देसदा-पालि-सलिए-म्म ॥ ३५-(९६७)

भूतमारुतवान्तरभिमा-
नी तपस्विमरीचिमुनि पुरु-
हूतनन्दन पादमानि जयन्तरेमगोलिदु ।
कातरव पुट्टिसदे विषयदि
वीतभयन पदाब्जदलि विप-
रीतबुद्धियनीयदे सदा पालिसलि एम्म ॥

ओदि-सुवगुरु-गळने-जरिदुस-होद-ररिगुप-देशि-सिदिमह-
दादि-कारण-सर्व-गुणस-म्पूर्ण-हरिये-न्दु-
वादि-सुवित्व-त्पतिय-तोरे-न्दाद-नुजबेस-गोळलु-स्तम्भदि-
श्रीद-नाक्षण-तोरि-सिदप्र-ह्लाद-सलहे-म्म ॥ ३६-(९६८)

'ओदिसुव गुरुगळने जरिदु स-
होदररिगुपदेशिसिदि, मह-
दादिकारण सर्वगुणसम्पूर्णहरियेन्दु
वादिसुवि, त्वत्पतिय तोरे'-
न्दादनुज बेसगोळलु स्तम्भदि
श्रीदनाक्षण तोरिसिद प्रह्लाद सलहेम्म ॥

बलिमो-दलुस-सेन्द्र-रिवरिगे-कलित-कर्मज-दिविज-रेम्बरु-
उळिद-एका-दशम-नुगळुउ-चथ्य-च्यवनमु-ख ।
कुलऋ-षिअशी-तियति-हैहय-इळेय-कम्पन-गैद-पृथुम-
ङ्गलप-रीक्षित-नहुष-नाभिय-याति-शशबि-न्दु- ३७-(९६९)

बलिमोदलु सप्तेन्द्ररिवरिगे
कलितकर्मज दिविजरेम्बरु
उळिद एकादश मनुगळु उचथ्य च्यवनमुख ।
कुलऋषि अशीति यति हैहय
इळेय कम्पनगैद पृथु म-
ङ्गल परीक्षित नहुष नाभि ययाति शशबिन्दु

शतक-सङ्के-तुळळ-प्रीय-व्रतभ-रतमा-न्धात-पुण्या-
श्रितरु-जयविज-यादि-गळुग-न्धर्व-रेण्टुज-न ।
हुतव-हजपा-वकस-नातन-पितृग-ळेळवरु-चित्र-गुप्तरु-
प्रतिदि-वसपा-लिसलि-तम्मव-नेन्दु-एनगोलि-दु ॥ ३८-(९७०)

शतकसङ्केतुळळ प्रीय-
व्रत भरत मान्धात पुण्या-
श्रितरु जय विजयादिगळु गन्धर्वरेण्टु जन ।
हुतवहजपावक सनातन
पितृगळेळवरु चित्रगुप्तरु
प्रतिदिवस पालिसलि तम्मवनेन्दु एनगोलिदु ॥

वास-वालय-शिल्पि-विमलज-लाश-यगळोळु-रमिप-ओषधि-
भेश-रविगळ-रिपुग-ळेनिसुव-राहु-केतुग-ळु ।
श्रीश-पदप-न्थान-धूमा-र्चीर-दिविजरु-कर्म-जरिगेस-
दास-मानदि-वौक-सरुकोड-लेमगे-मङ्गल-व ॥ ३९-(९७१)

वासवालयशिल्पि विमलज-
लाशयगळोळु रमिप ओषधि
भेश रविगळ रिपुगळेनिसुव राहुकेतुगळु ।
श्रीशपदपन्थान धूमा-
र्चीरदिविजरु कर्मजरिगे स-
दा समान दिवौकसरु कोडलेमगे मङ्गलव ॥

द्युनदि-शामल-सञ्ज्ञे-रोहिणि-घनप-पर्ज-न्यननि-रुद्धन-
वनिते-ब्रह्मा-ण्डाभि-मानिवि-राट-देविय-र ।
नेनेवे-नानल-विन्द-देवा-ननम-हिळेस्वा-हाख्य-रालो-
चनेको-डलिनि-र्विघ्न-दिंभग-वद्रु-णङ्गळ-लि ॥ ४०-(९७२)

द्युनदि शामल सञ्ज्ञे रोहिणि
घनप पर्जन्यननिरुद्धन
वनिते ब्रह्माण्डाभिमानि विराटदेवियर ।
नेनेवेनानलविन्द देवा-
नन महिळे स्वाहाख्यरालो-
चने कोडलि निर्विघ्नदिं भगवद्रुणङ्गळलि ॥

विधिपि-तनपा-दाम्बु-जगळिगे-मधुप-नन्तेवि-राजि-पअमल-
उदक-गळिगेस-दाभि-मानियु-एन्दे-निसिको-म्ब ।
बुधगे-नाव-न्दिसुवे-सन्मो-ददिनि-रन्तर-ओलिदु-एमग-
भ्युदय-पालिस-लेन्दु-परमो-त्सहदि-अनुदिन-दि ॥ ४१-(९७३)

विधिपितन पादाम्बुजगळिगे
मधुपनन्ते विराजिप अमल
उदकगळिगे सदाभिमानियु एन्देनिसिकोम्ब ।
बुधगे ना वन्दिसुवे सन्मो-
ददि निरन्तर ओलिदु एमग-
भ्युदयपालिसलेन्दु परमोत्सहदि अनुदिनदि ॥

पाम-ररनुप-वित्र-गैसुव-श्रीमु-कुन्दन-विमल-मङ्गल-
नाम-गळिगभि-मानि-यादउ-षाख्य-देविय-रु ।
भूमि-योळगु-ळळखिल-सज्जन-राम-यादिग-ळळिदु-सलहलि-
आम-रुत्तन-मनेय-वैद्यर-रमणि-प्रतिदिन-दि ॥ ४२-(९७४)

पामररनु पवित्रगैसुव
श्रीमुकुन्दन विमलमङ्गल
नामगळिगभिमानियाद उषाख्यदेवियरु ।
भूमियोळगुळळखिल सज्जन-
रामयादिगळळिदु सलहलि
आ मरुत्तन मनेय वैद्यर रमणि प्रतिदिनदि ॥

हरिगु-रुगळ-र्चिसद-पापा-त्मरनु-शिक्षिस-लोसु-गशनै-
श्चरने-निसिदु-ष्फलग-ळीवेनि-रन्त-रदिबिड-दे ।
तरणि-नन्दन-निम्न-पादा-म्बुरुह-गळिगा-नमिपे-बहुदु-
स्तरभ-वार्णदि-मग्न-नादे-न्नुद्ध-रिसबे-कु ॥ ४३-(९७५)

हरि गुरुगळर्चिसद पापा-
त्मरनु शिक्षिसलोसुग शनै-
श्चरनेनिसि दुष्फलगळीवे निरन्तरदि बिडदे ।
तरणिनन्दन निम्न पादा-
म्बुरुहगळिगानमिपे बहुदु-
स्तर भवार्णदि मग्ननादेन्नुद्धरिसबेकु ॥

निरति-शयसु-ज्ञान-पूर्वक-विरचि-सुवनि-ष्काम-कर्मग-
ळरितु-तत्त-त्काल-दलित-ज्ञन्य-फलरस-व ।
हरिय-नेमदि-उणिसि-बहुजी-वरिगे-कर्मप-नेनिप-गुरुपु-
ष्करनु-सत्क-र्मङ्ग-ळलिनि-र्विघ्न-तेयकोड-लि ॥ ४४-(९७६)

निरतिशय सुज्ञानपूर्वक
विरचिसुव निष्कामकर्मग-
ळरितु तत्तत्कालदलि तज्जन्य फलरसव ।
हरिय नेमदि उणिसि बहुजी-
वरिगे कर्मपनेनिप गुरुपु-
ष्करनु सत्कर्मङ्गळलि निर्विघ्नतेय कोडलि ॥

श्रीवि-रिञ्च्या-द्यरम-नकेनिलु-काव-कालकु-जनन-रहितन-
ताओ-लिसिमग-नेन्दु-मुद्दिसि-लीले-गळनो-ळप ।
देव-किगेव-न्दिपेय-शोदा-देवि-गानमि-सुवेनु-बिडदेकृ-
पाव-लोकन-दिन्द-सलहुवु-देम्म-सन्तति-य ॥ ४५-(९७७)

श्रीविरिञ्च्याद्यर मनके निलु-
कावकालकु जननरहितन
ता ओलिसि मगनेन्दु मुद्दिसि लीलेगळ नोळप ।
देवकिगे वन्दिपे यशोदा-
देविगानमिसुवेनु बिडदे कृ-
पावलोकनदिन्द सलहुवुदेम्म सन्ततिय ॥

श्रीनि-वासन-परम-कारु-ण्यानि-वास-स्थान-रेनिपकृ-
शानु-जरुसा-हस्र-षोडश-शतरु-श्रीकृ-ष्ण- ।
मानि-नियरे-प्पत्तु-यक्षरु-दान-वरुमू-वत्तु-चारण-
जान-जामर-रप्स-ररुग-न्धर्व-रिगेनमि-पे ॥ ४६-(९७८)

श्रीनिवासन परमकारु-
ण्यानिवासस्थानरेनिप कृ-
शानुजरु साहस्रषोडशशतरु श्रीकृष्ण-
मानिनियरेप्पत्तु यक्षरु
दानवरु मूवत्तु चारण-
जानजामररप्सररु गन्धर्वरिगे नमिपे ॥

आय-मुनेयोळु-साद-रदिका-त्यायि-नीव्रत-धरिसि-केलरुद-
रायु-धनेपति-येनिसि-केलवरु-जार-तनद-ल्लि ।
वायु-पितनोलि-सिदरु-ईर्बगे-तोय-सरसर-पाद-कमलके-
नाये-रगुवेम-नोर-थङ्गळ-पालि-सलिनि-त्य ॥ ४७-(९७९)

आ यमुनेयोळु सादरदि का-
त्यायिनीव्रत धरिसि केलरु द-
रायुधने पतियेनिसि केलवरु जारतनदल्लि ।
वायुपितनोलिसिदरु ईर्बगे
तोयसरसर पादकमलके
नायेरगुवे मनोरथङ्गळ पालिसलि नित्य ॥

किन्न-ररुगु-ह्यकरु-राक्षस-पन्न-गरुपि-तृगळु-सिद्धरु-
सन्नु-ताजा-नजरु-समरिव-रमर-योनिज-रु ।
इन्नि-वरगुण-वेन्तु-बण्णिस-लेन्न-ळवेकरु-णदलि-परमा-
पन्न-जनरिगे-कोडलि-सन्मुद-सुप्र-तापव-नु ॥ ४८-(९८०)

किन्नररु गुह्यकरु राक्षस
पन्नगरु पितृगळु सिद्धरु
सन्नुताजानजरु समरिवरमरयोनिजरु ।
इन्निवर गुणवेन्तु बण्णिस-
लेन्नळवे करुणदलि परमा-
पन्नजनरिगे कोडलि सन्मुद सुप्रतापवनु ॥

नूरु-मुनिगळ-नुळिदु-मेलण-नूरु-कोटित-पोध-नरपा-
दार-विन्दके-मुगिवे-करगळ-नुद्ध-रिसले-न्दु ।
ईऋ-षिगळा-नन्त-रदलिह-मूरु-सप्ता-ह्वरतो-रेदशत-
भूरि-पितररु-कोडलि-नमगेस-दासु-मङ्गल-व ॥ ४९-(९८१)

नूरु मुनिगळनुळिदु मेलण
नूरुकोटि तपोधनर पा-
दारविन्दके मुगिवे करगळनुद्धरिसलेन्दु ।
ई ऋषिगळानन्तरदलिह
मूरु सप्ताह्वर तोरेद शत
भूरिपितररु कोडलि नमगे सदा सुमङ्गलव ॥

पाव-नकेपा-वनने-निसुवर-मावि-नोदन-गुणग-णङ्गळ-
साव-धानदि-एक-मानस-रागि-सुस्वर-दि ।
आवि-बुधपति-सभेयो-ळगेना-नावि-लासदि-पाडि-सुखिसुव-
देव-गन्ध-र्वरुको-डलिएम-गखिल-पुरुषा-र्थ ॥ ५०-(९८२)

पावनके पावननेनिसुव र-
माविनोदन गुणगणङ्गळ
सावधानदि एकमानसरागि सुस्वरदि ।
आ विबुधपतिसभेयोळगे ना-
ना विलासदि पाडि सुखिसुव
देवगन्धर्वरु कोडलि एमगखिलपुरुषार्थ ॥

भुवन-पावन-नेनिप-लकुमी-धवन-मङ्गल-दिव्य-नाम-
स्तवन-गैवम-नुष्य-गन्ध-र्वरिगे-वन्दिसु-वे ।
प्रवर-भूभुज-रुळिदु-मध्यम-कुवल-यपरे-न्देनिसि-कोम्बर-
दिवस-दिवस-ङ्गळलि-नेनेवेनु-करण-शुद्धिय-लि ॥५१-(९८३)

भुवनपावननेनिप लकुमी-
धवन मङ्गलदिव्यनाम-
स्तवनगैव मनुष्यगन्धर्वरिगे वन्दिसुवे ।
प्रवरभूभुजरुळिदु मध्यम
कुवलयपरेन्देनिसिकोम्बर
दिवसदिवसङ्गळलि नेनेवेनु करणशुद्धियलि ॥

श्रीमु-कुन्दन-मूर्ति-सलेसौ-दामि-नियवोल्-हृदय-वारिज-
व्योम-मण्डल-मध्य-दलिका-णुतलि-मोदिसु-व ।
आम-नुष्यो-त्तमर-पदयुग-ताम-रसगळि-गेरगु-वेसदा-
कामि-तार्थग-ळित्तु-सलहलि-प्रणत-जनतति-य ॥ ५२-(९८४)

श्रीमुकुन्दनमूर्तिसले सौ-
दामिनियवोल् हृदयवारिज
व्योममण्डलमध्यदलि काणुतलि मोदिसुव ।
आ मनुष्योत्तमर पदयुग
तामरसगळिगेरगुवे सदा
कामितार्थगळित्तु सलहलि प्रणतजनततिय ॥

ईम-हीम-ण्डलदो-ळिहगुरु-श्रीम-दाचा-र्यरम-तानुग-
राम-हावै-ष्णवर-विष्णुप-दाब्ज-मधुकर-र ।
स्तोम-कानमि-सुवेन-वरवर-नाम-गळने-न्पेळ्वे-बहुविध-
याम-याम-ङ्गळलि-बोधिस-लेनगे-सन्मति-य ॥ ५३-(९८५)

ई महीमण्डलदोळिह गुरु
श्रीमदाचार्यर मतानुग-
रामहावैष्णवर विष्णुपदाब्ज मधुकरर ।
स्तोमकानमिसुवेनवरवर
नामगळनेन्पेळ्वेबहुविध
यामयामङ्गळलि बोधिसलेनगे सन्मतिय ॥

मार-नय्यन-करुणा-पारा-वार-मुख्यसु-पात्र-रेनिपस-
रोरु-हासन-वाणि-रुद्रे-न्द्रादि-सुरनिक-र ।
तार-तम्या-त्मकसु-पद्यग-ळारु-पठिसुव-राज-नरिगेर-
मार-मणपू-रैस-लीप्सित-सर्व-कालद-लि ॥ ५४-(९८६)

मारनय्यन करुणापारा-
वारमुख्य सुपात्ररेनिप स-
रोरुहासन वाणि रुद्रेन्द्रादि सुरनिकर ।
तारतम्यात्मक सुपद्यग-
ळारु पठिसुवराजनरिगे र-
मारमण पूरैसलीप्सित सर्वकालदलि ॥

मूरु-काल-ङ्गळलि-तुतिसेश-रीर-वाङ्मन-शुद्धि-माळ्पुदु-
दूर-गैसुवु-दखिल-पापस-मूह-प्रतिदिन-वु ।
चोर-भयरा-जभय-नक्रच-मूर-शस्त्रज-लाग्नि-भूतम-
होर-गज्वर-नरक-भयस-म्भविस-देन्दे-न्दु ॥ ५५-(९८७)

मूरु कालङ्गळलि तुतिसे श-
रीर वाङ्मन शुद्धिमाळ्पुदु
दूरगैसुवुदखिल पापसमूह प्रतिदिनवु ।
चोरभय राजभय नक्र च-
मूर शस्त्र जलाग्नि भूत म-
होरग ज्वर नरकभय सम्भविसदेन्देन्दु ॥

जयज-यतुत्रिज-गद्धि-लक्षण-जयज-यतुजग-देक-कारण-
जयज-यतुजा-नकिर-मणनि-र्गतज-रामर-ण ।
जयज-यतुजा-ह्वविज-नकजय-जयतु-दैत्यकु-लान्त-कभवा-
मयह-रजग-न्नाथ-विट्ठल-पाहि-मांसत-त ॥ ५६-(९८८)

॥ ३२. कक्षातारतम्यसन्धिमुगियितु ॥ (३२-९८८)

जयजयतु त्रिजगद्धिलक्षण
जयजयतु जगदेककारण
जयजयतु जानकिरमण निर्गत जरामरण ।
जयजयतु जाह्नविजनक जय
जयतु दैत्यकुलान्तक भवा-
मयहर जगन्नाथविट्ठल पाहिमां सतत ॥

॥ इल्लिगे 'रङ्ग ओलिद दासरु' श्रीजगन्नाथदासार्यविरचित मूवत्तेरडु सन्धिगळिन्द कूडिद श्रीमद्धरिकथाऽमृतसार सम्पूर्णवायितु ॥
॥ श्रीमध्वेशार्पणमस्तु ॥

हरिक-थामृत-सार-श्रीम-द्गुरुव-रजग-न्नाथ-दासरु-
करत-लामल-कवेने-पेळिद-सकल-सन्धिग-ळ ।
परम-पण्डित-मानि-गळुम-त्सरिस-लेदेकि-च्चागि-तोरुव-
दरसि-करिगिदु-तोरि-पेळुवु-दल्ल-धरेयोळ-गे ॥ १-(९८९)

हरिकथाऽमृतसार श्रीम-
द्गुरुवरजगन्नाथदासरु
करतलामलकवेनेपेळिद सकलसन्धिगळ ।
परमपण्डितमानिगळु म-
त्सरिसलेदेकिच्चागि तोरुव-
दरसिकरिगिदु तोरि पेळुवुदल्ल धरेयोळगे ॥

भामि-नीष-ट्पदिय-रूपद-लीम-हाद्भुत-काव्य-दादियो-
ळाम-नोहर-तरत-मात्मक-नान्दि-पद्यग-ळ ।
याम-यामके-पठिसु-ववरसु-धाम-सखकै-पिडिय-लोसुग-
प्रेम-दिन्दलि-पेळ्द-गुरुका-रुण्य-केने-म्बे ॥ २-(९९०)

भामिनीषट्पदिय रूपद-
ली महाद्भुतकाव्यदादियो-
ळा मनोहर तरतमात्मक नान्दिपद्यगळ ।
यामयामके पठिसुवर सु-
धामसख कैपिडियलोसुग
प्रेमदिन्दलि पेळ्द गुरुकारुण्यकेनेम्बे ॥

सार-वेन्दरे-हरिक-थामृत-सार-वेम्बुदु-देम्म-गुरुवर-
सारि-दल्लदे-तिळिय-देनुतम-हेन्द्र-नन्दन-न-
सार-थियबल-गोण्डु-सारा-सार-गळनि-र्णयिसि-पेळ्दनु-
सार-नडेवम-हात्म-रिगेसं-सार-वेल्लिहु-दो ॥ ३-(९९१)

सारवेन्दरे हरिकथाऽमृत-
सारवेम्बुदुदेम्म गुरुवर
सारिदल्लदे तिळियदेनुत महेन्द्रनन्दनन
सारथिय बलगोण्डु सारा-
सारगळ निर्णयिसि पेळ्दनु-
सार नडेव महात्मरिगे संसारवेल्लिहुदो ॥

दास-वर्यर-मुखदि-निन्दुर-मेश-ननुकी-र्तिसुव-मनदभि-
लाषे-यलिव-र्णाभि-मानिग-ळोलिदु-पेळिसि-द ।
ईसु-लक्षण-काव्य-दोळुयति-प्रास-गळिगेप्र-यत्न-विल्लदे-
लेसु-लेसेने-श्राव्य-मादुदे-कुरुहु-कविगळि-गे ॥ ४-(९९२)

दासवर्यर मुखदि निन्दु र-
मेशननु कीर्तिसुव मनदभि-
लाषेयलि वर्णाभिमानिगळोलिदु पेळिसिद ।
ई सुलक्षणकाव्यदोळु यति
प्रासगळिगे प्रयत्नविल्लदे
लेसुलेसेने श्राव्यमादुदे कुरुहु कविगळिगे ॥

प्राकृ-तोक्तिग-ळेन्दु-बरिदेम-हाकृ-तघ्नरु-जरिव-रल्लदे-
स्वीकृ-तवमा-डदले-बिडुवरे-सुजन-रादव-रु ।
श्रीकृ-तीपति-यमल-गुणगळु-ईकृ-तियोळु-ण्टाद-बळिकिदु-
प्राकृ-तवेसं-स्कृतद-सडगर-वेनु-सुगुणरि-गे ॥ ५-(९९३)

प्राकृतोक्तिगळेन्दु बरिदे म-
हाकृतघ्नरु जरिवरल्लदे
स्वीकृतव माडदले बिडुवरे सुजनरादवरु ।
श्रीकृतीपतियमल गुणगळु
ई कृतियोळुण्टाद बळिकिदु
प्राकृतवे संस्कृतद सडगरवेनु सुगुणरिगे ॥

शृतिगे-शोभन-वाग-दोडेजड-मतिगे-मङ्गल-वीय-दोडेशृति-
स्मृतिगे-सम्मत-वल्ल-दिद्दोडे-नम्म-गुरुरा-य ।
मथिसि-मध्वा-गमप-योब्धिय-क्षितिगे-तोरिद-ब्रह्म-विद्या-
रतरि-गीप्सित-हरिक-थामृत-सार-सोगयिस-दे ॥ ६-(९९४)

शृतिगे शोभनवागदोडे जड-
मतिगे मङ्गलवीयदोडे शृति-
स्मृतिगे सम्मतवल्लदिद्दोडे नम्म गुरुराय ।
मथिसि मध्वागमपयोब्धिय
क्षितिगे तोरिद ब्रह्मविद्या-
रतरिगीप्सित हरिकथाऽमृतसार सोगयिसदे ॥

भक्ति-वाददि-पेळद-रेम्बप्र-सक्ति-सल्लदु-काव्य-दोळुपुन-
रुक्ति-शुष्कस-मास-पदव्य-त्यास-मोदला-द ।
युक्ति-शास्त्रवि-रुद्ध-शब्दवि-भक्ति-विषमग-ळिरलु-जीव-
न्मुक्त-योग्यवि-देन्दु-सिरिमद-नन्त-मेच्चुव-ने ॥ ७-(९९५)

भक्तिवाददि पेळदरेम्ब प्र-
सक्तिसल्लदु काव्यदोळु पुन-
रुक्ति शुष्क समासपद व्यत्यासमोदलाद ।
युक्ति शास्त्रविरुद्धशब्द वि-
भक्तिविषमगळिरलु जीव-
न्मुक्तयोग्यविदेन्दु सिरिमदनन्त मेच्चुवने ॥

आशु-कविकुल-कल्प-तरुदि-ग्देश-वरियलु-रङ्ग-नोलुमेय-
दास-कूट-स्थरिगे-रगिना-बेडि-कोम्बुवे-नु ।
ईसु-लक्षण-हरिक-थामृत-मीस-लळियदे-सार-दीर्घ-
द्वेषि-गळिगेरे-यदले-सलिसुवु-देन्न-बिन्नप-व ॥ ८-(९९६)

आशुकविकुलकल्पतरु दि-
ग्देशवरियलु रङ्गनोलुमेय
दासकूटस्थरिगेरगि ना बेडिकोम्बुवेनु ।
ई सुलक्षण हरिकथाऽमृत
मीसलळियदे सार दीर्घ-
द्वेषिगळिगेरेयदले सलिसुवुदेन्न बिन्नपव ॥

प्रास-गळपो-न्दिसदे-शब्द-श्लेष-गळशो-धिसदे-दीर्घ-
हास-गळस-ल्लिसदे-षट्पदि-गतिगे-निल्लिस-दे ।
दूष-करुदिन-दिनदि-माडुव-दूष-णवेभू-षणवु-एम्बुप-
देश-गम्यवु-हरिक-थामृत-सार-साध्यरि-गे । ९-(९९७)

प्रासगळ पोन्दिसदे शब्द-
श्लेषगळ शोधिसदे दीर्घ
हासगळ सल्लिसदे षट्पदिगतिगे निल्लिसदे ।
दूषकरु दिनदिनदि माडुव
दूषणवे भूषणवु एम्बुप-
देशगम्यवु हरिकथाऽमृतसार साध्यरिगे ।

अश्रु-तागम-भाव-विदरप-रिश्र-मवुब-ल्लवरि-गान-
न्दश्रु-गळमळे-गरिसि-मैमरे-सुवच-मत्कृति-यु ।
मिश्र-रिगेमरे-माडि-दिविजर-जस्र-दलिका-ग्दिप्प-रिदरोळ-
पशृ-तिगळै-तप्प-वेनिज-भक्ति-युळ्ळरि-गे ॥ १०-(९९८)

अश्रुतागमभावविदर प-
रिश्रमवु बल्लवरिगान-
न्दश्रुगळ मळेगरिसि मैमरेसुव चमत्कृतियु ।
मिश्ररिगे मरेमाडि दिविजर-
जस्रदलि काग्दिप्परिदरोळ-
पशृतिगळैतप्पवे निजभक्तियुळ्ळरिगे ॥

निच्च-निजजन-मेच्चे-नेलेगो–ण्डच्च-भाग्यवु-पेच्चे-पेर्मेयु-
केच्चे-केळवरु-मेच्चि-मलमन-मुच्च-लेन्देनु-त ।
उच्च-विगळिगे-पोच्च-पोसदेन-लुच्च-रिसिदी-सुच्च-रित्रेय-
नुच्च-रिसेसिरि-वत्स-लाञ्छन-मेच्च-लेनरि-दु ॥ ११-(९९९)

निच्चनिजजन मेच्चे नेलेगो-
ण्डच्चभाग्यवु पेच्चे पेर्मेयु
केच्चे केळवरु मेच्चि मलमनमुच्चलेन्देनुत ।
उच्चविगळिगे पोच्चपोसदेन-
लुच्चरिसिदी सुच्चरित्रेय-
नुच्चरिसे सिरिवत्सलाञ्छन मेच्चलेनरिदु ॥

साधु-सभेयोळु-मेरेये-तत्त्वसु-बोध-वृष्टिय-गरेये-काम-
क्रोध-बीजव-हुरिये-खळरेदे-बिरिये-करकरि-य -
वादि-गळप-ल्मुरिये-परमवि-नोदि-गळमै-मरेय-लोसुग-
हादि-तोरिद-हिरिय-बहुचा-तुर्य-होसपरि-य ॥ १२-(१०००)

साधुसभेयोळु मेरेये तत्त्वसु-
बोधवृष्टियगरेये काम-
क्रोधबीजव हुरिये खळरेदेबिरिये करकरिय -
वादिगळ पल्मुरिये परमवि-
नोदिगळ मैमरेयलोसुग
हादितोरिद हिरिय बहुचातुर्य होसपरिय ॥

व्यास-तीर्थ-रोलवो-विठलो-पास-कप्रभुव-रियपु-रन्दर-
दास-रायर-दयवो-तिळियदु-ओदि-केळद-ले ।
केश-वनगुण-मणिग-ळनुप्रा-णेश-गर्पिसि-वादि-राजर-
कोश-कोप्पुव-हरिक-थामृत-सार-पेळिद-रु ॥ १३-(१००१)

व्यासतीर्थरोलवो विठलो-
पासकप्रभुवरिय पुरन्दर
दासरायर दयवो तिळियदु ओदि केळदले ।
केशवन गुणमणिगळनु प्रा-
णेशगर्पिसि वादिराजर
कोशकोप्पुव हरिकथाऽमृतसार पेळिदरु ॥

हरिक-थामृत-सार-नवरस-भरित-बहुग-म्भीर-रत्ना-
करु-चिरशृ-ङ्गार-साल-ङ्कार-विस्ता-र ।
सरस-नरक-ण्ठीर-वाचा-र्यरज-नितसुकु-मार-सात्वी-
करिगे-परमो-दार-माडिद-मरेय-दुपका-र ॥ १४-(१००२)

हरिकथाऽमृतसार नवरस-
भरित बहुगम्भीर रत्ना-
कर रुचिर शृङ्गार सालङ्कार विस्तार ।
सरसनरकण्ठीरवाचा-
र्यर जनित सुकुमार सात्वी-
करिगे परमोदार माडिद मरेयदुपकार ॥

अवनि-योळुज्यो-तिष्म-तियतै-लवनु-पामर-नुण्डु-जीर्णिस-
लवने-पण्डित-नोक-रिपनवि-वेकि-यप्प-न्ते ।
श्रवण-मङ्गल-हरिक-थामृत-सविदु-निर्गुण-सार-मुक्किस-
लवनि-पुणनै-योग्य-गल्लदे-दक्क-लरियदि-दु ॥ १५-(१००३)

अवनियोळु ज्योतिष्मतिय तै-
लवनु पामरनुण्डु जीर्णिस-
लवने पण्डितनोकरिपनविवेकियप्पन्ते ।
श्रवणमङ्गल हरिकथाऽमृत
सविदु निर्गुणसार मुक्किस-
लवनिपुणनै योग्यगल्लदे दक्कलरियदिदु ॥

अक्क-रदोळी-काव्य-दोळुओ-न्दक्क-रवबरे-दोदि-दवदे-
वर्क-ळिगेदु-स्त्यज-नेनिसिध-र्मार्थ-कामग-ळ ।
लेक्कि-सदेलो-कैक-नाथन-भक्ति-भाग्यव-पडेव-जीव-
न्मुक्त-गल्लदे-हरिक-थामृत-सार-सोगसुव-दे ॥ १६-(१००४)

अक्करदोळी काव्यदोळु ओ-
न्दक्करव बरेदोदिदव दे-
वर्कळिगे दुस्त्यजनेनिसि धर्मार्थ कामगळ ।
लेक्किसदे लोकैकनाथन
भक्ति भाग्यव पडेव जीव-
न्मुक्तगल्लदे हरिकथामृतसार सोगसुवदे ॥

ओत्ति-बहवि-घ्नगळ-तडेदप-मृत्यु-विगेमरे-माडि-कालन-
भृत्य-रिगेभी-करव-पुट्टिसि-सकल-सिद्धिग-ळ ।
ओत्ति-गोळ्ळिसि-वनरु-हेक्षण-नृत्य-माडुव-नवन-मनेयोळु-
नित्य-मङ्गल-हरिक-थामृत-सार-पठिसुव-र ॥ १७-(१००५)

ओत्तिबह विघ्नगळ तडेदप-
मृत्युविगे मरेमाडि कालन
भृत्यरिगे भीकरव पुट्टिसि सकलसिद्धिगळ ।
ओत्तिगोळ्ळिसि वनरुहेक्षण
नृत्यमाडुवनवनमनेयोळु
नित्यमङ्गल हरिकथाऽमृतसार पठिसुवर ॥

आयु-रारो-ग्यैश्व-रियमा-हाय-शोधै-र्यबल-समसा-
हाय-शौर्यो-दार्य-गुणगा-म्भीर्य-मोदला-द ।
आय-तगळु-ण्टाग-लोन्द-ध्याय-पठिसिद-मात्र-दिंश्रव-
णीय-वल्लवे-हरिक-थामृत-सार-सुजनरि-गे ॥ १८-(१००६)

आयुरारोग्यैश्वरिय मा-
हायशोधैर्य बलसम सा-
हाय शौर्योदार्य गुणगाम्भीर्य मोदलाद ।
आयतगळुण्टागलोन्द-
ध्याय पठिसिद मात्रदिं श्रव-
णीयवल्लवे हरिकथाऽमृतसार सुजनरिगे ॥

कुरुड-कङ्गळ-पडेव-बधिरनि-गेरडु-किविके-ळबहवु-बेळेयद-
मुरुड-मदना-कृतिय-ताळ्वनु-केळ्द-मात्रद-लि ।
बरडु-हैना-गुवदु-पेळ्दरे-कोरडु-पल्लै-सुवुदु-प्रतिदिन-
हुरुडि-लादरु-हरिक-थामृत-सार-वनुपठि-से ॥ १९-(१००७)

कुरुड कङ्गळ पडेव बधिरनि-
गेरडु किवि केळबहवु बेळेयद
मुरुड मदनाकृतिय ताळ्वनु केळ्दमात्रदलि ।
बरडु हैनागुवदु पेळ्दरे
कोरडु पल्लैसुवुदु प्रतिदिन
हुरुडिलादरु हरिकथाऽमृतसारवनु पठिसे ॥

निर्ज-रतर-ङ्गिणियो-ळनुदिन-मज्ज-नादिस-मस्त-कर्मवि-
वर्जि-ताशा-पाश-दिन्दलि-माडि-दधिकफ-ल ।
हेज्जे-हेज्जेगे-दोरेय-दिप्पवे-सज्ज-नरुशिर-दूगु-वन्ददि-
गर्जि-सुतली-हरिक-थाऽमृत-सार-पठिसुव-गे ॥ २०-(१००८)

निर्जर तरङ्गिणियोळनुदिन
मज्जनादि समस्तकर्म वि-
वर्जिताशापाशदिन्दलि माडिदधिकफल ।
हेज्जेहेज्जेगे दोरेयदिप्पवे
सज्जनरु शिरदूगुवन्ददि
गर्जिसुतली हरिकथाऽमृतसार पठिसुवगे ॥

सतिय-रिगेपति-भकुति-पत्नी-व्रतपु-रुषरिगे-हरुष-नेलेगो-
ण्डतिम-नोहर-वागि-गुरुहिरि-यरिगे-जगदोळ-गे ।
सतत-मङ्गल-वीव-बहुसु-कृतिग-ळेनिसुत-सुलभ-दिंस-
द्गतिय-पडेवरु-हरिक-थामृत-सार-वनुपठि-से ॥ २१-(१००९)

सतियरिगे पतिभकुति पत्नी-
व्रत पुरुषरिगे हरुषनेलेगो-
ण्डति मनोहरवागि गुरुहिरियरिगे जगदोळगे ।
सतत मङ्गलवीव बहुसु-
कृतिगळेनिसुत सुलभदिं स-
द्गतिय पडेवरु हरिकथाऽमृतसारवनु पठिसे ॥

एन्तु-वर्णिस-लेन्न-ळवेभग-वन्त-नमलगु-णानु-वादग-
ळेन्तु-परियलि-पूर्ण-बोधर-मतव-पोन्यव-र-
चिन्त-नेगेब-प्पन्ते-बहुद्द-ष्टन्त-पूर्वक-वागि-पेळ्दम-
हन्त-रिगेनर-रेन्दु-बगेवरे-निरय-भागिग-ळु ॥ २२-(१०१०)

एन्तु वर्णिसलेन्नळवे भग-
वन्तनमलगुणानुवादग-
ळेन्तु परियलि पूर्णबोधर मतव पोन्यवर
चिन्तनेगे बप्पन्ते बहुद्द-
ष्टन्तपूर्वकवागि पेळ्द म-
हन्तरिगे नररेन्दु बगेवरे निरयभागिगळु ॥

मणिख-चितहरि-वाण-दलिवा-रणसु-भोज्यप-दार्थ-कृष्णा-
र्पणवे-नुतपसि-दवरि-गोसुग-नीडु-वन्दद-लि ।
प्रणत-रिगेपो-ङ्गनड-वरवा-ङ्मणि-यिंविर-चिसिद-कृतियोळु-
उणिसि-नोडुव-हरिक-थामृत-सार-वनुदा-र ॥ २३-(१०११)

मणिखचितहरिवाणदलि वा-
रणसुभोज्यपदार्थ कृष्णा-
र्पणवेनुत पसिदवरिगोसुग नीडुवन्ददलि ।
प्रणतरिगे पोङ्गनडवरवा-
ङ्मणियिं विरचिसिद कृतियोळु
उणिसिनोडुव हरिकथाऽमृतसारवनुदार ॥

दुष्ट-रेन्नदे-दुर्वि-षयदिं-पुष्ट-रेन्नदे-पूत-कर्म-
भ्रष्ट-रेन्नदे-श्रीद-विट्ठल-वेणु-गोपा-ल-
कृष्ण-कैपिडि-युवनु-सत्यवि-शिष्ट-दास-त्ववनु-पालिसि-
निष्ठे-यिन्दलि-हरिक-थामृत-सार-पठिसुव-र ॥ २४-(१०१२)

दुष्टरेन्नदे दुर्विषयदिं
पुष्टरेन्नदे पूतकर्म-
भ्रष्टरेन्नदे श्रीदविट्ठलवेणुगोपाल-
कृष्ण कैपिडियुवनु सत्य वि-
शिष्ट दासत्ववनु पालिसि
निष्ठेयिन्दलि हरिकथाऽमृतसार पठिसुवर ॥

॥ ३३.फलस्तुतिसन्धि मुगियितु ॥ (३३-१०१२)

॥श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥